धन्यवाद।

इस पुस्तकके अनुवाद करनेमें मुझे श्रीयुक्त पाण्डेय उमापति दत्त शर्म्मा बी० ए० से बहुत कुछ सहायता मिली है। आप कल-कत्तेके श्रीविशुद्धानन्द सरस्वती विद्यालयके प्रधान अध्यापक हैं। आपकी ड्यूटी बहुत भारी है तथापि जब जहांसे जो कठिन बात मैंने उनसे पूछी उन्होंने उसी समय बताई। केवल इतनाही नहीं वरञ्च जिन गूढ़ बातोंका ठीक तात्पर्य समझनेमें उन्हें कुछ शङ्का हुई उनको अच्छे अच्छे अङ्गरेज विद्वानोंसे निश्चय कर मुझे बताया। आपकी ऐसी कृपा बिना मैं यह पुस्तक ऐसी सुगमतासे कभी समाप्त न कर सकता।

२०, बांसतल्ला ष्ट्रीट
कलकत्ता।
१६—८—१९०२।

जगन्नाथ प्रसाद चतुर्वेदी।

विचित्र-विचरण।

प्रथम खण्ड।

लिलीपटकी यात्रा।

प्रथम परिच्छेद।

मेरा घर है विलायतके नटिङ्घाम शहरमें। वहां मेरे पिताके कुछ जायदाद थी। बस उसीसे जीविका निर्वाह होती थी। मुझे लड़कपनहीसे समुद्र यात्राका बहुत शौक था। मेरे पिताके पांच लड़के—मैं उनमेंसे तीसरा हूं। जब मैं चौदह वर्षका हुआ तो पिताने केम्ब्रीज शहरके "इमैनुएल कालेज" में मेरा नाम लिखवा दिया। वहां मैंने तीन वर्ष खूब जी लगाकर पढ़ा। मैं यद्यपि बहुत कम खर्चमें अपना गुजारा करता तथापि पिताकी आय थोड़ी होनेके कारण। खर्च चल न सका। लाचार पढ़नेको छोड़कर लण्डन शहरके प्रसिद्ध डाक्टर मिस्टर जेम्स बेटसके यहां काम सीखने पर नियत हुआ। वहां चार बरस रह कर मैंने डाक्टरी सीखी। पिता भी इस खर्चके लिये कभी कभी कुछ भेज देते थे। मैं उसे जहाज चलानेके काम तथा देशाटनके उपयोगी शास्त्रोंके सीखनेमें खर्च करता था क्योंकि मैं जानता था कि मुझे देश देशान्तरकी हवा खानी पड़ेगी। मिस्टर बेट्सको छोड़ कर जब मैं घर आया तो पिता, चाचा जोन तथा और कई नातेदारोंकी सहायतासे मुझे चा·

कड़ में अपनी सुध बुध खो बैठा। मेरा मजब हाल था। मैं कुछ भी स्थिर न कर सका कि मैं जागता हूँ या सोता। आंखें बन्दकीं तो अन्धकार और खोलदीं तो वही अनूठी वस्तु देखी। तब निश्चय हुआ कि सोता नहीं जागता हूं—जो कुछ देखता हूँ वह झूठ नहीं सच है।

द्वितीय परिच्छेद।

पाठक मैंने क्या देखा सो बताऊं? अच्छा सुनिये, मैंने देखा आदमी—हां आदमी देखा जिसके आंख नाक मुंह सब हमारे जैसे थे पर ऊंचाई आधे फुटसे अधिक न थी और जिसके हाथमें धनुष बाण तथा पीठ पर तर्कश था। वह अकेला न था उसके पीछे चालीस और थे। वह सब भी ऐसेही थे। उनको देख कर मैं इतने जोरसे चीख उठा कि वे सबके सब मारे डरके पीछे भहरा पड़े। पीछे मालूम हुआ कि मेरी देह परसे कूद कर भागनेमें बहुतों को चोट लगी—किसीके हाथ टूटे, किसीके सिर फूटे और कोई बिचारा तो वहीं ढेर होगया। लेकिन यह सब बड़े साहसी थे—दल बांधकर फिर चढ़ आए। उनमेंसे एक जो अधिक साहसी मालूम होता था मेरे मुंहको अच्छी तरह देख भाल कर आश्चर्यके साथ पिनपिनी किन्तु ऊंची आवाजमें बोला "ई कीनाह डीगल"। दूसरे लोगोंने भी इसी वाक्यको कई बार कहा। लेकिन इसका अर्थ क्या है सो उस समय मेरी समझमें न आया। मैं बराबर उसी प्रकार पड़ा रहा। पाठक समझ सकते हैं कि उस समय मुझे कितना कष्ट होगा। बहुत दुःखित होकर मैंने एक झटका दिया जिससे रस्सी टूट गई और खूंटे उखड़ गये। बायां हाथ बन्धनसे मुक्त हुआ। कष्ट तो तनिक हुआही पर एक झटका और मैंने दिया। अबकी बायीं ओरका बन्धन जिसमें बाल बंधे हुए थे टूट गया। अब जरा सिर घुमानेका मौका मिला। मन में आई कि बायें हाथसे उन्हें पकड़ लूं पर वे सबके सब भाग गये

एकको भी न पकड़ सका। इस पर उन सबने बड़ी खुशी मनाई। उनमेंसे एकने जोरसे चिल्ला कर कहा "टेलगोफोनेक"। बस मेरी बांह पर सैंकड़ों तीर जो सूईके समान थे बरसने लगे। इसके सिवा आकाशकी ओर भी वे लोग बाण छोड़ने लगे। किन्तु इस बाण वृष्टिका असर मुझ पर कुछ भी नहीं हुआ। बहुतोंने मेरे मुंह की तरफ बाण मारे थे लेकिन वह सब सूईके बराबर थे। मैंने बायें हाथसे अपने मुंहकी रक्षाकी। बाण वृष्टि बन्द हुई। मैं अपनी दशा पर रोता था। जब बन्धन तोड़नेकी कोशिश करता तो तीरोंकी वर्षा होती। उन लोगोंने भाले भी चलाये पर भाग्यसे चमड़ेका कोट बदनमें था इसलिये कुछ हुआ नहीं। अगर मैं चाहता तो उठ भागता पर ऐसा किया नहीं। चुप चाप पड़े रहना अच्छा समझा। सोचा बायां हाथ खुलही चुका है रातको सहजमें निकल भागूंगा। अगर यहांके सब आदमी इसी परिमाणके हैं तो डर क्या है? मैं सबकी एक साथही खबर ले सकता हूं। बस यही सब सोच विचार कर मैं चुपचाप पड़ा रहा। पर जो सोचा सो हुआ नहीं। जब मैं शान्त हुआ तो वह सब भी शान्त हुए किन्तु आवाजसे मालूम हुआ कि उनका दल बढ़ रहा है। मुझसे कोई चार गजकी दूरी पर दाहिने कानके पासही प्रायः एक घण्टे तक ठक ठक शब्द होता रहा मानो कोई कुछ ठोंका ठांकी कर रहा है। सिर उठाया तो देखा वे सब मचान बना रहे हैं। मचान धरतीसे एक हाथ ऊंचा था। उसमें दो तीन सीढ़ियां भी लगी हुई थीं और उस पर चार पांच आदमी—वही छः इञ्च वाले—मजेमें खड़े हो सकते थे। मचान तैयार होजाने पर चार आदमी उसपर चढ़ गये। उनमेंसे एकने जो सयाना और चतुर जान पड़ा मेरी ओर निहार कर एक लम्बी वक्तृता दी जिसका [illegible] मैंने कुछ भी नहीं समझा लेकिन उसके भाव भङ्गीसे [illegible] कि वह कभी मुझे डराता धमकाता, कभी समझाता और कभी मुझसे विनय प्रार्थना करता था। व्याख्यान आ-

नं० ४
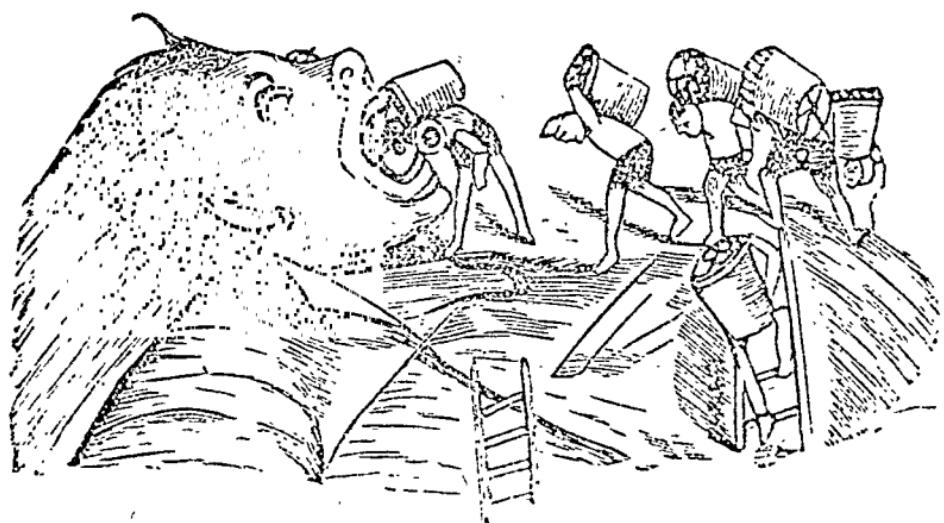
हुक्म पातेही सैकड़ों आदमी टोकरोंसे लदे
मेरी छाती पर आ पहुंचे।

पृष्ठ ७

रम्भ करनेके पहलेही वज्ञाने तीन बार ज़ोरसे कहा था "लङ्गरो डेवल सान"। इतना सुनकर पचास आदमी उसी परिमाणके आये और मेरे सिरका बन्धन काट कर चले गये। तब मैंने वज्ञा की ओर सिर घुमाया। उसकी उमर लग भग पचास वर्षकी होगी। अपने साथियोंसे वह कुछ लम्बा था मैंने बहुत नम्रताके साथ बायां हाथ उठा कर उनकी बातोंका जवाब दिया। सूर्यकी तरफ इशारा करके कसम भी खाई कि मैं बुरी नीयतसे यहां नहीं आया हूं और न यहांके लोगोंको कुछ बुराई करूंगा। जहाज छोड़नेके बादहीसे खानेके लिये कुछ नहीं मिला था— भूख के मारे तबीयत बेचैन थी—अजब जानकी हालत थी। कातर होकर मैंने बार बार उंगलियोंको मुंहमें डालकर खानेका इशारा किया। उसने मेरी बातोंको तो नहीं समझा पर ईश्वरकी दयासे मेरे मनके भावको समझ लिया।

मचानसे उतर कर उस आदमीने जो सबका सरदार था अपने नौकरोंको खाने पीनेकी सामग्री लानेके लिये कहा। हुक्म पातेही सैकड़ों आदमी टोकरीसे लदे मेरी छाती पर आ पहुंचे। मेरे पेट पर चढ़नेके लिये उन्हें सीढियां लगानी पड़ी थीं। मेरे आनेकी खबर पातेही वहांके राजाने पहलेहीसे मेरे खाने पीनेका बन्दोबस्त कर दिया था। भोजन स्वादिष्ट था पर सबको मैं पहचान न सका। मांस भी कई तरहके थे। भेड़का मांस लेकिन अधिक था। बन्दूककी गोलियोंकी बराबर पावरोटियां थीं। मैं चार चार पांच पांच रोटियोंका एकही कौर करताथा। मेरा खाना देख कर यह सब दङ्ग होगए। अब आई शराबकी बारी। मेरे भोजन हीसे उनको मालूम होगया कि थोड़ी मदिरासे काम नहीं चलेगा। इसी लिये उन्होंने अपने यहांके सबसे बड़े पीपेका मुंह खोल कर मेरे हवाले किया। मैं उसे एकही घूंटमें साफ कर गया। उनके उस बड़े पीपेमें डेढ़ दो छटांकसे ज्यादे शराब न होगी। लेकिन शराब थी बड़ी मजेदार। मैंने एक पीपा फिर खाली किया।

जब और मांगा तो कोरा जवाब पाया क्योंकि उधर तो भण्डारही खाली होगया था। इन सब अद्भुत कार्योंको जब मैं कर चुका तब वह सब मारे खुशीके मेरे पेट पर कूदने लगे और बार बार पहले की भांति "हेकीनाह डीगल" कहने लगे। इसके बाद उन्होंने दोनों पीपोंको फेंक देनेके लिये इशारा किया और जो लोग जमीन पर खड़े थे उनसे गरज कर कहा "बोराकसिभोला"। इतना सुनतेही भीड़ एक तरफ हट गई। जब मैंने पीपोंको उठा कर फेंक दिया। तब वह लोग फिर बोले "हेकीनाहडीगल"। वह क्षुद्रजीव निडर होकर जब मेरी देह पर नाचने कूदने लगे तो उनकी ढिठाई देख मुझे बहुत क्रोध आया। जीमें तो आई कि इन्हें उठा कर जमीन पर पटक दूं परन्तु कुछ सोच विचार कर मन मारके रह गया। जब मैं खा पी कर निश्चिन्त हुआ तो एक उच्च राजकर्म्मचारी दाहिने पांव परसे धीरे धीरे मेरे मुंहके सामने आया। उसके चेहरे पर क्रोधकी झलक तक न थी। उसने शान्ति और गम्भीरता पूर्वक कोई दस मिनट तक बातें कीं किन्तु मैंने कुछ भी न समझा। वह आगेकी तरफ इशारेसे कुछ बताता भी था जिसका मतलब पीछे खुला। वहांसे आधी मील की दूरी पर राजधानी थी वहीं चलनेके लिये वह कहता था। राजाकी तरफसे वह मुझे बुलाने आया था। मैंने भी इशारेमें कहा कि मुझे छोड़ दो। पर उसने सिर हिला कर समझा दिया कि यह बात नहीं होनेकी। इशारेहीसे उसने यह भी जताया कि चाहे जैसे हो वह सब मुझे राजधानी जरूर ले जायंगे और वहां खूब खाने पीनेके लिये देंगे, खातिर करेंगे और किसी प्रकारकी तकलीफ नहीं होने देंगे। इन सब बातोंको पुष्ट करनेके लिये उसने राजाकी मुहर दिखाई पर मुझे एक न भाई, मनमें आई कि निकल भागूं लेकिन उनकी बाण दृष्टि याद कर मनकी बात मनमें भुलाई। उन लोगोंका दल भी बहुत कुछ बढ़ चुका था। [illegible]न सोच विचार कर वहीं चलनेकी बात ठहराई। वह राज

कर्मचारी मेरे मनका भाव समझ कर बड़ी खुशीके साथ वहांसे विदा हुआ। थोड़ी देरके बाद "पेपलम सेलम" की आवाजसे आकाश गूंज उठा। कई आदमियोंने आकर बाईं ओरके बन्धन को ढीला कर दिया। करवट बदलनेका मौका मिला। बहुत देरसे पेशाबकी हाजत थी—सो फुरसत पातेही पहले मैंने पेशाब किया—तबीयत हलकी हुई। लेकिन वह सब मेरे पेशाबको देख आश्चर्य मानने लगे बल्कि बहुतेरे तो डूब जानेके डरसे इधर उधर भाग गये। उन लोगोंने एक महा सुगन्धित मरहम मुंह और हाथोंमें लगा दिया जिससे तीरकी जलन जाती रही। सब पीड़ा दूर हुई। शरीरको आराम मिला, मैं भी लगा खर्राटे लेने।

तृतीय परिच्छेद।

जब आंखें खुलीं तो अपनेको एक लम्बी गाड़ी पर बंधा हुआ पाया। गाड़ी खड़ी थी और हजारों आदमी मुझे घेरे थे।

मैं आठ घण्टे खूब सोया था बेहोश रहा। राजाके डाक्टरोंने शरबतमें बेहोशीकी दवा मिला दी थी बस उसीसे इतनी देर बेसुध पड़ा रहा। ये सब भेद पीछे खुले थे। जब मैं घास पर सोया हुआ था जासूसोंने जाकर महाराजको खबर दी। उन्होंने उसी समय अपने आदमियोंको समझा बुझा कर मेरे पास भेजा। उन लोगोंने आकर मेरे हाथ पैर बांध दिये जैसा कि ऊपर मैं कह आया हूं। उधर महाराजने मेरे भोजनादिकी सामग्री तथा एक बहुत लम्बी गाड़ी तैयार करनेके लिये आज्ञा दे दी। बहुत से लोग महाराजके इस कामको बुरा बता सकतेहैं—युरप वाले तो कदापि इसे पसन्द नहीं करेंगे—परन्तु मेरी रायसे ऐसे मौकों पर यही करना उचित है। अगर महाराजके आदमी आकर एका एक मुझ पर आक्रमण कर बैठते या मुझको जगा देते तो मैं गुस्से से उठ कर उनको पीस डालता। महा अनर्थ होता। आपसमें बैर बढ़ता। अतएव महाराजने जो कुछ किया, सो बहुत ठीक और उचित था। न सांप मरा न लाठी टूटी।

इस देशके निवासी गणित विद्याके पूरे पण्डित होनेके अलावे कारीगर बड़े भारी हैं। कल कांटेदार बनाना तो इन सबके लिये सहज काम है। यहांके महाराज विद्याके परमानुरागी हैं। आप के राज्यमें विद्या और शिल्पकी बहुत कुछ उन्नति हुई है। इसी से लोग महाराजको "विद्यावन्धु" कहते हैं। बड़े बड़े पेड़ों तथा भारी भारी चीजोंके ढोनेके वास्ते यहां कलें तैयार हैं। लड़ाईके जहाज भी यहां बनते हैं। एक एक जहाजकी लम्बाई नौ नौ फुट होती है। ये सब जङ्गलहीमें तैयार होते और वहांसे कलों के द्वारा समुद्रमें पहुंचाये जाते हैं। महाराजकी आज्ञा पातेही पांचसौ बढ़ई और इञ्जीनियरोंने चार घण्टेके अन्दरही एक सुविशाल गाड़ी बना कर तैयार कर दी। यह गाड़ी जमीनसे तीन इञ्च ऊंची, प्रायः सात फुट लम्बी और चार फुट चौड़ी थी। देखने में बुरी न थी। इसमें बाईस पहिये लगे थे। इसी गाड़ीके पहुंचने पर सबने "पीपलेम सेलेम" से आकाश गुञ्जा दिया था। यह गाड़ी जहां मैं पड़ा हुआ था वहीं मेरे बराबर रक्खी गई। अब मुश्किल यह आपड़ी कि यह मेरा भारी शरीर गाड़ी पर कैसे चढ़ाया जायगा। शेषमें उपाय निकल आया। एक एक फुट लम्बे खम्भे जमीनमें सीधे गाड़े गये। इनके सिरे पर एक एक चरखी (छोटा पहिया) लगाई गई। मेरे हाथ, पैर, गर्दन आदि तमाम शरीरमें बन्द बांधे गये। मजबूत डोरियोंका एक छोर तो चरखियों पर रहा और दूसरा आंकड़ों के द्वारा बन्दोंसे अटकाया गया। यह सब काम ठीक होजाने पर नौ सौ चुने हुए पहलवानोंने चरखियों परसे आई हुई डोरियोंको बड़े जोरसे खेंचा। खेंचतेही मैं धरतीसे पांच इञ्च ऊपर उठ आया। गाड़ीको लोगोंने ठीक मेरे नीचे ठेल दिया। बस जरासी डोरी ढीली करतेही मैं गाड़ी पर जा पहुंचा। फिर मेरा सारा शरीर गाड़ीके साथ खूब मजबूतीसे बांध गया। इस प्रकार कोई पौने तीन घण्टेमें मैं उस सुविशाल गाड़ी पर लादा गया। ये सब बातें मुझे पीछे मालूम हुईं क्योंकि

जिस समय वह सब कापड़ बचे जाते थे मैं पिंडोमीको पुड़ियाके कारण बिलकुल बेसुध था। महाराजके बड़े बड़े ६ हजार घोड़े गाड़ीमें जुते थे जिनकी ऊंचाई साढ़े चार चार इंच थी। यह कही चुका हूं कि जहां मैं था वहांसे राजधानी आध मील थी। सब ठीक ठाक होजाने पर गाड़ी अग्रसर हुई। गाड़ी चलनेके चार घण्टे बाद अकस्मात् एक छींक आई और मैं चौंक पड़ा तो देखा कि बीच राहमें गाड़ी खड़ी है और मैं उस पर सदा हूं। इस आश्चर्यमयी बातोंको देख मेरी अजब दशा थी। कुछ कल कांटा बिगड़ गया था इसासे गाड़ी रुकीथी। मिस्तरी सब मरम्मतमें लगे थे। एक दिल्लगीकी बात सुनिये। जब गाड़ी रुकी तो दो तीन आदमियोंको यह देखनेका शौक हुआ कि मैं सोया हुआ कैसा मालूम होता हूं। वे लोग चुप चाप गाड़ी पर चढ़ आए और मेरे मुंहके सामने खड़े होगये। इनमेंसे एक महाराजका चौकीदार भी था। यह अपने डण्डेका सिरा मेरी बाई नाकमें घुसेड़ कर भाग गया। मैं बड़े जोरसे छींक कर जाग उठा। यह डण्डा नाकमें सींकको तरह जान पड़ा था। बस इसी सबबसे बीचहीमें मैं जाग पड़ा था। राजधानी पहुंचनेके तीन सप्ताह बाद यह भेद मुझे मालूम हुआथा। फिर गाड़ी चली। चलते चलते शाम होगई। रात भर रास्तेहीमें विश्राम किया। हिफाज्तके लिये साथमें एक हजार सिपाही थे। पांचसौ हाथोंमें मशालें लिये और पांचसौ धनुष बाण चढ़ाए दोनों तरफ डटे थे। सूरज उगने पर फिर कूचका डङ्का बजा। दोपहरको हम सब ऐसी जगह जा पहुंचे जहांसे नगर कोट (शहर पनाह) का फाटक दो सौ गज दूर था। बस यहीं गाड़ी खड़ी हुई। स्वयं महाराज परिकर सहित मुझे देखनेके लिये यहां आये थे। महाराजने तो मेरी देह पर चढ़के मुझे देखना चाहा परन्तु मन्त्रियोंने विपदकी आशङ्का कर महाराजको ऐसा करनेसे रोक दिया।

जहां गाड़ी रुकी थी वहां एक पुराना विशाल मन्दिर था।

उस देशमें इससे बड़ा मकान और नहीं है। कई वर्ष पहले इस मन्दिरमें एक नरहत्या होगई थी। इसी लिये नगरनिवासियोंने इसे अपवित्र समझ कर छोड़ दिया है। अब उसमें पूजा पाठ नहीं होता योंहीं खाली पड़ा रहता है। इस समय वह धर्मशालाका काम देता है। इसी मन्दिरमें मेरे टिकनेकी व्यवस्था हुई। उत्तर ओरका सदर दरवाजा चार फुट ऊंचा और प्राय: दो फुट चौड़ा था। इस दरवाजेसे मैं मजेमें रेंग कर भीतर जासकता था। दरवाजेके दोनों तरफ दो छोटी छोटी खिड़कियां थीं जो धरतीसे छ: इञ्चसे अधिक ऊंची न थीं।

कारीगरोंने बाईंओरवाली खिड़कीके पास ९१ जञ्जीरें लगा रक्खीं थी। इन जञ्जीरोंकी लम्बाई तथा मुटाई लेडियोंकी घड़ीकी चैनके बराबर थीं। इन्हीं जञ्जीरोंको इकट्ठी कर मेरा बायां पैर बांधा गया और उनमें छत्तीस ताले जड़ दिये गये। बड़ी सड़कको दूसरी तरफ मन्दिरसे बीस फुटके फासले पर एक गुम्बज था जिसकी ऊंचाई लग भग पांच फुटके होगी। महाराज पारिषद समेत उसी गुम्बज परसे मुझे देखने लगे। शहरके सिवा बाहरके लाखों आदमी तमाशा देखनेके लिये आये थे। एक हजार सिपाही हिफाजतके वास्ते मौजूद थे तिस पर भी सैकड़ों आदमी सीढ़ी लगा कर मेरी देह पर चढते और कूदते थे। किसीकी कोई नहीं सुनता था। सब मेरे ऊपर गिरे पड़ते थे। लाचार हो महाराजको यह हुक्म जारी करना पड़ा कि जो कोई इस विराट पुरुषके पास जायगा उसे फांसी दी जायगी। जञ्जीरसे बांधनेके बाद और सब बन्धन काट दिये गये! यह जंजीर चार हाथ लम्बी थी। बस इसीसे मैं चार हाथ तक इधर उधर टहल सकता था। [illegible]ही नहीं बल्कि टांग पसार कर मन्दिरके भीतर सो भी [illegible]। क्योंकि दरवाजेसे चारही हाथ पर मैं था। मेरी तबी[illegible] उदास थी। जी बहलानेके लिये जरा मैं खड़ा होगया।"

चौर टहलने लगा। मेरा खड़ा होना और टहलना देख कर उन सबके आश्चर्यकी सीमा न थी।

चतुर्थ परिच्छेद।

खड़ा होकर मैं चारों ओर देखने लगा। अहा! क्या मनोहर दृश्य है! क्या रमणीय स्थान है! आंखें तृप्त नहीं होतीं—जी चाहता है निहारताही रहूं। क्या अनोखी छटा है सारा देशही चमन सा खिला हुआ है। चौकोर खेतोंकी बहार फसलकी क्यारियोंसे किसी तरह कम नहीं है। नाना प्रकारके वृक्षों की कुछ निरालीही शोभा है। सात फुटसे अंचे यहां वृक्षही नहीं हैं। मेरी बाईं तरफ राजधानी है—अहा कैसा सुन्दर नगर है! नगर क्या है—मानो थियेटरका परदा है। देखतेही मन मुग्ध हो जाता है।

शौचादिसे निबटनेके लिये तबीयत बेचैन थी। दो दिनसे निबटा नहीं। अब और रोक न सका। मन्दिरमें घुस गया और किवाड़ बन्द करके वहीं हलका हुआ। कहही चुका हूं कि जंजीरें चार हाथ लम्बी थी इसलिये भीतर जानेमें कुछ कष्ट नहीं हुआ। ऐसी मैली कारवाई बस मैंने एकही दिनको थी सो आशा है कि पाठकगण मेरी दशा विचार कर क्षमा करेंगे। फिर तो मैं खूब तड़के उठता और बाहरही निश्चिन्त होता। दो मेहतर उसी समय आकर साफ कर जाते थे। बस इस विषयको यहीं समाप्त करता हूं। पाठक! नाक भौंह मत सिकोड़िये तीव्र समालोचकों ही के लिये मैंने यह गीत गाया है।

शौचादिसे छुट्टी पाकर मैं बाहर निकल आया। इधर महाराज भी गुम्बटसे उतर चुकेथे। घोड़े पर चढ़के मेरी ओर आने लगे पर ईश्वरने बड़ी कुशलकी! यद्यपि घोड़ा सुशिक्षित था तथापि वह मेरे पर्वताकार शरीरको देख कर भड़का और अपने पिछले पैरोंसे खड़ा होगया। महाराज भी घोड़े पर चढ़ना जानते

थे इसलिये गिरे नहीं अपनी जगह पर डटे रहे। इतनेमें साईसने आकर घोड़ेकी वाग थामली। महाराज भी कुशलपूर्वक उतर पड़े। फिर खड़े होकर आश्चर्यकी दृष्टिसे मुझे देखने लगे लेकिन जहां तक जंजीरकी पहुंच थी महाराज उससे दूरही रहे। हमारे पास नहीं आए। महाराजने रसोईयोंसे भोजनादिकी सामग्री लानेके लिये कहा। वे लोग पहलेहीसे तय्यार थे हुक्म पातेही मद्य और मांससे लदे हुए छकड़े मेरे सामने लेआए। तुरतही मैंने सबको स्वाहा कर डाला। बीस छकड़े मांसके और दस शराबके थे। मांस तो मैं दो तीन कौरहीमें चाट गया—बाकी रही शराब सो एकही घूँटमें साफ होगई। महारानी अपने छोटे छोटे राजकुमार और कुमारियोंको लिये कुर्सियों पर अलग बैठी थीं। सङ्गमें शहरके नामी नामी रईसोंकी स्त्रियां भी थीं। घोड़ा भड़कनेके बाद सब महाराजके निकट चली आईं। महाराजका रङ्ग जैतूनसा, चेहरा सुन्दर मगर रोबीला वदन चुस्त दुरुस्त और गठीला था। और लोगोंकी अपेक्षा महाराज कुछ लम्बे थे। नाक नोकीली और आंखें रसीली थीं। उमर उनतीस वरससे कुछही कम होगी। महाराजको राजसिंहासन पर बैठे अभी सातही वर्ष हुएहैं। इसी बीचमें आपने बहुत कुछ नाम और यश पैदा कर लिया है। महाराजको भली भांति देखनेके लिये मैं जमीनमें लेट गया—करवट लेनेसे मेरा मुँह श्रीमान्के मुंहके ठीक सामने होगया। वे मुझसे छ: हाथके फासले पर थे। महाराजको काई बार हाथमें लेना पड़ा था। इस वास्ते आपका चित्र हृदयमें चित्रित है। महाराजकी पोशाक सादी और सुहावनी थी लेकिन मस्तक पर रत्न जड़ित स्वर्ण मुकुट और हाथमें तीन इञ्च लम्बी तलवार थी। म्यान और मूठ दोनों ही सोनेकी थीं। और उनमें हीरे जड़े थे। जत[illegible] लोग वहांथे सब जर्कबर्क थे- एकसे एकको पोशाक कर थी। उस समय वहांकी भूमि बनारसी कमखाव मालूम ... थी और महाराज अपने दलबल समेत उसके बेल बूटे।

थे इसलिये गिरे नहीं अपनी जगह पर
ने आकर घोड़ेकी बाग थामली। महारा
पड़े। फिर खड़े होकर आश्चर्यकी दृष्टिसे
जहां तक जंजीरकी पहुंच थी महाराज
मारे पास नहीं आए। महाराजने रसोई
मग्री लानेके लिये कहा। वे लोग पहलेहीसे
मद्य और मांससे लदे हुए छकड़े मेरे सामने
सबको स्वाहा कर डाला। बीस छकड़े मां
थे। मांस तो मैं दो तीन कौरहीमें चाट ग
सो एकही घूंटमें साफ होगई। महारानी
कुमार और कुमारियोंको लिये कुर्सियों पर
में शहरके नामी नामी रईसोंकी स्त्रियां भी थीं
बाद सब महाराजके निकट चली आईं। म
सा, चेहरा सुन्दर मगर रोबीला वदन दुरुस्त
था। और लोगोंकी अपेक्षा महाराज कुछ
कीली और आंखें रसीली थीं। उमर उनती
होगी। महाराजको राजसिंहासन पर बैठे अर्से
इसी बीचमें आपने बहुत कुछ नाम और यश
महाराजको भली भांति देखनेके लिये मैं ल
करवट लेनेसे मेरा मुँह श्रीमान्के मुंहके ठी
वे मुझसे छः हाथके फासले पर थे। महा
लेना पड़ा था। इस
महाराजको
रत्न जड़ित स्वर्ण
म्यान और
जितने
बढ़

महाराज मुझसे बोलते और मैं महाराजसे किन्तु कोई किसीकी बात नहीं समझता था। महाराजके साथ वकील और पुरोहित भी थे जिन्हें मैंने उनके रङ्ग ढङ्गसे पहचान लिया था। महाराजने उन्हें भी मुझसे बात करनेके लिये आज्ञा दी। वह बिचारे बोले भी बहुत कुछ। मैंने भी कई देशकी भाषाओंमें जवाब दिया परन्तु फल कुछ हुआ नहीं। कोई किसीकी बोली समझ नहीं सकता था। दो घण्टे के अनन्तर महाराजने समाज समेत प्रस्थान किया। तमाशेके लिये अकसर लोग मुझे छेड़ते और दिक्क करतेथे। महाराजकी आज्ञासे भीड़ भाड़ हटाने तथा हिफाजतके लिये कड़ा पहरा बैठा। वास्तवमें वहांके आदमी बड़ेही शैतान थे। एक दिन जब मैं द्वार पर बैठा था कई आदमी लगे मुझ पर तीर चलाने। एक तीर तो बांई आंखके पाससे निकल गया। बड़ी कुशल हुई, नहीं तो आंखही फूट जाती। सिपाहियोंने तीर चलानेवालोंमेंसे छः को पकड़ लिया और उनको कुछ सजा न कर उन्हें बांध कर मेरे हवाले कर दिया। मैंने पांचको जेबमें रख कर एकको हाथमें उठा लिया और उसके सामने जोरसे मुंह बाया मानो उसे जीताही निगल जाऊंगा। इस विचारके तो प्राण सूख ही गये लेकिन दर्शकोंका भी डरके मारे अजब हाल था। जब मैंने खलीतेसे छुरी निकाली तो सबके सब सन्नाटेमें आगये और यह बिचारा तो अपनी जानसे हाथ धोकर बड़े जोरसे रो उठा। मैंने छुरीसे उसका बन्धन काट कर उसे जमीन पर रख दिया। वह जान लेकर भागा। शेष पांचके साथ भी मैंने यही बर्त्ताव किया। मेरी इस कार्य्यवाहीसे सब लोग बहुतही प्रसन्न हुए। महाराज तक यह खबर पहुंची। वहां मेरी बड़ी प्रशंसा हुई। इससे मुझे लाभ भी हुआ जिसका हाल आगे चल कर मालूम होगा।

रातको मुझे बहुत कष्ट होता था क्योंकि बिछानेके लिये कुछ न था। यों ही गच पर पड़ रहता था। पन्द्रह दिन तक यही दशा रही। आखिर महाराजने बिस्तरके लिये प्रबन्ध कर दिया।

नं० ५

एकको हाथमें उठालिया और उसके सामने जोरसे
मुँह बाया मानो उसे जीताही निगल जाउंगा।

पृष्ठ १५

महाराज मुझसे बोलते और मैं महाराजसे किन्तु कोई किसीकी बात नहीं समझता था। महाराजके साथ वकील और पुरोहित भी थे जिन्हें मैंने उनके रङ्ग ढङ्गसे पहचान लिया था। महाराजने उन्हें भी मुझसे बात करनेके लिये आज्ञा दी। वह बिचारे बोले भी बहुत कुछ। मैंने भी कई देशकी भाषाओंमें जवाब दिया परन्तु फल कुछ हुआ नहीं। कोई किसीकी बोली समझ नहीं सकता था। दो घण्टेके अनन्तर महाराजने समाज समेत प्रस्थान किया। तमाशेके लिये अकसर लोग मुझे छेड़ते और दिक्क करते थे। महाराजकी आज्ञासे भीड़ भाड़ हटाने तथा हिफाजतके लिये कड़ा पहरा बैठा। वास्तवमें वहांके आदमी बड़ेही शैतान थे। एक दिन जब मैं द्वार पर बैठा था कई आदमी लगे मुझ पर तीर चलाने। एक तीर तो बांई आंखके पाससे निकल गया। बड़ी कुशल हुई, नहीं तो आंखही फूट जाती। सिपाहियोंने तीर चलानेवालोंमेंसे छः को पकड़ लिया और उनको कुछ सजा न कर कहें बांध कर मेरे हवाले कर दिया। मैंने पांचको जेबमें रख कर एकको हाथमें उठा लिया और उसके सामने जोरसे मुंह बाया मानो उसे जीताही निगल जाऊंगा। इस बिचारेके तो प्राण सूख ही गये लेकिन दर्शकोंका भी डरके मारे अजब हाल था। जब मैंने थैलीसे छुरी निकाली तो सबके सब सन्नाटेमें आगये और वह बिचारा तो अपनी जानसे हाथ धोकर बड़े जोरसे रो उठा। मैंने छुरीसे उसका बन्धन काट कर उसे जमीन पर रख दिया। वह जान लेकर भागा। शेष पांचके साथ भी मैंने यही बर्त्ताव किया। मेरी इस कार्य्यवाहीसे सब लोग बहुतही प्रसन्न हुए। महाराज तक यह खबर पहुंची। वहां मेरी बड़ी प्रशंसा हुई। इससे मुझे लाभ भी हुआ जिसका हाल आगे चल कर मालूम होगा।

रातको मुझे बहुत कष्ट होता था क्योंकि बिछानेके लिये कुछ न था। मैं ही गच पर पड़ रहता था। पन्द्रह दिन तक यही दशा रही। आखिर महाराजने बिस्तरके लिये प्रबन्ध कर दिया।

क: सौ बिछौने गाड़ी पर लद कर आपहुंचे। दर्जियोंने ६ इन बिछौनोंको एक साथ सिला कर सी डाला। इस तरहके चार बनाये गये। फिर इन चारोंको इकट्ठा करनेसे एक गद्दा तैयार हुआ खैर, इस गद्देसे कुछ आराम मिला। चादर कम्बल, तकिये, मस हरी वगैरह भी इसी नापसे बनाई गई। इस प्रकारसे रातका कष्ट दूर हुआ।

मेरे यहां पहुंचनेकी खबर देश भरमें फैल गई। धनी, दरिद्र छोटे बड़े, आलसी, शौकीन—सब प्रकारके लोग घर बार छोड़ कर मुझे देखनेके लिये चारों ओरसे आने लगे। आस पासके गांव सब खाली होगये। यदि महाराज नई नई कड़ी आज्ञायें जारी करके इस भेड़ियाधसानको न रोकते तो गृहस्थी तथा खेती बारीके काम बिलकुल बन्द होजाते। महाराजने यह नियम कर दिया कि जो लोग देख चुके हैं वे अपने अपने घर लौट जांय और बिना सरकारी हुक्मके मन्दिरके आस पास (एकसौ हाथ तक) फिर न आवें। अगर कोई आवेगा तो उसे प्राण दण्ड दिया जायगा। हुक्म लेनेमें रुपये लगते थे सो राज्यके सिकत्तर साहबको खूब रुपये मिलने लगे।

इस बीचमें महाराजके यहां कई सभायें बैठीं। इन सब सभाओंका मुख्य उद्देश्य मैंही था। मेरे साथ अब कैसा व्यवहार करना चाहिये इत्यादि बातोंहीका विचार सभासद लोग आपसमें करते थे। वहांका एक भलामानस मुझे बहुत चाहता था। वह राज दरबारकी गुप्त बातें बहुधा मुझसे कह जाता था। न जाने वह कैसे इन सब गुप्त भेदोंका पता लगा लेता था। पीछे उसीसे मालूम हुआ कि सभावाले इस फिकरमें पड़े हैं कि अगर कहीं मैं जंजीर तोड़ कर निकल जाऊं तो बड़ा अनर्थ होगा। किसीको यही ..थी कि अगर मैं कुछ दिन वहां रह गया तो सारा देश ..के चंगुलमें जरूर फंस जायगा। मेरी खुराक जुटानेमें सर .। बहुत कुछ खर्च पड़ता है। थोड़ेही दिनोंमें खजाना खाली

होजायगा। इसलिये मुझ आफतको टालनेके लिये सभासदों ने नये नये ढङ्ग निकाले किसीने अस्त्र बिना मारना बताया और किसीने विषैले तीरोंसे मेरा कामही तमाम करनेके लिये सलाहदी। परन्तु दूरदर्शी लोगोंने कहा नहीं, ऐसा करनेसे महा अनिष्ट होगा। जब इसकी बड़ी लाश सड़ेगी तो समूचा देश दुर्गन्धिसे भर जायगा—फिर महामारीको देशका सत्यानाश करनेमें कितनी देर लगेगी? जिस समय सभामें सब तर्क वितर्क होरहे थे दो सिपाहियोंने आकर महाराजसे मेरी बड़ी बड़ाईकी और उन छः आदमियोंकी कथा जिन्हें धमका कर मैंने छोड़ दिया था कही। महाराज तथा सभासदगण मेरी इस कार्यवाहीको सुन बहुतही खुश हुए। उसी समय सर्व सम्मतिसे निश्चय हुआ कि राजधानीके समीप नौ सौ गजके भीतर जितने ग्राम हैं वे सब 'नर पर्व्वत' (मेरे) के खाने पीनेकी सब चीजें नित्य सवेरे जुटाया करें और इन सब चीजोंका दाम खजानेसे मिला करेगा। 'नर पर्व्वत' के काम काजके लिये छः सौ नौकर चाकर रखे जांय। इन लोगों की तलब भी खजानेसे मिला करे तथा इनके रहनेके लिये मन्दिर के दरवाजेके निकटही घर बनें। पोशाक तैयार करनेके वास्ते तीनसौ दर्जी तथा यहांकी भाषा सिखानेके लिये छः अच्छे-पण्डित नियत हों। सरकारी घुड़सवार तथा सिपाही सब अपनेको ठीक बनानेके निमित्त सदा। "नर पर्व्वत" के निकट जाकर अपनी अपनी कवायद दिखाया करें। महाराजकी यह सब आज्ञायें बहुत जल्द काममें लाई गई। प्रायः तीन सप्ताहके भीतरही मैंने यहां की भाषा बहुत कुछ सीख ली। बीच बीचमें महाराज भी पधारते और मुझे भाषा सिखानेमें पण्डितोंकी सहायता करते थे। अब मैं महाराजसे बात चीत भी करने लगा। मैं बराबर विनय पूर्वक स्वाधीनताके लिये महाराजसे प्रार्थना करता तो वह कहते "अभी सब करो; मन्त्रियोंकी सम्मति बिना मैं कुछ नहीं कर सकता। अच्छा अभी तुम अपने चाल चलनसे सबको खुश करो पीछे देखा जायगा।"

पञ्चम परिच्छेद।
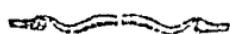
एक दिन महाराजने कहा "अगर मेरे कर्मचारी तुम्हारी तलाशी लें तो तुम्हें बुरा न मानना चाहिये। तुम्हारे जैसे विराट पुरुषके पास अगर कोई भयानक हथियार हो तो पलमें प्रलय हो सकती है। सो इस काममें किसी प्रकारका उजर मत करना और यह तुम्हारी सहायताके बिना हो भी नहीं सकता है। तुम्हारी दयालुताका बहुत कुछ नाम फैला है इसीसे मैं अपने कर्मचारियों की जान तुम्हारे हाथ सौंपता हूं।" महाराजके मनका भाव समझ कर मैंने कहा "मुझे कुछ भी उजर नहीं है। आप अभी मेरी तलाशी ले लीजिये मैं तैयार हूं।" महाराज बोले "मैं नहीं ले सकता। इस राज्यके नियमानुसार मेरे दो कर्मचारीही तलाशी लेंगे। जो जो वस्तु तुम्हारे पास मिलेगी वह सब जब तुम यहांसे जाओगे तब लौटा दी जायगी। अगर दाम चाहोगे तो उन सब चीजोंका उचित दाम तुम्हें मिलेगा।" आखिर दो राजकर्मचारी मेरे पास आए। मैं उन दोनोंको हाथमें लेकर क्रमसे जेबोंमें उतारता गया। उन दोनोंने भली भांति अन्वेषण किया। जब काम होगया तब उनको जमीन पर रख दिया। जितनी चीजें मिली थीं सबकी सूची बना कर महाराजको रिपोर्ट सुनाई गई। उस रिपोर्टका अविकल अनुवाद यह है—

"हम लोगोंने 'नर पर्वत' के कपड़ोंका पूर्ण रूपसे अन्वेषण किया। दाहनी ओरकी पाकेटमें मोटे कपड़ेका एक टुकड़ा मिला जो आसानके दरबार हालकी जाजमके बराबर है। बाईं ओरकी पाकेटमें चान्दीका एक सन्दूक था। जिसका ढकना भी चान्दीही का है। यह बहुत भारी है। इसे हम उठा न सके। इसे खोल कर देखनेकी इच्छा हुई। जब खुला तो देखा इसमें कुछ गर्द सी भरी हुई है जिसके उड़तेही हम लोग छींकते छींकते बेदम हो गए। हममेंसे एक उस सन्दूकमें घुसा। वह घुटने तक उस गर्द

में घुस गया। वेष्टकोट की दाहिनी तरफवाले पाकेटमें एकही मगर पतली चीजका एक बड़ासा पुलिन्दा देखा जो मजबूत रस्सीसे बंधा हुआ था। उसमें क्या है सो मालूम नहीं। यह पुलिन्दा तीन पुरुष लम्बा है। इस पर हमारी हथेलीके समान काले काले दाग थे जो सम्भवतः अक्षर होंगे। बांयें पाकेटमें एक प्रकार का एक यन्त्र पाया जिसके एक तरफ बीस बड़ी बड़ी खूंटियां गड़ी हैं। जान पड़ता है 'नर पर्व्वत' इस यन्त्रसे अपना सिर झाड़ता है। यह हमारी बोली अच्छी नहीं समझ सकता था इसलिये हम बहुत सी बातें पूछ न सके। पटलूनकी दक्षिण ओरवाली पाकेटमें लोहेकी एक पोली लाट देखी जो एक पुरुष लम्बी है। यह लकड़ीके एक बड़े कुन्देमें जड़ी है। लाटके एक तरफ लोहेकी अनूठी मूर्तियां बनी हुई हैं। यह क्या है सो हम लोग नहीं जान सके। दूसरी जेबमें भी ऐसीही एक चीज है। दाहिनी ओरवाली छोटी पाकेट में बहुतसे गोल मगर चपटे, छोटे, बड़े, उजले और लाल धातुके टुकड़े थे। जो उजले थे सो चान्दीके मालूम पड़े लेकिन वे इतने भारी थे कि हम दोनों मिल कर भी उन्हें उठा न सके। बाएं जेबमें दो काले काले अनगढ़ खम्भे थे। जब जेबके भीतर खड़े थे तो बड़ी कठिनाईसे उनके सिरे तक पहुंच सके थे। एक तो खोलसे बन्द है और दूसरेके ऊपरवाले छोर पर कुछ गोलसी उजली चीज मालूम पड़ी जो हमारे सिरसे दूनी है। इन दोनोंके भीतर इस्पात के बड़े बड़े मोटे पत्तर बन्द हैं। हमारे कहनेसे 'नर पर्व्वत' ने खोल कर इन दोनों चीजोंको दिखलाया और कहा कि एक तो बाल बनानेकी कल है और दूसरी मांस काटनेकी। दो पाकेटें और थे जिनमें हम लोग नहीं गये। बाहरहीसे देखा पतलूनके ऊपरी भागमें दाईं ओरके खीसेसे चान्दीकी एक जंजीर लटकती है। हमारे कहनेसे उसने जंजीरको बाहर निकाला। देखतेही हम लोग भौचक्केसे रह गये। देखा जञ्जीरके निचले सिरेसे एक गोल पदार्थ बंधा हुआ है। जिसके एक तरफ चान्दी है और दूसरी

तरफ है स्वच्छ पार दर्शक पदार्थ। जिधर स्वच्छ है उधरही अ
अनूठे अक्षर लिखे हैं। उन अक्षरोंको छूना चाहा पर छू न स
स्वच्छ पदार्थसे उंगली टकरा कर रह गई। नर पर्व्वतने उस अ
पदार्थको हमारे कानोंसे लगाया तो हमारे अचरजका ठिकाना
रहा। उसमेंसे टक् टक् शब्द निकलता है। जैसे फुहारेसे
बराबर गिरा करता है वैसेही उसमेंसे भी आवाज निकला कर
है। हम लोग अनुमान करते हैं कि यह एक विचित्र जीव
अथवा नर पर्व्वतका इष्ट देवता। यह पिछली बातही मुझे
प्रतीत होती है क्योंकि नर पर्व्वत इस यन्त्रकी आज्ञा बिना क
कामही नहीं करता है। यह पदार्थ उसे दिन रातकी सूचना दे
है। बायें खीसेसे एक जाल निकला। मछली पकड़नेके जाल
होते हैं यह भी वैसाही है। लेकिन यह बटुएकी तरह खुल
और बन्द होता है। इसमें सोनेके बड़े बड़े बहुतसे सिक्के हैं। य
वास्तवमें यह सोना है तो इसका मूल्य अपरिमित होगा।

महाराजकी आज्ञानुसार हमने नरपर्व्वतके खीसोंका भ
भांति अनुसन्धान किया। जिन चीजोंका वर्णन ऊपर कर
हैं। उनके अतिरिक्त एक वस्तु और देखी। उसकी कमरसे च
ड़ेकी एक पेटी लपटी हुई है जिससे एक लम्बी तलवार बाईं अ
लटकती है। यह तलवार पचीस इञ्च लम्बी है। दाहिनी अ
दो खण्डका एक बेग है। इसके एक एक खण्डमें महाराज
तीन तीन आदमी मजेमें अट सकते हैं। एक खण्डमें भारी भा
बहुतसी गोलियां हैं और दूसरेमें एक तरहका काला अन्न। लेकि
यह भारी नहीं है। पचास दानोंको एक बारही मुट्ठीमें उठा लियाय

नर पर्व्वतके पास जो कुछ चीजें मिलीं या देखीं उनकी स
पूरी सूची है। नर पर्व्वतने हमारे साथ अच्छा बर्ताव किया
महाराजके प्रति विशेष राजभक्ति दिखलाई है। महाराजके
...न समयके महाराजके राज्यके चौथे दिन यह रिपोर्ट लिखी गई

क्लिफ्रिन फ्रेलक
मार्सी फ्रेलक।"

रिपोर्ट सुन कर महाराजने मुख्य चीजें दाखिल करनेके लिये मुझसे अनुरोध किया। जिन जिन पदार्थोको देख कर वे चमत्कृत हुए थे पहले मैं उन्हींका वर्णन करता हूं। दरबार हालकी जाजमसे जिसकी समताकी गई थी वह था मेरा रुमाल। मेरी पिस्तौलहीकी बराबरी लोहेकी पोली लाटसे कीगई थी। सुंघनी की डिबियाहीने सन्दूककी इज्जत पाईथी। बिचारी घड़ी तो साक्षात् देवताही बन बैठी थी।

महाराजने पहले तलवार दिखलानेके लिये कहा। मैंने म्यान समेत तलवार निकाली। महाराजकी आज्ञासे उसी समय चुनी हुई तीन हजार फौज धनुष बाण चढ़ाये मेरे चारों तरफ मगर कुछ दूर हट गई। मेरी दृष्टि तो महाराजकी ओर लगी थी इस लिये उस सुविशाल सैन्यदलको न देख सका। इसकी खबर मुझे पीछे मिली, अस्तु। फिर महाराजने म्यानसे तलवार निकालनेके लिये कहा। मैंने वही किया। यद्यपि समुद्रके जलमें भीगने के कारण कहीं कहीं उस पर मोरचा लग गया था तथापि ज्यादे हिस्सा चमका साफ था। मैं हाथमें लेकर उसी इधर उधर घुमाने लगा। सूर्यकी किरण पड़तेही वह बिजलीसी चमक गई। सब दर्शकोंकी आंखें बन्द होगई, डरके मारे होश उड़ गये। महाराजने म्यानमें रख कर जमीन पर धीरेसे धर देनेके लिये आज्ञा दी। मैंने वही किया। फिर पिस्तौलकी बारी आई। बारूद चमड़ेके तोशदानमें थी इस वास्ते वह भीगनेसे बच गई थी। मैंने पिस्तौलमें केवल बारूद भर कर एक आवाजकी। जिससे सैकड़ों बेहोश होगये। महाराज भी जरा चौंक उठे थे। फिर दोनों पिस्तौल और तोशदान तलवारके साथही रखदिये। महाराजसे यह भी निवेदन कर दिया कि यह बारूद बहुत जोखिमकी चीज है। इसे आगसे बहुत बचाना चाहिये नहीं तो सारा महल एक छनमें उड़ जायगा। महाराज घड़ी देखनेके वास्ते बहुत बेचैन थे। आखिर मैंने घड़ी निकाली। दो आदमी उसे उठा कर महाराज

तरफ है स्वच्छ पार दर्शक पदार्थ। जिधर स्वच्छ है उधरही ... अनूठे अक्षर लिखे हैं। उन अक्षरोंको छूना चाहा पर छू न ... स्वच्छ पदार्थसे उंगली टकरा कर रह गई। नर पर्व्वतने उस पदार्थको हमारे कानोंसे लगाया तो हमारे अचरजका ठिकाना रहा। उससेंसे टक् टक् शब्द निकलता है। जैसे फुहारेसे बराबर गिरा करता है वैसेही उससेंसे भी आवाज निकला करत है। हम लोग अनुमान करते हैं कि यह एक विचित्र जीव अथवा नर पर्व्वतका इष्ट देवता। यह पिछली बातही मुझे प्रतीत होती है क्योंकि नर पर्व्वत इस यन्त्रकी आज्ञा बिना कं कामही नहीं करता है। यह पदार्थ उसे दिन रातकी सूचना देत है। बायें खीसेसे एक जाल निकला। मछली पकड़नेके जाल जै होते हैं यह भी वैसाही है। लेकिन यह बटुएकी तरह खुल और बन्द होता है। इसमें सोनेके बड़े बड़े बहुतसे सिक्के हैं। यदि वास्तवमें यह सोना है तो इसका मूल्य अपरिमित होगा।

षष्ट परिच्छेद।

मेरी नम्रता और सज्जनताके कारण महाराज मुझसे बहुत प्रसन्न रहते थे। राज दरबारके जितने लोग थे सभी मुझसे सन्तु थे। प्रजागणका तो मैं खिलौनाही बन गया था। इन स कारणोंसे मुझे अपने छुटकारेकी बहुत कुछ आशा होने लगी मैं भी सबको खुश रखनेकी कोशिश करता था। चिन्तासे क्रमश मेरा भय भागने लगा। सब ढीठ होचले। पांच पांच छः आदमी टोली बांध कर आते और मेरी देह पर उछलते कूदं नाचते। यहां तक सब निडर होगये कि छोटे छोटे लड़ कि मेरे बालोंमें लुका चोरी खेलने लगे। मैं चुपचा देखता था। अब मैं इनकी भाषा भी अच्छी तरह बो समझने लगा था। एक दिन महाराजने अपने यहां दिखलाये। वस्तुतः ऐसी कुशलता—ऐसी निपुणता— । मैंने कहीं नहीं देखी ! ऐसे तो सभी तमाशे अच्छे

रिपोर्ट सुन कर महाराजने मुख्य चीजें दाखिल करनेके लिये मुझसे अनुरोध किया। जिन जिन पदार्थोंको देख कर वे चमत्कृत हुए थे पहले मैं उन्हींका वर्णन करता हूं। दरबार हालकी कालीनसे जिसकी समताकी गई थी वह था मेरा रुमाल। मेरी पिस्तौलहीकी बराबरी लोहेकी पोली लाटसे कीगई थी। सुंघनी की डिबियाहीने सन्दूककी इज्जत पाईथी। बिचारी घड़ी तो साक्षात् देवताही बन बैठी थी।

महाराजने पहले तलवार दिखलानेके लिये कहा। मैंने म्यान समेत तलवार निकाली। महाराजकी आज्ञासे उसी समय चुनी हुई तीन हजार फौज धनुष बाण चढ़ाये मेरे चारों तरफ मगर कुछ दूर हट गई। मेरी दृष्टि तो महाराजकी ओर लगी थी इस लिये उस सुविशाल सैन्यदलको न देख सका। इसकी खबर मुझे पीछे मिली, अस्तु। फिर महाराजने म्यानसे तलवार निका-

नं० ११
पेटपर एकलात जमाये
पृष्ठ १५४

केपास लेगये। घड़ी देखतेही उनके आश्चर्यका वारापार न था। कांटेकी चाल तथा लगातार टक् टक् शब्दने तो उन्हें आश्चर्यके समुद्रमें डुवा दिया। घड़ीके विषयमें पण्डितोंसे पूछा गया तो किसीने जानवर, किसीने देवता और किसीने क्या बताया सो मेरी समझमें न आया। इसके उपरान्त मैंने रुपये, पैसे, अशर्फि
आ, छुरी, छुरा, कंघी, सुँघनीकीडिबिया, रुमाल और रो
सब महाराजके सामने रख दिया। तलवार, पिस्तौल औ
न महाराजने गाड़ी पर लदवा कर खजानेमें भेज दिये
की चीजें मुझे वापस मिलीं।

एक गुप्त पाकिट और थी जिसकी तलाशी जान बूझ कर मैं
ने न दी। इस पाकिटमें एक जोड़ा चश्मा, जेबी दूरबीन त
ार भी वहुतसी कामकी चीजें थीं। शायद लोग तोड़ फोड़
स इसी ख्यालसे मैंने इन सब चीजोंको गुप्तही रक्खा।

नम्रता और सज्जनताके कारण महाराज मुझसे वहुत
ते थे। राज दरवारके जितने लोग थे सभी मुझसे सन्तु
ग ।...तो मैं खिलौनाही वन गया था। इन स
ोंसे मुझे अपने छुटकारेकी वहुत कुछ आशा होने लगी
सबको खुश रखनेकी कोशिश करता था। चिन्तासे क्रमश
...थ भागने लगा। सब ढीट होचले। पांच पांच छः छः
ी टोली बांध कर आते और मेरी देह पर उछलते कूदते
नाचते। यहां तक सब निडर होगये कि छोटे छोटे लड़के
। लड़कियां मेरे वालोंमें लुका चोरी खेलने लगे। मैं चुपचाप
ड़ा पड़ा देखता था। अब मैं इनकी भाषा भी अच्छी तरह बो-
ने और समझने लगा था। एक दिन महाराजने अपने यहांके
ल तमाशे दिखलाये। तमाशे ऐसी कुशलता— ऐसी निपुणता –
ी चतुरता मैंने कहीं नहीं देखी। ...ये सभी तमाशे अच्छे

नं० ११

पेटपर एकलात लमावे।

पृष्ठ १५४

बेपाग होगये। घड़ी देखनेही उनके आश्चर्यका वारापार न
कांटेकी चाल तथा लगातार टक् टक् शब्दने तो इन्हें पार
समुद्रमें डुबा दिया। घड़ीके विषयमें पण्डितोंसे पूछा गय
किसीने जानवर, किसीने देवता और किसीने यन्त्र बताया सो
समझमें न आया। इसके उपरान्त मैंने रुपये, पैसे, अशर्फि
बटुआ, छुरी, छुरा, कंघी, सुंघनीकी डिबिया, रूमाल और
नामचा महाराजके सामने रख दिया। तलवार, पिस्तौल
तोशदान महाराजने गाड़ी पर लदवा कर खजानेमें भेज दि
बाकी चीजें मुझे वापस मिलीं।

एक गुप्त पाकिट और थी जिसकी तलाशी जान बूझ कर
होने न दी। इस पाकिटमें एक जोड़ा चश्मा, जेबी दूरबीन
और भी बहुतसी कामकी चीजें थीं। शायद लोग तोड़ फो
बस इसी ख्यालसे मैंने इन सब चीजोंको गुप्तही रक्खा।

षष्ट परिच्छेद।

मेरी नम्रता और सज्जनताके कारण महाराज मुझसे बहुतही प्रसन्न रहते थे। राज दरबारके जितने लोग थे सभी मुझसे सन्तुष्ट थे। प्रजागणका तो मैं खिलौनाही बन गया था। इन सब कारणोंसे मुझे अपने छुटकारेकी बहुत कुछ आशा होने लगी। मैं भी सबको खुश रखनेकी कोशिश करता था। चिन्तासे क्रमशः मेरा भय भागने लगा। सब ढीठ होचले। पांच पांच छः छः आदमी टोली बांध कर आते और मेरी देह पर उछलते कूदते और नाचते। यहां तक सब निडर होगये कि छोटे छोटे लड़के और लड़कियां मेरे बालोंमें लुका चोरी खेलने लगे। मैं चुपचाप पड़ा पड़ा देखता था। अब मैं इनकी भाषा भी अच्छी तरह बोलने और समझने लगा था। एक दिन महाराजने अपने यहांके खेल तमाशे दिखलाये। वस्तुतः ऐसी कुशलता—ऐसी निपुणता—ऐसी चतुरता मैंने कहीं नहीं देखी! ऐसे तो सभी तमाशे अच्छे

नं० ११
पेटपर एकलात जमावे।
पृ० १५४

थे लेकिन "रज्जु-नृत्य" यानी डोरी परका नाच मुझे बहुतही भाया। एक फुट ऊँचे दो खम्भे (नहीं खूँटी) जमीनमें गाड़ कर उनमें दो फुट लम्बा अलसा धागा बांध दिया जाता है। बस इसी धागे परके नाचका नामहै "रज्जु-नृत्य"। इस नाचका पूरा विवरण मैं सुनाता हूँ आशा है पाठकगण ध्यानसे सुनेंगे।

जो भारी भारी कामोंके अभिलाषी हैं अथवा जो महाराजके कृपा पात्र बना चाहते हैं वही यह नाच नाचते हैं। उच्च पद पानेके लिये बस इसी रज्जु-नृत्यमें पटु होना चाहिये—विद्या या कुलीनताकी कुछ आवश्यकता नहीं है। यह नाच बालेपनहीसे सिखाया जाता है। किसी उच्च पदस्थ राजकर्मचारीके मरने या पदच्युत होने पर पांच छः उम्मेदवार अपना अपना नाच दरबारको दिखाते हैं। जो बढ़िया नाचता या जो बिना गिरे पड़े खूब कूदता है वही उस पदको पाता है। राज्यके प्रधान प्रधान मन्त्री भी अक्सर इसी प्रकार नृत्य कर महाराजको जता देते हैं कि अभी तक वह अपनी निपुणताको नहीं भूले हैं। खजानचीको सब अफसरोंसे कमसे कम एक इञ्च अधिक कूदना पड़ता है। मैंने अपनी आंखोंसे उनको डोरी पर तलवार रख कर कलाबाजी करते देखा है। इस नाचमें खजानचीके बाद महाराजके प्राइवेट सिकत्तर मेरे परममित्र रेलड्रेसलहीका नम्बर था। और बाकी सब समान थे।

इन खेलोंमें अक्सर आदमी मरते भी हैं। सरकारी कागजों में अनेक दुर्घटनाओंका उल्लेख है। मेरे सामनेही दो तीन उम्मेदवारोंकी हड्डियां टूटी थीं। बड़े बड़े अफसर लोग जब नाचनेके लिये खड़े किये जाते हैं तभी दुर्घटनाकी विशेष सम्भावना रहती है क्योंकि ये लोग ईर्षावश बड़ाई पानेके लिये जान पर खेल जाते हैं। बस इसीसे इनकी जान भी जाती है। और गिरना पड़ना तो एक मामूली बात है। सुननेमें आया कि दो वर्ष पहले खजानची साहेब नाचते नाचते गिर पड़े सौभाग्यसे नीचे महाराजकी

गही बिछी हुई थी इसीसे बचभी गये नहीं तो उसी चण उ
काम तमाम होजाता।

एक खेल और है जो महाराज, महारानी और प्रधान म
के सिवाय दूसरा कोई नहीं देख सकता—सोभी बराबर नहीं
कभी किसी खास मौके पर होता है। महाराज छः छः इञ्चके
पतले रेशमी डोरे मेज पर रख देते हैं जिनमें एकतो नीला, दू
लाल, और तीसरा हरा होता है। जो बाजी मार लेता है
को महाराज सन्तुष्ट होकर ये डोरे इनामके बतौर देते हैं।
महलके बड़े कमरेमें यह तमाशा होता है। खेलनेवालोंको अ
अपना कौशल दिखलाना पड़ता है। रज्जू-नृत्यसे इसका
निरालाही है। ऐसा कौशल तो पृथ्वी पर मैंने कहीं नहीं दे
महाराज छड़ीको सामने तान कर खड़े होते हैं और खेलनेवाले
एक एक करके उस छड़ीको उछल कर लांघ जाते हैं। कभी
नीचेसे निकल जाते और कभी इधर आते कभी उधर जाते
महाराज भी छड़ीको कभी ऊपर उठाते और कभी नीचे गिराते
बस इसी छड़ीके इशारे पर खेल होता है। कभी कभी छड़
एक सिरा महाराजके हाथमें और कभी दोनोंही मन्त्रीके हा
रहते हैं। जो इस उछल कूदमें अव्वल होता उसे नीला, दू
होता उसे लाल और तीसरा होता उसे हरा डोरा मिलता है।
डोरे करधनीकी तरह कमरमें पहने जाते हैं। ऐसे वहां बहुत
लोग हैं जिनकी कमरमें ऐसी एक भी करधनी न हो।

फौजी तथा महाराजके अस्तबलके घोड़े रोज मेरे पास
जाते थे। आते आते वे सब ढीठ होगये। अब मुझे देख क
नहीं भड़कते थे। अब वे मजेमें पैरके पास चले आते थे। मैं अ
हाथ धरती पर रख देता तो सवार लोग बड़ी फुर्तीसे घोड़े स
से फांद जाते। एक दफे एक शिकारी बड़ी चालाकीसे मेरे
घोड़े समेत फांद गया था। लेकिन ताज्जुब तो यह है
समय मेरे पैरोंमें जूते भी थे। एक दिन मैंने एक अनूठे खे

रूमाल पर कृत्रिम युद्ध।
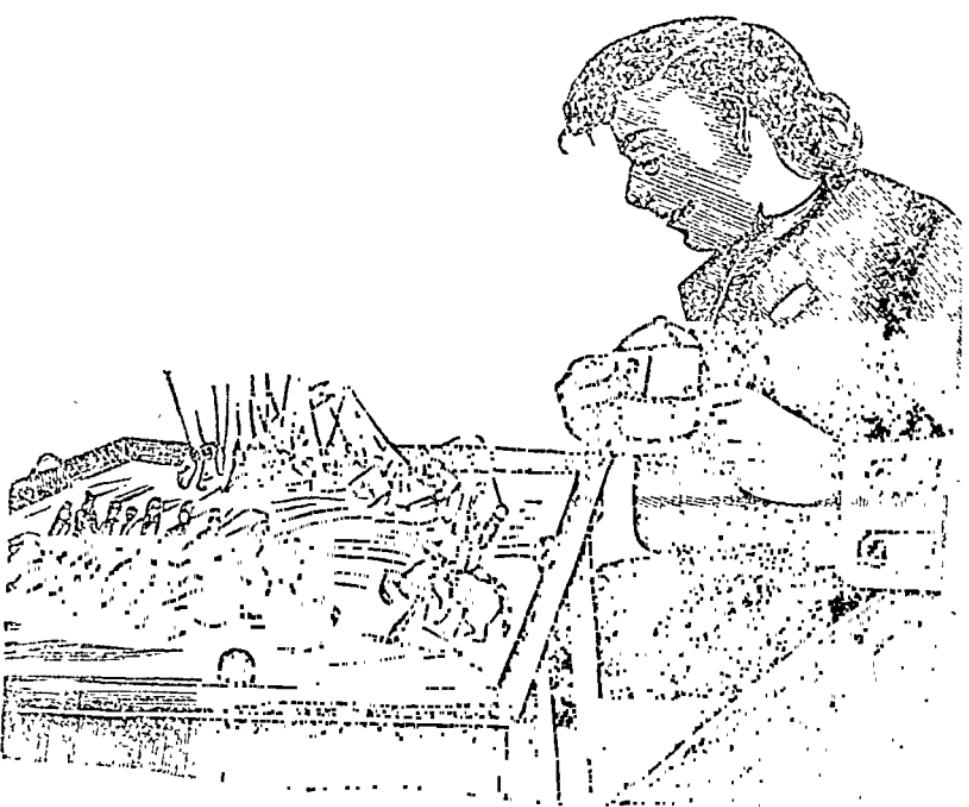
महाराजको खूब ही पसन्द किया था। मैंने बहुतसे खूंटे मंगवाये। दो दो फुट लम्बे नौ खूंटे जमीनमें गाड़ दिये। चौकोर जमीनके चारों ओर ये खूंटे गाड़े गये थे। इसका क्षेत्र फल था अढ़ाई वर्ग फुट। फिर खूंटोंके ऊपर चारों तरफ चार डण्डे मजबूतीसे बांध दिये गये। उन्हीं खूंटोंसे अपने रूमालको खूब कसकर बांध दिय फिर चारों ओर खेंचनेसे रूमाल बिलकुल तन गया तनकभी सिकुड़न न रही। जान लेना चाहिये कि यह रूमाल ऊपरवाले चारों डण्डोंसे पांच इञ्च नीचेकी ओर बांधा था बस इन्हींसे डण्डे मुंडेरीका काम देते थे। जब सब ठीक ठाक होगया तब मैंने महाराजसे आज्ञा लेकर चौबीस चुने हुए सवारोंको उनके अफसर सहित उस रूमाल पर डाल कर कवायद करनेके लिये कह दिया। यह सब अस्त्र शस्त्रसे सुसज्जित थे। उस रूमाल पर दो हिस्से होकर वह सब अन्तिम युद्ध करने लगे। खूब घमसानकी लड़ाई हुई। महाराज इस खेलसे बहुतही प्रसन्न हुए। कई रोज यह तमाशा हुआ था। ईश्वरकी कृपासे इस खेलमें कोई दुर्घटना नहीं हुई। केवल एक दिन एक भडकीले घोड़ेकी टापसे रूमालमें छेद होगया था परन्तु कुछ हानि नहीं हुई।

दो तीन दिनके बाद एक जासूसने आकर महाराजसे निवेदन किया "कृपानिधान! कई आदमी घोड़े पर चढ़े जारहे थे अकस्मात् उनकी दृष्टि एक काली गोल चीज पर जापड़ी जिसका घेरा महाराजके शयनगृहके समान तथा ऊंचाई एक पुर्सा है। पहले तो सबने समझा कि कोई जीव जन्तु है पर पीछे मालूम हुआ कि निर्जीव पदार्थ है क्योंकि आदमियोंको देखकर वह हिला तक नहीं। फिर एकके ऊपर एक चढ़के उसके सिरे तक सब पहुंचे। ऊपरी भागके भीतर धंस जानेसे मालूम हुआ कि वह भीतरसे पोला है। तब सबने अनुमान किया कि हो नहो यह "नर पर्वत" ही की कोई चीज है क्योंकि जहां वह पकड़ा गया था वहीं वह भी पड़ी है। महाराजकी अगर इच्छा हो तो वह सब उसे यहां

ला सकती हैं।" मैंने उसके मंगवानेके लिये महाराजसे अनुरोध किया। उन्होंने भी आज्ञा दे दी। आखिर वह अनूठी चीज आ पहुँची; सहजमें नहीं पांच घोड़े उसे खींचकर लाये थे। देखा तो मालूम हुआ कि मेरी टोपी है। समुद्रमें तैरनेके समय मैंने उसे डोरीसे बांध लिया था पर फिर वह कहां गिर पड़ी सो मालूम नहीं। टोपी आई सही लेकिन बिलकुल विछिन्न भिन्न थी। क्योंकि रथवा तो घसीट कर लाई गई, दूसरे छेद करके उसमें डोरी बांधी गई थी।

इस घटनाके दो दिन बाद महाराजने एक और विचित्र तमाशा देखा। महाराज मुझसे बोले "तुमसे जहां तक होसके पांव फैला कर सीधे खड़े होजाव। मेरी कुछ फौज जो यहांहै कायदे के साथ तुम्हारे दोनों पैरोंके बीचमें निकल जायगी।" मैं पांव फैलाकर खड़ा हुआ। घुड़सवार सोलह २ और पैदल चौबीस चौबीसकी पांती बांध कर ध्वजा पताका उड़ाते डङ्का पीटते मेरे पैरोंके बीचसे निकल गये। कुल पलटन चार हजार थी। महाराजका हुक्म था कि जानेके समय कोई ऊपर न देखे परन्तु दो एक मन चले और रसिक सिपाहियोंने इस हुक्मको ताक पर रखदिया था। पुराना होनेके कारण मेरा पतलून कुछ फट गया था। सो ज्योंही ये लोग पैरोंके बीचोंबीच पहुंचे त्योंही ऊपर देख कर अचम्भेके साथ हंस पड़े॥

एक बहुत जरूरी बात कहनेसे भूलही गया था। वह यह कि जिस देशकी कथा मैं कह रहा हूं अथवा यों कहिये कि जहां मैं आ फंसा हूं उसका नाम "लिलीपट" है और वहांके निवासी मुझे "नर पर्व्वत" कहते हैं।

मैंने अपनी स्वाधीनताके लिये महाराजकी सेवामें इतने प्रार्थना भेजे कि उनका भी चित्त पिघल उठा। आखिर एक सभा सबको राय लीगई। सबने मेरे ही पक्षमें राय दी। केवल एक जिसका नाम "स्कायरेसवलगुलाम" था अकारणही

[illegible] और [illegible] समझाये थे। नर पर्वतको जो इस स्वर्गीय शक्तिसे भारी [illegible] है, अतएव इस प्रकार निम्नलिखि नियमावली पालन करनेके निमित्त बाध्य किया है।

(१) 'नर पर्वत' को हमारी आज्ञाके बिना कदापि इस रा के बाहर कहीं नहीं जाना चाहिये।

(२) 'नर पर्वत' को हमारी प्रकाश्य अनुमतिके बिना कदा राजधानीके भीतर आनेका साहस न करना चाहिये। यदि उ आनेकी आवश्यकता समझी जायगी तो दो घण्टे पहले नग निवासियोंको सूचना देदी जायगी कि आज नर पर्व्वत शहरमें आता है कोई आदमी घरसे बाहर न निकले।

(३) यह नर पर्व्वत केवल बड़ी बड़ी सड़कोंही पर घूम सकता है। मैदानमें जहां मवेशी चरते हैं या खेतोंमें, यह न टहल सकता न सो सकता है।

(४) नर पर्व्वतको बड़ी बड़ी सड़कों पर भी खूब सचेत होकर चलना चाहिये जिससे हमारी प्यारी प्रजा या उसके घोड़े, गा ड़ियां आदि पैरके नीचे न कुचल जायें। इसके अतिरिक्त हमारी प्रजाओंमेंसे किसीको भी उसकी मरजीके बिना हाथमें उठाना न चाहिये।

(५) अगर कहीं कोई जरूरी खबर जल्द भेजनेकी दरकार हो तो नर पर्व्वत दूत और उसके घोड़ेको जेबमें धरके हर एक चन्द्र एक बार छः दिनका सफर तय करेगा। और जरूरत हुई तो कुशल पूर्वक दूत को घोड़े समेत वापस ले आवेगा।

(६) हमारे शत्रु ब्लेफस्कूके राजासे युद्ध उपस्थित होने पर न पर्व्वतको हमारी सहायता करनी पड़ेगी। शत्रु लोग हम प आक्रमण करनेके लिये जङ्गी जहाज तैयार कर रहे हैं। अतए ॰ पर्व्वतको उचित है कि उनको नष्ट भ्रष्ट करनेकी यथा साध्य करे।

(७) नर पर्वतको छुट्टीके समय भारी भारी पत्थर रखने तथा

गाड़ी इमारतोंकी दीवारों पर चढ़ा कर कुलियोंको मदद करनी चाहिये।

(८) नर पर्व्वत दो चन्द्रमें हमारे राज्यकी परिधि अपने डगोंसे नाप कर ठीक करदे।

(८) नर पर्वत ऊपर कहे हुए नियमोंको पालन करनेके लिये यदि धर्म्मकी सौगन्द खायगा तोउसे खाने पीनेके लिये रोज १७२४ आदमियोंकी खुराक मिला करेगी, वह जब चाहेगा महाराजसे बिना रोक टोक मिल सकेगा और हम लोगभी सब तरहसे उसको अपना कृपा पात्र समझा करेंगे। हमारे राजत्वकालके ८१ वें वर्ष के बारहवें दिन यह आज्ञापत्र 'वेल्फाबोराक' प्रासादमें लिखा गया।"

बहुतसाने दुष्टतासे कईशर्तें खराब लिख दीथीं परन्तु स्वाधीनताके लालचसे मैंने सबको स्वीकार कर लिया। ये सब काम होजाने पर मेरी बेड़ी काटी गई। ईश्वरके अनुग्रहसे मैंने स्वतन्त्रता पाई। महाराज भी उस समय वहीं उपस्थित थे। मैंने श्रीमान् के चरणोंमें साष्टाङ्ग प्रणाम किया। श्रीमान्ने प्रसन्न होकर मुझसे उठनेके लिये कहा। मैं भी चट पट उठ खड़ा हुआ। बहुतसी बातें कहनेके बाद श्रीमान्ने अन्तमें यों कहा "मैं आशा करता हूं तुम सदा मेरे आज्ञाकारी बने रहोगे और जो कुछ तुम्हारा आदर सत्कार किया गया है या आगे किया जायगा उसके अधिकारी तुम अपनेको बनाए रक्खोगे।"

कुछ दिनके बाद मैंने अपने एक मित्रसे पूछा कि निलीपटके १७२४ आदमी जितना खा सकते हैं उतनाही मुझे खानेके लिये मिलेगा इसका क्या कारण है तो उन्होंने कहा कि महाराजके हिसाबियोंने हिसाब लगाकर यह संख्या बताई है। हिसाबियोंने यन्त्र द्वारा पहले मेरी ऊंचाई नापली पीछे हिसाब फैलाया तो मालूम हुआ कि मैं उनसे (लिलीपटवासियोंसे) बारह गुना लम्बा हूं। परन्तु मेरे और उनके शरीरकी बनावट एकही सी थी ल्ल।-

एव हिसाबियोंने हिसाब लगाया कि कमसे कम १७२४ * आदमी तो जरूरही मेरे बराबर होंगे। बस इसी लिये इतने आदमियोंकी खुराक मेरेवास्ते काफी समझी गई। पाठकगण! इतनेहीसे आप लोग वहांके निवासियोंकी विद्वता तथा महाराजकी बहुदर्शिता और सावधानता समझ सकते हैं।

स्वाधीनता पानेके बादही मुझे राजधानी देखनेकी लालसा हुई।

सप्तम परिच्छेद।

अब मैं स्वाधीन हूं। स्वाधीनता पानेके बादही मुझे राजधानी देखनेकी लालसा हुई। प्रार्थना करने पर महाराजने अनुमति भी दे दी पर चेता दिया कि खबरदार! पुरजनोंको अथवा उनके मकानोंको किसी प्रकारकी हानि न पहुंचाना। मेरे नगर भ्रमण का विज्ञापन सारे शहरमें ढिंढोरा पीट कर दिया गया। सबको घरसे बाहर निकलनेकी मनाही हुई। सब प्रबन्ध ठीक होजाने पर मैं नगर देखनेके लिये निकला। नगरकोटकी दीवार अढाई फुट ऊंची और करीब ग्यारह इञ्च चौड़ी है इस पर एक घोड़ा गाड़ी मजेमें चल सकती है दस दस फुट पर एक एक गुम्बज है। पश्चिम दरवाजेसे मैंने नगरमें प्रवेश किया। मैं सिर्फ फतूही पहने था। कोटके दामनके झटकेसे शायद छतों और छज्जोंको हानि पहुंचे इसी खयालसे मैंने कोट फोट कुछ नहीं पहना। यद्यपि महाराजकी कड़ी आज्ञाके कारण सब नगर निवासी अपने अपने घरोंमें घुसे थे तथापि मैं बड़ी सावधानीसे फूंक फूंक कर पांव रखता। छतों पर और छज्जों पर ठसा ठस भीड़ थी। मैं बहुत देश देशान्तरोंमें घूम चुका हूं पर ऐसी आबादी कहीं नहीं देखी। [illegible] बनावट चौकोर है। नगर कोटकी चारों दीवारें पांच [illegible] लम्बीहैं पांच पांच फुट चौड़ी दो बड़ी बड़ी सड़कोंहैं जो

[illegible] पदार्थका घनफल निकालनेके लिये घन किया जाता [illegible] ×१२×१२=१७२८।

ारे शहरको चार हिस्सोंमें बांटे हुएहैं। छोटी छोटी गलियोंमें मैं नहीं गया—बाहरहीसे देखा। उनकी चौड़ाई डेढ फुटसे ज्यादे न थी। पांच लाख आदमी इस शहरमें रह सकते हैं, मकान भी तीन मञ्जिलसे लेकर पांच मञ्जिले तक देखनेमें आये। बाजार बहुत सुन्दर और दुकानें खूब सजी थीं।

राजधानीका नाम 'मिलडेण्डी' है। नगरके ठीक बीचमें महाराजका राजमहल है। यहीं पर दोनों सड़कें आपसमें मिली हैं। राजमन्दिरसे बीस फुटकी दूरी पर चारों तरफदो फुट ऊंची दीवार है इस दीवार पर चढनेकी मुझे आज्ञा थी। मैं इस पर चढ़ गया। दीवारसे राजमन्दिर इतने फासले पर था कि मैं सब तरफकी चीजें देख सकता था। बाहरी चौक ४० फुटका था। दो चौक और थे फिर भीतर राजभवन था। इसको देखनेकी मुझे बहुत लालसा हुई पर देख न सका क्योंकि सदर फाटककी ऊंचाई डेढ फुट और चौड़ाई सातही इञ्च थी। बाहरका कोई मकान पांच फुटसे ज्यादे ऊंचा न था। अगरचे दीवालें पत्थरकी चार इञ्च चौड़ी थीं तो भी उन पर कूद कर चढ़ जाना असम्भवही था क्योंकि ऐसा करनेसे वह जरूर टूट फूट जातीं। महाराजकी भी आन्तरिक इच्छाथी कि मैं राजमन्दिरको शोभा देखता पर लाचारी थी। मैं अपने डेरे पर लौट आया और उपाय सोचने लगा। सोचते सोचते उपाय निकल आया। सवेरा होतेही मैं सरकारी जङ्गलमें सौ हजार गज दूर आ गया। वहां मैंने चुन चुन कर बड़े बड़े पेड़ोंको छुरीसे काट गिराया। फिर उन्हीं लकड़ियोंसे तीन तीन फुट ऊंचे दो मजबूत टूल बनाये। तीसरे दिन पुनः शहरमें ढिंढोरा पीटा गया। मै दोनों टूलोंको हाथमें लटकाए पुनः राजमन्दिरकी ओर चला। जब पहले चौकके अहातेके पास पहुंचा तो एक टूल पर तो मैं खड़ा होगया और दूसरेको छतके ऊपरसे उठाकर पहले और दूसरे चौकको बीचवाली जमीन पर जिसकी चौड़ाई आठ फुटथी आहिस्तेसे रख दिया। फिर छतको लांघ कर दूसरे टूल पर

आरहा और पहलेको आंखाड़ेसे उठा कर आगे रख दिया। इसी प्रकारसे मैं अन्तःपुरमें जा घुसका। बीचवाले कमरेकी खि- ड़कियोंके सामने मुंह करके मैं लेट गया। खिड़कियां खुली थीं। अहा, भीतर कैसी अनिर्वचनीय सजावट थी! महा- रानी और महाराज कुमार अपने अपने कमरेमें सहेली और स- के साथ विराजमान थे। महारानी कृपा कटाक्षसे मुझे हेर जरा मुस्कुरा उठीं और फिर चूमनेके लिये अपना हाथ ... कर दिया। मैंने उसे चूमा। बस इस तरह सारा राजभवन दे- भाल कर मैं अपने डेरे पर वापस आया।

स्वाधीनता पानेके पन्द्रह दिन बाद एक रोज सवेरे महाराज- सिक्रत्तर 'रेलड्रेसल' मेरे पास आया। साथमें केवल एकही ... था। गाड़ी कुछ दूर अलग खड़ी हुई। उसने मेरे साथ ... बात चीत करनी चाही। एक तो वह भला मानस दूसरे मेरा ... हितैषी—राजसभामें इसने मेरा बहुत कुछ उपकार किया था—इसलिये मैंने उसकी बात मानली। मैं लेट गया जिसमें वह ... बातें मेरे कानों तक पहुंचे परन्तु उसने कहा "नहीं, मुझे आप हाथहीमें उठालें और कानके पास लेजांय।" मैंने वही किया। पहले तो उसने मेरे छुटकारे पर आनन्द मनाया फिर कहा "अ... हम लोगोंका भी काम जल्द पूरा होना चाहिये। हमारे राज्य- की आज कल जैसी दशा है अगर वैसी न होती तो आपका इतनी जल्दी छूटना असम्भवही था। बाहरवाले चाहे हम लोगोंको अच्छी दशामें समझें परन्तु वास्तवमें आज कल हम लोगोंकी दशा बहुत ही खराब है। दो बड़ी आफतोंके मारे हम लोगोंका नाकोंदम है। एक तो आपसका विरोध और दूसरे बाहरके एक प्रबल शत्रुके आक्रमणकी आशङ्का - बस इन्हीं दो बातोंसे आजकल हम लो- ... ान हैं—अक्ल ठिकाने नहीं है मारे चिन्ताके चित्त ... है ... सके विरोधका कारण सुनिये। सत्तरचन्द्रसे भी ज्यादे ... दो विरोधी दल खड़े हुए हैं। एकका नाम है '...

ौर दूसरेका 'स्लामिकसन'। इन दोनोंमें केवल जूतेकी एड़ियों का ही भेद है। 'ट्रामिकसन' दलवालों के जूतोंकी एड़ियां ऊंची होती है और 'स्लामिकसन' की नीची। प्राचीन प्रथाके अनुसार ऊंची एड़ीवालेही माननीय हैं किन्तु वर्त्तमान महाराज नीची एड़ी वालोंके प्रेमी हैं। महाराजकी इच्छा है कि सब राजकर्मचारियोंके जूतोंमें एड़ियां नीचीहीं बल्कि महाराजने तो अपने जूतेकी एड़िया सबकी अपेक्षा एक 'डर' कम रखी हैं। एक इंचके चौदहवें हिस्सेको 'ड्रर' कहते हैं। यह विरोध इतना बढ़ गया है कि दोनों दलवाले न सङ्ग खाते हैं न पीते हैं और न आपसमें बात चीत करते हैं। एक दूसरेके जानो दुश्मन बन बैठे हैं। ऊंची एड़ीवाले गिनतीमें बहुत हैं पर जोर इसी लोगोंका ज्यादे है। परन्तु युवराज ऊंची एड़ीके तरफदार हैं। हम लोगोंने देखा है कि उनका एक जूता तो ऊंची एड़ीका और दूसरा नीची एड़ीका है। इसीसे उनकी चाल भी कुछ टेढी पडती है। इसी आपसके झगड़े के समयमें ब्लेफस्कूका महापराक्रमी राजा हम लोगों पर चढ़ाई करनेवाला है। उसका राज्य भी हमारे राज्यके बराबर है और वह भी हमारे महाराजके समान प्रतापशाली है। आपने एक बार कहा था कि इस संसारमें और भी बहुत बड़े बड़े राज्य और उसमें आपके जैसे विराट् पुरुष वास करते हैं परन्तु हमारे पण्डितगण इन बातोंका विश्वास नहीं करते। वह कहते हैं कि संसारमें लिलीपट और ब्लेफस्कूके सिवाय और कोई राज्यही नहीं है। क्योंकि छः सौ चन्द्रके इतिहासोंमें भी किसी तीसरे राज्यका नाम नहीं आया है। उन लोगोंने अनुमान किया है कि आप चन्द्रलोकसे अथवा किसी नक्षत्रलोकसे यहां आपड़े हैं। आपसे अगर सौ आदमी यहां आजावें तो थोड़ेही दिनोंमें यहांके सब फल मूल और पशु साफ होजावें। अच्छा मैं क्या कहता था— हां छत्तिसचन्द्रसे इन दोनों राज्योंमें घोर युद्ध चल रहा है। इस युद्धका कारण भी सुन लीजिये। अण्डा खानेके समय सब कोई

कुछ लगाव पाया जाय तो उसे प्राण दण्ड दिया जाता है। जहा-
जोंको आवा जाई एक दम बन्द होजाती है।

गुप्तचरोंने आकर कहा कि दुश्मनोंके जङ्गी जहाज उस पा-
बन्दरगाहमें आपहुंचे हैं। सुन्दर हवा पातेही वह लोग लङ्गर उठा
देंगे। यह खबर सुनकर मैंने महाराजसे अपने मनकी बात कह
फिर होशियार मल्लाहोंसे समुद्रकी गहराईकी बाबत पूछा तो मा-
लूम हुआ कि बीचमें तो ज्वारके समय प्रायः छः फुट जल हो जाता
है लेकिन बाकी तमाम चारही फुट जल रहता है। मल्लाह लो-
अकसर समुद्रका जल नापा करते हैं इसी लिये यह बात उनसे
पूछी गई थी। ये सब बातें पूछ ताछ कर मैं समुद्रके पूर्वोक्त
तटकी ओर गया। वहां एक छोटीसी पहाड़ीके पीछे लेट कर
दूरबीन लगाई तो देखा दुश्मनोंके पचास जङ्गी तथा और कई अस-
बाब ढोनेके जहाज लङ्गर गिराये खड़े हैं। ये रूव देख भाल कर
मैं लौट आया। फिर बड़े बड़े रस्से तथा लोहेके छड़ मंगवाये।
रस्से तो सुतलीके समान और छड़ मोजा बिननेकी सूईके बराबर
थे। मैंने उन सबको मजबूत बनानेके लिये तेहरा किया। फिर
छड़ोंको मोड़ कर बंसीसा बना लिया। पचास रस्सोंमें एक एक
बंसी बांध कर मैंने पुनः समुद्राभिमुख प्रस्थान किया। वहां पहुंच
कर कोट जूता और मोजे उतार दिये अपने चमड़ेवाले कोटको
पहन कर समुद्रमें कूद पड़ा। ज्वार आनेको आधा घण्टा बाकी
था। बहुत तेजीके साथ मैं जाने लगा। बीचमें लग भग तीस
गज तैरना पड़ा। फिर जल कम था इससे पांव पांव गया।
आधे घण्टेके भीतरही मैं जहाजोंके पास जा पहुंचा। जहाजवाले
मुझे देखतेही डरके मारे समुद्रमें कूद पड़े। और जल्दी जल्दी
... कर किनारे पर जा पहुंचे। वहां तीस हजारसे कम आदमी न
थे। जब जहाजवाले सब भागगये तो मैंने चटपट हर एक जहाजके
... छेदमें एक एक बंसी लगादी और सब रस्सोंको इकट्ठा कर
... दे दी। इधर शत्रुगण दना दन मुझ पर बाण वृष्टि कर रहे

।। पर मैं इसकी कुछ भी परवाह न कर अपना काम करता जाता था। जब वह सब मुंहमें तीर मारने लगे तब मैंने अपना चश्मा जो पाकिटमें था निकाल कर आंखों पर लगा लिया। अगर चश्मा न लगता तो काम भी न कर सकता और आंखें भी फूट जातीं। जब सब काम ठीक होगया तब मैंने रस्सोंको जोरसे खेंचा लेकिन एकभी जहाज अपने ठिकानेसे न हिला। क्योंकि सबके सब मजबूत लङ्गरोंसे बंधे थे। बस मैंने जेबसे छुरी निकाल कर सब लङ्गरोंको काट डाला। फिर क्या था? एकही झटकेमें सब जहाज चल पड़े बस आगे मैं और पीछे पीछे जहाज थे।

ब्लेफस्कूवाले पहले तो मेरा असल मतलब न समझ सके केवल आश्चर्यके मारे घबड़ाये गये थे। जब मैं लङ्गरोंको काटने लगा तो उन लोगोंने समझा कि मैं जहाजोंको केवल तितर बितर करना चाहता हूं परन्तु जब उन्होंने मुझे रस्सा खेंचते और जहाजोंको एक पांतोमें जाते देखा तबतो उनका माथा ठनका। अब वह करही क्या सकतेथे? हताश होकर दुःखसे डाढें मार कर रोने लगे। उस समयके दृश्यको वर्णन करना मेरी शक्तिके बाहर है। जब कुछ दूर निकल आया और अपनेको निरापद पाया तब ठहर कर हाथ और मुंहमें चुभे हुए तीरोंको निकाल डाला और उसी मरहमको जिसका जिकर आगे आचुकाहै सब जगह लगालिया। चश्मा उतार कर जेबमें रक्खा। ज्वार आगई थी। इसलिये एक घण्टा ठहरना पड़ा। जब ज्वारका जोर घटा तब पांव पांव चलना शुरू किया। बस सब जहाजोंको लिये मैं निर्विघ्न लिलीपटके राजबन्दरमें आपहुंचा।

इस मुहिमका नतीजा—इस दुःसाहसिक कार्य्यका फल देखनेके लिये महाराज मन्त्रियोंके सहित किनारे पर उपस्थित थे। उन्होंने दूरहीसे पोतसमूहको अर्धचन्द्राकारसे आगे बढ़ता हुआ देखा पर मुझे नहीं। क्योंकि उस समय मैं छाती भर जलमें था। जब मैं बीच समुद्रमें आया तो जल गर्दनके बराबर था। महाराज मुझे न देख

और भी घबराये। उन्होंने समझ लिया कि मैं डूब गया औ
दुश्मन लोग लड़नेके लिये आरहे हैं। पर थोड़ीही देरमें उनः
सब चिन्तायें जाती रहीं। ज्यों ज्यों मैं आगे डग उठाता था त्यों त
समुद्रकी गहराई भी घटती जाती थी। जब मैं बहुत निकट
पहुंचा तब जोरसे कहा "महाराजकी जय।" अब आनन्द
क्या ठिकाना था? जब मैं ऊपर आया तो महाराज बड़े आनन्द
साथ मुझसे मिले। मेरी बहुतसी प्रशंसाकी। उसी घड़ी मु
"नर्डन" की उपाधि मिली। यह वहांकी सबसे बड़ी तथा सम्म
सूचक उपाधि है।

ये सब काम होजाने पर महाराजने मुझसे कहा "दुश्मने
बाकी जहाज भी मौका पाकर लेआना" ओफ़! महाराजोंके लं
का कुछ ठिकाना है! इतने पर भी तृप्ति नहीं! ब्लेफस्कु
राज्य अपने अधीन करना विद्रोहियोंका दमन करना—सम
प्रजासे छोटे सिरेकी ओर अण्डे फुड़वाना और समस्त संसार
एक छत्र राज्य करनाही महाराजकी हार्दिक इच्छा है! बस इ
इच्छाओंको पूर्ण करनेके लिये महाराज कमर कसे बैठे हैं! अ
र्निश इसीकी चिन्ता है! महाराजकी इच्छा पलटनेके लिये
बड़ी बड़ी चेष्टायेंकीं। न्यायसे, नीतिसे, युक्तिसे महाराजको ब
समझाया पर वह न समझे। तब मैंने खुलासा कह दिया कि
एक स्वाधीन तथा वीर जातिको गुलाम बनानेका कारण न
हूंगा। जब राज-सभामें इसकी चर्चा चली तो जितने विज्ञ त
चतुर पुरुष थे मेरीही बातोंका अनुमोदन करने लगे।

महाराजके विरुद्ध होतेही मेरे सिर आफतका टोकरा आपः
जो कुछ मैंने कहा वह महाराजकी नीति तथा इच्छाके विल
विपरीत था। खुल्लम खुल्ला महाराजकी बात काट कर मैंने
भूलकी। महाराज मनमें मुझसे बहुतही रुष्ट हुए। उन्होंने
भूलको नहीं माफ करनेकी ठानली। लेकिन सभामें इस बात
से ढङ्गसे कहा कि चतुरोंने तो चुप होकर मेरी तरफ़दारी
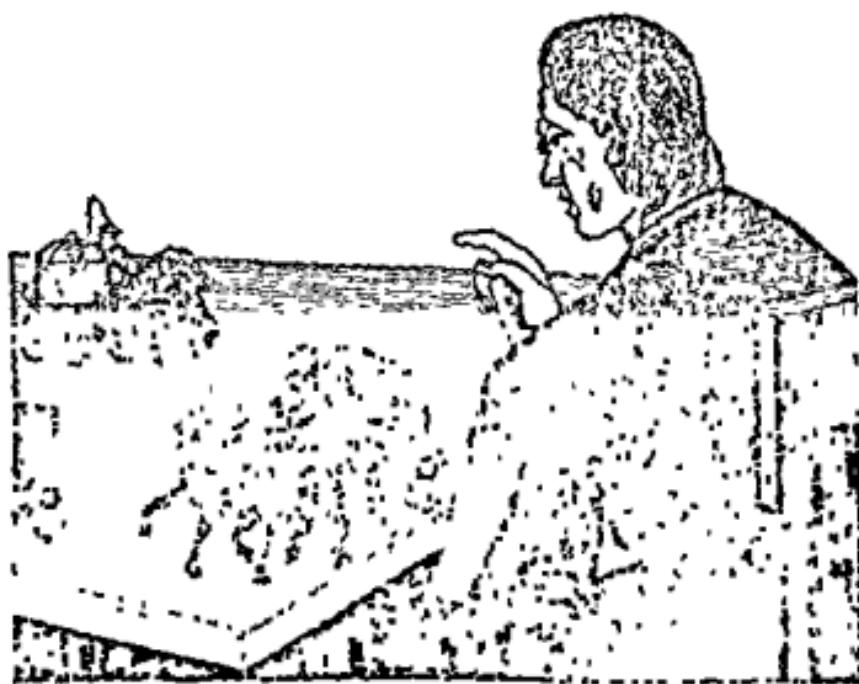
नं० ६

जबतक मैं एक टोलसे बातचीत करता तबतक कोचमान
दूसरोंको धीरे धीरे मेजहीं पर चक्कर खिलाता।

पृष्ठ ५२

रह मेरे गुप्त शत्रुगण अनाप शनाप बकनेसे बाज न आये। नाना प्रकारके षड़यन्त्र रचे गये। जिनका परिणाम दो महीने के पश्चात् प्रकट हुआ। ये सब खबरें मुझे अपने मित्रोंसे मिली थीं। महाराजोंकी मित्रताका यही फल है! पहलेकी भलाई तो धूलहीमें गई। जरासा उचित कहनेहीके लिये अब प्राणों पर आन बनी। अहह! वास्तवमें संसारकी लीला विचित्र है!

प्राय: तीन सप्ताह बाद ब्लेफस्कूके महाराजने सन्धिके निमित्त दूत भेजे। हमारे महाराजने भी सन्धि करली लेकिन शर्तें सब अपनेही फायदेकी रक्खीं। छ: दूत पांचसौ आदमियोंके साथ बड़े ठस्सेसे सन्धि करने आए थे। जैसे भारी राजाके वह सब दूत थे और जैसा भारी काम लेकर वह आये थे ठाट बाठ भी उनके वैसेही भारी थे। सन्धिके समय जहां तक बना मैंने उन दूतोंकी बहुत सहायताकी। और लोगोंसे मेरी भलाईका हाल सुन कर वह मुझसे भेंट करनेके लिये आये। मेरी बहुतसी बड़ाई करनेके बाद उन्होंने अपने राज्य ब्लेफस्कू में चलनेके वास्ते मुझे न्योता दिया। फिर मेरे अद्भुत कर्मोंको देखनेकी अभिलाषा प्रकटकी। मैंने उसी दम उनकी अभिलाषा पूरीकी। अब उनकी पुन: वर्णन करके पाठकोंका समय नष्ट नहीं करूंगा।

मेरी करामातोंको देख कर वह सब बहुतही अचरज मानने तथा प्रसन्नता प्रकट करने लगे। यह सब होजाने पर मैंने उनसे कहा कि अपने महाराजसे जिनका यश संसारमें चारों ओर व्याप्त है मेरा बहुत बहुत प्रणाम कह देना। मैं स्वदेश जानेसे पहले अवश्य महाराजका दर्शन करूंगा। इतना सुन वह सब चले गये। कई दिनके अनन्तर मैंने अपने महाराजसे ब्लेफस्कू देखनेकी आज्ञा मांगी। महाराजने आज्ञा तो दी पर बड़े रूखे तौरसे। इस रुखाई का कारण कुछ समझ न सका। पीछे एक मित्रसे मालूम हुआ कि इसका भी कारण मेरा पुराना शत्रु महामन्त्रीही था। उसने मेरे विरुद्ध महाराजके कान भरे हैं। ब्लेफस्कूके दूतोंसे मिलनेका

हाल भी उसने कह दिया है। इनसे मिलनेको उसने अनुता लक्षण बताया है। पर जो हो, मैं बेकसूर हूं—मेरा दिल सा है। यहांकी दरवार और मन्त्रियोंकी कार्यवाइयोंसे अब मैं भी कुछ परिचित होचला।

यहां पर यह कह देना उचितही है कि ब्लेफस्कूके दूत जो कुछ बोलते थे उसका अर्थ एक दुभाषी मुझे समझता जाता था। इन दोनों राज्योंकी भाषाएं भिन्न भिन्न हैं। दोनोंही अपनी अपनी भाषाको प्राचीन, सुन्दर और शक्ति पूर्ण बताते और दोनोंही ए दूसरेकी भाषाको घृणाकी दृष्टिसे देखते हैं। जहाजोंको छीन लेनेके कारण अभी हमारे महाराजका पक्ष भारी था अतएव उन्होंने दूतोंको लिलीपटकीही भाषामें सन्धि पत्र लिखने तथा वक्तृता देनेके लिये लाचार किया था। बहुतसे लोग दोनों बोलियां मजेमें बोलते थे। दोनों राज्योंमें वाणिज्य व्यापार होता था। इससे व्यापारियोंकी आवा जाई जारी थी। वहांके भगोड़े यहां और यहांके वहां आश्रय पातेथे। बड़े बड़े आदमियोंके लड़के रीति, नीति, तनरवेकारी, दुनियादारी आदि सीखनेके लिये आया जाया करते थे। बस इसी घनिष्टताके कारण समुद्र तट निवासी नामी आदमियोंमें ऐसे बहुत कम लोग थे जो दोनों बोलियोंमें बात चीत न कर सकते हों। जब मैं बैरियोंकी चालबाजीसे दुःखी होकर ब्लेफस्कू गया तब मुझे यह मालूम हुआ था। वहां जाना भी मेरे लिये अच्छाही हुआ इसका हाल आगे चल कर कहूंगा।

पाठकोंको याद होगा जिन जिन शर्तों पर मुझे स्वाधीनता मिली थी उनमेंसे दो तीन अत्यन्त निन्दनीय और कुत्सित थीं। इच्छा न रहने पर भी प्यारी स्वतन्त्रताके लोभसे उन्हें मैंने अङ्गीकार करलिया था। किन्तु अब मैं 'नर्डक' हूं—एक उपाधिधारी [illegible]नीय व्यक्ति हूं। उन सब निन्दनीय शर्तोंको पूरा [illegible]नेसे मेरी मानहानि होती—महाराजकी दी हुई उपाधिकी [illegible]हानि होती। इन्हीं सब बातोंको सोच विचार कर शायद

हाराजने एक दिन भी उन नीच कर्मों को करनेके लिये मुझसे
हीं कहा, अस्तु। कुछ दिनके बादही मैंने महाराजका एक और
ड़ा भारी उपकार किया। और कोई चाहे इसे कुछ कहे पर मैं
ो उपकारही कहूंगा।

एक दिन आधीरातके समय जब मैं खर्राटे लेरहा था अचानक
ोर गुल सुन कर चौंक पड़ा। आंखें खोलीं तो देखा दरवाजे
र सैकड़ों आदमी हल्ला कर रहे हैं। इस गुल गपाड़ेको सुन कर
ं डर गया। वह लोग "बरग्लम" की रट लगाये थे। इतनेमें
ाई राजकर्मचारी भीड़को चीरते हुए मेरे पास आए और बोले
'आप जल्द चलें—राजमहलमें आग लगी है! महारानीकी एक
नखी उपन्यास पढ़ते पढ़ते सोगई और दियेको बलता हुआ छोड़
दिया था। बस उसी दियेसे आग लग गई है। यह उसकी गफ-
लत है जो उसने दिया नहीं बुझाया। आप अब जल्द चलें नहीं
तो सब स्वाहा होजायगा।" मैं सुनतेही उठ खड़ा हुआ। राह
साफ कीगई। मैं चल पड़ा रात उजेली थी। कुशल हुई मेरे पैर
के नीचे कोई कुचला नहीं। राजी खुशी राजमहलमें दाखिल
हुआ। देखा दीवालोंमें सीढ़ियां लग चुकी हैं। लोग आगहोर
लिये तय्यार हैं पर पानीका तोडा है क्योंकि जलाशय कुछ दूरथा।
डोल सब अंगुश्तानेके बराबर थे। उन विचारोंने मुझे भी एक
डोल दिया लेकिन आग इतनी तेज थी कि उस डोलसे कुछ काम
नहीं निकला। अफसोस! जल्दीके मारे मैं अपना कोट भूल
आया नहीं तो उसीसे इस आगको बुझा देता! मैं केवल चमड़ेवाली
जाकिट पहरे था। मामला बिलकुल बेडौल मालूम पड़ा—मकान-
से सब हाथ धो बैठे। पर मुझे एक बात सूझ गई और खूब मौके
पर सूझी—अगर यह बात मुझे न सूझती तो वह सुन्दर राजमहल
एक पलमें जरूर मटियामेल होजाता। शामको मैंने बहुतसी
शराब पीली थी। यह शराब मुताती बहुत है। भाग्यसे मैंने अब
तक एक दफे भी पेशाब नहीं किया था। आगकी गर्मी और

मेहनतके मारे शराव अपना रङ्ग दिखाने लगी। बस मैंने पेश की धार वांध दी। फिर क्या था? तीनही मिनटमें सारी आग बुझ गई। ईश्वरकी अनुकम्पासे वह सुन्दर राजमहल जो न जाने कितने दिनोंमें बना होगा। जलनेसे बच गया।

भोर हो चुका था। महाराजसे विना मिलेही मैं अपने घर पर वापस आया। इतनी बड़ी खैरख्वाही करने पर भी तबीयत खटकेमें थी। न जाने मेरे लिये क्या हुक्म हो। आईनमें है कि जो कोई राजमहलके अहातेके अन्दर पेशाव करेगा उसे चाहे वह कोई क्यों न हो फांसी दी जायगी। देखें महाराज मेरे साथ कैसे पेश आते हैं! महाराजने मेरे पास एक चिट्ठी भेजी पढ़ कर कुछ खुशी हुई। उसमें लिखा था "तुम्हारा अपराध क्षमा करनेके लिये मैं प्रधान विचारकसे कह दूंगा।" परन्तु भोंड़े भाग्यके कारण आज तक अपराध क्षमा नहीं हुआ। मुझे यह भी टोह लगी कि महारानीको मेरी इस कार्रवाईसे बहुत घृणा होगई है। वह अपना डेरा डण्डा उठा कर दूसरे मकानमें चली गई हैं। जिस मकानमें आग लगी थी उसकी अगर मरम्मत भी हो तो भी वह उसमें अब नहीं रहेगी। उन्होंने यह प्रतिज्ञा भी करली है कि जिसने इस घरको अपवित्र किया है उसे वह अवश्य सजा चखावेंगी।

नवम परिच्छेद।

यद्यपि मैं चाहता हूं कि इस देशका सविस्तर वर्णन किसी दूसरी पोथीके लिये उठा रक्खूं तथापि अपने मन चले पाठकोंके मनोरञ्जनार्थ यहां पर कुछ साधारण बातें लिखता हूं। यहांके निवासी छः इञ्चसे कुछही कम ऊंचे होते हैं। बस इसी हिसाबसे अन्य जीवजन्तु और पेड़ पत्तोंकी उंचाई समझ लीजिये। अगर न सकते हों तो ये नमूने हाजिर हैं—बड़े बड़े घोड़े और साढ़ोंकी ...ई पांच इञ्चके भीतर है। भेंड़ डेढ़ इञ्चसे कुछ कम या ज्यादे होती है। राजहंस गौरैयाके वरावर होता है और छोटे छोटे मकोड़े तो मेरे दृष्टिगोचरही नही होते थे। पर लिलीपटी तो

मजेमें देख सकते हैं। ईश्वरकी लीला अपरम्पार है। ये लोग निकटकी छोटीसे छोटी चीजको भी मजेमें देख सकते हैं पर दूरकी नहीं। एकबार मैंने अपनी आखोंसे एक रसोइये को लवा पक्षीकी खाल खैंचते देखा है। यह मक्खीके बराबर था। एक बालिकाको सुईमें रेशमका डोरा पिरोते देखा है। परन्तु मेरे लिये ये सुई डोरे दोनोंही अदृश्य थे। सबसे ऊंचे पेड़ सात फुटके होते हैं। सरकारी बागके ऊंचेसे ऊंचे वृक्षोंकी फुनगियां मैं योंहीं छू लेता था। बाकी शाकपात भी इसी परिमाणके थे। उनकी ऊंचाई आदिका अनुमान पाठक स्वयं करलें।

बहुत थोड़े शब्दोंमें मैं इनके लिखने पढ़ने की बात अभी कहूंगा। यहां बहुत दिनोंसे विद्याकी अच्छी चर्चा है। लेकिन इन लोगोंके लिखनेका ढंग निरालाही है। ये बाएं ओरसे नहीं लिखते, न मुसलमानोंकी तरह दाई ओरसे लिखते और न चीना लोगोंकी तरह ऊपरसे नीचेकी तरफ लिखते हैं। ये लिखते हैं तिरछा-विलायती बीबियोंकी तरह कागजके एक कोनेसे दूसरे कोने तक।

यहांवाले मुर्देको गाड़ते हैं लेकिन उसका सिर नीचे और पैर ऊपर करके। इन लोगोंका विश्वास है कि ग्यारह हजार चन्द्रमाके बाद मुर्दे सब उठ खड़े होंगे और यह पृथिवी भी जो इनके ख्यालसे चपटी है उलट जायगी यानी नीचेका हिस्सा ऊपर और ऊपरका नीचे होजायगा। तब उठनेके समय मुर्दोंको खड़े होनेकी भी तकलीफ उठानी नहीं पड़ेगी। वे सब पहलेहीसे तय्यार खड़े हैं। बड़े लिखोंका इस फूहड़ मत पर विश्वास नहीं है किन्तु यहां यह रीति अबतक प्रचलित है।

यहांके कुछ कानून तथा रीति व्यवहार बड़े विलक्षण हैं। अगर ये हमारे देशके कानून और रीति व्यवहारसे ठीक उलटे न होते मैं अवश्य इनका प्रतिपादन करता। सिर्फ यही नहीं उन्हें काममें लानेके लिये मन भी दौड़ाता। पहला जो मैं लिखता हूं

ता शब्द इस संसारमें नहीं है। यहां जो कोई निर्धार अन्त
ह कानूनके अनुसार चलता है जो पूरा महसूल देने पर ऐसिडनके
धिक सरकारसे इनाम पाता है। इस कामके लिये अलग एक
र खुला हुआ है इसके सिवाय जो "राजभवनद्वारानुसारी" की
की सिलमें है जिसे वह अपने सामने साथ छोड़ देता है पर
ह पीढ़ी दर पीढ़ी नहीं चलती। जब मैंने कहा कि हमारे देशमें
स सहायोंका कानून है इसमाद्या नहीं तो ये सब हंसने लगे
र बोले कि आप लोगोंका कानून भद्दा है। निपोपटके न्याया-
यों न्यायकी एक एक मूर्ति स्थापित है जिसके छः नेत्र—दो आगे
पीछे और दो दोनों बगलमें—और दो हाथ हैं—दहिने हाथमें
र्कियोंका खुला हुआ मोढ़ा और बांयेंमें म्यान रहित तलवार।
त्पर्य यह कि न्याय सावधान है, सब ओर देखता है और बद
ण्ड देनेकी अपेक्षा पारितोषिक देना श्रेय समझता है।

निपुणतासे बढ़ कर यहां सदाचरणका आदर है। इसीलिये
राजकीय पद निर्वाचनके समय लोगोंका ध्यान निपुणताकी अपेक्षा
सदाचारकी ओर अधिक रहता है। मनुष्य मात्रको शालाकी
नितान्त आवश्यकता है। यहां वालोंका विश्वास है कि प्रत्येक
मनुष्य कुछ न कुछ काम करनेकी योग्यता रखता है। परमात्माने
साधारण राजकाजको कोई गुप्त रहस्य नहीं बनाया है कि केवल
प्रतिभाशाली पुरुषही उसे समझें, और न कभी उसकी यह इच्छा
है। ऐसे ऊंची बुद्धिवाले तो एक शताब्दीमें तीनही उत्पन्न होतेहैं।
ऐसी अवस्थामें केवल ऊंची बुद्धिवालोंको सरकारी नौकरी देना
कदापि युक्ति युक्त नहीं है। सत्य, न्याय, संयमादि गुण मनुष्यके
अधीन हैं। इन गुणोंके साधनके सङ्ग यदि बहुदर्शिता और सदा-
शयतका योग्य होजाय तो प्रत्येक मनुष्य, उन कामोंको छोड़ कर
जिनमें विद्या बुद्धिकी दरकार है, अपने देशकी सेवा भलेमें कर
सकता है। यहां वाले चाहते हैं कि यदि कोई मनुष्य सर्वगुण
सम्पन्न होने पर भी सदाचारी नहीं है तोभू स कर भी उसके हाथ

मुकद्दमों की खबर देनेवालों अर्थात् भेदियोंके बारेमें है। इकारके विरुद्ध जितने अपराध हैं उनको बड़ी कड़ी सजा है। लेकिन अगर अपराधी विचारालयमें उपस्थित होकर अपनेको निर्दोष सिद्ध कर दे तो भेदिये की जान बड़े बुरे तौरसे ली जाती है। सिर्फ यह नहीं उसका सब मालमता और जमीन जायदाद बेच कर अपराधी को उसके खर्चका चौगुना रुपया उसके कष्ट और परिश्रमके बदले दिया जाता है। अगर कमी हुई तो सरकारी खजानेसे वह पूरी कर दी जाती है। महाराज उसकी बेकसूरीका ढिंढोरा सारे शहरमें पिटवादेते हैं और उसका बहुत आदर सम्मान करते हैं।

यहां चोरीकी अपेक्षा जुआचोरी भारी कसूर समझा जाता है। इसी लिये जुआचोरोंको फांसी देनेमें यहांवाले कभी नहीं चूकते। इनका कथन है कि जरा सावधान होनेहीसे चोरोंसे उबार हो सकता है किन्तु जुआचोरोंसे सच्चोंकी रक्षा नहीं। उधार और लेने देने बिना दुकानदारी चल नहीं सकती लेकिन जहां जुआचोरी जारी है और जहां जुआचोरीको दण्ड कानूनमें नहीं है वहां बेचारे सच्चे दुकानदारोंहीका दिवाला निकलता है और जुआचोर, ठग मजेमें माल उड़ाते हैं। मुझे याद है एक दिन जब मैंने महाराजसे एक अपराधी की जिसने अपने मालिक का बहुत साधन गबन किया था शिफारिश करके कहा कि यह तो केवल विश्वासघात है; इस साधारण अपराधके लिये फांसी ठीक नहीं। इसपर महाराज बोले "आश्चर्य है! ऐसे बड़े अपराधको आप साधारण बताते हैं।" महाराजको इस जवाब मुझे कुछ न सूझा। केवल इतना कहके मैं चुप होगया [illegible] चाल और जुदा व्यवहार। पर सचमुच उस दिन मैं [illegible] मने बहुतही लज्जित हुआ।

यद्यपि हम लोग बराबर कहा करते हैं कि इनाम [illegible] यही दो चूल हैं जिनपर राजशासनके किवाड़ घूमते [illegible] इस [illegible]को पूरा कर दिखाने वाले लिलीपटके [illegible]

ारा राज्य इस संसारमें नहीं है। यहां जो कोई निरन्तर चन्द्र
त कानूनके अनुसार चलता है सो पूरा सबूत देने पर ईसियतके
ाविक सरकारसे इनाम पाता है। इस कामके लिये अलग एक
ण्ड खुला हुआ है इसके सिवाय उसे "राज्यव्यवस्थानुसारी" को
ावी मिलती है जिसे वह अपने नामके साथ जोड़ लेता है पर
ह पीढ़ी दर पीढ़ी नहीं चलती। जब मैंने कहा कि हमारे देशमें
वल सजाहीका कानून है इनामका नहीं तो वे सब हंसने लगे
ार बोले कि आप लोगोंका कानून भद्दा है। लिलीपटके न्याया-
यींमें न्यायकी एक एक मूर्त्ति स्थापित है जिसके छः नेत्र—दो आगे
ा पीछे और दो दोनों बगलमें—और दो हाथ हैं—दहिने हाथमें
ाशर्फियोंका खुला हुआ तोड़ा और बांयेंमें म्यान सहित तलवार।
ात्पर्य्य यह कि न्याय सावधान है, सब ओर देखता है और वह
ण्ड देनेकी अपेक्षा पारितोषिक देना श्रेय समझता है।

निपुणतासे बढ़ कर यहां सदाचरणका आदर है। इसीलिये
ाजकीय पद निर्व्वाचनके समय लोगोंका ध्यान निपुणताकी अपेक्षा
ादाचारकी ओर अधिक रहता है। मनुष्य मात्रको राजाकी
नेतान्त आवश्यकता है। यहां वालोंका विश्वास है कि प्रत्येक
मनुष्य कुछ न कुछ काम करनेकी योग्यता रखता है। परमात्माने
साधारण राजकाजको कोई गुप्त रहस्य नहीं बनाया है कि केवल
प्रतिभाशाली पुरुषही उसे समझें, और न कभी उसकी यह इच्छा
है। ऐसे ऊंची बुद्धिवाले तो एक शताब्दीमें तीनही उत्पन्न होते हैं।
ऐसी अवस्थामें केवल ऊंची बुद्धिवालेको सरकारी नौकरी देना
कदापि युक्ति युक्त नहीं है। सत्य, न्याय, संयमादि गुण मनुष्यके
अधीन हैं। इन गुणोंके साधनके सङ्ग यदि बहुदर्शिता और सदा-
शयताका योग होजाय तो प्रत्येक मनुष्य, इन कामोंको छोड़ कर
जिनमें विद्या बुद्धिकी दरकार है, अपने देशकी सेवा भलेमें कर
सकता है। यहां वाले कहते हैं कि यदि कोई मनुष्य सर्व्वगुण
सम्पन्न होने पर भी सदाचारी नहीं है तो भूल कर भी उसके हाथ

संवाददाताओं को खबर देनेवालों अर्थात् भेदियोंके बारेमें है। सरकारके विरुद्ध जितने अपराध हैं उनकी बड़ी कड़ी सजा है। लेकिन अगर अपराधी विचारालयमें उपस्थित होकर अपनेको निर्दोष सिद्ध कर दे तो भेदिये की जान बड़े बुरे तौरसे ली जाती है। सिर्फ यही नहीं उसका सब मालमता और जमीन जायदाद बेच कर अपराधी को उसके खर्चका चौगुना रुपया उसके कष्ट और परिश्रमके बदले दिया जाता है। अगर कमी हुई तो सरकारी खजानेसे वह पूरी कर दी जाती है। महाराज उसकी बेकसूरीका ढिंढोरा सारे शहरमें पिटवादेते हैं और उसका बहुत आदर सम्मान करते हैं।

यहां चोरीकी अपेक्षा जुआचोरी भारी कसूर समझा जाता है। इसी लिये जुआचोरोंको फांसी देनेमें यहांवाले कभी नहीं चूकते। इनका कथन है कि जरा सावधान होनेहीसे चोरोंसे उबार हो सकता है किन्तु जुआचोरोंसे सच्चोंकी रक्षा नहीं। उधार और लेने देने बिना दुकानदारी चल नहीं सकती लेकिन जहां जुआचोरी जारी है और जहां जुआचोरीकी सजा कानूनमें नहीं है वहां बेचारे सच्चे दुकानदारोंहीका दिवाला निकलता है और जुआचोर, ठग मजेमें माल उड़ाते हैं। मुझे याद है एक दिन जब मैंने महाराजसे एक अपराधी की जिसने अपने
का बहुत साधन गबन किया था सिफारिश
केवल विश्वासघात है; इस साधारण
ठीक नहीं। इसपर महाराज बोले "
अपराधको आप साधारण बताते हैं
जवाब मुझे कुछ न सूझा। क
ऐसा चाल और खुला व्यवहार
सामने बहुतही लज्जित हु

यद्यपि हम लोग
सजा यही दी पू
लेकिन इस कानूप

यहां माता पिता और पुत्रका परस्पर व्यवहार हम लोगोंके व्यवहारसे बिलकुल विलक्षण है। स्त्री पुरुषोंका परस्पर मिलन स्वाभाविक है। सिलोपट लोगोंका मत है कि और और जानवरों की तरह नर नारी भी कामाग्नि बुझानेके लिये सम्भोग करती हैं। सो सम्भोगका नतीजा है सन्तान। सन्तानके प्रति माता पिता का स्नेह भी स्वाभाविक है। पिताने जन्म दिया है और माताने गर्भमें धारण किया है बस इतनेहीके लिये पुत्र सदा उनकी सेवकाई नहीं कर सकता और न जन्म भर उनके उपकारसे दबा रहेगा। इसी प्रकारकी युक्तियां दिखलाते हुए सिलोपटके लोग कहतेहैं कि बालक बालिकाओंको शिक्षा माता पिताके भरोसे न छोड़ना चाहिये। इसी हेतु हर एक शहरमें एक ऐसी जगह बनी है जहां लड़के लड़कियां पाली पोसी और लिखाई पढ़ाई जाती हैं। बस थोड़ीसे दीन दरिद्र और मजूरोंके सिवा सब किसीको अपने छोटे छोटे बच्चे भेजने पड़ते हैं। यहां ऐसे स्कूल कई प्रकारके हैं जिनमें भांति भांतिकी विद्यायें पढ़ाई जाती हैं। लड़के और लड़कियोंके लिये अलग अलग स्कूल हैं। स्कूलोंमें ऐसे ऐसे मास्टर हैं जो लड़के और लड़कियोंको उनके माता पिताकी अवस्थाके उपयुक्त बना देते हैं तथा उनकी योग्यता और रुचिके अनुसार उन्हें पढ़ा भी देते हैं।

पहले मैं लड़कोंके स्कूलकी तरफ झुकता हूं। बड़े आदमियोंके अथवा अच्छे कुलके लड़के जिन विद्यालयोंमें भेजे जातेहैं उनमें बड़े बड़े गम्भीर और विद्वान अध्यापक रहते हैं। इनके अतिरिक्त कई सहकारी अध्यापक भी रहते हैं। लड़कोंका खाना कपड़ा बहुत साफ सुथरा और सादा होता है। इन्हें मर्यादा, न्याय साहस सभ्यता, दया, धर्म और स्वदेशानुरागका तत्व पढ़ाया जाता है। केवल भोजन और शयनके समय उनको छुट्टी रहती है नहीं तो बराबर उन्हें कुछ न कुछ करनाही पड़ता है। खाने और सोनेके लिये भी समय बहुत कम दिया जाता है। कसरत और खेलकूदके वास्ते दो घण्टे नियत हैं। चार बरस तकके लड़कोंको चाकर

में राजकाज नहीं सौंपना चाहिये। ऐसा करनेसे महा
होगा। सदाचारी पुरुष अज्ञानतासे अगर कोई चूक कर भी
तो उससे सर्वसाधारणको उतनी हानि नहीं होगी जितनी कि
ऊंची बुद्धिवालेसे, जो जान बूझ कर पाप करता है और जो
करनेकी, पाप बढ़ानेकी और अपने पापोंको छिपानेकी
तरकीब जानता है।

इसी प्रकारसे जो नास्तिक है यानी जो ईश्वरको नहीं
वह भी राजकीय पद पानेके योग्य नहीं है। क्योंकि राजा
मेश्वरका प्रतिनिधि स्वरूप है और राजकर्म्मचारी राजाके तिनि-
हैं। यहां वालोंका कथन है कि जो अपने स्वामीहीको नहीं
मानता उसे राजकर्म्मचारी बनाना महाभूलही नहीं वरन् वड़ी
मूर्खता है!

जो कुछ मैं कह चुका या अब जो कुछ कहूंगा सो सब पुराने
जमानेकी बातें हैं। आजकलकी लज्जाजनक बातें मैं न कहूंगा।
अधःपतित होना मनुष्य मात्रका स्वभाव है। लिलीपटवाले भी
इसी स्वभावके फेरमें पड़ कर अपनी पुरानी चालढाल छोड़ बैठे हैं।
रस्सों पर नाच कर भारी भारी ओहदे पाना—छड़ियों पर कूद
विख्यात होना इत्यादि क्या अधःपतनका नमूना नहीं? इन बुरी
बातोंकी नींव डालनेवाले हमारे महाराजके दादाही थे। अब
ईर्षा, द्वेष, विरोध और धड़ाबन्दीके प्रतापसे इन सब बुराइयोंकी
पूरी उन्नति होचली है।

कृतघ्नताको यहां लोग बड़ा भारी अपराध समझते हैं। वह
कहते हैं कि जो अपने भलाई करनेवालेकी बुराई करता है वह
सब संसारका वैरी है क्योंकि जब वह भलाई करनेवालेके साथ
बुराई करता है तब जिसने उसके साथ कुछ भी नेकी नहीं की है
उसके साथ बुराई करनेसे वह दुष्ट कब बाज आने लगा। ? इस
लिये कृतघ्नोंका जीवित रहना ठीक नहीं। चट पट उनको इति
श्री करदेना चाहिये।

यहां माता पिता और पुत्रका परस्पर व्यवहार हम लोगोंके व्यवहारसे बिलकुल विलक्षण है। स्त्री पुरुषोंका परस्पर मिलन स्वाभाविक है। सिलोपट लोगोंका मत है कि और और जानवरोंकी तरह नर नारी भी कामाग्नि बुझानेके लिये सम्भोग करती हैं। इसी सम्भोगका नतीजा है सन्तान। सन्तानके प्रति माता पिताका स्नेह भी स्वाभाविक है। पिताने जन्म दिया है और माताने गर्भमें धारण किया है बस इतनेहीके लिये पुत्र सदा उनकी सेवकाई नहीं कर सकता और न जन्म भर उनके उपकारसे दबा रहेगा। इसी प्रकारकी युक्तियां दिखलाते हुए सिलोपटके लोग कहतेहैं कि बालक बालिकाओंकी शिक्षा माता पिताके भरोसे न छोड़ना चाहिये। इसी हेतु हर एक शहरमें एक ऐसी जगह बनी है जहां लड़के लड़कियां पाली पोसी और सिखाई पढ़ाई जाती हैं। बस केवल दीन दरीद्र और मजूरोंके सिवा सब किसीको अपने छोटे छोटे बच्चे भेजने पड़ते हैं। यहां ऐसे स्कूल कई प्रकारके हैं जिनमें भांति भांतिकी विद्यायें पढ़ाई जाती हैं। लड़के और लड़कियोंके लिये अलग अलग स्कूल हैं। स्कूलोंमें ऐसे ऐसे मास्टर हैं जो लड़के और लड़कियोंको उनके माता पिताकी अवस्थाके उपयुक्त बना देते हैं तथा उनकी योग्यता और रुचिके अनुसार उन्हें पढ़ा भी देते हैं।

पहले मैं लड़कोंके स्कूलकी तरफ झुकता हूं। बड़े आदमियोंके अथवा अच्छे कुलके लड़के जिन विद्यालयोंमें भेजे जातेहैं उनमें बड़े बड़े गम्भीर और विद्वान अध्यापक रहते हैं। इनके अतिरिक्त कई सहकारी अध्यापक भी रहते हैं। लड़कोंका खाना कपड़ा बहुत साफ सुथरा और सादा होता है। इन्हें मर्य्यादा, न्याय साहस नम्रता, दया, धर्म्म और स्वदेशानुरागका तत्व पढ़ाया जाता है। केवल भोजन और शयनके समय उनको छुट्टी रहती है नहीं तो बराबर उन्हें कुछ न कुछ करनाही पड़ता है। खाने और सोनेके लिये भी समय बहुत कम दिया जाता है। कसरत और खेलकूदके वास्ते दो घण्टे नियत हैं। चार बरस तकके लड़कोंको चाकर

ही कपड़े पहनाती हैं लेकिन इसके बाद उन्हें (चाहे वह कि लड़के हों) अपने हाथोंसे कपड़े पहनने पड़ते हैं। सेवा ८० काम बूढ़ी बूढ़ी दासियां करती हैं। लड़के नौकरोंके बात करने नहीं पाते पर खेलकी जगह जा सकते हैं। एक पक वा सहकारी अध्यापक साथमें जरूर रहते हैं। इसी लड़के उन कुसंस्कारों और बुरे व्यसनोंसे साफ बच जाते हैं हमारे देशके लड़के प्रायः लिप्त रहते हैं। मा बाप साल में ६ बार उन्हें देखने पातेहैं सो भी एक घण्टे से ज्यादे ठहर नहीं आनेके समय वह लड़कोंको चूम सकते हैं परन्तु उनसे काना नहीं कर सकते, न कुछ प्यारकी बातें कह सकते और न खिल और मिठाई वगैरह दे सकते हैं। इन सबकी निगरानीके एक माष्टर वहां बराबर खड़ा रहता है। अगर किसीने स्कू फीस देनेमें गड़बड़ीकी तो सरकारी कर्म्मचारी तुरत उसे कर लेते हैं।

मामूली गृहस्थ, कोठीवाल, सौदागर और कारीगरोंके बा के लिये अलग स्कूल हैं। उनमें भी इसी ढङ्गसे शिक्षा दी जाती और प्रबन्ध भी सब ऐसेही हैं तथापि कुछ अन्तर है। यह केवल दरजेके ख्यालसे है। जो व्यापार सीखनेकी [illegible] कहीं दवार हुआ चाहते हैं सो ग्यारह बरसके [illegible] जाते लेकिन जो नहीं चाहते उन्हें पन्द्रहवें बर्ष [illegible] है।

बाल दी जाती है। इसी हेतु यहांकी युवतियां डरपोक और
मूर्ख होनेसे उतनाही लजाती हैं जितना कि पुरुष। यह
गहनोंसे घिन करती हैं मगर साफ सुथरी और सादी पोशाक
पसन्द करती हैं। इनकी कसरतें निपट भारीही नहीं होती हैं।
विद्याके साथ साथ इन्हें गृहस्थके काम भी सिखाए जाते हैं।
लिलीपटियोंका सिद्धान्त है कि गुणियोंकी स्त्रियां भी गुणवती
होनी चाहियें क्योंकि वह सदा युवतीही न बनी रहेंगी। जब
लड़कियां बारह बरसकी होती हैं तब उनके मा बाप मास्टरोंको
धन्यवाद देते हुए उन्हें घर लेजाते हैं। यही उमर यहां ब्याहकी
ती है। स्कूलसे विदा होनेके समय वह सब अपनी सहेलियोंसे
लि मिल कर रोती भी हैं।

नीच जातिकी लड़कियोंके लिये भी स्कूल है। यहां उन्हें
उन्हींकी जातिके अनुसार छोटे छोटे काम सिखाये जातेहैं। जो
दूसरी ठौर काम सीखना चाहे उसे सात बरसकी उमरमें फुरसत
मिल जाती है लेकिन शेषको ग्यारह वर्षकी उमरमें।

नीच जातिवालोंको जिनके बेटे और बेटियां स्कूलमें हैं सालाना
लगानके अलावे जो बहुतही कम है, विद्यालयके कोठारीके पास
महीने महीने अपनी आमदनीमेंसे कुछ थोड़ासा बेटी बेटोंके लिये
जमा करना पड़ता है। इसी वास्ते सब किसीका खर्च आईनके
मुताबिक बंधा हुआ है। लिलीपटी लोग कहते हैं कि कामेच्छा
के वशीभूत होकर पुत्रोत्पादन करना और उसके भरण पोषणका
सर्वसाधारण पर छोड़ देना बड़ी लज्जाकी बात है। जगतमें इससे
बढ़के अन्याय और कुछ नहीं है। बड़े आदमी अपने अपने बच्चोंके
लिये अपनी अवस्थानुसार कुछ रुपये जमा करा देते हैं। यह सब
रुपये बड़े हिसाबसे खर्च किये जाते हैं।

कुटीरवासी और मजदूर अपने अपने लड़कोंको घरहीमें रखते
हैं। इनका काम जमीन जोतना और आबाद करना है। इस
लिये इनके पढ़ानेसे सर्वसाधारणको कुछ फायदा नहीं। बूढ़े और

बीमारोंको अनाथालयमें खानेके लिये मिलता है। भीख मां
का रोजगार यहां कोई जानताही नहीं है।

दशम परिच्छेद।

अब कुछ मेरा हाल सुनिये। लिलीपटमें मैं कुल नौ
तेरह दिन रहा था। सरकारी जङ्गलसे लकड़ी लाकर मैंने
आरामके लिये एक मेज और एक कुर्सी बनाली थी। ऐसा
समझिये कि मैं यह सब काम भी खूब जानता हूं। दो
दर्जियोंने मिल कर मेरे लिये कमीज और बिछौने सिये थे।
तीन इञ्च चौड़े और तीन फुट लम्बे कपड़े होते हैं। मोटेसे
कपड़े मेरे वास्ते मंगवाये गये। उनको कई तह करनेसे मेरा
चला। दर्जी जब मेरा बदन नापता तब मैं लेट जाता। एक
तो गर्दनके पास और एक घुटनेके पास खड़े होते। दोनोंके
रस्सीका एक एक सिरा रहता था। तीसरा एक इञ्च लम्बे औ
से उस रस्सीको नापता। फिर दाहिना अंगूठा नाप कर कुछ
बस इतनेहीसे सब अङ्गोंकी नाप होजाती है। जरा हि
सुनिये—अंगूठेका घेरा नाप कर दूना करनेसे कलाईका
निकलताहै। फिर इसी तरह कमर और गर्दनका भी जानि
मैंने अपनी कमीज दिखलाई तो उन्होंने ठीक वैसीही एक
दी। तीनसौ दर्जियोंने मेरी पोशाक तैयारकी थी। इनके ना
का ढङ्ग न्यारा था। मैं घुटनोंके बल बैठ गया। उन्होंने
तक सीढ़ी लगाई। फिर उस पर चढ़के एकने मेरे पटेसे जमी
का साहुलकी तरह एक डोरी गिराई। यही हुई मेरे को
नाई। मैंने कमर और बांह आपही नाप दिखाई। जब
ड़े तैयार होगये तो वह जोड़ पर जोड़ लगानेसे ऐसे
से मालूम पड़ते थे। यह सब मेरेही डेरे पर बनेथे क्योंकि
नी बड़ी ठौर और कहीं न थी जहां वह सब समाते।

मेरी रसोई बनानेके लिये तीनसौ बावरचीथे मेरे डेरेके पास

ई छोटे छोटे झोंपड़े बने थे उनमें वह सब रसोई भी बनाते और बाल बच्चोंको लेकर रहते भी थे। मैं बीस खानसामालोगोंको उठा कर मेज पर रख लेता और बाकी सौसे ज्यादे हाथोंमें मांस की रकाबियां तथा शराबके पीपे लिये नीचे खड़े रहते। जैसे कुए से पानी खेंचा जाता है वैसेही ऊपरवाले खानसामा सब चीजोंको डोरीके सहारे मेज पर खेंच लेते थे। उनकी एक रकाबी भरा एक निवाला होता और पीपा तो एकही घूंट था। यहांके पेरू और राजहंस छोटे होने पर भी स्वादमें बहुत बड़े थे। इनको भी मैं एकही कौर करता। छोटी छोटी चिड़ियां तो बीस बीस तीस तीस एक साथही छुरीकी नोक पर धरके उड़ा जाताथा।

मेरे खानेका तरीका सुन कर महाराजको बहुतही आश्चर्य हुआ। उन्होंने सपरिवार मेरे साथ भोजन करना चाहा। मैंने भी उनकी आज्ञा माथे चढ़ाई। आखिर महाराज एक दिन महारानी, राजकुमार और राजकुमारी समेत मेरे डेरे पर पधारे। मैंने उन सबको उठा कर कुर्सियों पर जो मेरे सामने मेज पर रक्खी थीं बैठाया। रक्षकोंको भी उठा कर मेज पर रखलिया। यह सब कायदेसे महाराजको घेर कर खड़े होगये। फिलीमनप खजानची भी अपने उजले समाजके साथ आपहुंचा था। वह एकसर मेरी ओर देख कर मुंह बिचकाता, पर मैं उधर ध्यानही नहीं देताथा। उनका आश्चर्य बढ़ानेके लिये रोजके बनिसबत उस दिन मैंने और ज्यादे खाया। कई गुप्त कारणोंसे मुझे मालूम हो गया कि महाराजके यहां पधारनेसे खजानची साहबको मेरी चुगली करनेका अच्छा मौका हाथ लगा। यह बहुत दिनोंसे इसी फिराकमें थे। ईश्वरकी दयासे आज वह कामना पूरी होगई। ऊपरसे तो यह बहुत चिकनी चुपड़ी बातें करता पर भीतरसे मुझे देखकर कुढ़ताथा। उसने मौका पाकर एकान्तमें महाराजसे कहा कि खजाना खाली होता जाता है—अब ज्यादे सूद पर रुपये कर्ज लेने पड़ेंगे। सरकारी हुण्डी नौ रुपये सैकड़े बट्टेसे कममें नहीं

चरीनी। नर पर्व्वतके कारण सरकारी खजानेसे पन्द्रह लाख रु
खर्च होचुके। अब जितना चाहो नर पर्व्वत यहांसे दूसरी जगह

इसके दूसराही गुल खिला। खजानची साहबको अपनी
की सतीत्व पर सन्देह हुआ उनको खबर लगी कि उनकी बी
पर आशिक है। सिर्फ यही नहीं बल्कि वह छिप कर मेरे
एक दिन आई भी थी। जहां सुनो वहां यही चर्चा थी।
नची साहबका क्या पूछना है? वह तो इन बातोंको सुनतेही
बबूला होगये। लेकिन मैं कसम खाके कहता हूं कि यह
बिलकुल झूठ और बेजड़ थी। वह पतिव्रता थी। वह मुझे
कनके [illegible] थी। यह बात जरूर है कि वह मेरे पास आ
आती थी लेकिन छिप कर नहीं—अकेली नहीं। उसके संग
औरतें आती थीं—एक तो उसकी बहन, दूसरी बेटी और तीस
सहेली। और भी बहुतसी स्त्रियां इसी तरह बराबर मेरे
आया करती थीं। मेरे नौकर सब इस बातको भली भांति
थे। वहां कभी ऐसी कोई गाड़ीही न आई जिसके सवारोंको
न जानते या पहचानते हों। जब कोई मुझसे मिलने आता
दरवान मुझे खबर देता। मैं बाहर जाकर गाड़ी घोड़ा समेत उनक
उठा लाता और मेज पर रख देता। एक एक दफे मेज पर
चार गाड़ियां रहती थीं। मैं सामने कुर्सी लगा बैठ जाता।
तक मैं एक टोलसे बात चीत करता तब तक कोचवान दूसरों
धीरे धीरे मेजही पर चक्कर खिलाता। मेजके चारोंओर पांच
की कोर लगा दी थी जिसमें कोई गिर न पड़े। रोज दोपहर
मैं इसी तरह गप्प शप्पमें समय बिताता था। मैं खजानची औ
उनके जासूसोंको चुनौती देता हूं वह आकर कहें कि रेलड्रेसल
सवाय किसके साथ मैंने गुप्त भेंटकी है? वह भी महाराज
[illegible] से आया था जिसका हाल मैं आगे लिख चुका हूं। अ
क पतिव्रता स्त्रीके नाममें धब्बा लगनेका डर न होता तो
तना कदापि न बकता। अपने बारेमें मुझे कुछ कहना नहीं

ज़ानचीसे मेरा एक दर्जा ऊंचा है। वह "ग्लम ग्लम" ही है र मैं हूं "नडेक"। ग्लम ग्लम और नडेकमें उतनाही अन्तर है तना कि राय बहादुर और राजा बहादुरमें। चाहे राजकाजमें सका अधिकार ज्यादे ही परन्तु उपाधि मेरीही बड़ी थी। इस ी खबरको सुन कर खज़ानचीने अपनी स्त्रीसे मन मोटा कर या और मुझसे तो बाघ बकरीकासा बैर ठाना। कुछ दिनके बाद से तो मेल होगया पर मुझसे वह टेढ़ाही रहा। नतीजा यह था कि उसने कान भरते भरते महाराजका भी दिल मेरी ओर फेर दिया। महाराज उसे बहुत चाहते थे। जो वह कहता ही करते थे। सच पूछो तो महाराज उसके हाथके खिलौने थे। सके विरुद्ध वह एक तिनका भी नहीं उठा सकते थे।

एकादश परिच्छेद।

इस देशको परित्याग करनेका वृत्तान्त कहनेसे पहले पाठकों को एक गुप्त षड़यन्त्रकी कथा सुनाना उचित समझता हूं। मेरे नाश करनेके लिये यह दो महीनेसे चल रहा था।

मैं गरीब हूं। कभी किसी राजदरबारमें रहा नहीं और उसके भेदोंहीको जानता हूं। किताबोंमें और किस्से कहानि में बड़े बड़े राजा महाराजा और उनके मन्त्रियोंकी विलक्षण प्रकृतिका हाल पढ़ा और सुना है। परन्तु मुझे यह सपनेमें भी ख्याल न था कि मैं भी एक दूर देशमें जाकर ऐसीही प्रकृतिके फेरमें पड़ूंगा।

महाराजसे आज्ञा लेकर जब मैं ब्लेफस्कू जानेकी तैयारी कर रहा था दरबारका एक बड़ा नामी गरामी आदमी रातके समय पालकीमें बैठ कर बड़ी गुप्त रीतिसे मेरे पास आया। एक बार जब महाराज इससे अप्रसन्न होगये थे मैंने बहुत कह सुनकर इसका अपराध क्षमा करवा दिया था। इसने एकान्तमें कुछ बात चीत करनेकी इच्छा प्रगट की। कहारोंको विदा करके उसको पालकी समेत पाकिटमें धर लिया। अपने विश्वासी नौकरसे कह दिया अगर

कोई आवे तो कह देना कि आज जी अच्छा नहीं है—भीतर
हैं फिर अपने कमरेकी किवाड़ी मून्द कुर्सी पर आबैठा
पालकीको दस्तूरके मुताबिक मेज पर रख दिया। सलाम
होनेके बाद उसने यों कहना शुरू किया "तुम्हें जान लेना चा
कि इधर कई कसौटियां तुम्हारे बारेमें बड़े गुप्त तौरसे हुई
आखिर आज दो दिन हुए महाराजने भी अपनी राय दे दी
तुम्हें यह मालूमही है कि जबसे तुम यहां आये बलगुलाम
जानी दुश्मन बन बैठा है। इस दुश्मनीका असल सबब तो मैं
नहीं जानता पर हां, जबसे तुम शत्रुओंके जहाजोंको छीन लाये
तबसे वह तुमसे और भी कुढ़ने लगा है। तुम्हारे इस कामसे उस
बहुत नीचा देखा है। खजांनची भी अपनी स्त्रीके कारण तुम्हार
परम शत्रु बन गया है। इन दोनोंने मेल करके तुम्हारे ऊपर राज
विद्रोह आदि बड़े बड़े दोष लगाये हैं। इसमें और भी कई आदमी
शामिल हैं। सब दोषोंकी सूची भी बनकर तैयार होगई है।"

इस भूमिकाको सुनतेही मेरे होश उड़ गये। मैं कुछ
के लिये मुंह खोलनाही चाहता था कि वह फिर कहने लगा "अ
चुप रहो—पहले मेरी बात पूरी होने दो। मैं तुम्हारा बड़ा कृत
हूं। तुमने मेरा बड़ा उपकार किया है। इसीसे अपनी
जोखोंमें डाल कर सब बातोंका पता लगाता हुआ तुम्हारे पा
आया हूं। उस सूचीकी नकल भी लाया हूं। मैं तुम्हारे
अपनी जान भी देनेको तैयार हूं।" इतना कहके उसने उसे पढ़
कर सुनाया। उसमें यह लिखा हुआ था।

नर पर्व्वतकी दोषावली।

दोष नं० १

महाराज कलीन डेफ़्फार प्लूनके समयमें कानून पास हुआ है
जो कोई राजमहलके अहातेके अन्दर पेशाब करेगा सो विद्रो
की भांति कड़ी सजा पावेगा। नरपर्व्वतने इस कानूनं
उल्लंघन आग बुझानेके बहानेसे महारानीके महलमें जान बू
पेशाब किया है।

दोष नं० २

नर पर्व्वतके युफस्क से छुट्टी पहाड़ छीन लाने पर महाराजने
की महाराजोंको माने, उस राज्यको अपने राज्यमें मिलाने और
द्रोहियोंको नेस्तनाबूद करनेके लिये कहा तो नर पर्व्वतने विद्रो-
योंकी तरह महाराजकी आज्ञा उल्लङ्घन करके कहा कि स्वाधीन
र निर्दोष शत्रुओंकी स्वाधीनता तथा प्राण नष्ट नहीं करूंगा ये
र उसकी चालबाजियां हैं।

दोष नं० ३

युफस्क राज्यसे दूतगण सन्धिके लिये आये तो नर पर्व्वत
ाखातपात करके उनसे मिला और उनका आदर सत्कार किया।
द्यपि इसको मालूम था कि युफस्कके महाराज कुछ दिन हुए
मारे प्रगट शत्रु थे और उनसे युद्ध भी ठन चुका है तथापि यह
न्हींकी तरफदारी करता था।

दोष नं० ४

"दो रोज पहले जिस राज्यसे हमको शत्रुता थी—जिस राज्यसे
ोर संग्राम हुआ था उसी राज्यमें जपर कहा हुआ नर पर्व्वत
महाराजकी केवल मौखिक आज्ञा (जबानी हुक्म) के भरोसे जाया
चाहता है। यह वहांके महाराजसे जाकर मिलेगा और जरूर
उनको सब तरहसे मदद करेगा। यह कार्य्य महा विद्रोहका है।"

यह सुनाकर वह फिर बोला "और भी बहुतसे दोष हैं।
उनमें यह चारही मुख्य हैं जिनका केवल सार मात्र मैंने तुम्हें
सुनाया है। जब महाराजके सामने यह कागज पेश किया गया
तब वह उपकारोंको याद करके तुम्हारे कसूरोंको घटानेही की
कोशिश बराबर करते थे। उनकी राय थी कि कुछ थोड़ीसी
सजा करके तुम्हें छोड़ दें पर दुष्ट खसांची और बलगुलाम
तुम्हारी जान लेने पर उतारू हैं। उन दोनों की राय है कि
रातको तुम्हारे घरमें आग लगादी जाय जिसमें तुम उसीमें
जल मरो या बीसहजार फौज तुम्हारे मुंह और हाथोंमें

धका मूल कारण हैं! जिस आदमीने अपने पेशाबसे आग बुझाई वही एक दिन पेशावसे सारे महलको गारत भी कर सकता है। जो जहाजोंको खींच लाया है वह नाखुश होकर उन जहाजोंको वापिस भी लेजा सकता है! और सचमुच वह दिलसे विपक्षियों (बड़े सिरेकी तरफसे अण्डा फोड़नेवालों) का तरफदार है। विद्रोह पहले दिलहीमें पैदा होता है पीछे बाहर [illegible] होता है सो विद्रोहियोंको जीता छोड़ना [illegible] उचित नहीं।

खजानचीने भी इसी बातको समर्थन करते हु[illegible] इस नर [illegible] के मारे तो सारा खजाना खाली [illegible] थोड़े दिनोंमें जो बचा है वह भी साफ होजायगा। फिर इसकी खुराक जुटानेमें बड़ी कठिनाई पड़ेगी। रेलड्रेसलने जो आंख निकलवाने की बात कही सो ठीक नहीं। उसके अन्धे होनेसे खुराकका खर्च और भी बढ़ जायगा। यह तो प्रत्यक्षही है कि चिड़िया अन्धी होनेसे अधिक खाती है और इसीसे जल्द मोटी होजाती है। महाराज और समूची सभा उसके दोषोंको भली भांति जानती है। उसको जरूर फांसी होना चाहिये।"

इतने पर भी महाराजकी इच्छा नथी कि तुम्हें फांसी दी जाय। उन्होंने कहा अगर अन्धा करना सबकी रायसे उसको सजा है तो कोई दूसरी सजा तजवीज करना चाहिये। इस पर तुम्हारे मित्र रेलड्रेसलने फिर कहा 'अगर खुराकमें सच मुच इतना खर्च पड़ता है तो उसकी खुराक घटा देना चाहिये। थोड़े दिनोंमें दुबला होकर वह आप मर जायगा। जब दुबला होकर मरेगा तब उसकी लाश सड़ कर महामारी भी न फैला सकेगी क्योंकि तब उसकी देह आधी भी न रहेगी। पांच छः हजार आदमी उसके मांसको काट काटकर आसानीसे दूर फेंक आवेंगे। परन्तु उसको अस्थि चिन्हकी भांति रखा जायगा जो पैदा होंगे वह देखेंगे और आश्चर्य करेंगे।

यों मित्रतासे कहनेसे मामला निबट गया—[illegible]

खुराक घटानेकी बात तो छिपाई गई लेकिन सन्धा करनेका
वहीं पर चढ़ गया है। वलगुलाममे तुम्हारी जान लेनेके
बहुत सिर लड़ाया। महारानीका भी इसरा इरादा था।
तुमने पेशावसे आग बुझाई है तबसे वह तुमसे बहुत नाराज है।

परसों सिकात्तर साहब हुक्म लेकर तुम्हारे पास आवेंगे
सब कागज पत्र पढ़ कर तुम्हें सुनावेंगे। महाराजकी दया
वर्णन करके अन्तिम आज्ञा सुना देंगे। तुम्हें बैठकर
लेटना पड़ेगा तुम्हारी आंखोंकी पुतलियोंमें बहुत नुकीले
छोड़े जायगें। इसको देख भालके लिये बीस सरकारी
सुस्तैद रहेंगे।

"मुझे जो कुछ कहना था सो कह दिया। अब तुम जो
समझो सो करो। देरी करनेसे शायद मुझ पर लोग शक
इस लिये अब मैं जाता हूं।"

इतना कह वह चलता हुआ और मैं दुःख और चिन्ता
में पकड़ कर अपनी सुध बुध खो बैठा।

वर्त्तमान महाराज और इनके मन्त्रियोंने एक नई
चलाई थी कि जब विचारक महाराजका क्रोध शान्त करने
किसी मुंह लगेकी क्रोधाग्नि बुझानेके लिये प्राण दण्डकी व्यवस्था
कर देता है तो महाराज भरी सभामें स्वयं अपनी विश्वविदित
दयालुता और उदारता पर एक व्याख्यान देते हैं। राज्य
यह व्याख्यान छापकर बांट दिया जाता है। प्रजाको इतना
कोई चीज नहीं दहलाती है जितना महाराजकी अपार
कीर्तन। क्योंकि अकसर देखा गया है कि जितनी ज्यादे
की जाती है सजा भी उतनीही निठुरता और कड़ाईसे भरी होती
है। तिस पर तुर्रा यह कि अपराधी बिलकुल निर्दोषही रहता
है। लेकिन मैं जो कभी किसी राजदरबारमें रहा नहीं,
बुरेकी पहचान नहीं कर सकता विशेष कर महाराजकी
आज्ञामें तो दयालुता और उदारताका लेशमात्र मुझे दिखाई

नहीं पड़ता है। मेरी समझसे तो यह सरल न होकर महाकठिन है। नाना प्रकारकी चिन्ताओंसे चित्त चञ्चल था। क्या करना चाहिये सो स्थिर न कर सकता था। कभी कभी सोचता कि अपराधोंको स्वीकार करूं—महाराज दया करके छोड़ देंगे पर नहीं यह बात बिलकुल असम्भव है। जहां मेरे ऐसे ऐसे बध्य शत्रु मौजूद हैं वहां क्षमा कहां ? कभी सोचता क्या डर है ! इन तुच्छ जीवोंकी क्या गिनती है ? इन्हें तो मैं चुटकीसे मल दूं तो साफ होजाय छन भरमें समूचे राज्यका सत्यानाश कर सकता हूं बस यही ठीक है, लड़नाही अच्छा है। फिर सोचता यह भी ठीक नहीं। धर्मकी शपथ कर चुका हूं कि महाराज या उनकी प्रजाका अनिष्ट नहीं करूंगा। फिर धर्मके विरुद्ध काम कैसे करूं। जान जाय तो जाय पर यह मुझसे न होगा। महाराजने मेरा बड़ा उपकार किया है—खिलाया है, पिलाया है और बनाया है 'नटेक'। मुझसे कृतघ्नता न होगी।

अन्तमें एक बात सूझी। बस इसीको मैंने सर्वश्रेष्ठ माना। इसके लिये लोग मुझे दूस सकते हैं। उनका दूसना शायद वाजिब भी हो परन्तु मैं अपनी आंखें तथा स्वाधीनता बचानेके लिये जो झोंकमें आया सो कर बैठा। अगर मैं महाराजा तथा उनके मन्त्रियोंका स्वभाव जानता होता (जैसा अब जानने लगा हूं) तो शहर मैं अपनी आंखें निकलवालेता और इसीको गनीमत समझता। पर कहूं क्या ? जवानी दिवानीके जोशमें मुझे कुछ और ही सूझ गई। मैंने सोचा ब्लेफस्कू जानेकी आज्ञा महाराज देही चुके हैं बस वहीं भाग चलूं सब बखेड़ा निबटा। ईमान और जान दोनोंही बचीं। सांप मरा न लाठी टूटी। मैंने सिक्रत्तर साहबको लिख भेजा कि महाराजकी आज्ञानुसार कल मैं ब्लेफस्कू जाऊंगा। उत्तरका भी आसरा न देख मैं उसी दम उस ओर चल पड़ा जिधर बन्दरगाहमें जहाजी जहाज खड़े थे। वहां पहुंच कर मैंने एक जहाजका लङ्गर काट डाला और उसके आगेकी तरफ

एक रस्सी बांध दी। मैंने कपड़े लपड़े सब खोल खाल कर पर रख दिये। फिर जहाजको खैंचता हुआ कहीं तैरते कहीं चलते—लुफास्तूके बन्दरमें जा पहुंचा। वहां बहुत से लोग मेरी बाट देख रहे थे। उन लोगोंने दो आदमी दिये राजधानीकी तरफ लेचले। यहांकी राजधानीका भी नाम लुफास्तूहो है। मैंने उन दोनों आदमियोंको हाथमें उठा लिया जब राजधानी दो सौ गज दूर रही मैंने उन दोनोंको जमीन रखदिया और कहा जाओ मेरे आनेकी खबर महाराजके लिये को दो। एक घण्टेहीमें मुझे समाचार मिला कि महाराज परिवार दल बल समेत आगमनीके लिये आते हैं। मैं भी वहां बढ़ गया। मुझे देखतेही वह लोग सब अपनी अपनी सवारी परसे उतर पड़े। वह सब मुझे देख जरा भी अचम्भेमें न आये मैं महाराज और महारानीके हाथोंको चूमनेके लिये धरतीमें गया। फिर मैंने महाराजसे निवेदन किया "मैं अपनी आज्ञा नुसार श्रीमान्‌के दर्शनार्थ आया हूं। अब जो कुछ मेरे योग्य हो सो आज्ञा कीजिये।" मैंने अपने अपमानकी कुछ बातें नहीं क्योंकि खुल्लमखुल्ला खबर इसकी मुझे न थी। अब मैं उस राज्यसे निकल आया हूं अब चाहे वह इसकी चर्चा न करें। लेकिन ऐसा नहीं हुआ।

मेरी खातिर कैसी हुई या रहनेके लिये घर कैसा मिला आदि का पूरा वर्णन कर पाठकोंको दिक करना नहीं चाहता। मतलब यह कि जैसी चाहिये वैसी सब बातें हुईं। बिछौना जिसे मैं अपने साथ लाया था उसको बिछा कर सो रहता था।

द्वादश परिच्छेद।

तीन दिनके बाद मैं योंही टहलता हुआ सागरके पूर्वोत्तर ओर जा निकला तो देखा कि समुद्रमें कुछ दूर पर नाव एक औंधी पड़ी है। मैं जूते और मोजे उतार कर

में धंस गया। कोई तीनसौ गज दूर जानेके बाद मालूम हुआ हकीकतमें वह एक नौका है जो तूफानकी मारी किसी जहाज छूट कर यहां आपड़ी है। मैंने वापस आकर महाराजसे बीस बड़े जहाजों तथा हजार जहाजियोंकी मदद मांगी। महाराजने आज्ञा देदी। मैं सबको लेकर वहां जहां नावको देखा था पहुंचा। ज्वारका जोर बढ़ा आता था इससे वह नाव और पास आगई थी। जहाजियोंके पास मजबूत रस्से थे। कपड़े उतार कर फिर समुद्रमें कूद पड़ा। जब नाव सौगजके फासले पर रही तब मैं तैरने लगा पानी ज्यादेथा। आखिर मैं उसके पास पहुंचा। जहाज भी पीछे आतेथे। जहाजियोंने रस्से का एक छोर फेंक दिया जिसे मैंने नावके एक छेदमें जो आगेकी तरफ था बांध दिया और दूसरा एक जहाजमें। पानी बहुत था इसलिये काम सिद्ध नहीं हुआ। लाचार हो मैं तैरने लगा और नावको एक हाथसे आगेकी ओर ठेलता भी जाता था। लहर भी मेरी मदद करती थी। निदान उसको ठेलते ठालते ऐसी ठौर लेआया जहां जल मेरी ठुड्डी तक था। दो तीन मिनट सुस्ता कर मैंने फिर नावको ढकेलना शुरू किया। आखिर घुटने भर जलमें पहुंचा। मेहनतका काम अब पूरा होगया। मैंने उन रस्सोंको जो जहाज पर थे लिया उनका एक सिरा तो नावसे और दूसरा नौ जहाजोंसे बांध दिया। हवा अनुकूल थी। जहाजोंने खैंचना और मैंने धक्का देना शुरू किया। राम राम करते हम लोग किनारे के पास पहुंचे। ज्वारके जाने पर दो हजार आदमियोंकी मदद से नावको सीधा किया तो देखा वह बहुत टूटी नहीं है।

खैर किसी तरह उस नावको घसीट कर ब्लेफस्कूके बन्दरमें लेआया। इस विशाल वस्तुको देख कर ब्लेफस्कूवासी बहुत आश्चर्य करने लगे। मैंने महाराजसे कहा "ईश्वरने यह किश्ती मेरे लिये भेज दी है। अब इसी पर मैं यहांसे जाऊंगा और अपने देशको पहुंच जाऊंगा। श्रीमान् कृपा करके अपने कारीगरोंसे इसको

मरम्मत करवाईं और मुझे स्वदेश जानेकी अनुमति दें।" महा
ने सोच विचार कर मेरी प्रार्थना स्वीकार की।

कई दिन बीत गये लेकिन लिलीपटसे कुछ खबर नहीं
मुझे बहुत आश्चर्य हुआ। पीछे गुप्त रीतिसे खबर मिली
लिलीपटेश्वरको मुझ पर या मेरी कार्रवाई पर कुछ भी शक
हुआ क्योंकि वह जानते थे कि उन्हींसे आज्ञा लेकर मैं यहां
हूं और सभाकी बिलकुल बातें अभी प्रकाशित नहीं हुई हैं।
समझा कि मैं केवल सैरके लिये ब्लेफस्कू आया हूं थोड़ेही दि
लौट जाऊंगा। लेकिन जब मेरे लौटनेमें देर हुई तो उन लो
माथा ठनका। निदान खजानची और मन्त्रियोंकी राय
होशियार आदमी मेरे अभियोगपत्रकी नकल तथा ब्लेफस्कू न
नामसे चिट्ठी लेकर आया। चिट्ठीमें लिलीपटेश्वरकी दयालु
प्रशंसा करनेके बाद लिखा था "नरपर्वत नालका एक
यहांसे भाग कर आपकी शरणमें गया है। इसके ऊपर कई
दोष लगाये गये हैं। वह दण्ड पानेके डरसे भाग गया है।
अपराध तो भारी हैं तथापि दया करके केवल आंखें निकलवा
की व्यवस्थाकी गई है। आप इसको मुश्कें बांध कर जल्द
भेज दीजिये। अगर दो घण्टेके अन्दर वह हाजिर नहीं होगा
इसकी "नर्डक" की उपाधि छीन लीजायगी और वह राजविद्रो
समझा जायगा। अगर आप भी सन्धि और मित्रता रखना चा
हैं तो जल्द उसे हाथ पैर बांध कर भेज दीजिये।"

ब्लेफस्कू नरेशने तीन दिनके बाद सोच विचार कर बहु
उजर दिखलाते हुए यों जवाब लिखा "यद्यपि नरपर्वत
जहाजोंको लेगया है तथापि इसको हम भेज नहीं सकते हैं।
के समय उसने हमारा बहुत कुछ उपकार किया है। और
भेजनेकी दरकार भी नहीं है क्योंकि अब वह यहांसे अपने देश
जानेवाला है। समुद्रमें एक बड़ीसी नाव मिल गई है। उस
मरम्मत होरही है। मरम्मत होतेही वह यहांसे जल्द चला जाय

गा है कि चन्द घण्टेमें यह दोनों राज्य इस कदर भारसे मुक्त हो जांयगे।"

इस उत्तरको लेकर दूतराम सिसोपट गये। इस दम्फू नरेशने ह सब बातें कहनेके बाद मुझसे कहा "अगर तुम यहां रहो तो ईमैं रख सकता हूं।" लेकिन मैं अब राजा राजाओंका विश्राम तों करने लगा? मैंने महाराजकी कृपाका धन्यवाद करके कहा जब परमात्माने मेरे लिये एक नौका भेज दी है तो अब यहां हके क्या करना है? भाग्यके भरोसे नौका समुद्रमें छोड़ दूंगा रमात्मा बेड़ा पार लगा देगा। यहां रहके आप ही बड़े बड़े हाराजोंमें बैर कराऊंगा मुझे पसन्द नहीं है। अब कृपा करके मुझे नेकी आज्ञा होजाय।" महाराजने भी प्रसन्न होकर आज्ञा देदी।

इनहीं बातोंको सोच विचार कर मैंने भी जल्द प्रस्थान करना चारा। पांचसौ कारीगर पाल बनानेमें लगे। सबसे मोटे कपड़ेको तेरह तह करके दो पाल बने। मैंने अपने हाथोंसे रस्सा य्यार किये। एक भारी पत्थर ढूंढ़ कर लङ्गर बनाया। कई बड़े ड़े पेड़ काट कर डांड और पतवार बनाये। महाराजके बढ़-योंसे इस काममें बहुत कुछ मदद मिली।

एक महीनेके अन्दरही सब ठीक ठाक होगया तब मैंने महा-राजसे विदा मांगी। महाराज सपरिवार महलसे बाहर आये। मैंने जमीनमें लेट कर उनके हाथ तथा महारानीके हाथ चूमे। फिर एक एक करके सब लोगोंके हाथोंको चूम डाला। महाराज ने दो हजार अशर्फियां और अपनी एक बड़ी तसवीर दी। तसवीरको फूटनेके डरसे मैंने झट पट अपनी जेबमें दाखिल किया।

मैंने किश्तीमें एकसौ मरे बैल, तीनसौ मरी भेड़ें और खाने पीनेके लिये रोटियां और शराब भरपूर रखली थी। इनके अलावे छ गाती गायें, दो जोते सांड़ और उतनेही भेड़ें भेड़ रख लिये थे। इन सबके खिलाने पिलानेके लिये घास फूस भी लिया था।

में तो साथमें एक दर्जन वहांके निवासियोंको भी धर लेता
चाहूं क्या ? महाराजने कह दिया था कि अगर कोई जाना
तोभी किसीको सङ्ग मत लेजाना। इसी लिये चलनेके समय
जेबोंकी तलाशी भी हुई थी।

इसी तरह सब सामान लैस होकर १७०१ ईस्वीकी २४
सितम्बरकी छः बजे सवेरे मैंने ब्लेफस्कू बन्दरसे कूच किया।
दक्खिन पूरब कोनसे बहती थी। मैं सीधा उत्तर मुँह
करीब बारह मील जानेके बाद शामके छः बज गये।
कोनकी तरफ डेढ़ मीलके फासले पर एक टापू नजर आया।
किश्तीको उधरही घुमाया। वहां पहुंच कर मैंने टापूके उस
में जिधर हवाका जोर कम था अपनी किश्तीका लङ्गर गिरा
टापू आबाद नहीं था। कुछ खा पीकर आराम किया।
सोया। उठनेके दो घण्टे बाद सवेरा हुआ। रात साफ
स्वच्छ थी। उठ कर कलेवा किया हवा अच्छी थी। फिर
उठाया। कलकी तरह फिर उत्तर मुँह जाने लगा।
यन्त्रसे दिशाका निर्णय कर लेता था। उस दिन
बात लिखने लायक हुई नहीं। तीसरे दिन तीसरे पहर
एक जहाज दिखाई पड़ा दक्खिन पूर्वकी ओर जारहा था।
भी किश्ती उसी तरफ बढ़ाई। पुकारा पर कोई जवाब न
मिला। हवाका जोर घट चला था। मैंने सब पाल तान दि
आध घण्टेके बाद जहाजवालोंने मुझे देखा। उन्होंने अपना
हरा उड़ाया और बन्दूक छोड़ी। उस समय मेरे आनन्दका
ठिकाना था। फिर देश पहुंच कर अपने बाल बच्चोंके मुँह दे
की उम्मीदसे तबीयत खुशीसे भरगई। जहाजके पास
गये। २६ वीं सेप्टम्बरकी शामको मैं जहाजके पास जा पहुंचा
अङ्गरेजी फरहरा देखनेके लिये मेरा दिल उछल रहा था।
और भेड़ोंको जेबमें धर लिया। बाकी चीजोंको ले जहाज
गया। जहाज अङ्गरेजी सौदागरका था। यह जापान

म भारहा था। इसका कप्तान था कौन विड़। यह बड़ा
तया अपने काममें पक्का था। कोई पचास आदमी जहाज
थे। उनमें मेरा एक पुराना दोस्त भी था। उन्होंने कप्तानसे
जान पहचान कराई। कप्तानने मेरी बहुत खातिर की।
के पूछने पर मैंने अपनी रामकहानी सुनाई तो वह मुझे पागल
मने लगा। जब मैंने पाकेटसे अपने पशुओंको निकाल कर
नने रख दिया तब मेरी बातोंको सत्य माना। फिर मैंने ग्रैफस्कू
यकी तसवीर तथा अशर्फियां दिखलाईं। मैंने कप्तानको दोसौ
र्फियां दीं और कहा कि इङ्गलैण्ड पहुंच कर एक गाय और
मिन भेड़ दूंगा।

आखिर १७०२ ईस्वीकी १३ वीं अप्रैलको डाउनसके बन्दरमें
हुंचे। एक बड़ी मुशकिल यह हुई कि एक भेड़को एक चूहा
कड़ कर लेगया। बाकी ढोर कुशलसे पहुंचे। ग्रिनविच पहुंच
र उन्हें चरनेके लिये मैदानमें छोड़ दिया। यह सब चर कर
स्त होगये। अगर कप्तान कृपा कर थोड़ीसी बढ़िया जगह
हाज पर न देता तो यह सब जानवर जीते जागते न पहुंचते।
ब चारा घट गया तो बिसकुट तोड़ कर पानीके साथ खिलाता
। इङ्गलैण्ड पहुंच कर मैंने बड़े बड़े आदमियोंसे इन जानवरों
ो दिखला कर बहुत कुछ फायदा उठाया। दूसरा सफर करनेसे
हलेही इन्हें मैंने ६००० रुपयेमें बेच डाला। भेड़ोंने बच्चे उनको
पना खान दान बढ़ाया। मैं आशा करता हूं ऊनवाले इनसे
ड़ा फायदा उठावेंगे क्योंकि इनका ऊन बहुत बारीक और
ढ़िया होता है।

आखिर मैं घर पहुंचा। बाल बच्चोंसे मिलकर अपार आनन्द
ाप्त हुआ—छाती ठण्ढी हुई। पर अफसोस! घरमें दोही महीने
हा। देश विदेश देखनेकी कुछ ऐसी चाट मुझे पड़ गई थी कि
ज्यादे दिन घरमें ठहर न सका। रिडरिफ मुहल्लेमें एक अच्छा घर
देखकर गृहस्थी उठा लाया। खर्च बर्चके लिये स्त्रीको पन्द्रह हजार

रुपये दिये बाकी पूंजी अपने पास रक्खी। काकाजीने
समय तीनसौ चालीस सालाना आमदनीकी सम्पत्ति मेरे
लिख गये थे। इतनीही आयकी एक जगह और थी।
अन्न वस्त्रका अब टोटा नहीं रहा। मेरा लड़का जौनी पाठशा
पढ़ता है। मेरी बेटी जिसका नाम बेटी है अब बैठे बेटीवाली
यह सूईका काम करती है। बालबच्चोंसे बिदा होकर मैं
लन्दनसे चला। बिदाके समय सबकी आंखें डबडबा आईं
और किसी तरह बाहर हुआ। कप्तान जोन निकोलसका
सूरतको जाता था। अबके मैं इसी जहाज पर मुकर्रर हुआ।
यात्राका वृत्तान्त दूसरे खण्डमें लिखूँगा। यह यात्रा बड़ी
हुई। इसका वृत्तान्त आश्चर्य्य घटनाओंसे परिपूर्ण है।

इति प्रथम खण्ड समाप्त।

विचित्र-विचरण ।

द्वितीय भाग ।

ब्रौवडिगनेगकी यात्रा ।

प्रथम परिच्छेद ।

सुखसे घरमें रहना मेरे भाग्यमें लिखाही न था। दो महीने बाद फिर स्वदेश त्यागना पड़ा। ता० २० वीं जून १७०२ ई०को सूरतके लिये जहाज खुला। जहाजमें सौदागरीकी चीजें भरी थीं। यह कह चुका हूं कि इस जहाजके कप्तानका नाम जौननिकोलस था। उत्तमाशा अन्तरीप तक वायु बहुत अनुकूल रही। यहां ताजा पानीके लिये हम लोग ठहर गये। पीछे जहाजकी पेंदीमें एक छेद दिखाई पड़ा। लाचार जहाज खाली किया गया। इधर कप्तानको शीत ज्वरने आघेरा। इसलिये मार्च तक हम लोग यहीं डेरा जमाए रहे। सब ठीक ठाक होजाने पर हम लोगोंने फिर लङ्गर उठाया। मेडेगास्करके मुहाने तक हम लोग निर्विघ्न चले गये। लेकिन इस द्वीपसे उत्तर मुंह होतेही वायुने अपना प्रचण्ड रूप धारण किया। इस प्रान्तमें दिसम्बरके प्रारम्भसे मईके आरम्भ तक सदैव समान गतिसे वायु सञ्चालित होती है। किन्तु १८ वीं अप्रैलको इसका वेग बहुतही बढ़ गया। लगातार बीस दिन तक यही दशा रही। इतनेमें हम लोग मुलक्काद्वीपसे कुछ पूरब जा पहुंचे। २ मईको हवाका जोर कुछ घट गया। मैं हर्षित हुआ परन्तु बहुदर्शी कप्तानने कहा "होशियार रहो—बड़ा भारी तूफान आनेवाला है।" आखिर यही हुआ। दूसरेही दिन भीषण तूफान

वाई देख कर पहले मुझे बहुतही अचरज हुआ। बीस फुट
की घास अब तक मैंने कभी नहीं देखी थी।

आगे बढ़ा तो एक बड़ी चौड़ी सड़क मिली जो खेतके बीचमें हो
कर निकली थी। पीछे मालूम हुआ कि यह सड़क नहीं मामूली
पगडण्डी थी। इसको घोड़ाई देख करही मुझे यह धोखा हुआ
था। कुछ देर तक मैं योंही घूमा किया। समय फसलका था।
नाजके पेड़ ४०।४० फुट ऊंचे देखनेमें आये। इन सब चीजोंको
देख कर मेरी अक्ल गुम थी। लगातार एक घण्टा चलनेके बाद
खेतके दूसरे छोर पर जा पहुंचा। यह १२० फुट ऊंची टट्टी
से घिरा हुआ था। और पेड़ सब तो इतने ऊंचे थे कि देखनेमें
टोपी गिर पड़ती थी। एक खेतसे दूसरे खेतमें जानेके लिये चार
सीढ़ियां बनी थीं। ऊपर एक पत्थर रक्खा था उसी परसे नीचे
उतरना पड़ता था। इन सीढ़ियोंसे उस पार जाना मेरे लिये असम्भव
था। क्योंकि एक एक सीढ़ी छः छः फुटके फासले पर और
ऊपरवाला पत्थर २० फुटसे भी अधिक ऊंचे परथा। मैं इस विचार
में था कि टट्टीमें कोई छेदभेद मिल जाय तो उस पार चला जाऊं
इतनेमें बाड़के उस पारसे एक राक्षस सीढ़ीकी तरफ आता हुआ
दिखलाई पड़ा। इसका भी डील डौल उसी जन्तुके जैसा था जो
मेरे साथियोंके पीछे समुद्रमें दौड़ा जाताथा। यह साधारण गिरजाके
समान ऊंचा था और एक एक डग दस दस गजका करताथा।
आश्चर्य और भयसे मेरी अजब दशा होगई। मैं एक भुरसटमें छिप
गया। वहांसे देखा वह राक्षस बाड़के ऊपर चढ़ गया और दाहिनी
ओर गर्दन फेर बार जोरसे चिल्ला उठा। चिल्लाना क्या था बादल
की गरज थी—इसकी आवाजसे मेरे कान बहरे होगये। इतनेमें
उसी परिमाणके और सात राक्षस हाथोंमें हंसवे लिये आपहुंचे।
यह हंसवे हम लोगोंके हंसवोंसे छः गुने बड़े थे। यह सातों
अपने पहनावेसे मजदूर मालूम पड़ते थे। पहलेके अर्थात् सर-
दारके कुछ कहने पर वह सब मजदूर उसी खेतको जिसमें मैं छिपा

...म्बाई देख कर पहले मुझे बहुतही पचरज हुआ। बीस फुट ...म्बी घास पब तक मैंने कभी नहीं देखी थी।

... आगे बढ़ा तो एक बड़ी चौड़ी सड़क मिली जो जौके खेतमें हो ...कर निकली थी। पीछे मालूम हुआ कि यह सड़क नहीं मामूली ...पगडण्डी थी। उसकी चौड़ाई देख करही मुझे यह धोखा हुआ ...था। कुछ देर तक मैं योंही घूमा किया। समय फसलका था। ...नाजके पेड़ ४०।४० फुट ऊंचे देखनेमें आये। इस सब खेतोंको ...स कर मेरी पक्ल गुम थी। लगातार एक घण्टा चलनेके बाद ...खेतके दूसरे छोर पर जा पहुंचा। यह १२० फुट ऊंची टट्टी ...घिरा हुआ था। और पेड़ सब तो इतने ऊंचे थे कि देखनेमें ...टोपी गिर पड़ती थी। एक खेतसे दूसरे खेतमें जानेके लिये चार ...सीढ़ियां बनी थीं। ऊपर एक पत्थर रक्खा था उसी परसे ...उतरना पड़ता था। इन सीढ़ियोंसे उस पार जाना मेरे लिये असम्भव था। क्योंकि एक एक सीढ़ी छः छः फुटके फासले पर और ऊपरवाला पत्थर २० फुटसे भी अधिक ऊंचे पर था। मैं इस विचार ...में था कि टट्टीमें कोई छेदबेद मिल जाय तो उस पार चला जाऊं ...इतनेमें बाड़के उस पारसे एक राक्षस सीढ़ीकी तरफ आता हुआ दिखलाई पड़ा। इसका भी डील डौल उसी जन्तुके जैसा था जो मेरे साथियोंके पीछे समुद्रमें दौड़ा जाताथा। यह साधारण गिरजाके समान ऊंचा था और एक एक डग दस दस गजका करता था। आश्चर्य और भयसे मेरी अजब दशा होगई। मैं एक झुरमटमें छिप गया। वहांसे देखा वह राक्षस बाड़के ऊपर चढ़ गया और दाहिनी ओर गर्दन फेर कर जोरसे चिल्ला उठा। चिल्लाना क्या था बादल की गरज थी—उसकी आवाजसे मेरे कान बहरे होगये। इतनेमें उसी परिमाणके और सात राक्षस हाथोंमें हंसवे लिये आपहुंचे। यह हंसवे इस लोगोंके हंसवोंसे छः गुने बड़े थे। यह सातों अपने पहनावेसे मजदूर मालूम पड़ते थे। पहलेके अर्थात् सरदारके कुछ कहने पर वह सब मजदूर उसी खेतको जिसमें मैं छिपा

आ काटने लगी। मुझसे जहां तक बना दूर भाग चला।
कहीं पौधे इतने घने थे कि चलनेमें बड़ी तकलीफ हुई।
नुकीले कांटे बदनमें चुभते थे पर क्या करता—प्राण लेकर
जाता था। पीछेसे जो काटनेवालोंकी आहट सुनाई पड़ी
वट, भय और निराशासे मेरी घबड़ाहटका ठिकाना न
लाचार हो वहीं लेट गया। सोचा अब प्राण देनेहीमें स
स्त्री और पुत्रका स्मरण कर गला भर आया। अपनी भू
बहुत पछताया। हाय! क्यों घर बार छोड़ा? न घरसे नि
न जान जाती! हाय मैं बेमौत मरा! इस दुःखमें भी लि
याद आगई! वहां मैं हीं एक राक्षस समझा गया था!
जङ्गी जहाजोंको खेंच लाया था और वहां न जाने मैंने कित
अद्भुत कर्म किये थे! हाय! जैसा मैं लिलीपटी लोगोंको
था वैसेही यह राक्षस मुझे समझेंगे! सबसे दुःखकी बात तो
यह जङ्गली असभ्य जीव देखतेही मुझे खा जायंगे क्योंकि
के सदृशही मनुष्यमें जङ्गलीपन और असभ्यता होती है।
ने बहुत ठीक कहा है कि मुकाबला किये बिना किसी
छोटी बड़ी नहीं कहना चाहिये। लिलीपटी लोगोंसे भी
और इन राक्षसोंसे भी बड़े जीव संसारमें हो सकते हैं!

इस बीचमें एक मजदूर मेरे बहुत निकट आगयाथा। मैं
अगर कहीं धोखेसे इसके पांव मुझ पर पड़ गये तो यहीं
जाता था या एक हाथ हंसवेहीका चल गया तो मेरा काम
है! डरके मारे प्राण सूख गये। जब वह मजदूर फि
पैर बढ़ाने लगा मैं खूब जोरसे चिल्ला उठा। मेरी आवाज
पड़ चौकन्ना हुआ और इधर उधर देखने लगा। आखिर
दृष्टि मुझ पर पड़ी। जैसे कोई किसी विषैले छोटे जीव
देर तक होशियारीसे उसे उठानेकी तरकीब सोचता है वैसे
ही खड़ा खड़ा सोचने लगा। निदान साहस करके उसने
और तर्जनीसे मेरी कमर पकड़ कर उठा लिया और आंखो

ज दूर रख कर गौरसे देखना शुरु किया। जब उसने मुझे जमीन साठ फुट ऊपर उठाया तो मैं कुछ न बोला। जिसमें मैं गिर न पड़ं न ख्यालसे उसने खूब जोरसे मुझे दबाया था। उसके दबानेसे बुतही कष्ट हुआ। मैं सूर्यकी ओर निहार कर अति दीनतासे गनती करने लगा। मुझे यही मालूम होता था कि अब इसने झे जमीन पर पटका क्योंकि हम लोग भी छोटे छोटे कीड़े कोड़ेको यौंही फेंक देते हैं। लेकिन परमात्माकी दयासे मेरे ह अच्छे थे। वह मेरी बोली और हाव भावसे बहुतही प्रसन्न आ। आदमियोंकी भांति बोलते देख कर उसे और भी अचम्भा आ। परन्तु मेरी बातें उसकी समझमें नहीं आईं। आखिर ाखें डबडबा कर मैं रोने लगा और कमरकी ओर देखने लगा। ह मेरा भाव समझा गया। चटपट कोटके दामनमें मुझे लपेट कर पने मालिकके पास लेआया। यह मालिकराम वही थे जिनको ेत में पहले मैंने देखा था।

द्वितीय परिच्छेद।

किसानने अपने मजदूरसे सब बातें सुन कर एक तिनका जो छड़ीके समान लम्बाथा उठा लिया और मेरे कोटके दामनको उलट लट कर देखा। उसने शायद समझा कि यह खाल है। फिर ाल हटा कर मेरे मुंहको भली भांत देखा। तब मजदूरोंको ुला कर उसने पूछा कि ऐसा जानवर तुम लोगोंने और कभी कहां देखा है। लेकिन वह लोग कुछ जबाव न देसके। यह सब बातें मुझे पीछे मालूम हुई। उसने मुझे तब जमीन पर सुला दिया। मैं चटपट उठ कर धीरे धीरे इधर उधर घूमने लगा जिसमें वह जानलें कि मैं भागना नहीं चाहता हूं। वह सब भी तमाशा देखने के लिये मुझे घेर कर बैठ गये। मैंने टोपी उतार कर किसानको झुक कर सलाम किया फिर घुटना टेक, हाथ उठा और ऊपर देख कर वहां तक बना गला फाड़ कर प्रार्थना की। जेबसे कल-

फिर्योंका बटुआ निकाल कर उसके आगे रक्खा। उसने ले
लिया पर खोल न सका। तब मैंने इशारेसे कहा कि अपनी
भूमि पर रख दो। उसने वही किया। मैंने बटुआ खोल कर
सिक्के उसके हाथ पर उलट दिये। उसने थूकसे उंगली गीली
के उन सिक्कोंको उठा उठा कर देखा लेकिन कुछ समझ न
फिर उसने उन्हें बटुएमें और बटुएको जेबमें रखनेका इशारा
मैंने तुरत उसकी आज्ञा माथे चढ़ाई।

अब किसानको पूरा विश्वास होगया कि मैं कोई सज्ञान
हूं। वह मुझसे बारम्बार बोलता था। यद्यपि उच्चारण स
तथापि उसकी बोलीसे मेरे कानके परदे फाटते थे। मैं भी
गरज कर कई बोलियोंमें उत्तर देता पर कोई भी किसीकी
नहीं समझता था। उसने मजदूरोंको काम पर जानेके लिये
कर पाकटसे अपना रूमाल निकाला। यह एक फुटसे
मोटा नहीं था। उसी रुमालमें बांध कर वह मुझे अपने घर
गया। विलायतमें बीबियां जिस प्रकार मकड़े और मेडक दे
डर जाती हैं उसी प्रकार उसकी स्त्री भी मुझे देखतेही चौंक
और चिल्ला कर भाग गई। निदान वह मेरी चेष्टाओंको देख
हुई और फिर तो मुझे बहुत प्यार करने लगी।

बारह बजे दिनको खानसामा खाना लेकर हाजिर हु
जिस रकाबीमें खाना आया था उसका व्यास २४ फुटथा। कि
के परिवारमें केवल उसकी स्त्री तीन लड़के और उसकी बुढ़ि
नानी थी। जब सब भोजन करनेके लिये बैठे तब किसानने कु
फासला मेज पर मुझे बिठाया। मेज तीस फुट ऊंची थी। मैं डि
कि कहीं किनारे [illegible] बीचमें जा बैठा। किसानकी नौनि
[illegible] टुकड़े थालमें रख कर मेरी ओर सरका दि
[illegible] खाने लगा। मेरा खाना देख कर वह सब
[illegible] फिर [illegible] खाना मंगवा कर मुझे
[illegible]

ती थी। मैंने बड़ी कठिनतासे दोनों हाथोंसे प्यालेको उठाया र बदयके साथ गृहिणीका स्वास्थ्य पान किया। फिर चहरेको सतापता प्रकाशको। इस पर वह सब खिलखिला उठे। उनके कट हास्यसे मैं तो बधिर होगया। मदिराका स्वाद कुछ बुरा हीं था। किसानने संकेतसे मुझे अपनी तरफ बुलाया। मैं चला किन रोटीके टुकड़ेकी ठोकर खाकर मेज पर पट गिर पड़ा। श्वरकी दयासे चोट नहीं लगी। खैर, उठा और फिर चलने गा। इतनेमें किसानके बेटेने जिसकी उमर दस वर्षसे अधिक थी टांग पकड़ कर मुझे उठा लिया और फिर इतना ऊंचा ठाया कि मेरा कलेजा कांप गया। किसानने लड़केके हाथसे झे छीन लिया और एक तमाचा उसके बायें गाल पर जमा कर हांसे चले जानेके लिये कहा। मैंने हाथ जोड़ कर बालक माफ रनेके लिये इशारा किया। उसने भी मेरी बात मानली। बालक फर बैठ गया। मैंने पास जाकर उसके हाथको चूमा और किसान मेरी देह पर बालकका हाथ फिरवा दिया।

जब सब भोजन कर रहे थे गृहिणीकी पाली हुई बिल्ली उसकी गोदमें आकूदी। गड़गड़ाहट सुनाई पड़ी मुंह फेर कर देखा तो बिल्लीजी बैठी हैं और गृहिणी प्यारसे उस पर हाथ फेर रही है। यह बिल्ली भी तीन बैलोंके बराबर थी। सभी चीज आश्चर्यको बढ़ानेवाली थीं। गृहिणीने मांसका टुकड़ा उसको खानेके लिये दिया। यद्यपि मैं बिल्लीसे पचास फुट दूर था तथापि उसकी भयानक सूरत देख कर मैं डर गया था। कहीं मुझ पर चोट न कर बैठे इस ख्यालसे गृहिणी भी उसे जोरसे पकड़े हुए थी। लेकिन उसने मेरी ओर नजर उठा कर देखा भी नहीं। किसानने एक तमाशेके लिये तीन गजके फासले पर उसे खड़ा किया पर वह निगोड़ी बिल्ली मटकी भी नहीं। लोगोंसे सुना है और देखा भी है कि किसी भयानक जीवको देख कर डरने या भागनेसे पीछा करता है पर निडर होकर डटे रहनेसे कुछ नहीं कहता। मैं भी

विल्लीके सामने बराबर उठा रहा। दो चार बार साहस क
उसकी बगलसे निकल भी गया। आखिर वही बिचारी डर
चम्पत होगई। इतनेमें तीन चार कुत्ते आपहुंचे। यह सब
बड़े थे—इनमेंसे एक तो हाथीके समान था। मैं इन सबको
कर तनक भी न डरा।

जब भोजन समाप्त होने पर या दाई एक वर्षका बालक
लिये आ उपस्थित हुई। वह बालक खिलौना समझ
मुझसे लेनेके लिये रोने लगा। उसकी माता उसका भय
देख कर मुझे उसके पास लेगई। उस लड़के नादानने मेरी
पकड़ली और मेरा सिर अपने मुंहमें डाल लिया। मैं इतने
चिल्ला उठा कि उसने डर कर मुझे फेंक दिया। अगर
अपने आंचलमें मुझे न लेलेती तो मैं अवश्य चकनाचूर हो जा
बालक फिर रोने और मचलने लगा। दाईने चुप करानेके
झुनझुना जो बालकको कमरसे बंधा था बजाया पर वह क्यों
होने लगा था ? इस झुनझुनेका शब्द बहुत कर्कश था। जब
तरहसे भी वह शान्त न हुआ तब उसने अन्तिम उपाय
अर्थात् उसे दूध पिलाने लगी। उस दाईके स्तनद्वयको देख
मुझे जितनी घृणा हुई उतनी आज तक कभी नहीं हुई।
स्तनोंके रूप रङ्ग और आकारकी तुलना किससे करूं सो सम
नहीं आता है। यह कुच छः फुट ऊंचे तथा इनका घेरा १६
से कदापि कम न था। स्तनका मुँह मेरे सिरसे आधा
इनके रङ्ग विचित्र थे। इन पर नाना प्रकारके दाग थे। इन
को देख कर मेरा तो जी घबड़ा उठा। उस समय मुझे विला
बीबियोंकी याद आगई। यह बीबियां हमारे समान होने
कारण इतनी सुन्दर मालूम होती हैं। इनके दोष हम लोग
आखोंसे नहीं देख सकते हैं। यदि सूक्ष्मदर्शक यन्त्र से इनके
देखे जायं तो इनका यह गोरा चमड़ा भी रूखा मोटा और व
मालूम पड़ेगा।

जब मैं लिलीपटमें था तो वहांके लोग मुझे संसार भरसे अधिक
मालूम होते थे। मुझे स्मरण है एक दिन सब इसी बातकी
चली तो वहांके एक पण्डितने कहा था "हां जब तुम्हें मैं
से देखता हूं तो तुम्हारा चेहरा साफ सुथरा चिकना और गोरा
पड़ता है लेकिन जब तुम अपने हाथमें मुझे उठा लेते हो
तुम्हारा चेहरा भयङ्कर मालूम देता है—बदनमें बड़े बड़े छेद
ई पड़ते हैं। दाढ़ीकी खूंटियां सूअरके बालसे दस गुना बड़ी
ई देती हैं और रङ्ग बिलकुल फीका जचने लगता है।" जब
लिलीपटकी स्त्रियोंकी बाबत कहता कि फलानीके मुंह पर
है—फलानीका मुंह चपटा है और फलानीकी नाक बड़ी है
मुझे कुछ भी नहीं मालूम होता था। यह बात बहुत ठीक है
छोटी छोटी वस्तुओंका गुण दोष इन नेत्रोंसे प्रगट नहीं होताहै
न्तु बड़े बड़े पदार्थोंका होजाताहै। पाठकगण! कहीं आप यह न
झ बैठें हों कि यह विराट जीव कुरूप होते हैं। नहीं ऐसा मत
भिये—यह बड़े सुन्दर और रूपवान होतेहैं। विशेष कर मेरे
सानकी आकृति पृथ्वी परसे अति कमनीय मालूम होती थी।

खैर भोजन समाप्त हुआ। किसान फिर अपने खेत पर गया किन्तु
के भावसे प्रगट हुआ कि वह जानेके समय अपनी स्त्रीसे मेरी
फाजत करनेके वास्ते कह गया था। मैं थकावटके मारे ऊंघता
। गृहिणीने मेरी दशा समझ अपनी बिस्तरे पर मुझे सुलाकर
साफ रूमाल उढ़ा दिया। यह रूमाल जहाजको बड़ी पाल
पाल नहीं नहीं उसका भी लकड़दादा था।

मैं दो घण्टे तक सोया। सपनेमें बाल बच्चोंको देखा। आंखें
लीं तो अपनेको बीस गज लम्बे चौड़े पलङ्ग पर एक बड़े कमरेमें पाया।
ह कमरा दो तीन सौ फुट चौड़ा और सौ फुटसे अधिक ऊंचा
। नींद खुलने पर लड़केबालोंकी यादसे बहुत दुःख हुआ।
रकी मालकिनी मुझे तालेमें बन्द करके अपने गृह कार्यमें लगी
। पलङ्ग भूमिसे आठ गज ऊंचा था। मुझे लड्डनकी हाजत

थी इसलिये नीचे उतरना चाहता था। पुकारनेकी हिम्मत पड़ी और पुकारही कर क्या होता—मेरी आवाज तो वहीं गूंज रह जाती। जब मैं पड़ा पड़ा सोच रहा था, दो चूहे पलङ्ग आधमके और लगे इधर उधर सूंघा सांघी करने। एक सूंघते सूंघते मेरे मुँहके पास आपहुंचा। मैं डरके मारे उठ बैठा और खञ्जर निकाल लिया। यह लगे दोनों तरफसे मुझ पर आक्रमण करने। एकने तो झपट कर मेरा गलाही पकड़ लिया। ईश्वर की दयासे मैंने भी तुरत खञ्जरका एक हाथ ऐसा मारा कि वहीं एकसे दो होगया। अपने साथीकी यह दशा देखकर दूसरा चलता बना लेकिन मैंने बड़ी फुरतीके साथ उस पर भी एक हाथ चलाही दिया था। इसके बाद दम लेनेके लिये मैं पलङ्ग पर टहलने लगा। यह चूहे पहाड़ी कुत्तेके समान बड़े तथा भयङ्कर थे। यदि मेरे पास खञ्जर न होता तो यह जरूर खा जाते। इसकी दुम मैंने नापी तो एक इञ्च कम दो गज हुई। लोहूसे बिछौना तर बतर होगया। मैंने बड़ी कठिनतासे मरे चूहेको नीचे फेंक दिया।

इतनेमें गृहिणी आगई। मुझे लहूमें भरा देख कर चट मुझे उठा लिया। मैंने चूहेकी ओर संकेत किया और दिया कि मैं निरापद हूं। यह देख वह बहुत प्रसन्न हुई। दाईको बुलाया दाईने आकर चिमटेसे मरे चूहेको खिड़की राहसे फेंक दिया। गृहिणीने मुझे मेज पर खड़ा किया। अपना खञ्जर दिखलाया और पोंछ पांछ कर रखलिया। मुझे उस कामकी हाजत थी जिसको दूसरा कोई मेरे बदले कर सकता था। मैंने संकेतमें कहा कि मुझे जमीन पर बिठा दो। बड़ी कठिनतासे उसने मेरा अभिप्राय समझा। मुझे गोद लिये बगीचे पहुँची। वहां जमीन पर बिठा दिया। मैं वहीं रहनेके लिये कह कर दोसौ गज आगे निकल गया। झुरमुटमें बैठ कर मैंने हाजत रफाकी।

ऐसी ऐसी बातें लिखनेमें बहुतेरे पाठक नाक भौंह चढ़ावेंगे न्तु उन्हें जान लेना चाहिये कि तत्वज्ञानियोंको कल्पनाशक्ति ढ़ानेमें यह बातें बहुत कुछ सहायता करेंगी। इन्हीं लोगोंके पकारके लिये मैंने अपनी यात्राका रत्ती रत्ती हत्तान्त लिख डाला । नाजुक मिजाज पाठक चमा करें।

तृतीय परिच्छेद।

किसानकी नौ बरसकी एक कन्या थी। यह सूईके काममें या बच्चोंको कपड़े पहरानेमें बड़ी पक्की थी। इसकी मा और सने मिल कर मेरे सोनेके लिये एक पालना तय्यार किया था। चूहोंके डरसे रातको यह पालना ऊंची जगह पर लटकाया जाता था। जब तक इन लोगोंके साथ रहा मैं इसी पर सोता था। ज्यों ज्यों इनकी भाषा मैं सीखने लगा त्यों त्यों मेरा सुख बढ़ चला— जब जिस वस्तुकी दरकार होती मांग लेता था। यह बालिका ऐसी बुद्धिमती थी कि दोही चार बार उसके सामने कपड़े उतारने में वह मुझको कपड़ा पहनाना सीख गई। मैं नहीं चाहता था कि वह मुझको कपड़े पहरावे तथापि वह पहना देती थी। इसने मेरे वास्ते सात कमीजें तथा और कई कपड़े तैयार किये थे। यह कपड़े बहुत मोटे थे। यह मुझको अपनी भाषा भी सिखाती थी। जब मैं कोई चीज देखकर पूछता यह क्या है तो यह अपनी भाषामें उसका नाम बता देती थी। बस इसी ढङ्गसे उस देशकी भाषा मैं बहुत जल्द सीख गया। इस बालिकाका स्वभाव बहुत अच्छा था। यह नाटी थी तथापि चालीस फुटसे कहीं लम्बी थी। इसीने मेरा नाम ग्रीलड्रिग (बबूड़ा) रक्खा। फिर सब इसी नामसे मुझको पुकारने लगे। उसीकी कृपासे उस देशमें मेरी जान बची। जब तक वहां मैं रहा,उससे कभी अलग नहीं हुआ। वह मुझको खिलाती पिलाती थी इससे मैं उसको "दाया" कहता। मैं उसका बहुत ऋणी हूं। वह मेरा बहुत लाड़ प्यार करती थी।

आस पासके गांवोंमें मेरी खबर बिजलीकी तरह फैल गई जहां सुनो वहां मेरीही चर्चा होती थी। आपसमें लोग कहते "अमुक किसानके खेतमें एक विचित्र जीव मिला है। वह तो छोटा है लेकिन सूरत शकल आदमी कीसी है। सब काम आदमीकी तरह करता है। उसकी बोली अजब ढङ्गकी है। लेकिन यहांकी भी दो चार बोलियां वह सीख गया है। दो पैरसे चलता है—वह पालतू और सीधा है—बुलानेसे आता और सब काम करता है। देखनेमें बहुत सुन्दर और रङ्ग भी गोरा है। इस बातकी जांचके लिये एक मनुष्य जो किसानका दोस्त पड़ोसी था आया। किसानने मुझको लाकर मेज पर खड़ा किया। उनके कहनेसे दो चार कदम चला, खञ्जर निकाल कर घुमाया और फिर रख लिया। उन्हींकी भाषामें उनका सलाम किया। यह सब मैंने अपनी दायासे सीखा था। इसके बाद बूढ़ा चश्मा लगाकर मुझको भली भांति देखने लगा। उसकी दोनों आंखें दो चन्द्रमाओंके समान दो झरोखोंमेंसे चमकते मालूम हुए। मैं इसको देख कर हंसी रोक न सका। मुझको हंसते देख सब लोग हंस पड़े। इस पर बूढ़ा बहुत नाराज हुआ और बन गया। पहले सिरेका कञ्जूस और लोभी था। मेरे लिये तो साक्षात् साढ़े साती शनिश्चर था। उसने किसानको मेरे द्वारा धन उपार्जन करनेकी सम्मति दी। जब यह दोनों मेरी ओर निहार निहार कर आपसमें बातचीत करने लगे तो मेरा माथा ठनका। मैं समझ लिया कि कोई भारी विपद आनेवाली है। दूसरे दिन मेरी दायाने सब वृत्तान्त अपनी मातासे सुन कर मुझको बता दिया। वह बिचारी मुझको गले लगा कर रोने लगी और बोली "मैंने समझा था कि तू मेरे पास रहेगा सो नहीं हुआ। पारसाल मैंने एक मेमना पाला था जब बड़ा हुआ तो बाबाने उसे कसाईके हाथ बेच दिया। बाबा कभी कोई चीज मेरे पास नहीं रहने देते हैं। न जाने हाटमें तेरी क्या दुर्दशा होगी।" पर मुझको किसी ब

। चिन्ता न थी। मुझको पूरा भरोसा था कि कभी न कभी इस न्देसे मैं अवश्य छूट जाऊंगा। मैंने सोचा अगर इङ्गलंडेश्वर भी हां आते तो उनकी भी यही दशा होती फिर मेरी क्या गिनती है ?

किसानने अपने मित्रकी सम्मतिके अनुसार हाटके दिन नगरा-रमुख प्रस्थान किया। मुझको एक पिञ्जड़ेमें बन्द करके आगे व लिया और दायाको अपने पीछे घोड़े पर बिठा लिया। पञ्जड़ेकी बनावट सन्दूक कीसी थी। इसमें हवा आने जानेके लिये दो चार छेद तथा एक द्वार बना हुआ था। दायाने मेरे लिये एक छोटीसी गद्दी भी बिछा दी थी। अस्तु, हम लोग ठिकाने पर पहुँचे। आधेही घण्टेमें बाईस कोसकी मञ्जिल पूरी हुई। इरा-तसे मेरे तो बन्द बन्द टूटतेथे क्योंकि घोड़ा बराबर सरपट दौड़ता आया था। इसके एक एक कदम चालीस चालीस फुट पर पड़ते थे। किसानने एक सरायमें डेरा जमाया। वह प्राय: यहीं उतरा करता था। सरायवालेसे सब ठीक ठाक करके उन्होंने विज्ञापन निकलवाया कि एक अजीब जानवर आया है जो छ: फुट लम्बा और बहुत सुन्दर है। सूरत आदमीसी है। बोलता है और बहुत से अद्भुत काम करता है जिसको देखना हो सरायमें आवे।

सरायके एक बड़े कमरेमें जो तीनसौ वर्ग फुटका था एक मेज पर मैं खड़ा किया गया दाया पासही एक तिपाई पर निगरानी तथा तमाशा दिखानेके निमित्त बैठी। किसान दरवाजे पर खड़ा हुआ। जिसमें गोलमाल न हो इसलिये तीस तीस आदमियोंको बारी बारीसे भीतर भेज देता था। दायाके कहनेसे मैं मेज पर चलता था। जो कुछ वह पूछती उसका मैं जवाब देताथा। आने वालोंका स्वागत तथा स्वास्थ्यापान करता था। तलवार निकाल कर कलाबाजी दिखाता और न जाने क्या क्या दिखाता था। दाया उतनेही प्रश्न करती थी जितने मैं समझता था। इसी तरह उस दिन मैंने १२ झुण्डके सामने अपना तमाशा दिखाया। मैं थक कर अधमुआ होगया। जिन लोगोंने देखा उन्होंने इतनी प्रशंसाकी

कि सारा शहर सरायमें टूट पड़ा और सब दरवाजा तोड़
भीतर घुसनेके लिये तैयार होगये। दायाको छोड़ कोई
मुझे छू नहीं सकता था। दर्शकगण भी इतनी दूर रहते थे
उनके हाथ मुझ तक नहीं पहुंच सकते थे। यह सब प्रबन्ध कि
ने केवल अपने लाभके निमित्त कर रक्खे थे। इतने पर भी
का एक शैतान छोकड़ा बादाम खेंच कर मुझको मारही बैठा
कुशल हुई नहीं तो मेरी खोपड़ी फट जाती। यह बादाम
के बराबर था। आखिर वह छोकड़ा खूब पीटा गया और
दिया गया।

हाट बन्द हुई। हम लोग भी घर वापिस आये। अबकी
ने मेरे आरामके लिये बढ़िया सवारीका प्रबन्ध किया।
आठघण्टेकी कड़ाचूर मेहनतसे मुझको ज्वर हो आया।
बैठनेकी ताब न रही। तीन दिन तक बेसुध पड़ा रहा।
दिन होश हुआ पर हाय! घर पर भी मुझको चैन नहीं!
वाले झुण्डके झुण्ड घर परही आने लगे। एक दिन तीससे
सज्जन सपरिवार पधारे। किसानने सबसे पूरा दाम
किया था। आस पासके अर्थात् सौ मील तकके लोग मुझको
आये। किसानके घर रुपयोंकी वर्षा होने लगी। मुझको
के सिवा कभी मरनेकी भी छुट्टी नहीं मिलती थी। बुद्धवार
लोगोंका रविवार अर्थात् विश्रामका दिन था।

किसानको अब रुपयेकी चाट लगी। उसने मुझको बड़े
शहरोंमें घुमानेका सङ्कल्प किया आखिर सब सामानसे लैस
[illegible] १७ वीं अगस्त १७०३ ईस्वीको राजधानीके लिये उठ
[illegible]। यह राजधानी वहांसे तीन हजार मील दूर थी।
[illegible] थी। सवारीमें वही घोड़ा था। मैं अपने पिञ्जड़े
[illegible] लिये हुए थी। मेरे [illegible]

ऋधानने रास्तेके निकटके प्रत्येक शहर और गांवमें तमाशा
[कर रुपया बटोरगा विचारा था परन्तु दायाकी राय न
उसने कहा "ऐसा करनेसे ग्रिलड्रिग बीमार होजायगा और
। घोड़े पर चलनेसे थक जाती हूं'—बहुत भारी मञ्जिल करगा
नहीं।" मञ्जिल हलकी होने लगी। एकासी चालीस पचास
परही पड़ाव पड़ने लगा। हवा खिलाने तथा देशकी सैर
नेके लिये दाया अक्सर मुझको बाहर निकालती परन्तु बरा-
समके थामे रहती थी। छः सात नदियां हम लोगोंने लांघी।
गङ्गा और नील नदीसे गहरी तथा बड़ी थी। टेमससी छोटो
वहां एक भी नहीं मिली। रास्तेमें दस सप्ताह लगे थे। दाया
ना करने पर भी मैं कोई अठारह बड़े बड़े शहरों तथा कई
: छोटे गांवोंमें दिखाया गया था।

२६ वीं अक्टूबरको हम लोग राजधानीमें जा पहुंचे। इसका
." लर बरलग्रड " है। इस नामका अर्थ है " विश्वगौरव "।
ानने राजभवनके समीपही नगरके प्रधान मुहल्लेमें एक मकान
ाये पर लिया। फिर विज्ञापन निकाला गया। इसमें मेरा
वर्णन था। चालीस फुट लम्बे चौड़े कमरेमें एक बड़ी मेज
ी गई। इसका व्यास ६० फुट था और इसके चारों ओर छोटे
कटहरा तीन फुट ऊंचा लगा हुआ था। इसी मेज पर मुझको
ाशा करना पड़ता था। मैं दस बार दिनमें दिखाया जाता था
लगण भी देखकर आश्चर्य तथा आनन्द प्रगट करते थे। किसान
हाथ गरम होजाता। अब मैं उस देशकी भाषाको भी भली भांत
ने तथा समझने लग गया था। दाया जेबमें छोटीसी एक
ी धर लाई थी उसीको मैं पढ़ता था। यह सेमसन साहबके
लामके बराबर थी।

चतुर्थ परिच्छेद।

किसानकी आमदनी ज्यों ज्यों बढ़ने लगी त्यों त्यों उसका
लन भी बढ़ चला। वह मुझसे दिन भर मिहनत लेने लगा।

ाँसे भी हज़ार मुहरें लेगयाहै। अब मैं उससे उद्धार हूं। जितना
्यम वह मुझसे करवाता था उतना परिश्रम करके मुझसे कम
बलवाले जीव भी नहीं जी सकते हैं मैं अब तक जीवित हूं
ी आश्चर्य है। मेरी सारी देह गल गई है। यदि वह मेरी मृत्यु
ट न समझता तो इतने सस्ते दाममें श्रीमती मुझे कदापि न
तीं। अब मैं श्रीमती जैसी दयाशील, सृष्टि भूषण, विश्वप्रिया,
युमती महिषीकी शरणमें आया हूं पूर्ण आशा है कि अब मैं
ुसे आनन्द पूर्वक अपना समय बिताऊंगा।"

मेरी बातें सुन कर महारानीको हर्ष तथा आश्चर्य हुआ। वह
ुसमें उठा कर मुझे महाराजके निकट लेगई। महाराज ग्रन्थ-
ागारमें थे। महाराजका चेहरा दृढ़ और गम्भीर था। मैं महा-
ानीकी दाहिनी हथेली पर पट पड़ा था। महाराज मुझे भली
ांति न देख सके थे—पूछा "यह चिड़िया कबसे पालीहै?" महा-
ानी बड़ी बुद्धिमती थी उन्होंने चट मुझको मेज पर खड़ा करदिया
ौर सारा वृत्तान्त महाराजसे निवेदन करनेके निमित्त कहा।
ने बहुत थोड़े शब्दोंमें अपनी राम कहानी कह सुनाई। दाया
ार पर खड़ी थी। वह भी भीतर बुलाई गई। उसने पूरा हाल
ह सुनाया। इस बेचारीको मेरे देखे बिना चैन कहां?

महाराजकी विद्याका वहां बहुत कुछ नाम था। आप गणित
और विज्ञानमें पारंगत थे किन्तु मेरा ढङ्ग देख कर आपकी भी
ुद्धि चकरा गई। आपने अपनी विद्या और बुद्धिके प्रतापसे मुझे
कलका पुतला या किसी घड़ीका पुरजा समझा परन्तु जब मेरी
बोली मेरे उच्चारण प्रभृति सुना तो आपको बहुतही अचम्भा हुआ।
मेरी बातोंका विश्वास आपको नहीं हुआ। श्रीमान्‌ने फिर कई
प्रश्न किये मैंने सबका सार्थक और स्पष्ट उत्तर दिया। इन वाक्योंमें
वही दोष थे जो विदेशीसे उच्चारण वा मुद्राविरेमें होसकते हैं।
पर एक बात और है—भाषा मेरी गंवारी थी क्योंकि किसानहीके
घर मैंने शिक्षा पाई थी।

महाराजने तीन पण्डित बुलवाये। इन लोगोंने मुझको अच्छी तरह देख भाल कर अपनी जुदी जुदी राय दी। यह तो माना कि मैं स्वाभाविक नियमसे उत्पन्न नहीं हुआ हूं और मेरी बनावटही ऐसी है कि मैं तेज चल कर, वृक्ष पर चढ़ कर बिलमें रह कर अपने प्राणको बचा सकूँ। दांतोंकी परीक्षा कर उन लोगोंने मुझको मांस खानेवाला जानवर ठहराया पर यह असमंजस आपड़ा कि चौपाये सबही मुझसे बहुत बड़े हैं उनका मांस खाना मेरे लिये असम्भव है। पीछे यह निश्चय हुआ कि मैं कीड़े मकोड़े खाता हूं। एक पण्डितने मुझे अकाल प्रसूत बताया पर दूसरेने उसका खण्डन किया। "ऐसा हो नहीं सकता क्योंकि इसके अङ्ग सब पूरे हैं। जो असमय उत्पन्न होता है उसके अङ्ग अधूरे होते हैं और वह जी नहीं सकता है।" इन बुद्धिमानोंकी रायसे मैं बौना भी नहीं था क्योंकि मैं बहुतही छोटा हूँ। महारानीका प्यारा बौना अत्यन्त छोटा होने पर भी ३० फुट लम्बा था। शेषमें मैं एक अद्भुत जीव ठहराया गया।

यह सब होजाने पर मैं हाथ जोड़ कर बोला "महाराज मैं जिस देशका हूँ उस देशमें करोड़ों स्त्री पुरुष इसी डील डौलके हैं। जीव जन्तु, पेड़ पत्ते, घर द्वार प्रभृति भी इसी परिमाणके हैं। मौका पड़ने पर हम लोग अपनी रक्षा कर सकते हैं। जैसे यहांके लोग सब काम कर सकते हैं वैसे हम लोग भी वहां करते हैं। मेरी बात सुन कर सब मुंह बिचकाके हंस पड़े और बोले "किसानने इसे अच्छा सबक पढ़ाया है।" महाराज सबसे बुद्धिमान थे। पण्डितों को विदा करके उन्होंने किसानको बुलाया। भाग्यसे किसान उस समय तक शहरहीमें था। वह हाजिर किया गया। महाराजने एकान्तमें उनसे कुछ पूछा फिर इकट्ठा कर सबका इजहार लिया। अब उन्हें मेरी बातोंका कुछ कुछ विश्वास होने लगा। महाराजने मुझे महारानीके सुपुर्द किया और यत्नपूर्वक रखनेके लिये आज्ञा

ोम दायासे देख कर दायाको भी रहनेके वास्ते हुक्म दिया।
ासरा उसके रहनेके लिये दिया गया। उसके लिखाने पढ़ाने
से एक गुरुघानी नियतकी गई। सेवा टहलके लिये दासियां
। लेकिन मेरे लालन पालनका भार दायाहीके सिर रक्खा
। महारानीने अपने खास बढ़ईको पिंजरा बनानेकी आज्ञा
यह बड़ा सुघड़ कारीगर था। इसने मेरे कहनेके अनुसार
सप्ताहमें लकड़ीका एक सुन्दर पिंजरा बना दिया। यह
ह फुट लम्बा, सोलह फुट चौड़ा तथा बारह फुट ऊंचा
इसमें खिड़कियां, दरवाजे और अगल बगल दो छोटी
ी कोठरियां थीं। ऊपर तख्तेबन्दी थी। इसमें एक द्वार भी
ो चूलके सहारे खुलता और बन्द होता था। दिनमें बिछौने
ेको धूप खिलानेके लिये दाया दरवाजा खोल देती और रात
बन्द कर देती थी। कहनेके लिये तो पिञ्जरा था पर वास्तवमें
खासा कमरा था, एक चतुर बढ़ईने जिसका छोटी छोटी
ें बनानेमें बड़ा नाम था। दो कुर्सियां तथा मेज बना दी थीं।
ा वस्तु रखनेके वास्ते एक सन्दूक भी बना दिया था। यह सब
ा हाथीदांतकेसे मालूम पड़ते थे। जिसमें मुझे कष्ट न हो इस
े मेरे घरके चारों ओर ऊपर नीचे तमाम रूईकी मोटी गद्दी
दी गई। दरवाजेमें छोटासा एक ताला लगाया गया। यह
ादश देकर बनवाया गया था। इतना छोटा ताला वहां पहले
र कभी किसीने नहीं देखा था। लेकिन मेरे लिये तो वह
ड़ाताला था। दायासे शायद खोजाय इसलिये मैंही चाभीको
ने पास रखता था। सबसे महीन रेशमी कपड़ेकी पोशाक मेरे
िये बनी। यह कपड़ा विलायती कम्बलके समान मोटा था।
ह पोशाक उसी देशके ढङ्गकी थी। इन लोगोंका पहरावा कुछ
ारसियोंसे और चीना लोगोंसे मिलताथा परन्तु देखनेमें सुन्दरथा।
महारानी अब मुझे इतना चाहने लगीं कि बिना मेरे वह भोजन
हीं करतीं उनकी बाईं ओर मेरी मेज कुर्सी लगती थी और पासही

सिपाई पर दाया हिफाजतके लिये बैठती थी। मेरे लिये चांदी
छोटे छोटे वर्त्तन संगाये गयेथे। दाया इन्हें अपनी जेबमें रखती थी
जब मैं मांगता तो साफ करके देती। महारानीके पासकी आ
यह लड़कोंके खिलौनेसे मालूम होते थे। महारानीके संग दो
राजकुमारियोंके सिवा और कोई नहीं खाता था। इनमेंसे
तो सोलह और दूसरी तेरह बरसकी थी। महारानी मांसका
टुकड़ा मेरी रकाबीमें डाल देती मैं उसे काट काट कर खाता औ
वह तमाशा देखती थीं। महारानी बहुत कम खाती थीं पर हमा
यहांके दस बारह कुली मजूरोंकी पूरी खुराक आपका एकही
वाला था। इस अन्धाधुन्ध खानेको देख मेरा जी घबरा उठा था
वह समूचे लवापच्छीको चबा जाती थीं। लवाको सहज मत स
झना—यह हमारे देशके पेरूसे नौगुने बड़े होते थे। सोनेके प्या
से वह एक पीपा शराब एकही घूंटमें सोख जाती थी। मह
रानीकी छुरी तीन हाथ लम्बीथी। चम्मच, कांटे प्रभृतिका अ
मान इसीसे कर लीजिये। मुझे याद है एक दिन मैं दायाके साथ
बादशाही कमरेमें जहां स्वयं महाराज भोजन करते थे योंही चला
गया वहां ऐसी ऐसी दस बारह छुरियोंको एक साथही उठते देखा
था। ऐसा भयानक दृश्य फिर कभी देखनेमें नहीं आया।

मैं कही चुका हूं कि बुधवार इन लोगोंका विश्राम दिन है।
इस दिन महाराज सपरिवार बैठ कर भोजन करते हैं। अब मेरी
भी छोटी छोटी मेज तथा कुर्सियां महाराजकी बाईं तरफ लगने
लगीं। महाराज मुझे बहुत चाहते या तथा मेरी बात सुनकर बहुत
प्रसन्न होते थे। आप युरोपके आचार व्यवहार, धर्म्म कर्म्म, रीति
नीति, विद्या बुद्धि और आईन कानूनके बारेमें बराबर पूछते थे
मैं सबका यथोचित उत्तर देता था। महाराजकी समझ बहुत
अच्छी थी। कभी कभी वह अपनी भी राय प्रगट करते थे। मैं
अपने प्यारे देशके व्यापार, युद्ध, धर्म्मानुराग, इत्यादिकी बातें बड़
बढ़ा बढ़ा कर गौरवके साथ कहता था। व्हीग (प्रजाहितैषी

र टोरी (राजानुयायी) दलोंका जब मैं वर्णन करता तो महा-
ज मुझे हाथमें उठा लेते और मुसकुरा कर पूछते "अरे तू किस
लका है?" फिर प्रधान मन्त्रीसे जो वहीं पीछे खड़ा रहता था
हते "देखो! मनुष्यके सब ठाठ बाट कैसे घृणित हैं! एक अदना
ड़ा भी इनकी हंसी उड़ा सकता है। इनके देशमें भी पदवियां
ती हैं तथा मान सम्मान होता है। इनके देशवासी भी कपड़े
हनते हैं तथा सवारियों पर चढ़ते हैं। यह छोटे छोटे घोंसले और
लको अपना शहर बतलाता है। यह सब भी प्यार करना जानते
यह भी लड़ते हैं, ठगते हैं और दूसरेके भेदोंको प्रकाश करते
!" जब महाराज इस प्रकार बोलते तो मारे गुस्सेके मेरा चेहरा
ल होजाता। हमारे उस देशकी जो आज कल शिल्प, विज्ञान
र अस्त्र शस्त्रका आकर है—फरांसका भय स्थान है—जो सारे
रोपका मध्यस्थ है—जो सत्य, धर्म, दया, और सम्मानका स्थल
और जो सम्पूर्ण जगत्का गौरव माननीय है;—निन्दा इस
रह हो!

खैर, मैं अपनी अवस्था विचार कर चुप होरहा, लेकिन मनमें
हुत बुरी लगी। कुछ दिन उन लोगोंके साथ रहने तथा वहांकी
वलक्षण वस्तुएं देखनेसे मेरा डर भय सब जाता रहा। उन दिनों
रा मन ऐसा होगया था कि अगर कहीं आप लोगोंको देख पाता
ो मैं आप लोगोंकी छुटाई पर बहुत हंसता और उतनाही अच-
ज करता जितना कि इन विराट पुरुषोंने मुझे देख कर कियाथा।
ब महारानी हाथमें उठा कर मुझे आइनेके सामने कर देतीं तो
ैं मारे ग्लानिके मर जाता। हाय मैं इतना छोटा क्यों हुआ!

मैं कह चुका हूं कि महारानीके एक बौना भी था। यह बौना
ोने पर भी तीस फुट लम्बा था। इसे देख कर न जाने क्यों मेरा
जी कुढ़ जाता था। वह भी मेरे जैसे तुच्छ जीवको देखकर घमण्ड
करता था। जब वह मेरे सामने आता तो अकड़ कर चलता।
ेज पर खड़े होकर जब मैं सब उमरावोंसे बोलता तब दुष्ट मेरी

छुटाई पर ताने मारता। मैं उसे भाई पुकारता और कभी कुश्ती लड़नेके लिये हंसीसे ललकारता भी था। एक दिन के समय बातही बातमें वह बिगड़ बैठा और मुझे मलाईसे हुए कटोरेमें पटक कर लम्बा हुआ। मैं सिरके बल गिर अगर तैरना न जानता होता तो बड़ी मुश्किल होती। भी संयोगसे वहां मौजूद न थी। महारानी डरके मारे घबरा थीं। आखिर दायाने दौड़ कर मुझे निकाल लिया। बहुतसी मलाई मैं खागया था। चोट सोट तो कुछ लगी नहीं कपड़े सब खराब होगये थे। वामनजी पकड़ कर लाये गये कोड़ेसे उनकी खूब खबर लीगई। वही मलाई जिसमें मैं गया था सजाके बतौर उन्हें खिलाई गई। महारानी उनसे अप्रसन्न होगईं। उसी समय वह दरबारसे निकाले गये। मैं खुश हुआ। अगर वह रहता तो न जाने फिर क्या आफत

एक बार पहले उसने एक और भद्दी दिल्लगी कीथी। रानी बहुत हंसी पर साथही बहुत गुस्से भी हुईं। अगर मैं रिश न करता तो वह उसी दिन निकाल दिया जाता। ने चरबी निकाल कर हड्डीको खड़ा कर दिया था। वामन महाराजने मौका पा मुझे उस हड्डीके भीतर कमर तक दिया। मैं एक घड़ी तक उसी तरह खड़ा रहा। शरमके मारे किसीको पुकारा भी नहीं। आखिर मैं निकाला गया। वामन को उस दिन भी कोड़े लगे थे।

मेरी भीरुता पर महारानी प्रायः ताना मारतीं और कहतीं "क्या तुम्हारे देशमें सभी ऐसेही बुजदिल और डरपोंक हैं?" कारण सुनिये। गर्मीमें मक्खियां वहां बहुत सताती हैं। मक्खियां ऐसी वैसी नहीं अगन चिड़ियाके बराबर होती हैं। मैं खानेको बैठता तो ये कानके पास आकर भन भन करतीं बहुत तङ्ग करती थीं। कभी कभी खानेकी चीजों पर बैठ हग देतीं। वहांके लोगोंको वह बीट दिखाई नहीं पड़ती क्यों

ो आंखें बड़ी थीं लेकिन मेरे रामको तो सब साफ मालूम
ा था। कभी नाक या माथे पर बैठ कर ऐसा डङ्क मारतीं कि
ाव होजाता। इसीसे इन मक्खियोंसे मैं बहुत डरता था।
ाह भिनभिनातीं तो मैं चौकन्ना होजाताथा। वामनजी मक्खियां
ः कर अक्सर मेरे मुंहके आगे छोड़ दिया करते थे। मैं बड़ी
से उनके दो टुकड़े कर डालता था। मेरी इस फुर्तीको बहुत
ाफ होती थी।

एक दिन सबेरे दायाने पिञ्जरेको झरोखे पर रख दिया। मैं
ताफतका मारा पिञ्जरेका किवाड़ खोल कर मिठाई कलेवा
े लगा। मीठेकी गन्धसे बीसियों भिड़ें घुस आईं। कुछ तो
मिठाई उठा लेचलीं और कुछ मुंहके सामने भिनभिनाने लगीं।
ारे डरके घबरा गया। लाचार होकर मैंने कटारी निकाली।
कों उसी दम काट गिराया बाकी भाग गईं। फिर मैंने द्वार
ः कर दिया। यह भिड़ें तीतरके समान थीं। फिर मैंने इनके
निकाले। यह डेढ़ डेढ़ इञ्च लम्बे थे तथा सूईसे पैने थे।
ः मैंने बड़ी हिफाजतसे रख लिया। विलायत लौट कर
ाको दिखलाया। तीन तो एक स्कूलमें दे दिये और एक अपने
म रक्खा।

पञ्चम परिच्छेद।

अब मैं इस देशका कुछ संक्षेप वर्णन पाठकोंको सुनाया चाहता
। राजधानीके आस पास कोई दो हजार मील तक मैं घूम आया
। महाराज तो सीमा प्रान्त तक जाते थे परन्तु महारानी इससे
ागे कभी गईं नहीं और मैं बराबर महारानीहीके सङ्ग रहताथा।
स देशका नाम ब्रोबडिंगनेग है तथा इसकी राजधानीका नाम है
र ग्रनपड। यह राज्य लग भग ६००० हजार मील लम्बा तथा
ार पांच हजार मील चौड़ा है। अतएव मैं कहता हूं कि हमारे
रोप वेत्तागण बहुत भूलते हैं। वह कहते हैं कि जापान और

कालीफोर्नियाके बीचमें समुद्रके सिवा और कुछ नहीं है। प...
राय राङ्गसे इसके विरुद्ध थी। परमात्माके अनुग्रहसे मेराही ...
ठीक निकला। अब इस महादेशको अमेरिकाके पश्चिमोत्तर...
से संयुक्त कर भूचित्र इत्यादिका पुनः संशोधन करना चाहि...
से इस विषयमें बहुत कुछ सहायता दे सकता हूं।

यह देश एक प्रायद्वीप है। इसकी पूर्वोत्तर सीमा पर...
मील ऊंची पर्व्वत माला है। यह सब ज्वालामुखी पर्व्वत है...
यह स्थान भी ऐसा विकट है कि कोई उसपार जा नहीं स...
बड़े बड़े पण्डित भी नहीं बतला सकते कि पर्व्वतोंके परले...
क्या है। शेष तीन दिशाओंमें महासागर लहरें मारताहै। इसे...
नामके लिये भी कोई बन्दरगाह नहीं है। समुद्रके किनारे...
नदियां गिरतीं हैं इतने नुकीले ढोंके बिखरे हुए हैं तथा स...
तूफानका इतना जोर रहता है कि वहां किश्ती चलाना ब...
कठिन है। इसी हेतु यहांके निवासी अन्यान्य देशोंसे वा...
व्यापार करनेमें पूरे असमर्थ हैं। बड़ी बड़ी नदियोंमें जहाज...
जाते हैं। इन नदियोंमें बहुत बढ़ियां मछलियां होती हैं।...
वाले इन मछलियोंको बहुत पसन्द करते हैं क्योंकि समुद्रकी...
लियां वैसीही होती हैं जैसे हमारे देशकी। इसलिये छोटी...
कर यह लोग समुद्रकी मछलियोंको नहीं पकड़ते। इससे...
होता है कि प्रकृतिने यह सब विलक्षण बड़ी बड़ी चीजें इसी...
वास्ते सिरजी हैं। दूसरी जगह ऐसी चीजें क्यों नहीं होतीं...
विचार विज्ञानी लोग करेंगे।

यह देश खूब आबाद है। इसमें ५१ बड़े बड़े नगर तथ...
लग भग नगर कोटवाले शहर हैं। छोटे छोटे गांवोंकी तो...
नहीं। अब "लर ब्रलग्रड" का वर्णन सुनिये। बीचसे एक...
...ह गई है इसीके दोनों तीर पर राजधानी बसी हुई है।
...ाय: अस्सी हजार घर तथा छ: लाख मनुष्य वास करते हैं।
...बावन मील लम्बा तथा ४५ मील चौड़ा है।

ताजाका महल ठीक महलके कायदेका तो था नहीं पर एक
ने घेरेमें बहुतसे मकानोंका ढेर मालूम होता था। बड़े बड़े
ोंकी ऊंचाई दोसौ चालीस फुट थी। बस इसीसे अन्दाजसे
ई और चौड़ाई भी समझ जाइये। हम लोगोंको एक गाड़ी
ी थी। इसी पर नगर देखनेको हम लोग जाया करते थे।
पिञ्जरेमें रहता था—वहां पिञ्जरा अनवक्ते गाड़ी पर रख
जाता था। कहनेसे दाया कभी कभी हाथ पर भी ले लेती
तभी बाजारकी सब चीजें मजेमें दिखलाई पड़ती थीं। एक
एक दूकानके सामने गाड़ी खड़ी हुई। वहां बहुतसे भिख-
नमा थे। वह सब मौका अच्छा देख गाड़ीको घेर कर खड़े
थे। वैसा भयानक दृश्य युरोपवालोंने कभी काहेको देखा
ा। उस भीड़में एक स्त्रीको देखा जिसकी छातीमें नासूर था
फूल कर बहुत बड़ा होगया था। उसमें कई छेद थे। दो
छेद तो इतने बड़े थे कि उनमें घुसकर मैं मजेमें छिप जा सकता
। एक आदमीकी गर्दन पर एक फुन्सी देखी। यह
बस्ता ऊन (पशम) से भी बड़ी थी। एक आदमीके पैर दोनों
थे। लकड़ीके पांव लगे थे सो बीस बीस फुट लम्बे थे। सब
अधिक घृणा तो उन लोगोंके कपड़ों पर चीलड़ोंको रेंगते हुए
कर हुई। इन चीलड़ोंके थुथने सूअर कैसे थे। इस घृणित
श्यको देख कर मेरा जी घबरा गया था।

जिस पिञ्जरेमें अब तक मैं बाहर लेजाया जाता था वह बहुत
ड़ा था। दायाको इसके धरने उठानेमें बड़ी तकलीफ होती थी
और सिवा गाड़ी पर भी रखनेमें बड़ी अड़चन पड़ती थी इससे
हारानीने एक दूसरा छोटा सफरी पिञ्जरा बनवाया। यह दस
ट ऊंचा, बारह फुट लम्बा तथा इतनाही चौड़ा था। इसके
ीन ओर बीचमें तीन खिड़कियां थीं जिनमें बाहरसे लोहेके तार
ी जाली मढ़ी हुई थी। चौथी तरफ जिधर खिड़की न थी दो
मजबूत कांटे लगे हुए थे। इन्हींमें कमरबन्द पिरो कर सवार लोग

कामरसे पिञ्जरेको बांध लेते और सामने घोड़े पर रख लेते थे झूला छतसे लटकता था। एक मेज और दो कुर्सियां पेचसे हुई थीं। इस पिञ्जरेसे मुझे बहुत आराम मिला। जब दायाको अवकाश नहीं मिलता तो कोई विश्वासी आदमी समेत मुझे घोड़े पर अपने आगे रख लेता और शहरकी सैर देता था। जिधरसे मेरी सवारी निकलती थी उधर एक लग जाता था।

यहां एक बहुत सुन्दर मन्दिर है। इसका गुम्बज इस सब मन्दिरोंसे ऊंचा है। इसके देखनेकी मुझे बहुत लालसा आखिर दायाके साथ एक रोज वहां मैं गया। जितना ऊंचा मैंने समझा था उतनाही पाया। यह तीन हजार फुटसे ऊंचा न था। यहांके मनुष्य जितने लम्बे होते हैं उस हि तो यह कुछ भी ऊंचा न था। हम लोगोंके डीलके विलायतमें इससे ऊंचे ऊंचे मकान हैं। जो हो, मन्दिर सुन्दर और मजबूत बना हुआ था। इसकी दीवार सौ फुट थी। यह पत्थरका था। चालीस चालीस फुटके पत्थर इसमें थे। देवी देवता तथा महाराजाओंकी बड़ी बड़ी मूर्त्तियां जो सब सङ्गमरमरकी थीं। एक मूर्त्तिकी एक उंगली टूट कर पड़ी थी। मैंने उठाकर नापी तो चार फुट हुई। दाया मेरे के लिये उसे घर उठा लाई थी।

महाराजकी पाकशाला सचमुच सुन्दरथी। इसका चूड़ा छः सौ फुट ऊंचा था। चूल्हे भी बहुत बड़े बड़े थे। घरके बर्त्तन भांड़ेका पूर्ण वर्णन करनेके लिये यदि मैं बड़ी वस्तुओंकी उपमा दूंगा तो पाठक मुझे झूठा समझेंगे और कहीं यह पुस्तक ब्रोवडिगनेगकी भाषामें अनुवादित होगी महाराज तथा वहांके निवासीगण अपनी वस्तुओंकी हीन देख कर बुरा मानेंगे। इसलिये इस विषयको मैं यहीं समाप्त देता हूं।

हाराज अपनी घुड़सालमें कभी कभी छः सौसे अधिक घोड़े थे। यह सब घोड़े ५४ से ६० फुट तक ऊंचे थे महाराज वारी पर्व्व त्योहारमें जब निकलती ५०० सुन्दर सवार साथ। पहले मैंने इसी दृश्यको अनिर्वचनीय समझा था पर जब यूह देखा तोमेरे छक्के छूट गये। इस व्यूहका वर्णन आगे होगा।

पष्ठ परिच्छेद।

गर मैं इतना छोटा न होता तो मैं सानन्द उस देशमें बास। मेरी छुटाई देख वहांवाले ताना मारते और हंसते थे। टाईके कारण मुझे बहुत कष्ट उठाना पड़ा तथा नीचा पड़ा। अपने अपमानका हाल अब मैं कुछ सुनाता हूं। मुझे छोटे पिञ्जरेमें अकसर बगीचे ले जाती थी। कभी रेसे निकाल कर हाथ पर ले लेती और कभी टहलनेके लिये को रविशों पर छोड़ देती थी। एक दिन वामन राम भी रे साथ बगीचे गये थे। यह घटना उसके निकाले जानेके की है। दायाने टहलनेके लिये मुझे छोड़ दिया। मैं टहलते ते सेवके पेड़ोंके नीचे जा पहुंचा। यह पेड़ भी ठुमके थे। जो बहलानेके लिये वामनसे जरा छेड़ छाड़की। वामनचन्दने मौका अच्छा देख सेवकी डालियोंको पकड़ कर जोरसे हिला। फिर क्या था—लगे सेव मेरे सिर पर टपाटप गिरने। भी ऐसे वैसे न थे। बड़े बड़े पीपेकी बराबर एक एक सेवथा। उन फलोंकी चोटसे जमीनमें लेट गया। पर विशेष कुछ हानि हुई थी। वामनका कुसूर मैंने माफ करा दिया क्योंकि छेड़ तो पहले मैंने की थी।

दूसरे दिन दायाने मुझे हरी हरी दूब पर खेलनेको छोड़ या और आप टहलती हुई कुछ दूर निकल गई। इतनेमें ओले रने लगे। ओलोंकी चोटसे मैं दस दिन तक बेकाम रहा। यह ले अपने यहांके ओलोंसे १८०० गुना बड़े थे।

इस बगीचेमें सबसे भयानक घटना हुई सो सुनिये। मैं
रहा था और दाया दूसरी तरफ चली गई थी। इतनेमें गार्ड
एक उजला कुत्ता आया और मुझे मुँहमें उठा ले भागा।
मालिकके सामने उसने आहिस्तेसे जमीन पर रख दिया।
मुझे अच्छी तरह पहचानता था। वह महारानीके हरीमें
मुझको उठा कर दायाके पास ले आया। उधर दाया
कर आई तो मुझको न पाकर पुकारने और रोने लगी।
सही सलामत पाया तो प्रसन्न हुई। मैं उस समय बेसुध
महारानी सुन कर खफा होंगी इसलिये यह खबर वहीं
गई। मैंने भी इस लज्जाजनक घटनाको प्रकाशित करना
नहीं समझा। एक दिन ऐसेही चील सुझ पर झपटी
साहस करके तलवार निकाल ली फिर उसको घुमाता हुआ
झुरमटमें जा छिपा। अगर मैं तलवार न निकालता तो चील
उठा ले जाती। अब दाया मुझको अकेला नहीं छोड़ती
एक दिन मैं छछून्दरके बिलमें अकस्मात् गिर पड़ा। गर्दन
गड़प होगया। चोट तो विशेष नहीं लगी लेकिन कपड़े सब
होगये। एक बार प [illegible]
[illegible]
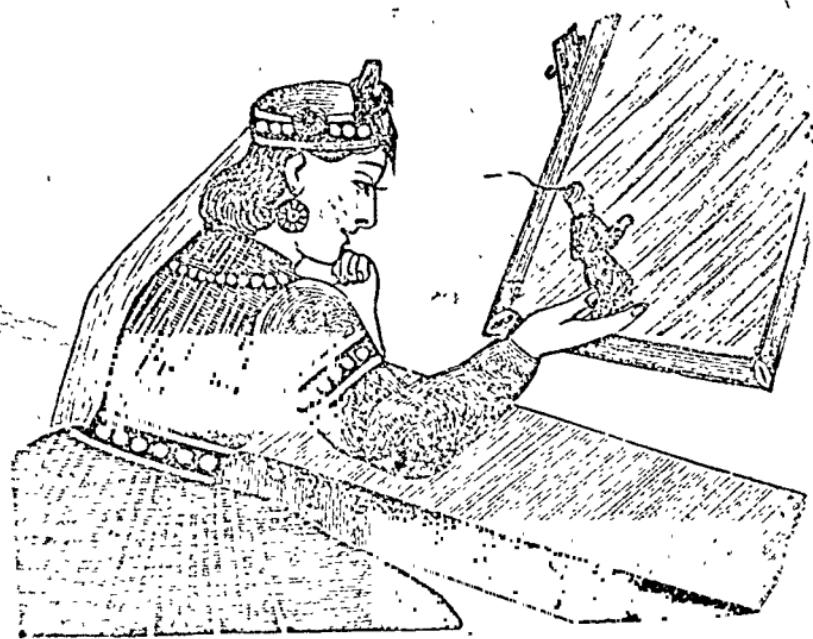
।को घुमाता था। जब खेल खतम होजाता तो दाया मुझे थे उसे खूंटीसे लटका देती थी।

क दिन मैं मरते मरते बच गया। कोकड़ेने नौकाको जब कठौते । दिया तो दायाकी सखीने मुझे उसमें रखना चाहा। ज्योंही उठाया मैं उसके हाथसे छूट गया। कुशल हुई मैं उसको से उलझ कर बच गया नहीं तो वहीं ढेर होजाता। इतनेमें ने आकर मुझे उबार लिया।

कठौतेका जल तीसरे दिन बदला जाता था। एक दिन नौकरों असावधानीसे एक बड़ा मेड़क कठौतेमें घुस आया। फिर । कर नाव पर आरहा और एक ओर छिप गया। मुझे यह म न था। ज्योंहीं मैं पहुंचा किश्ती डगमगाने लगी। मैं इधर देख रहा था कि वह मेड़कानन्द कूद कर बीचमें आपहुंचे फिर मेरे ऊपर नीचे चारों ओर कूदने लगे।• स्वभावानुसार मुंह पर उसने मूत दिया। तमाम कपड़े भीग गये। लाचार र डांड़ उठाया और उसे मार भगाया। इतना बड़ा मेडक कभी नहीं देखा था।

सबसे भारी विपद मेरे ऊपर जो आईथी जरा उसका हाल ये। उसवार मेरे प्राण बचनेकी कोई आशा न थी परन्तु ईच्छासे बचही गये। बात यों है—बावर्चीखानेके एक सुनुभी ास एक बन्दर था। दाया मुझे अपनी कोठरीमें बन्द करके अवश कहीं चली गई थी। दिन गर्मीका था इससे खिड़कियां खुली छोड़ गई थी। इसके सिवा पिञ्जरेका द्वार तथा खिड़- ां भी खुली थीं। मैं बैठा बैठा कुछ सोच रहा था। यकायक ट सुन कर चौंक पड़ा। इधर उधर निगाह दौड़ाई तो देखा बन्दर कुलांचें मार रहा है। मैं बहुत डरा—उठनेकी हिम्मत ड़ी। इस बीचमें बन्दर भगवान उछलते कूदते पिञ्जरेके निकट हुंचे। आप बड़े प्रेमसे पिञ्जरेको देखने लगे। हर एक खिड़की ाक झांक करने लगे। मैं डरसे एक कोनेमें दब गया पर हाय

दरने न जाने क्या क्या मेरे मुंहमें भर दिया था इससे वाक्‌
।—बोलनेकी सामर्थ्य न थी। दायाने सूईकी नोंकसे मेरा
।फ कर दिया। अमन होनेसे चित्त ठिकाने हुआ। ख़ास-
दतनी थी कि दो सप्ताह चारपाई पर पड़ा रहा। उस कपिने
ज़ोरसे दबाया था कि दर्दसे हड्डियां टूटती थीं। महाराज
।नी मुझे देखनेके लिये बारम्बार आते थे। वह बन्दर जो
तेभागा था मारा गया। महाराजने आज्ञा दी कि अबसे ऐसे
र महलमें कोई न रक्खे।

चङ्गा होकर जब महाराजको उनकी कृपाका धन्यवाद देने
ये दरबारमें गया तो श्रीमान्‌ने पूछा "जब तुम बन्दरके हाथ
तब क्या सोचतेथे? उसका खिलाना तुम्हें कैसा मालूम हुआ?
ज्ञानी तुम्हें पसन्द आया या नहीं? छत परकी ठंडी हवाने
टी भूख बढ़ाई या नहीं? तुम्हारे देशमें अगर बन्दर तुम्हें
लेता तो तुम क्या करते?" मैंने कहा "श्रीमान्! अव्वल तो
ए देशमें बन्दर नहीं हैं जो हैं भी सो दूसरे देशसे तमा-
लिये आये हैं। दूसरे यह इतने छोटे होते हैं कि एक
। बन्दरसे मैं मजेमें मुकाबला कर सकता हूं। और यह बन्दर
को मुझे पकड़ लेगया था हमारे देशके हाथीके बराबर था।
ो देवताओं मेरे देवता कूच कर गये थे। अगर मैं होशमें रहता
रटर अपनी खञ्जरसे उसे मार भगाता।" यह सब बातें मैंने
वीरतासे कहीं। मेरी बात सुन कर सब वाहवाहा मार
हंस पड़े। मैं अपनी मूर्खता पर बहुत लज्जित हुआ। वास्तव
ो अपनेसे बहुत बड़े हैं उनसे घमण्ड क्या! लेकिन विलायतमें
बात नहीं है। वहां मैंने देखा है कि अदनासे अदना भी
कि साथ टांगे अड़ाता है।

एक दिन गोबरके ढेरको देख कर उसके फांदनेकी इच्छा हुई।
हीं फांदने लगा गड़ापसे घुटने तक उसमें डूब गया। यह
क़्क़ो सुन कर भी सब कोई खूब हंसतेथे। मतलब यह कि कुछ
ा तक मैं ही दरबारका विदूषक हो पड़ा था।

सप्तम परिच्छेद।

मैं राजदरबारमें हफ्तेमें दो बार जाता था। महार
सर बाल बनवातेही पाता था। छुरा मामूली तलवारसे
था। देशकी परिपाटीके अनुसार महाराज सप्ताहमें द
बनवाते थे। मैंने नाईसे बड़े बड़े चालीस पचास बाल
ले लिये। इन बालोंकी मैंने एक कंघी बनाई मेरी
गई थी। इसीसे काम निकालता था। महारानी जब क
तो उनके बाल टूटते थे। मैंने सद को बीन बीन कर ज
फिर दो कुर्सियां इन्हींबालोंसे बना डालीं। यह दो
महारानीको अर्पण कीं। महारानीने उन्हें अपने क
उन्होंने कई बार मुझे उन पर बैठनेके लिये कहा पर मैं
मैंने सोचा जो बाल एक समय महारानीके सिरकी श
उन पर बैठना उचित नहीं। महारानीके बालसे मैंने
भी बनाया था। इस पर महारानीका नाम सुनहले
लिखा था। यह बटुआ महारानीकी इच्छानुसार मैं
दिया। यह बटुआ केवल देखनेहीका था। इसी लि
छोटे छोटे हलके सिक्कोंको छोड़ और कुछ नहीं रखती

महाराज गाने बजानेके अच्छे प्रेमी थे। वहां प्रायः
की चर्चा होती थी। मैं भी कभी कभी बुलाया जाता
पर पिंजरेमें बैठ कर गाना सुनता था। उस गानेमें
हुल होता कि सुर ताल कुछ भी समझ न पड़ती थ
तमाम रागोंके बजानेमें ढोल और भोंपा इत्यादि करके बज
भी उस गुल गपाड़ेके बराबर न थी। पिंजरेको
दूर ले जाता और सब खिड़की बन्द कर लेता तब उ

लिये मैं उससे भी सितारही कहता। एक उस्ताद हफ़्तेमें वार आकर दायाको सितार सिखला जाता था। मैंने सोचा भी एक दिन सितार बजाकर महाराज और महारानीको प्रसन्न हूं। पर मेरे योग्य सितार कहां? दायाका था सो ६० फुट लम्बा र उसकी सुन्दरियां एक एक गजके फासले पर थीं। ऐसा तार मैं क्या मेरे लड़कदादा भी बजा सकते नहीं। निदान मैंने हाराजके कारीगरोंसे एक सितार नहीं सितारी बनवाई। उसीको ारमें मैंने बजाया। सब सुन कर बहुतही प्रसन्न हुए।

मैं पहलेही लिख चुका हूं कि महाराजकी समझ अच्छी थी। ह प्रायः मुझे पिञ्जरे समेत बुलवाते थे। पिञ्जरा मेज पर रक्खा ाता था। मैं श्रीमान्‌के आज्ञानुसार कुर्सी निकाल कर श्रीमान् तीन गजके फासले पर पिञ्जरेके ऊपर बैठताथा। बैठनेसे श्रीमान् श्रीमुखके कुछ कुछ बराबर होजाता था। एक दिन साहस रके मैंने कहा "महाराज! उस दिन श्रीमानने युरोपके तथा न्यान्य देशके राजाओं पर जैसी घृणा प्रकटकी थी वह श्रीमान् ासे गुणवान पुरुषको शोभा नहीं देती। शरीर बड़ा होनेसे बुद्धि ी बड़ी होगी यह सोचना ठीक नहीं। हमारे देशमें तो जो ाधिक लम्बा होता है वही मूर्ख कहलाता है। पशु पक्षी कीड़े ाकोड़ोंमें भी यही बात है—चिउंटी मधु मक्खियां प्रभृति और ीड़ोंकी अपेक्षा अधिक परिश्रमी शिल्पी तथा सुघड़ होती हैं। ्रीमान् चाहे मुझे जितनाही क्षुद्र क्यों न समझते हों परन्तु मेरी इच्छा यही है कि मैं श्रीमान्‌की किसी विशेष सेवामें आऊं और कुछ उपकार विशेष करूं। महाराजने बड़े ध्यानसे मेरी बातें सुनी और उसी दिनसे वह मुझे पहलेकी अपेक्षा अच्छी दृष्टिसे देखने लगे। महाराज बोले "अच्छा तुम अपने देशकी भली बुरी सब बातें कह सुनाओ। अन्यान्य राजाओंकी रीति नीति भी सुन लेना चाहिये। अगर कोई अच्छी बात सुननेमें आवेगी तो उसे ग्रहण कर अपने राज्यका उपकार करूंगा।"

प्रिय पाठकगण! प्यारी जन्मभूमिकी प्रकृति प्रशंसा समय डिमस्थिनीज या सिसिरो (प्रसिद्धवक्ता) की वाग्शक्ति जिह्वामें आजाय यह इच्छा मेरे मनमें कितनी बार हुई आपही विचार कर देखें!

मैंने यों कहना आरम्भ किया "हमारा देश दो टापुओंसे बना है। इसके तीन बड़े बड़े हिस्से हैं। यह समस्त एक के अधिकारमें हैं। इसके अतिरिक्त अमेरिकामें भी हम उपनिवेश हैं। हमारे देशकी भूमि उपजाऊ तथा जल वायु है। पार्लियामेण्ट नामकी वहां एक बड़ी सभा है। इस दो दल हैं। एकका नाम है "हाउस आफ लार्ड्स" और "हाउस आफ कामन्स" पहले दलमें पुराने घरानेके कुलीन लोग हैं। युद्ध विद्या और कला कुशलताकी परीक्षा देकर यह लोग राजा और राज्यके मन्त्री, व्य के सभ्य तथा उस उच्च न्यायालयके विचारकर्त्ता नियुक्त जिसकी फिर अपील नहीं। सचाई, सदाचार और साहसके स्वदेश तथा राजाकी रक्षाके निमित्त सदा प्रस्तुत रहते हैं। लोग देशके सच्चे गौरव और रक्षक हैं। यह लकीरके फकीर इनमें कितनेही पवित्रात्मा भी हैं जो विषय यानी कहलाते हैं। धर्म और धर्मोपदेष्टाओंका तत्वावधान इनका कर्त्तव्य है। पादरियोंमें जो सबसे पवित्रात्मा और होता है वही बिशप बनाया जाता है। वास्तवमें यही गुरु हैं।

"दूसरे दलमें देशके मुख्य मुख्य भलेमानस हैं। यह प्रजा अथवा देशवासियोंके द्वारा मनोनीत होकर सभ्य होते सुयोग्य और देशानुरागी लोगही सबकी ओरसे प्रतिनिधि [illegible] हैं। यही दोनों दल इङ्गलैण्डकी स्वाधीनता और [illegible] मुख्य अङ्ग हैं। यही दोनों दलवाले राजाके स[illegible] [illegible] कानून भी बनाते हैं।

सके उपरान्त मैंने कहा कि प्रजागणके स्वत्व तथा शान्ति रक्षा
मित्त विचारालय हैं। आईन कानूनके जाननेवाले लोग इन
चारालयोंमें विचारपतिका आसन ग्रहणकर लड़ाई झगड़ेका
रा करते तथा भले आदमियोंकी रक्षाके लिये अत्याचारियोंको
देते हैं। हमारे राजकोषका प्रबन्ध दूरदर्शितासे पूर्ण है।
और बल दोनोंही राहसे शत्रुओंके दांत खट्टे करनेमें हमारी
ा खूब लाभ है। हमारे यहां लाखों मनुष्य स्वच्छन्दता पूर्वक
करते हैं और सब न्यारे न्यारे मतके हैं। राजनीति जानने
का भी एक दल अलग है।

सके सिवा मैंने उन खेल तमाशोंका भी बखान किया जिनमें
रे प्यारे देशकी नामवरी बढ़ सकती थी। सौ वर्ष पहलेका
हास भी मैंने संक्षेपसे कह सुनाया।

पांच दिनमें मैंने इस कथाको पूरा किया था। प्रति दिन कई
तक कथा होती थी। महाराज बड़े ध्यानसे सुनते थे। जो
अच्छे जान पड़ते थे अथवा जिनके बारेमें कुछ पूछना था
सबको महाराज एक पोथीमें लिखते जाते थे। पाठकगण।
अपने व्याख्यानका केवल सारांश यहां लिखा है वहां तो खूब
ो चौड़ी वक्तृता दी थी।

जब मैं अपनी बात पूरी कर चुका तब छठे दिन महाराजने
ो देख कर कई प्रश्न किये और अपना सन्देह मिटाया। आपने
। "तुम्हारे देशके बड़े आदमियोंके लड़कोंकी मानसिक और
रीरिक उन्नतिके लिये कौन कौन उपाय किये जाते हैं? लड़के
भी पहली तथा पढ़नेवाली उमरमें किस प्रकार समय बिताते
? जब कोई सद्वंश विलुप्त होजाता है तब उस अभावकी पूर्ण
नेके लिये क्या किया जाता है? नये लौर्ड बननेके लिये किन
णोंकी आवश्यकता है? लौर्ड बननेके लिये राजाको खुशामद तो
हीं करनी पड़ती है—रानीकी सखियोंको या प्रधान मन्त्रीको
रये तो देने नहीं पड़ते हैं अथवा सर्वसाधारणकी बुराई चाहने

वाले किसी दलकी वृद्धिकी आवश्यकता तो नहीं पड़ती है!
लॉर्डोंको अपने देशके कानूनका कितना ज्ञान रहता है?
पड़ोसीकी जमीन जायदादका झगड़ा निबटानेके लिये जितने
का प्रयोजन होता है उतना यह किस प्रकार अर्जन करते
क्या यह लोग सदा निर्लोभ रहते और कभी पक्षपात नहीं
हैं? क्या आवश्यकता होने पर भी कभी कोई घूस वगैरः नहीं
हैं? जिन पादड़ियोंकी बात तुमने कही क्या वह सब
ज्ञान और सद्व्यवहारही के कारण पार्लियामेण्टके मेम्बर होते
क्या मेम्बर होनेके पहले इन पादरियोंको समयके अनुसार
देनेकी आदत नहीं रहती है? और जब यह साधारण
उस समय भी क्या किसी बड़े आदमीके टुकड़े तोड़ कर
में हां नहीं मिलाते थे? अगर मिलाते थे तो मेम्बर होने पर
उस बड़े आदमीकी खुशामद करते हैं या नहीं?

"हाउस आफ कामन्सके सभ्य चुने जानेका क्या नियम
रुपयेवाले विदेशी रुपयोंके जोरसे धनहीन गंवारोंसे "वोट"
कर सभ्य होजाते हैं या बुद्धिमान देशवासीही चुने जाते हैं?
काममें कुछ तलब तनखाह नहीं उसके लिये लोग [illegible]
क्यों हैं? इस बेगारके लिये इतनी हाय हाय क्यों? अपना
नष्ट करके इस सभामें घुसनेके वास्ते लोग इतना क्यों मरते
ऐसे परोपकारमें सत्यका अभाव प्रतीत होता है। क्या इन
लाखों महात्माओंको घूसखोर मन्त्रीके मेलसे मन्द बुद्धि और
चारी राजाकी ठकुरसुहातीके लिये प्रजामात्रकी बुराई करके
खर्च और मेहनतके बदलेमें धन मूसनेका कुछ ख्याल तो
रहता है?" और भी बहुतसे प्रश्न महाराजने किये थे
उल्लेख मैं यहां उचित नहीं समझता हूं।

फिर महाराजने अदालतोंका प्रसङ्ग छेड़ा। इस विषयको
अच्छी तरह समझा सकताहूं क्योंकि एक बार मैं भी मुकदमा
[illegible] हूं। पहले अपना सब स्वाहा किया पीछे खर्च समेत

गे। महाराजने कहा "न्यायान्याय विचारनेमें कितना समय । कितने रुपये लगते है? झूठे बनावटी मुकद्दमेमें वकील बारि- स्वाधीनता पूर्वक बहस कर सकते हैं या नहीं? न्यायकी तराजू वर्गो या राजनीति सम्प्रदायके लोगोंका कुछ बोझ है या नहीं? वकील बारिष्टरोंको न्यायका साधारण ज्ञान है या केवल भादे- क, जातीय और स्थानीय व्यवहारोंहीका? वकील या जज म कानूनके अनुसार बहस या विचार करते हैं उसके बनानेका हैं कुछ अधिकार है या नहीं? वकील बारिष्टरगण एक बार स विषयको बहस करके मण्डन कर चुके हैं मौका पड़ने पर र उसीको खण्डन करनेके लिये नजीर पेश करते हैं या नहीं? गेषत: यह कभी हाउस आफ कामन्सके मेम्बर होते हैं या नहीं?"

अब खजानेकी बारी आई। मैंने कहा था कि हमारे यहां य: पचास लाख पाउण्ड सालमें टैक्सके आते हैं। परन्तु महाराज ो मेरी बातका विश्वास नहीं हुआ। जब मैंने टैक्सोंके नाम नाये तो पचासके दूने भी लाखकी नौबत पहुंची। तब आपसे ा न देखा गया। आप बोल उठे "तुम्हारी रीति नीतसे हमारे ाज्यको लाभ पहुंच सकता है इसमें सन्देह नहीं परन्तु इतनी ामदनी होने पर भी तुम्हारे राजा मामूली आदमियोंकी तरह रण ग्रस्त क्यों होजाते हैं? तुम लोगोंके महाजन कौन हैं? देना ुकानेके लिये तुम लोग कहांसे रुपये पाते हो? तुम्हारे यहां अक- ार युद्ध होता है और उसमें बहुत खर्च पड़ता है। इससे मालूम होता है कि तुम लोग बड़े झगड़ालू हो। सेनापति तो राजासे अधिक धनवान होते होंगे? व्यापार, सन्धि अथवा सीमा रक्षाके सिवा तुम्हें अपने टापूसे बाहर जानेका क्या काम है? शान्तिके समय भी सेना रखके व्यर्थ खर्च बढ़ानेसे क्या लाभ? जहांके मनुष्य स्वाधीन हैं वहां तलब देकर सेना रखनेकी क्या दरकार है? अगर तुम लोगोंकी मरजीके मुताबिक राजा शासन करता है तो फिर डर किसका? किससे लड़नेके लिये फौज रखते हो? क्या रईस लोग

अपने अपने घरकी रक्षा बालबच्चोंके साथ मिल कर उन लु
जो दूसरोंके गले पर छुरी चला कर रुपया पैदा करते हैं
तरह नहीं कर सकते हैं? बाजारू चौकीदारोंकी अपेक्षा अ
रक्षा आप कहीं अच्छी होगी।"

हमारे यहांके गणितको सुन कर महाराज बहुत हंसे। हमा
गणितको वह अनूठा बतलाते थे। सबसे अचरज तो उन्हें यह
कर हुआ कि विलायतमें मनुष्य गणना राजनैतिक धार्मिक
सम्प्रदायोंको गिन कर पूरी होजाती है। आपने यह भी
किया कि जिन लोगोंकी राय सबको हानि पहुंचानेवाली है
लोग अपनी अपनी राय बदलनेके बदले उसे छिपाके क्यों
रखते हैं? विष बाजारमें बेचनेसे हानि है कुछ घरमें छिपा क
रखनेसे नहीं। अगर राजा राय बदलनेके लिये लोगोंको लाचा
करेगा, तो उसका अन्याय और यदि छिपानेके लिये नहीं
तो निर्बलता प्रगट होगी। अतएव सबको अपनी अपनी राय
कर रखना चाहिये।

मैंने कहा था कि हमारे देशमें बड़े आदमी आमोद
लिये जुआ खेलते हैं। इस पर महाराजने पूछा "किस उम
लोग जुआ खेलते हैं और कब छोड़ देते हैं? कितना समय
काममें लगाया जाता है? क्या जुएमें कभी कोई अपना सारा ध
नष्ट नहीं कर देता है? नीच जातिके जुआरी धन पैदा करके ब
आदमियोंको अधीन कर लेते हैं या नहीं? बुरी सङ्गतमें उन्हें खं
लाते हैं या नहीं—मानसिक उन्नतिसे उन्हें विमुख कर देते हैं
नहीं? जो बड़े आदमी जुआ खेल कर दरिद्र होजाते हैं क्या व
फिर दूसरों पर हाथ साफ नहीं करते हैं?"

गत सौ वर्षका इतिहास मैंने कह सुनाया तो महाराजक
बहुत आश्चर्य हुआ। उन्होंने कहा "क्या तुम्हारे देशमें केव
षड्यन्त्र, विद्रोह, खून खराबी, नरबलि, समाजविप्लव, देशनि
काला, इत्यादि भरा हुआ है? यह सब तो लोभ, विवाद, कपटत

ासघात, नृशंसता, क्रोध, पागलपन, घृणा, ईर्षा, द्रोह, विषय
ना, और उच्चभिलाषाओंके फल हैं।"

दूसरे दिन महाराजने बड़े श्रमसे मेरे व्याख्यानके सार भागको
सुनाया और अपने प्रश्नोंको मेरे उत्तरसे मिलाया। फिर
में मुझे लेकर धीरे धीरे पीठ ठोंकते हुए श्रीमान्ने प्यारसे
कुछ कहा था सो आज तक मैं नहीं भूला हूं। आपने कहा
मेरे नन्हे मित्र। तूने अपने देशकी बहुत सुन्दर प्रशंसा सुनाई।
कहनेसे मुझे अब अच्छी तरह मालूम होगया कि व्यवस्थापक
नेके लिये मूर्खता, सुस्ती और पापाचरणकी बहुत जरूरत है।
कानूनको उलट पलट करने, बिगाड़ने और बालकी खाल
कालनेमें निपुण होते हैं वही तुम्हारे यहां आईनकी व्याख्या,
तथा तथा उसके अनुकूल [illegible] भली भांति कर सकतेहैं यह
मुझे अब मालूम हुआ। तुम्हारे यहांकी कोई कोई बातें पहले
अच्छी थीं पर अत्याचारके कारण धीरे धीरे मिटती जाती हैं
ौर बहुतसी तो एक दम लुप्त होगईं। जो कुछ तूने कहा उससे
गट होता है कि विलायतवाले किसी विषयमें पूर्णता प्राप्त करना
हीं जानते और यह तो जानतेही नहीं कि मनुष्य अपने गुणोंके
तापसे बड़े होते, पादरी दया और ज्ञानसे बढ़ते, सिपाही आच-
ण और साहससे विख्यात होते, जज न्यायसे यशके भागी होते,
यवस्थापक देशानुरागसे तथा राजमन्त्री बुद्धिमानीसे प्रख्यात होते
। तूने अपना सारा समय देशाटनहीमें बितायाहै इसलिये शायद
अपने देशके बहुतसे पापोंसे बचा होगा। जो कुछ तूने कहा
ौर जो कुछ मैंने सुना उससे मुझे मालूम होगया कि तुम लोग
ड़े भयानक विषैले कीड़े हो। संसारमें ऐसे कीड़े और नहीं होंगे।

षष्टम परिच्छेद।

मैं नितान्त सच्चा हूं इसीसे यह सब बातें लिखी हैं अन्यथा
कदापि न लिखता। मेरी "स्वर्गादपि गरीयसी" जन्मभूमिकी

निन्दा होती थी और मैं खड़ा खड़ा सुनता था। पर मैं क्या सकता ? अगर कुछ कहता तो लोग हंसीमें उड़ा देते। मैं चुप रहा। मैं बड़े फेरमें पड़ गया था। महाराज इतना खोद कर सब बातोंको पूछते थे कि मैं कुछ छिपा न सका। जहां तक बना मैंने छिपानेकी चेष्टाकी। महाराजके सब उत्तर मैंने बहुत थोड़े शब्दोंमें गड़बड़ सड़बड़ देदिया। जानते मैंने बहुतसी कुरीतियों और कुचालोंको ढांपना चाहा हुआ नहीं।

महाराज विचारेका इसमें क्या दोष है ? वह दुनियांके कोनमें रहते हैं। भिन्न भिन्न जातियोंकी रीति नीति वह जानें ? इस वास्ते नई नई बातें सुन कर उनका अचरज या मानना कुछ विचित्र नहीं है। कूएके मेडक बननेसे बुद्धिमें पात और विचारमें ओछापन आही जाताहै। परन्तु यूरपके सभ्य देश इस दोषसे बचे हैं। ऐसे दूर देशके राजा पुरानी विचारोंकी मनुष्य मात्रके लिये आदर्श बनाना [illegible]

ते केवल मनुष्यही नहीं मरतेहैं, बड़े बड़े किलोंकी दीवारें रसातलमें पहुंच जाती हैं और आदमियोंसे भरे भराये जहाज के तहां विलीन होजाते हैं। हम लोग प्रायः इन्हीं तोपोंकी इसे किले तोड़ फोड़ कर दखल कर लेते हैं और शत्रुओंकी संहार कर विजय प्राप्त करते हैं। इसके बनानेकी तरकीब जानता हूं। इसके मसाले सहज और सस्ते हैं। मैं महाराज कारीगरोंको तोप, बन्दूक, बारूद वगैरः बनानेका उपाय बता ता हूं। यहांसे सौ फुटसे ज्यादे लम्बी तोप न होनी चाहिये। तोपके द्वारा मजबूतसे मजबूत नगरकोट पलभरमें उड़ सकता और समूची राजधानी पलक मारते सत्यानाश होसकती है।"

ऐसी बात सुन कर महाराजके होश हवास उड़ गये। वह पर्यसे बोल उठे "क्या कहा तोप और बारूद ! ताज्जुब है कि हारे जैसे कीड़े मकोड़े भी ऐसी ऐसी अमानुषिक बातें सोचते हैं। लूम होता है कि किसी पिशाचने मनुष्य जातिकी जड़ काटनेके ये यह सब यन्त्र पहले पहल निकाले हैं। खून खराबीकी बातें हनेमें तेरा मन जरा भी न डरा। बेधड़क बोलता चला गया। ते बातो बड़ी कड़ी है। मैं शिल्प-या सृष्टिके नूतन आविष्कार जितना प्रसन्न होता हूं उतना और किसीसे नहीं। मेरा आधा ज्य चाहे चला जाय पर मैं इस निगोड़ी तोपको अपने यहां गने न दूंगा। और तुझे भी अगर जान प्यारी हो तो फिर इसको र्चा मत चलाना।"

अहह ! चित्तकी संकीर्णता और ओछे विचारोंका भी कैसा भुत प्रभाव है। परम बुद्धिमान, सकल विद्यानिधान, नीति कुशल, जा प्रिय, महाराजने जो अपने सङ्गीसे प्रतिष्ठित, सम्मानित और वंपूजित हैं उस संयोगको जिसके द्वारा यह, अपनी प्रजाके धन ौर प्राणके पूरे अधिकारी हो सकते थे योंही हाथसे निकल जाने द्या। यूरपवालोंको ऐसा संयोग कभी सपनेमें भी नहीं मिलता ै। अगर मिल जाये तो यह कदापि इसे न छोड़ें। मैंने कुछ

सुयोग्य महाराजकी निन्दा करनेकी इच्छासे यह नहीं ,
परन्तु मैं जानता हूं कि महाराज अपनी इस कार्रवाईसे
पाठकोंकी दृष्टिमें बहुत हलके हो जायंगे। लेकिन एक बात
यूरोपके विज्ञ पुरुषोंने जैसे राजनीति (Politics) का भी एक
बना डाला है वैसा इन लोगोंने अब तक नहीं बनाया है
यहां विद्याका प्रचार अभी अच्छी तरहसे नहीं हुआ है।
इसीसे यहांवालोंमें यह दोष है। मुझे याद है एक दिन
बातमें जब मैंने महाराजसे कहा कि हमारे यहां तो शासन
यक बहुतसी छपी हुई पोथियां हैं तो वह हम लोगोंको
बहुत भद्दी कहने लगे। राजा या मन्त्रीके रहस्य, संस्कार
षड़यन्त्रको वह घृणित समझतेथे। जिस राज्यमें कोई शत्रु
इन्दी नहीं है। वहां "राज्यके रहस्य" (Secrets of State)
तात्पर्य्य है सो वह समझ न सके। वह राज्य शासनका
केवल साधारण ज्ञान, न्याय और दया तथा दीवानी और
मुकद्दमेको जल्दी फैसल करना आदि बतलाते थे। उनकी
जिस भूमिमें एक सेर अन्न पैदा होता है उसीमें दो सेर उपजा
एक किसान देशका जितना उपकार करता है उतना
जाननेवाले सब मिल कर भी नहीं कर सकते हैं। अन्न पैदा
याले कृषकही देशके सच्चे गौरव हैं।

इन लोगोंकी विद्या बहुत दोषयुक्त है। यह केवल धर्म
इतिहास, काव्य तथा गणितमें पारङ्गत होते हैं। परन्तु
उतनाही सीखते हैं जितना कि नित्यप्रतिके व्यवहारमें, कृषि
शिल्पकी उन्नतिमें काम आता है। हम लोगोंमें तो ऐसी विद्या
कुछ आदर नहीं है। विचार, पदार्थ, विज्ञान और वेदान्तकी
तो उनके मगतिष्कमें किसी तरह भी मैं घुसा न सका।

यहांकी वर्णमाला केवल २२ अक्षरोंकी है। बस कानून
यहां इतनेसे अधिक शब्दोंके नहीं होते हैं। परन्तु वास्तवमें
ही कानून इतने शब्दोंके होते हैं। कानूनकी भाषा अत्यन्त

प्रट होती हैं। कानूनका दो तरहसे अर्थ लगाना यहांके
ानते हैं। आईन कानूनकी टिप्पणी करनेसे प्राण दण्ड
है। दीवानी फौजदारी मुकद्दमेकी नजीरें इतनी कम पाई
हैं कि यहांके लोग इस विषयके चातुर्यका अभिमान कर नहीं
सकते हैं।
ोनियोंकी तरह इनके यहां भी छापेका प्रचार बहुत दिनोंसे
हां बहुत बड़े बड़े पुस्तकालय नहींहैं। सबसे बड़ा पुस्तकालय
ाजका कहा जाताहै उसमें भी हजारसे अधिक पोथियां नहीं
यह सब पुस्तकें बारह सौ फुट लम्बी गैलेरीमें सजाई हुई हैं।
महाराजकी आज्ञा थी मैं जो किताब चाहताथा लेकर पढ़ता
महारानीके कारीगरोंने लकड़ीकी पचीस फुट ऊंची एक
बनाई थी जो दायाके कमरेमें रखी रहती थी। इसके डन्डे
पचास फुट लम्बे थे। यह एक ठौरसे दूसरी ठौर उठाकर
जा सकती थी। सीढ़ीका निचला हिस्सा दीवारकी जड़से
फुट दूर रहता था। जो पोथी मैं पढ़ना चाहता था उसे दीवार
हारे खड़ी कर देता था। फिर मैं सीढ़ीके ऊपरसे पढ़ना शुरू
ा—पंक्तिकी लम्बाईके अनुसार आठ दस कदम दायें बायें सर-
हुआ नीचे उतरता था। इस प्रकार पढ़ कर एक पृष्ठ समाप्त
ा और पुनः ऊपर चढ़ कर दूसरे पन्नेमें हाथ लगाता। पन्ने
नेके निमित्त दोनों हाथोंसे मदद लेनी पड़ती थी क्योंकि पन्नों
लम्बाई पन्द्रह बीस फुट और मुटाई दफ्तीके समान थी।
इन लोगोंकी रचना स्पष्ट, ओजस्विनी और कोमल
ो है पर अलङ्कार युक्त नहीं। यह लोग बहुतसे अनावश्यक
ोंका प्रयोग और विविध प्रकारका वर्णन नहीं करते हैं। मैंने
की बहुतसी पोथियां पढ़ी हैं। विशेष कर इतिहास और नीति
ाही अधिक देखे हैं। दायाके सोनेके कमरेमें एक छोटीसी
ी धरी रहती थी मैं प्रायः इसीको पढ़ता था। यह दायाकी
ानीकी पोथी थी जो नीति और उपासनाकी पुस्तकोंका कार

वार करती थी। इस पुस्तकमें मनुष्य जातिकी निर्बलताका था। स्त्रियों और गंवारोंके सिवा कोई पण्डित इसका करता था। जो हो, इस पुस्तकके पढ़नेका मुझे बहुत चाव, इसलिये इसको मैंने पढ़ा। पढ़ कर देखा कि ग्रन्थकारने नीति विशारदोंके समस्त साधारण विषयोंका उल्लेख करके है कि मनुष्य स्वभावहीसे कैसा क्षुद्र, कैसा घृणित और कैसा हाय है। इतना असमर्थ है कि जङ्गली जानवरोंसे क्या अपनी रक्षा नहीं कर सकता है। बलवान जीवोंसे मनुष्य निर्बल, द्रुतगामियोंसे कितना सुस्त, दूरदर्शियोंसे कितना तथा परिश्रमियोंसे कितना आलसी है। ग्रन्थकारने आगे चलके कहा है "प्राचीनकालकी अपेक्षा आजकाल स्वयं प्रकृति देवीकी बिगड़ गई है। अब छोटे छोटे जीव पैदा होने लगे हैं। पुराने केवल मनुष्यही बड़े डीलडौलवाले नहीं होते थे। बरन्च देव भी होतेथे। अब भी जहां तहां जमीन खोदनेसे पुराने समयके बड़े अञ्जर पञ्जर और हड्डियां पाई जातीहैं। इतिहास और परदादोंसे सुनी हुई बातें इसके प्रत्यक्ष प्रमाण हैं। यह आजकलके छोटे आदमियोंकी हड्डियोंसे कहीं बड़ी हैं। यह सिद्धान्त निकलता है कि आरम्भमें प्रकृतिका यही कि मनुष्य बहुत बड़े और बलवान हों—खपड़ेके गिरनेसे या के कङ्कड़ी मारनेसे या छोटी छोटी नदियोंमें डूबने इत्यादि मोटी घटनाओंसे न मरें।" इसी तरहकी युक्तियां दिखला ग्रन्थकर्त्ताने कई सुन्दर नैतिक-सिद्धान्त निकाले हैं जिनका यहां करना मैं वृथा समझता हूं पर इतना जरूर कहूंगा कि प्र लड़ाई ठानकर नीतिके व्याख्यान करनेकी, नहीं नहीं, तथा दुःख प्रकाश करनेकी परिपाटी सारे संसारमें कोरी फैल मुझे विश्वास है कि अच्छी तरह खोज करने पर इन ...ों के समान इन लोगोंमें भी इस असन्तोषका कुछ ...दूर होगा।

अब कुछ सेनाके विषयमें लिखता हूं। यहांके निवासी गर्वके ाथ बोल उठते हैं "हमारे राजाके तो दो लाख आठ हजार सेना -एक लाख छिहत्तर हजार पैदल और बत्तीस हजार घुड़- ार।" सौदागरों और किसानोंहीको जहां फौज है और शहर रईसही जहां फौजके अफसर हैं वहां इतनी फौज होनी कौन शकिल है? तिस पर तुर्रा यह कि इन सबकी तलब तनखाह या ाम इकराम कुछ नहीं दिया जाता है। यह लोग युद्ध विद्यामें े निपुण और दक्ष होते हैं। पर इससे इनको कुछ लाभ नहीं क्योंकि हर एक किसान अपने अपने जमींदारके और नगर वासी अपने अपने नगरके प्रधान रईसके आज्ञाधीन रहते हैं। र युद्धविद्यामें यह सुदक्ष क्यों न होंगे?

मैं कवाइद देखनेको अकसर जाता था। राजधानीके पासही ीस मीलका एक चौकोर मैदान था यहीं कवाइद होती थी। ीस हजार पैदल और छः हजार घुड़सवारसे अधिक सेना एकत्र हीं होतीथी। पर जितनी दूरमें वह खड़ी होती थी, उसको ख्याल र गिनती करना मेरे लिये असम्भव था। सवार सब घोड़े सहित ों सत्तर फुट तो जरूर ऊंचे होंगे। सेनापतिका संकेत पातेही ब सवार एक साथही तलवार निकाल कर आसमानमें घुमाने ग जाते थे। यह दृश्य इतना विराट् इतना अद्भुत और इतना ाश्चर्यजनक होता था कि जिसका वर्णन क्या अनुमान भी नहीं होसकता है। उस समय यही मालूम होताथा कि आकाशमण्डलमें चारों ओरसे बिजली चमक रहीहै। आकाश विद्युन्मय हो गयाहै।

यहां किसी दूसरे मुल्कसे कोई आया नहीं फिर महाराजको सेना रखनेका या उसे कवाइद सिखानेका विचार कैसे हुआ सो जाननेके लिये मेरी बहुत इच्छा हुई। पीछे इतिहास पढ़नेसे तथा लोगोंके कहनेसे सब हाल मालूम होगया। संसारकी समग्र मानव-जाति जिस रोगसे पीड़ित है यहां वाले भी उसी महारोगसे बहुत दिनों तक पीड़ित रह चुके हैं। प्रधान पुरुष प्रायः प्रभुत्वके लिये,

और राजा एकाधिपत्यके लिये लड़ चुके हैं। राज्यकी
यद्यपि सब दबा दिये जातेथे तथापि कभी कभी लागकी आग
उठती थी। तीनों दलवाले अपनी अपनी आशा पूरी करनेके
घमसान मचा देते थे। कई संग्राम होचुके हैं। पिछले
वर्त्तमान महाराजके दादाने सबको सन्तुष्ट करके शान्त किया
तभीसे सबकी सम्मतिके अनुसार नैमित्तिक सैन्य (Militia)
का सुप्रबन्ध हुआ है।

नवम परिच्छेद।

आशा बड़ी प्रबल है। आशाहीके भरोसे संसारके सब
चलते हैं। मुझे भी पूरी आशा थी कि कभी न कभी अवश्य
कारा होगा लेकिन कैसे होगा सो विचारना असम्भव था।
उपाय करके कृतकार्य्य होनेकी भी सम्भावना न थी। आप
मारा भूला भटका कोई जहाज भी उधरसे न आनिकला।
आनिकलता तो वह मुसाफिरों समेत बड़ी हिफाजतके साथ
पर लाद कर राजधानीमें लाया जाता क्योंकि महाराजने ऐ
आज्ञा अपने आदमियोंको दे रक्खी थी। महाराजकी यह
इच्छा थी कि मेरा व्याह किसी मेरी डीलवाली स्त्रीसे हो
जिसमें सन्तानकी उत्पत्ति हो। परन्तु मुझे अपने बच्चोंको चि
की तरह पिञ्जरेमें बन्द होने या बड़े आदमियोंके हाथ
लिये छोड़ जाना स्वीकार न था। यह अपमान भला
सहा जायगा? मैंने विचार लिया था कि चाहे जान जाय पर
काम कदापि न करूंगा। हां माना कि सबकी मुझ पर दया
महाराज और महारानी बहुत प्यार करते थे, सारे द
में खिलौना बन गया था—सब था पर प्यारी स्वतन्त्रता तो न
स्वाधीनताही मनुष्यका भूषण है। स्वाधीनताके विना स्वर्ग
सुख भी तुच्छ अति तुच्छ महातुच्छ है। इसके सिवा घ
याद बराबर सताती थी। अपने देशके मनुष्योंके साथ बरा

वीत करनेके लिये और खेत खलिहानमें—गली कूचोंमें निशंक
र विचरने लिये जी तरसता था। यहां तो पद पद पर मेंडक
पक्षेकी तरह कुचल जानेका डर रहता है। ईश्वरकी दयासे
और कष्ट भोगना न पडा। अनायासही बहुत जल्दी छुट-
ा होगया सो भी बडे विचित्र ढङ्गसे। इसका पूरा हृत्तान्त आगे
ाता हूं पाठकगण जरा ध्यानसे पढ़ें।

यहां आये मुझको दो वर्ष होगये। तीसरा वर्ष अब आरम्भ
ा है। इसी समय महाराज और महारानीने दक्षिण सीमाको
दौरा किया। लाचार मुझे और दायाको भी सङ्ग जाना पड़ा।
पने उसी सफरी पिञ्जरेमें था जिसका हाल ऊपर लिख चुका
। यह बारह फुट चौड़ा था। मैंने सोनेके लिये इसमें एक
ा लगवा लिया था जो रेशमकी डोरसे लटकता था। इस झूले
कारण देह नहीं हिलती थी। ऊपर छतमें एक सूराख था जो
ह हो और खुल सकता था। जब गर्मी मालूम होती, इसे खोल
ा, हवा मजेमें आने लगती थी।

जब हम लोग "फलानफलसनिक" पहुंचे तो महाराजने यहां
प्रासादमें कुछ दिन वास करना विचारा। यह शहर समुद्र तट
अठारह मील पर बसा हुआ है। दायाको और मेरी बुरी दशा
। मुझे तो सिर्फ जुकाम होगया था लेकिन दाया विचारी तो
नी बीमार थी कि कमरेसे बाहर भी नहीं निकल सकती थी।
मे सागर दर्शनकी अत्यन्त लालसा हुई। सोचा वहां पहुंचनेसे
ायद भागनेका कुछ ढङ्ग निकल आवे। बीमारीका बहाना करके
ने समुद्र-समीर सेवनकी अनुमति महाराजसे ली। एक छोकरा
मे हवा खिलानेके लिये लेचला। इसे मैं बहुत चाहता था क्योंकि
ह कुछ दिन मेरे साथ रह चुका था। चलनेके समय दाया फूट
ट कर रोने लगी। उसकी रुलाई अब तक मुझे याद है। उसने
डी मुश्किलसे छोकरेके हवाले मुझे कियाथा। उसको खूब साव-
ान रहनेके लिये बार बार चिता दिया था। न जाने क्या आगम

सोच कर दाया इतनी दुःखित हुई थी। होनेवाली बात उसे पहलेहीसे मालूम होगई थी। पिञ्जरा हाथमें ले छोकरा की ओर चल पड़ा। आधे घण्टेमें ठिकाने पर जा पहुंचा। जमीन पहाड़ी थी। मेरे कहनेसे उसने पिञ्जरा जमीन पर दिया। मैं खिड़की खोल कातर होकर उत्सुक दृष्टिसे ... तरफ निहारने लगा। निहारते निहारते जी घबरा गया, झूले पर जाकर लेट रहा। छोकरा खिड़कियां मूंद कर ... के अण्डोंकी खोजमें घूमता हुआ दूर निकल गया। मैं भी को निरापद समझ, लगा खर्राटे लेने। पिञ्जरेके बेतरह उठनेसे आंखें खुलीं तो देखा कि पिञ्जरा बड़ी तेजीके साथ को उठ रहा है। मैं गला फाड़ फाड़ कर पुकारने और लगा पर कुछ जवाब नहीं। मैंने खिड़की खोली तो आकाश बादलोंके सिवा और कुछ दिखाई न दिया। इतनेमें ...की फटाहट सुन पड़ी जिससे मैं अपनी दुरवस्थाको अच्छी तरह ...गया। मालूम होगया कि कोई गिद्ध पिञ्जरेको चोंचमें लिये जा रहाहै। किसी चट्टान पर पटक कर मुझे जीता निगल जाय... हाय! इतने पीछे रहने पर भी गिद्धको मेरी गन्ध पहुँच गई। सब बातें सोच कर मेरे होश हवास जाते रहे। आंखोंके अन्धियारी छागई। परमात्माका स्मरण कर मैंने नेत्र बन्द कर...

गिद्ध और भी फर्राटे भरने लगा। पङ्खकी फटफटाहट भी लगी। पिञ्जरा भी दायें बायें हिलने लगा। चोंचकी खटा सुनाई पड़ी। इतनेमें किसी चीजके टूटनेकी फटसे आवाज और पिञ्जरा बड़े वेगसे नीचे गिरने लगा। यह इस तेजीसे कि मेरा दम घुटने लगा। एक मिनटके बाद इतने जोरका ... हुआ कि कानके परदे फट गये। तमाम अन्धेरा छागया। ...र। ऊपर उठा और खिड़कियोंकी सन्धिसे उजाला आने ...मालूम होगया कि मैं समुद्रमें गिर पड़ा हूं। पिञ्जरेमें ... कुछ मेरा असबाब। मजबूतीके लिये उसके ऊपर नीचे

। कोनोंमें लोहेके पत्तर जड़े थे। अतः यह पांच फुट तो पानी
ीतर और बाकी बाहर रहा। यह उतराता हुआ बहने लगा।
मैं समझता हूं जब गिद्ध पिञ्जरा लिये उड़ा जाता था तब
ःभी दो चार गिद्ध आपहुंचे और आपसमें शिकारके लिये
ने लगे। इसी लड़ाई भिड़ाईमें पिञ्जरा चोंचसे छूट कर समुद्रमें
ः पड़ा। और बात भी यही मालूम होती है। पिञ्जरेके नीचे
ेका मजबूत पत्तर लगा था इसीसे जलकी चोटसे वह नहीं
।। हर एक जोड़ इसका खूब कसा हुआ था और किवाड़ भी
में कब्जेदार न थे बल्कि ऊपर नीचे उठनेवाले। सो यह भी
ःकसे थे। पानी घुसनेका दाव किसी तरहसे भी न था। मैं
ो कठिनाईसे झूले परसे उतरा। हिम्मत करके ऊपरकी
ोची हवा आनेके लिये खोलदी क्योंकि हवा बिना मेरे प्राण
कले जाते थे।

दाधाकी याद मुझे बराबर आती थी। हाय! जन्म भरके लिये
उससे अलग होगया! वह मेरा कितना लाड़ प्यार करती थी!
ः बिना वह कितना रोती होगी! महारानी न जानें उस पर
तना गुस्सा होती होंगी! उसके दुःखको सोच कर मैं अपना सब
ख भूल गया। जैसी विपदमें मैं फंसा था वैसी और किसी पर
ड़ेगी चाहे होगी! यही मालूम होता था कि अब पिञ्जरा
कसी पहाड़से टकराया अब उलटा—अब मरा, मौत सिरपर नाच
ो रही थी सिर्फ शीशेकी किवाड़ियोंके फूटनेकी देर थी। दरी-
यरोंमें हालमें मंढ़ी हुई थी इसीसे जान बची। अब पानी भी जरा
रा घुसने लगा। मैं भी उसके बन्द करनेकी यथा-साध्य चेष्टा
रता जाता था। मैं अपनी जिन्दगीसे हाथ धो बैठा क्योंकि चारों
ोर मृत्यु दिखाई पड़ती थी। और कोई आफत चाहे न आवे
र अब जलके बिना तो जरूर मरना पड़ेगा। चार घण्टे तक मैं
न्हीं सब विचारोंमें मग्न रहा।

मैं पहले कह चुका हूं कि पिञ्जरेके उस तरफ जिधर खिड़कियां

सोच कर दाया इतनी दुःखित हुई थी। होनेवाली बात उसे पहलेहीसे मालूम होगई थी। पिञ्जरा हाथमें ले छोकरा को ओर चल पड़ा। आधे घण्टेमें ठिकाने पर जा पहुंचा। जमीन पहाड़ी थी। मेरे कहनेसे उसने पिञ्जरा जमीन पर दिया। मैं खिड़की खोल कातर होकर उत्सुक दृष्टिसे चा. तरफ निहारने लगा। निहारते निहारते जी घबरा गया झूले पर जाकर लेट रहा। छोकरा खिड़कियां मूंद कर के अण्डोंकी खोजमें घूमता हुआ दूर निकल गया। मैं भी को निरापद समझ, लगा खर्राटे लेने। पिञ्जरेके बेतरह उठनेसे आंखें खुलीं तो देखा कि पिञ्जरा बड़ी तेजीके साथ को उठ रहा है। मैं गला फाड़ फाड़ कर पुकारने और लगा पर कुछ जवाब नहीं। मैंने खिड़की खोली तो आकाश बादलोंके सिवा और कुछ दिखाई न दिया। इतनेमें पङ्खों फटाहट सुन पड़ी जिससे मैं अपनी दुरवस्थाको अच्छी तरह गया। मालूम होगया कि कोई गिद्ध पिञ्जरेको चोंचमें लिये जा रहाहै। किसी चट्टान पर पटक कर मुझे जीता निगल जा. हाय ! इतने पीछे रहने पर भी गिद्धको मेरी गन्ध पहुँच गई। सब बातें सोच कर मेरे होश हवास जाते रहे। आंखोंके अन्धियारी छागई। परमात्माका स्मरण कर मैंने नेत्र बन्द कर

गिद्ध और भी फर्राटे भरने लगा। पङ्खकी फटफटाहट भी लगी। पिञ्जरा भी दायें बायें हिलने लगा। चोंचकी खटा सुनाई पड़ी। इतनेमें किसी चीजके टूटनेकी फटसे आवाज और पिञ्जरा बड़े वेगसे नीचे गिरने लगा। यह इस कि मेरा दम घुटने लगा। एक मिनटके बाद हुआ कि कानके परदे फट गये। [illegible]
पिञ्जरा ऊपर उठा और खिड़कि[illegible]
अब मालूम होगया कि मैं
और कुछ मेरा असबाब

इतना सुनतेही वह फिर मुझे थोड़ा समझाने लगा और पुनः के लिये कहा। मैंने बहुत तरहसे समझाया और कहा कि भी पागल न था और न हूं। मेरे होश हवास सब ठीक हैं। यह क्यों मानने लगा? बोला "तुम जरूर कोई भारी अपराधी किसी भारी अपराधके कारण तुम्हें यह सजा मिली थी। मैंने भूल की जो तुम्हारे प्राण बचाए। खैर चलो दूसरे बन्दर पर उतार कर जहाज हलका कर लूंगा। तुमने जैसी जैसी अस- बातें जिस भाव भङ्गीसे कही हैं उनसे तुम पर पूरा सन्देह ा है।

मैंने हाथ जोड़ कर कहा "आप धीरज धरें और मेरी सब ातें सुनलें तब आपके मनमें जो आवे सो कीजिये।" मैं पुनः देसे अन्त तक अपनी सब बातें एक एक कर सुना गया। सत्य तामस जय है! और कप्तान भी कुछ पढ़ा लिखा था। अत मेरी सच्ची बातोंने उसके चित्त पर कुछ प्रभाव डाला। मैंने मंगवा कर वहांकी अनूठी अनूठी चीजें दिखलाईं। महा- की दाढ़ीके बालकी कंघी (जो मैंने बनाई थी) एक फुटसे र गज गज भर लम्बी सूई और पिन, भिड़के डङ्क जो सूएके बर थे, महारानीके बाल और एक अंगूठी जो महारानीने प्रसन्न कर छगुनियांसे उतार कर मेरे गलेमें पहना दी थी दिखाई तो ानका विश्वास हुआ। मैं कप्तानको उसकी खातिरदारीके बदले ूठी देने लगा पर उसने नहींली। फिर मैंने एक गड़ा दिखाया महारानीकी एक सहेलीके अंगूठेसे काट लिया था। यह सुख इतना चाड़ा होगया कि लण्डन पहुंच कर इसका एक कटोरा वाया और फिर चान्दीसे मढ़वा दिया। चूहेके चामका एक ामा भी मैंने दिखाया।

. दांत देख कर कप्तानको बहुत आश्चर्य हुआ। यह दांत दाया एक नौकरका था उसके दांतमें जब दर्द हुआ तो एक नौम ोमने उसका दांतही उखाड़ डाला था। मैंने उसे भी धोकर

जब सन्नाटा होगया और मेरा जी भी ठिकाने हुआ तब
ने मेरे सफरका हाल पूछा और कहा "आज दिनको क़रीब
बजे जब मैं दूरबीन लगा कर इधर उधर देख रहा था मेरी
आपके पिञ्जरे पर जापड़ी। मैंने पहले इसे कोई नाव
था। नजदीक आने पर यह कुछ औरही मालूम पड़ा।
किश्ती पर अपने आदमियोंको इसका पता लगानेके लिये
वह सब आकर आश्चर्य्यके साथ बोले कि यह तो तैरता
घर है। पर मुझे विश्वास न हुआ। उन लोगोंने क़सम खा
तौ भी मैं हंसने लगा। शेषमें मैं स्वयं वहां गया और
रस्सा भी साथ लिवाता गया। मौसम अच्छा था। कई मर
से पिञ्जरेकी प्रदक्षिणाकी द्वार और किवाड़ोंकी अच्छी तरह
अंकड़ों पर दृष्टि पड़ी तो उनमें रस्सा बांध दिया और
जहाजकी ओर लेचलनेको मल्लाहोंसे कहा। जब
आये तो एक दूसरा रस्सा ऊपरवाले आंकड़ोंसे बांध
उठानेके वास्ते हुक्म दिया। सब जहाजियोंने मिल कर
पर खेंचा परन्तु तीन फुटसे ज्यादे ऊंचा न उठा सके बाद
रूमाल फहराता हुआ उनको दिखलाई पड़ा तब समझा
भीतर कोई अभागा बन्द है। फिर जो कुछ हुआ सो आ
ही हैं।" इतना सुन कर मैंने अपना वृत्तान्त कह सुना
पूछा "जिस समय आप लोगोंने पहले मुझे देखा उस समय
में कोई बड़ा पक्षी दिखाई पड़ा था?" उसने जहाजियोंसे
जवाब दिया "मैंने तो नहीं देखा लेकिन एक मल्लाह कहता
उसने उस समय तीन गिद्ध उत्तरकी तरफ उड़ते हुए देखे
मगर बड़े न थे। मामूली जैसे होते हैं वैसेही थे।" मैं
बहुत ऊंचे पर होनेहीके कारण वह छोटे मालूम पड़े होंगे

मैं—अच्छा यहांसे ज़मीन कितनी दूर पर होगी?

कप्तान—कमसे कम सौ मील पर।

मैं—नहीं, इतना नहीं। समुद्रमें गिरनेसे क़रीब दो घ
टे के पहले [illegible] कहा जाता हूं।

तना सुनतेही वह फिर मुझे थोड़ा समझने लगा और पुनः
के लिये कहा। मैंने बहुत तरहसे समझाया और कहा कि
भी पागल न था और न हूं। मेरे होश हवास सब ठीक हैं।
ह क्यों मानने लगा? बोला "तुम जरूर कोई भारी अपराधी
किसी भारी अपराधके कारण तुम्हें यह सजा मिली थी। मैंने
भूल की जो तुम्हारे प्राण बचाए। खैर चलो दूसरे बन्दर पर
उतार कर जहाज हलका कर लूंगा। तुमने जैसी जैसी अस-
बातें जिस भाव भङ्गीसे कही हैं उनसे तुम पर पूरा सन्देह
र है।

मैंने हाथ जोड़ कर कहा "आप धीरज धरें और मेरी सब
ानी सुनलें तब आपके मनमें जो आवे सो कीजिये।" मैं पुनः
दसे अन्त तक अपनी सब बातें एक एक कर सुना गया। सत्य
ामम जय है! और कप्तान भी कुछ पढ़ा लिखा था। अत
मेरी सच्ची बातोंने उसके चित्त पर कुछ प्रभाव डाला। मैंने
मंगवा कर वहांकी अनूठी अनूठी चीजें दिखलाईं। महा-
की दाढ़ीके बालकी कंघी (जो मैंने बनाई थी) एक फुटसे
र गज गज भर लम्बी सूई और पिन, भिड़के डङ्क जो सूएके
बर थे, महारानीके बाल और एक अंगूठी जो महारानीने प्रसन्न
कर छगुनियांसे उतार कर मेरे गलेमें पहना दी थी दिखाई तो
ानका विश्वास हुआ। मैं कप्तानको उसकी खातिरदारीके बदले
ठी देने लगा पर उसने नहींली। फिर मैंने एक गट्टा दिखाया
महारानीकी एक सहेलीके अंगूठेसे काट लिया था। यह सूख
इतना कड़ा होगया कि लण्डन पहुंच कर इसका एक कटोरा
वाया और फिर चान्दीसे मंढ़वा दिया। चूहेके चामका एक
ामा भी मैंने दिखाया।

दांत देख कर कप्तानको बहुत आश्चर्य हुआ। यह दांत दाया
एक नौकरका था उसके दांतमें जब दर्द हुआ तो एक नौसि
खीसने उसका दांतही उखाड़ डाला था। मैंने इसे धो धाकर

और दूसरोंको निपट बौना मैं समझने लग गया था। मैंने कहा—"प्यारी! तुम सबको खानेके लिये नहीं मिलता। तुम सबतो सूख कर कांटा बन गई हो।" मतलब यह कि घर पहुँचा तो सभी मुझको कमानकी तरह सिड़ी समझने। इसमें आश्चर्यही क्या? यह तो पक्षपात और अभ्यासका नतीजा।

थोड़े दिनोंके बाद सब बातें साबिक दस्तूर होगईं। मैं आपेमें आगया और घरवाले भी मुझको होश हवासमें समझने लगे। स्त्रीने बहुत कहा सुना कि अब समुद्रकी यात्रा मत करो। विधनाको यह मञ्जूर न था।

इति द्वितीय भाग समाप्त

विचित्र-विचरण।

तृतीय भाग।

लपूटाकी यात्रा।

प्रथम परिच्छेद।

पाठकगण ! मैं दस बारह दिन भी घरमें न रहा था कि
पवेल' नामक जहाजका सरदार विलियम रविनसन् मेरे पास
था। इसके साथ पहले कुछ दिन तक मैं काम कर चुका था।
जहाजका नाखुदा था और मैं जर्राह। यह मुझको भाईसे
बढ़ कर मानता था। इसीसे मेरे आनेका हाल सुन कर मुझसे
लिनेके लिये दौड़ा आया। मेरे खुशी राजीसे घर लौट आने
इसने बहुत आनन्द प्रगट किया। बहुत देर तक इधर उधर
बातें होती रहीं। फिर इसने कहा—"मैं दो महीनेमें हिन्दु-
नका सफर करनेवाला हूं। मैं कुछ कह तो नहीं सकता लेकिन
र आप चाहें तो चल सकते हैं। दो सहकारीके अलावे एक
ह भी आपके नीचे रहेगा। मामूली तनखाहसे आपको दूनी
लेगी। आप बहुत सफर कर चुके हैं सो आपका तजरबा मुझसे
कम नहीं है। इसलिये मैं वादा करता हूं कि जहाजका सब
र आपकी सलाहसे हुआ करेगा।" और भी शिष्टाचारकी
सी बातें इसने कही थीं। मैं इस अनुरोधको टाल न सका।
देशान्तरोंमें घूमनेकी कुछ ऐसी आदत लग गई थी कि पिछले
ोंका कुछ भी ख्याल न कर मैंने फिर चलनेको ठहराई। प्यारी
हुत कहा सुना पर उसे भी समझा बुझाके राजी कर लिया।

ता० ५ वीं अगस्त १७०६ ईस्वीको जहाज खुला और ११ अप्रैल १७०७ को फोर्टसेण्ट जीर्ज जापहुंचा। कई आदमी पड़ गये थे इसलिये तीन हफ्ते तक जहाज यहां रुका। यहांसे हम लोग टौनक्वीन गये। जो कुछ माल यहां खरीदना वह सब तैयार न था अतएव कप्तानने यहां भी कुछ दिन ठ॰ आज्ञा दी। चुपचाप बैठे रहनेसे सिवाय खर्चके कुछ लाभ इसलिये कप्तानने कुछ सोच समझ कर छोटीसी एक नाव और उसमें वही सब चीजें भरीं जिनसे टौनक्वीनवाले आस टापुओंमें तिजारत करते हैं। नाव पर चौदह मनुष्य थे लोग उसी देशके थे। मैं सबका सरदार हुआ। कप्तान तो टौ॰ में रहा और मैं नाव लेकर टापुओंकी तरफ रवाना हुआ।

तीसरे दिन बड़े जोरकी आंधी आई। नाव राह छो॰ उत्तर पूर्व दिशाको जाने लगी। पांच रोज तक यही दशा फिर पूर्वको मुड़ी। आंधी बन्द होगई थी लेकिन पश्चिमी का वेग अधिक था। दसवें दिन डाकुओंके दो जहाजोंने किया। नाव बोझके मारे तेजीसे चल नहीं सकती थी। डाकुओंने हमारी नावको पकड़ लिया। हम लोगोंके पास शस्त्र कुछ नहीं था। हम लोग सब तरहसे निरुपाय थे।

दोनों जहाजके डाकुओंने एकही समय आक्रमण करके साथ नावमें प्रवेश किया। मैंने अपने आदमियोंको पहलेही पड़ रहनेकी आज्ञा दे रक्खी थी। सब मुंह छिपाये पड़े थे। पड़ा था। डाकुओंने आतेही हम लोगोंकी मुश्कें बांध कर आदमियोंके हवाले किया फिर वह लोग लगे नावकी रत्ती ढूंढने।

इन लुटेरोंमें एक दिनामार भी था। वह सबका स॰ तो नहीं पर सरदार सा मालूम होता था। वह सूरत ॰ पहचान गया कि हम सब अङ्गरेज हैं। हम लोगोंको सुना वह अपनी बोलीमें बकने लगा—"तुम लोगोंको पीठसे पीठ

र समुद्रमें डुबा दूंगा।" मैं डीनामार्कोकी भाषा मजेमें बोल लेता था। मैंने उससे कहा—"साहब! हम लोग भी प्रोटेष्टेण्ट क्रस्तान हैं। हम आप सब एकही देशके हैं। कृपा कर कप्तानसे सिफारिश कर दीजिये, जिसमें हम लोगोंकी जान बचे।" इतना सुनतेही वह आग बगूला होगया। लाल लाल आंखें करके अपने साथियोंसे जापानी भाषामें न जाने क्या क्या बोलने और मुझको धमकाने लगा।

इन डाकुओंके दो जहाज थे। बड़े जहाजका सरदार एक जापानी था। वह टूटी फूटी डिनमार भाषा बोल लेता था। उसने मेरे पास आकर कई प्रश्न किये। मैंने नम्रतासे सबका उत्तर दिया। तब वह बोला—"अच्छा, धीरज धरो तुम्हारी जान नहीं जायगी।" मैंने तब खूब झुककर जापानीको सलाम किया और उस डिनामार से कहा—"देखो! तुम क्रस्तानोंसे अधिक दया इस विधर्मीमें है।" पर इस ढिठाईका मजा मुझको खूब मिल गया। वह दुष्ट नीच मेरी जान लेनेकी चेष्टा करने लगा पर उसकी कुछ पेश न गई। उसका यही मन था कि मैं समुद्रमें फेंक दिया जाऊं पर जापानी बड़े दयालु थे उन्होंने इसकी एक न सुनी। आखिर उसने मुझको एक भारी सजा दिलाई जो मौतसे भी बढ़ कर थी।

मेरे आदमियोंको लुटेरोंने आपसमें बराबर बांट लिया। नाव पर नये मल्लाह बहाल किये गये। मेरे लिये डांड़ पालसे दुरुस्त एक डोंगी आई। इसमें चार दिनकी खुराक रक्खी गई लेकिन दयावान् जापानीके कहनेसे दूनी करदी गई। मैं परमात्माका ध्यान कर डोंगी पर चढ़ बैठा, और वह समुद्रमें छोड़दी गई। जिस समय मैं चला उस नराधम डिनामारने खूब कोसा और गालियां दीं। पर मैंने उधर देखा तक नहीं। हां एक बात कहनेको भूलही गया था कि जापानीने मेरे कपड़ोंकी तलाशी किसीको नहीं लेने दी थी।

डाकुओंसे कुछ दूर निकल जाने पर दूरबीनके सहारे दक्षिण

पूर्वकी ओर कुछ टापू नजर आए। हवा ठीक थी। सबसे
वाले टापूमें पहुँचनेकी इच्छासे पाल तान कर डोंगीको
घुमाया। लगभग तीन घण्टेमें वहां जा पहुँचा। यह स्था
कुल पथरीला था। खैर, मैं उतरा। अण्डे जमा कर पत्थर
निकाली और उन्हें भून कर खूब खाया। हाथमें भोजन
कुछ सामग्री थी उसे आगेके लिये बचा रक्खा। रातको व
गुफामें सो रहा। नींद खूब मजेकी आगई थी।

सवेरे उठ कर मैं दूसरे टापूमें गया। वहांसे तीसरे औ
चौथेमें पहुँचा। कभी डांड़से और कभी पालसे काम लि
या। अपने दुःखकी गथासे पाठकोंको दिक न कर खुल
देता हूं कि पांचवें दिन मैं अन्तिम द्वीपमें पहुँच गया।
फिर कोई द्वीप दृष्टि गत नहीं होता था। यह पहले टापू
पूर्वकी ओर झुकता हुआ था।

मैंने समझा था कि यह निकट होगा मगर दूर निकल
पांच घण्टे वहां तक पहुँचनेमें लगे थे। वहां पहुँचने प
प्रदक्षिणा करने लगा। इसी बीचमें एक खाड़ी नज
जो मेरी डोंगीसे तिगुनी चौड़ी थी। डोंगी रखनेकी य
जगह मिल गई। यह भी भूमि पथरीली थी किन्तु क
हरी हरी घास और भीनी भीनी बासवाली बेलें दिखा
मेरे साथ भोजनकी जो कुछ थोड़ीसी सामग्री थी उसे
खाया और कुछ एक गुफामें हिफाजतसे रख दिया।
की बहुतायत थी। रात भर उसी गुफामें जिसमें भोजनकी
रक्खी थी मैं पड़ा रहा। सूखी सूखी घास चुन कर विस्तर
। पर नींद नहीं आई। इसी सोचमें सवेरा होगया
... मैं अब कैसे प्राण बचेंगे—न जाने मैं कै
... अपनी दशा विचार कर मैं नितान्त कातर
... न रही। जब कुछ दिन चढ़ आया तब
। कुछ देर तक इधर उधर घूमा किया। आकाश

वह था सूरज इतना तेज था कि उधर निहारना कठिन हुआ। चार मुंह फेर लिया। इतनेहीमें यकायक सूर्य छिप गया। धेरा होगया लेकिन बादलमें सूर्यके छिप जानेसे जैसा अन्धेरा ता है वैसा नहीं था। यह एक दम विलक्षण था। मैंने मुंह ा तो देखा कि मेरी और भगवान् भास्करके बीचमें एक विशाल धला पदार्थ आपड़ा है जो टापूकी तरफ बढ़ा आता है। यह मीलके लग भग ऊंचा मालूम होता था। कोई छः सात मिनट क सूर्यदेव इसके ओझलमें रहे पर हवा बहुत ठंढी नहीं हुई ार न आकाशहीमें अन्धेरा था। ज्यों ज्यों वह निकट आता ता था त्यों त्यों उसके सब भाग साफ मालूम होते थे। वह कुछ म पदार्थसा था। उसकी पेंदी चिपटी, चिकनी और चमकीली ी। समुद्रकी परछांहीसे वह और भी चमदार मालूम पड़ता था। किनारेसे करीब दो सौ गज ऊंचे पर खड़ा था। मैंने देखा कि ह पदार्थ जो मेरे और सूर्यके बीचमें आगया था ठीक मेरे सामने क मीलसे भी कम दूरी पर उतर रहा है। मैंने दूरबीन लगाई ा मालूम हुआ कि अनेक मनुष्य उसके दोनों ओर चढ़ और उतर हे हैं परन्तु वह सब क्या कर रहे हैं सो कुछ ज्ञान न पड़ा।

प्राण स्वभावतः सभीको प्रिय है। मैं मनही मन बहुत प्रसन्न हुआ। सोचा इस देवघटनासे शायद मेरा निस्तार यहांसे होजाय र साथही इसके आकाशमें उड़ता हुआ टापू देख कर मेरे आश्चर्य ा ठिकाना न रहा। तिस पर तुर्रा यह कि उसमें मनुष्य भी वास रते थे जो इच्छानुसार इस द्वीपको चला और ठहरा सकते थे, सर्फ यही नहीं ऊपर उठा सकते, नीचे उतार सकते और जिधर न चाहता उधर ले जाते थे। उस समय उस अद्भुत पदार्थ पर ार्शनिक विचार करनेका अवसर न था इसलिये सब छोड़ छाड़ र मैं यह देखने लगा कि यह किस तरफ जाता है क्योंकि थोड़ी देरके लिये यह ठहर गया था।

थोड़ी देरके बाद यह कुछ और समीप आया। अब सजेमें

द्वितीय परिच्छेद।

जब मैं ऊपर पहुंचा तो बहुतसे आदमी मुझे घेर कर खड़े हो
।। जो सब पास खड़े थे भलेमानस मालूम पड़े। मैं उन्हें और
मुझे आश्चर्यके साथ देख रहे थे। मैंने अब तक ऐसे विचित्र
कार, आचरण और रूपके मनुष्य कभी नहीं देखिये। इन सबकी
नें बांयें या दायेंको झुकी हुई, आंखें एक भीतरको धंसो और
री ऊपरको उठी हुई थी। कपड़ों पर चन्द्र सूर्य नक्षत्र तारों
मूर्तियां तथा सारङ्गी, बांसुरी, वीन, तुर्ही, सितार इत्यादि
जोंकी तसवीरें बनी हुई थीं जिन्हें युरोपवाले जानते भी
हीं हैं। इधर उधर खड़े हुए कई खानसामा नजर आए जिनके
ाथमें एक एक छोटा डण्डा था। इन डण्डोंके एक औरमें
बांधे फूली हुई एक एक थैली लगी हुई थी। इन थैलियोंमें सूखी
टर अथवा कङ्कड़ियां भरी हुई थीं। इन्हीं डण्डोंसे वह खानसामा
न लोगोंके मुंह और कानोंमें जो वहां खड़ेथे मारते थे। मैं इसका
तलब कुछ भी समझ न सका। मालूम होता है कि उन लोगों
ा मन विचारमें ऐसा निमग्न रहता कि चेत कराये बिना वह
ा न कुछ सुन सकते हैं और न कुछ बोल सकते हैं। इसी वास्ते
ड़े आदमीलोग चितानेके लिये एक एवा कमची बरदार नौकर
खते हैं। जहां वह जाते हैं कमची बरदारोंको साथ ले जाते हैं।
ब दो चार आदमी इकट्ठे होते हैं तो कमची बरदार लोग बोलने
ालेके मुंह पर, सुननेवालेके कानों पर और देखनेवालोंकी आंखों
ार कमची जमा कर उनका ध्यान भङ्ग करा देते हैं तब वह लोग
आपसमें बातचीत करते हैं अन्यथा नहीं कर सकते। जब बाबू
साहब लोग रास्तेमें चलते हैं तब भी ध्यानमें नेत्र बन्द रहते हैं
अगर नेत्रों पर तड़ातड़ कमचियां पड़ती न चलें तो वह जरूर खम्भोंसे
टकरा जायंगे और गलियोंमें दूसरोंको धक्का देकर गिरा देंगे या
आपही धक्का खाकर नालियोंमें गिर पड़ेंगे।

जीनेकी राह लोग मुझे धुर ऊपर लेगये। वहां ... तरफ लेचले। मार्गमें वह लोग कई बार मुझे भूल गये— कामके लिये जातेहैं सो सब भूल गये थे। जब कमचियां ... होशमें आकर फिर आगे बढ़ते थे। बस इसीसे पाठक ... वह सब कैसे ध्यानी थे।

आखिर हम लोग राजमन्दिरमें पहुंचे। दरबार लगा था। महाराज सिंहासन पर विराजमान और अगल बगलमें तथा मन्त्रीगण डटे हुए थे। सामने बड़ीसी एक मेज थी भूगोलक (ग्लोब), चक्र (स्फीअर) तथा गणित सम्बन्धी सर्व यन्त्र रक्खे थे। हम लोगोंका पहुंचना महाराजको कुछ भी नहीं हुआ क्योंकि वह उस समय एक कठिन प्रश्न हल कर... एक घण्टेमें उनका ध्यान टूटा। हम लोग अब तक चुपचाप थे। महाराजके दोनों ओर दो छोकरे कमचियां लिये खड़े महाराज प्रश्न हल कर चुके तब एकने मुंह पर और दूसरेने कानपर धीरेसे कमचियां जमाई। जैसे कोई नींदसे अचानक है वैसेही आप चौंक उठे। मुझे तथा और सब लोगोंको ... उन्हें स्मरण हुआ क्योंकि मेरे आनेकी सूचना पहलेही देदी... महाराज कुछ बोले इतनेमें एक छोकरेने आकर मेरे दाहिने पर कमची फटकारी। मैंने इशारेसे कह दिया कि मेरे लिये कुछ आवश्यकता नहीं है। बस महाराज तथा दरबारियोंकी... में उसी घड़ीसे मैं बहुत हलका होगया। महाराजने बहुतसे... किये। मैंने भी जितनी भाषाएं जानता था सबमें जवाब दि... जब कोई किसीकी बात न समझ सका तो महाराजकी आज्ञासे एक कमरेमें भेजा गया जहां दो नौकर पहलेहीसे सेवा टहलके लिये हाजिर थे। महाराजका अतिथि अभ्यागतका आदर सत्कार ... में अपने पुरुषोंसे अधिक नाम है। भोजनकी सब चीजें लाई ... उन चार मन्त्रियोंने जिन्हें महाराजके बहुत निकट खड़े देखा ... मेरे साथ भोजन करके मेरा सम्मान किया। सामग्रियां दो ...

थीं। हर एकमें तीन तीन रकाबियां थीं। एकमें तो चौपायां तीन थे जो रेखागणितके चित्रोंकेसे बने थे और दूसरेमें पक्षियां जो बाजोंके आकारके थे। खानसामा लोग जो रोटियां काट कर देते थे सो भी गणित सम्बन्धी चित्रोंके रूपमें थीं। भोजनके समय मैंने बहुतसे कई चीजोंके नाम पूछे। उन्होंने अपनी भाषामें सबके नाम बताये। मैंने झट सबको याद लिया। फिर रोटी वगैरह जो दरकार होती सो मांग लेना पर एक बात यहां यह भी समझ लेना चाहिये कि भोजन नेके समय भी उन्हें कमचियां खानी पड़ी थीं।

खाने पीनेके बाद सब अपने अपने ठिकाने चले गये। महा-के आज्ञानुसार एक मनुष्य कामचो बरदार समेत आया। वह ने सङ्ग कलम दावात, कागज और दो चार किताबें भी लाया। इशारेसे उसने जो कुछ समझाया उससे यही प्रगट हुआ कि मुझे यहांकी भाषा सिखानेके लिये आया है। चार घंटे तक उसके साथ बैठा—इसी बीचमें मैंने बहुतसे शब्द और उनके अर्थ रोंमें लिख लिये थे। छोटे छोटे कई वाक्य भी फुर्तीसे याद लिये थे। शिक्षक महाशय नौकरसे कभी कुछ लानेके लिये, बैठने, कभी सलाम करने कभी घूमने और कभी खड़े होनेके थे कहते थे और वह वही करता जाता था। उन सब वाक्योंको समेत मैं कागज पर लिखता जाता था। शिक्षकने एक पोथी चन्द्र, सूर्य, ग्रह, नक्षत्र, राशिचक्र, कटिबन्ध, चक्रमण्डल इति अनेक पदार्थकी तसवीरें दिखाई थीं। बाजोंके नाम र विवरण तथा उनके बजानेके ढङ्ग भी उसने बताये थे। उसके ने जाने पर मैंने सब शब्द और उनके अर्थोंको अक्षरानुक्रमसे ख डाला। बस इस तरह बहुत थोड़े दिनोंमें अपनी तीव्र स्मरण क्तिके प्रतापसे यहांकी भाषा कुछ कुछ सीख गया।

मेरे कपड़े सब फट कर खराब होगये थे। इसलिये दरजी लाया गया। इसकी काट छांट और नाप बिलकुल अनूठी थी।

एक यन्त्रसे पहले उसने मेरी उंचाई नापी फिर कागज
मेरे शरीरका नक्शा बनाया। छटे दिन कपड़े तय्यार कर
जो हिसाबमें भूल होजानेके कारण निपट कुढङ्ग, और
ऐसी गलतियां दर्जियोंसे बहुधा हुआ करती थीं और व
(कपड़े सिलानेवाले) भी इन भूलोंको उतनी परवाह नहीं
बस इसीसे मुझे भी कुछ अफसोस नहीं हुआ।

कपड़े फटे थे और तबीयत भी कुछ खराब होगई थी
मैं कई दिन तक घरसे बाहर नहीं निकला। इन
शब्दकोषको बहुत बड़ा कर लिया था। इसी हेतु फिर
बारमें गया तो महाराजकी बहुतसी बातोंको मैंने समझा
टुटरूं टूं कुछ जवाब भी दिया था। महाराजने आज्ञा दी
यह द्वीप इशानकोनसे होता हुआ शहर "लगाडो" के ठीक
पहुंचे। महाराजके पृथ्वीस्थित राज्यकी राजधानीका नाम
है। वह यहांसे २७० मील दूर था। वहां तक पहुंचनेमें
चार दिन लगे। आकाशमें इसका चलना कुछ भी मालूम
होता था। लगाडो पहुँचनेके दूसरे दिन सवेरे ग्यारह बजे
महाराज और उनके परिजन, राजसभासद, राजकर्मचारी
सब साज बाज मिला कर लगे गाने और बजाने। तीन घंटे
लगातार सबने खूब गाया बजाया। उन लोगोंने क्या
बजाया सो मेरी समझमें कुछ न आया। लेकिन कान
बहरे होगये थे। शिक्षक महाशयसे पूछा तो उन्होंने सब
समझा दीं।

रास्तेमें कई शहर और गावोंके ऊपर प्रजाकी दरखास्त
वास्ते यह द्वीप खड़ा हुआ। रस्सियां नीचे लटका दी जाती
उन्हींमें प्रजागण अपनी अपनी दरखास्तें बांध देते थे और वह
खेंचली जाती थीं। कभी कभी खाने पीनेकी चीजें भी
द्वारा ऊपर खेंचली जाती थीं।

वहांकी भाषाको गणित और सङ्गीत शास्त्रोंसे बहुत कुछ

ाल्कि यों काहना चाहिये कि यह भाषही भाषाके माण है।
ात तो मैं जानताही था और सङ्गीतसे भी अनभिज्ञ न था बल
अनायासही वहांकी भाषा मैं सीख गया था।
वहांके मकान बड़े कुढङ्गे होते हैं। न दीवारें समान होतीं
र न कोठियां दुरुस्त होती हैं। इसका कारण यह है कि यह
ग कार्य्यकर ज्यामितिको घृणाकी दृष्टिसे देखते हैं और उसे
ग्रन्त तुच्छ समझते हैं। गणित और सङ्गीतमें यह लोग बड़े
और कामोंमें निरे अनाड़ी, और बेसहूर होते हैं। बक-
री अव्वल दरजेके हैं हार कभी मानतेही नहीं। कल्पना विवे-
ा और आविष्क्रिया तो जानतेही नहीं अथवा यों कहिये
यह सब शब्द इनकी भाषाहीमें नहीं हैं। बस जो कुछ पण्डि-
ई है सो गाने बजाने और हिसाब बनानेमें। ज्योतिष पर बहुतों
विश्वास है पर सबके सामने उसे स्वीकार नहीं करते हैं।
यह-वक्रग्रीव सदैव चिन्तामें मग्न रहते हैं। एक छिनका भी
राम इनके चित्तको नहीं होता। कुछ न कुछ यह लोग सदा
चाराही करते हैं। पर इनके इस विचारसे शेष जीवोंका कुछ
नता बिगड़ता नहीं। आकाशस्थ यह नक्षत्रोंका परिवर्त्तन होना
ी इनकी चिन्ताका मूल है। इसी परिवर्त्तनसे यह भयकी आशङ्का
रते हैं। इनका कथन है कि सूर्य्य प्रतिदिन पृथ्वीकी ओर बढ़ा
ाता है सो एक न एक दिन यह पृथ्वी सूर्य्यमें लीन होजायगी।
छ दिनोंमें सूर्य्य भी आपही आप धुन्धला होकर जगत्‌को प्रका
ात न कर सकेगा। गत धूमकेतुकी चपेटमें यह पृथ्वी आगई थी
ारा बच गई नहीं तो यहीं भस्म होजाती। अब १३० वर्षके
ाद फिर एक पुच्छलतारा उदय होगा। सम्भवतः वह पृथ्वी
ा नाश अवश्य करेगा। क्योंकि यह धूमकेतु अपनी कक्षामें घूमता
ूर्य्यके कुछ सन्निकट आजायगा तो उसमें जलते हुए लोहेसे भी
स हजार गुनी अधिक गर्म्मी होजायगी। उसकी गलती हुई पूंछ
ख लाख चौदह मील लम्बी होगी। अगर कहीं उस धूमकेतुसे

एक लाख मील दूरीके अन्दर भी पृथ्वी आगई तो इसके
खाक होजानेमें कुछ भी देर नहीं लगेगी। सूर्यदेव भी रोज
किरणें खर्च किये जातेहैं बढ़ानेकी कुछ चेष्टा करते नहीं। अ
गर किरणें खर्च हो जायंगी तो विचारे तेजहीन हो जायंगे
किसी कामके न रहेंगे। फिर पृथ्वी प्रभृति जितने ग्रह नक्षत्र
उनकी कृपासे देदीप्यमान होते हैं वह सभी नष्ट भ्रष्ट होजावेंगे।

इन सब विपदोंको विचार कर वह सब ऐसे व्याकुल र
हैं कि रातको अच्छी तरह सोते भी नहीं और न गृहस्थीका
सुखही अनुभव कर सकते हैं। चिन्ताहीमें सारा समय
होता है। प्रातःकाल जब किसी मित्रसे भेंट होती है तो वह
आपसमें भास्कर भगवानहीकी राजी खुशी पूछते हैं। उगने
के समय उनकी कैसी दशा थी। इस आनेवाली विपद अर्थात्
केतुकी टक्करसे बचनेकी कुछ आशा है या नहीं! अगर है तो
उपायसे इत्यादि बातेंही परस्पर होती हैं। हमारे यहां
रातको जिस प्रकार चावसे मगर डरते हुए भूत प्रेत आ
कहानियां सुन कर प्रसन्न होते हैं पर डरके मारे सोनेके लिये
जाते हैं सूर्य्यादिकी बातें सुन कर वहांवालोंकी भी ठीक वही
होजाती है।

इस द्वीपकी स्त्रियां बड़ीही चञ्चल होती हैं। पतिसे तो
पर विदेशी जारोंसे प्रेम अत्यन्त प्रसन्नतासे करती हैं। बल्कि वि
नीचे पृथ्वीसे सरकारी कामसे अथवा अपने कामसे आया करते
इन्हींको स्त्रियां जार बनाती हैं। क्या नीच क्या ऊंच सबकी
यही दशा है। पतिरास सदा विचारमें मग्न रहते हैं और
सब सखीमें नाक उड़ाती हैं। अगर कहीं बगलमें कमचियां न
और हाथमें कागज पेनसिल मिल गई तो फिर क्या है? [illegible]
जारके साथ अटखेलियां करतीं हाथसे हाथ मिलाये सा
निकल जावें तो भी इनकी कुछ खबर नहीं। इसीसे दा
बहुत निर्भय और स्वच्छन्द होकर व्यभिचार करती हैं।

यद्यपि यह द्वीप मैं समझता हूँ संसार भरके सब स्थानोंसे मनो-
और रम्य है—घर द्वार भी सुन्दर और बढ़िया हैं स्त्रियां मन
ढङ्गसे यहां आनन्द पूर्वक रह सकती हैं—इनको बड़ी स्वाधी-
रहती है जो चाहें सो करें तथापि इनका मन यहां नहीं
ा है। दुनियाकी सैर करने तथा राजधानीकी बहार देखने
ासे तरसा करती हैं। इसका एक कारण है। वह सब यहां
र कैद करदी जाती हैं। फिर महाराजकी विशेष आज्ञाके
ा नीचे नहीं जासकतीं और यह आज्ञा भी बड़ी बड़ी कठिनाइयों
ाप्त होती है क्योंकि प्रायः देखा गया है कि जब कभी किसी
घरकी स्त्रियां नीचे भूमि पर जाती हैं तो फिर लौटनेका नाम
लेतीं। समझाने बुझानेसे भी कुछ फल नहीं निकलता है।
वाले कहते थे कि बड़े घरकी एक स्त्रीरी जिसके बाई लड़के भी
प्रधान मन्त्रीका ब्याह हुआ। वह बीमारीके मिससे एक बार
े उतर गई। प्रधान मन्त्री बहुत सुन्दर और शौकीन थे। उस
बहुत लाड़ प्यार करते थे। उनका घर भी बहुत बढ़िया था।
में राजसी ठाठसे वह रहती थे। इतना होने पर भी उनकी
नीचे जाकर फिर नहीं लौटी। कई महीने तक गुम रही।
खिर महाराजने ढुंढ़वाया तो पता लगा कि वह एक मड़ैयामें
ी फटी साड़ी पहने एक कुरूप ग्वालेके साथ रहती है जो
निय पीटता है। उसके लानेके लिये लोग गये पर वह आने
सहमत नहीं होती थी। खैर, वह लाई गई। मन्त्री साहब
भी बिना कुछ कहे सुने उसे ग्रहण किया पर वह निगोड़ी क्यों
ने लगी थी? जो कुछ घरमें, गहने जेवर थे लेकर फिर उसी
लेके पास जापहुंची। तबसे फिर उसका कुछ हाल नहीं मिला।

पाठकोंको यह घटना विचित्र होनेके बदले साधारण मालूम
ती होगी क्योंकि युरोप या विलायतमें ऐसी घटना प्रायः हुआ
ा करती है। पर उन्हें यह जानना चाहिये कि स्त्रियोंका थोड़ा
भाव सर्वत्र एक होता है। इनका स्वभावही चपल है।

लगभग एक महीनेमें उनकी भाषा मैं अच्छी तरह सीख
अब जब कभी दरबार जाता तो उसी भाषामें बोलता और
राज जो कुछ कहते सो समझता भी था। जिन सब देशों
घाया उन सबकी राजनीति, इतिहास, धर्म या आचार
के बारेमें महाराजने कभी कुछ नहीं पूछा और जो कुछ
सो केवल गणितके विषयमें। मैंने इस विषयमें जो कुछ कहा
आपने कमचियां खा खा कर सुना था।

तृतीय परिच्छेद।

महाराजकी आज्ञा ले मैंने द्वीपकी खूब सैर की।
शिक्षक महाशय भी थे। असलमें मैं यही जानना चाहता था
इस द्वीपकी बहुरङ्गी गति किस प्रकारसे होती है सो मैंने
लिया अब पाठकोंको इसका भेद बताता हूं।

इस उड्डीयमान द्वीपका आकार ठीक गोल है। व्यास
गज अर्थात् करीब साढ़े चार मील और क्षेत्रफल तीस
बीघे हैं। यह तीनसौ गज मोटा है। नीचेसे इसकी पेंदी चौरस
हीरे जैसे कठिन पत्थरकी बनी हुई मालूम होती है और
दोसौ गजके लगभग है। इसके ऊपर कई धातुओंके पत्तर
सिलेसे चढ़े हुए हैं। सबके ऊपर बढ़िया मट्टीका दस बारह
गहरा अस्तर है। परिधिसे केन्द्र पर्य्यन्त ऊपरका तल ढा
या इसीसे बरसातका सब पानी सिमट कर नालोंकी राहसे
आता है वहांसे चार बड़े बड़े हौजोंमें बंट जाता है जिनका
आधी आधी मील और जो केन्द्रसे दोसौ गजके फासले पर
हौजोंके पानीको दिनमें सूर्य्य सोख लेताहै इसीसे उनमें पानी
हीं पाता है। इसके सिवा महाराज अपने द्वीपको बादलों
पर लेजा सकते हैं। ऊपर लेजानेसे फिर पानी बुन्दोंका
र नहीं रहताहै। प्राकृततत्त्व वेत्तागण कहतेहैं कि बरसाती बा
मीलसे ऊपर नहीं जाता है भी वहां दो मीलसे ऊपर
[illegible] नहीं देखा गया है।

इस द्वीपके केन्द्रस्थलमें एक गुफा है जिसका व्यास कोई पचास गज है। इसी राहसे ज्योतिषीगण एक बड़े गुम्बजमें जाते हैं। अतएव इसका नाम ज्योतिषी कन्दरा पड़ा है। यह गुम्बज पत्थरवाले तलसे गज नीचे है। यहां बैठकर ज्योतिषी लोग ग्रहोंका विचार करते हैं। इसमें बीस लेम्प बराबर जला करते हैं जो हीरेके प्रतिबिम्ब पड़नेसे एक तरफ खूब तेज रोशनी डालते हैं। यहां दूरवीक्षण प्रभृति सब ज्योतिष सम्बन्धी यन्त्र रखे हुए हैं। सबसे अद्भुत वस्तु तो एक भारी चुम्बक पत्थर था जिसके जोरसे यह द्वीप चलता था। इस बनावट कपड़े बुननेके करगहको सी थी। यह लम्बा छः गज और मोटा कमसे कम तीन गज था। यह चुम्बक हीरेके एक धुरेके सहारे रहता था। इसके एक ओर खैंचनेकी और दूसरी ओर हटानेकी शक्ति थी। जब इस चुम्बकका वह सिरा जिसमें खैंचनेकी शक्ति थी नीचेकी तरफ कर दिया जाता तो द्वीप नीचे उतरता था और जब हटानेवाली शक्तिका सिरा नीचेकी ओर किया जाता तो वह ऊपर चढ़ता था। चार मीलसे अधिक ऊंचा वह नहीं चढ़ता था। उन्होंने निश्चय किया है कि चार मीलसे ऊपर चुम्बककी शक्तियां काम नहीं करती हैं। जब यह चुम्बक तिरछा किया जाता था तो इसकी गतिभी तिरछी होजाती थी। इसी तिरछी गतिके द्वारा यह एक जगहसे दूसरी जगह पहुंच जाता। जिस समय चुम्बक दायें बायें लम्बा पड़ा रहता उस समय द्वीपकी भी गति रुका करती थी। मतलब यह कि चुम्बकके सहारेही यह चढ़ उतर कर और एक ठौरसे दूसरी ठौर जा सकता था। भूमिस्थ राज्य बाहर यह द्वीप नहीं जा सकता था क्योंकि पृथ्वीके भीतर जो धातु चुम्बक पर असर डालते हैं सो इस राज्यको छोड़ और कहीं नहीं हैं। उन देशोंको जो चुम्बककी शक्तियोंके अन्तर्गत हैं महाराज सहजमें अधिकृत कर सकते हैं।

यह चुम्बक कई ज्योतिषियोंके अधिकारमें रहता है जो महाराजके आज्ञानुसार इसको इधर उधर घुमाया करते हैं। इन लोगों

के जीवनका अधिक भाग दूरबीनसे नक्षत्रोंके देखनेहीमें व्यतीत होता है। हम लोगोंकी दूरबीनसे इनकी दूरबीन कहीं बढ़के है। इनकी बड़ीसे बड़ी दूरबीन तीन फुटसे अधिक लम्बी होती लेकिन काममें सौ फुट लम्बीके कान काटती है। इसी यह युरोपीय ज्योतिषियोंकी अपेक्षा आविष्कार करनेमें बहुत बढ़े हैं। यह लोग दस हजार अचल ताराओंकी सूची बना हैं लेकिन हमारे यहां इसकी तिहाई संख्या भी नहीं है। दो उपग्रह और निकाले हैं जो मङ्गलके आस पास घूमते हैं।

इन लोगोंने तिरानवे पुच्छल तारे और निकाले हैं और चालें भी शोध कर बहुत ठीक करदी हैं। अगर यह बात जैसा कि वह लोग कहते हैं तो सर्वसाधारणमें इसका प्रचार जाना चाहिये। धूमकेतुका पूर्ण ज्ञान किसीके है भी नहीं। प्रचार होजानेसे ज्योतिषका यह अङ्ग भी पूरा होजायगा।

महाराज यदि अपनी मन्त्रिसभासे मिलकर नीतिसे राज्य करते तो जगतमें सबसे बढ़ कर राजा होजाते पर इसमें अड़चलें आपड़ी हैं। एक तो महाराज रहते आकाशमें और भूमि पर। दूसरे मन्त्रियोंका पद अनिश्चित है इसीलिये देशको बारना कोई नहीं चाहता है।

अगर किसी शहरमें अराजकता वा विरोध फैले अथवा मामूली कर देना बन्द करदें तो महाराज दो प्रकारसे अपने अधीन करलेते हैं। पहला और सहज उपाय तो यह है जो शहर विद्रोही होता चट द्वीप उस पर मंडलाने सूर्यके प्रकाशको रोक देता है। फिर क्या है दुर्भिक्ष रोगादि उस शहर पर चढ़ दौड़ते हैं। और यदि कहीं अपराध हुआ तो ऊपरसे पत्थरोंकी वृष्टि होती है। लोग

गेर बार गावोंको नष्ट भ्रष्ट कर देता है। परन्तु यह दण्ड कम काममें लाया जाता है क्योंकि इससे राज्यका बहुत ान होता है।

ात्यन्त आवश्यकता हुए बिना यह दण्ड काममें नहीं लाया है। मन्त्रीगण भी जल्दी इस दण्डकी व्यवस्था नहीं करते क इन सबकी सब भूमि सम्पत्तियां नीचेही रहती हैं। सो ाण्डसे इनकी भी बहुत हानि होती है। इसके अतिरिक्त नीचे पर बड़े बड़े पत्थर हैं। उनमें ठोकर लगनेसे द्वीपकी पेंदीके ो और उसमें आग लगनेकी पूरी सम्भावना है। लोहे और के संघर्षणसे अग्नि उत्पन्न होती है। यह सब कोई जानता इसीलिये महाराज भी जल्दी यह दण्ड किसीको नहीं देते। देते भी हैं तो बहुत चौकसीके साथ धीरे धीरे द्वीप नीच ाया जाता है।

इस राज्यके नियमके अनुसार राजा तथा बड़े और मंझले राज-ार द्वीपके बाहर नहीं जाने पाते हैं और महारानी भी बालिग विना नहीं जा सकती है।

चतुर्थ परिच्छेद।

यद्यपि मैं यह नहीं कह सकता कि मेरा वहां अनादर हुआ तथापि इतना अवश्य कहूंगा कि वहांवाले मेरी कुछ इतना ाह नहीं करते तथा मुझे घृणाकी दृष्टिसे देखते थे। उन लोगों गणित और सङ्गीतके सिवा दूसरी विद्या जाननेका कुछ भी चाव था। और इन दोनोंमें उनकी अपेक्षा मेरे थोड़ी योग्यता थी। ोसे उनकी दृष्टिमें मैं अति तुच्छ था।

जो कुछ देखनेके योग्य वहां था मैंने सब देख लिया। पीछे उदास हुआ। मन लगानेसे भी नहीं लगता था। यही सोचे ाता कि कब यहांसे निकल भागूं। यह सब सदा विचारहीमें रहते थे। फिर तबीयत लगे कैसे? येही बड़े इज्जत मुझे

उस देशका नाम जो उड्डीयमान द्वीपके नरेशके आधीन है— बलनीबरबी" है और राजधानीका लगाडो है सो मैं लिखही चुका। जब मैं पुन: पृथ्वी पर पहुँचा तो जीमें जी आया। मैं ये पर- के साथ राजधानीकी ओर चल पड़ा। मेरी पोशाक उसी की सी थी और बोली भी यहांकी सीखही गया था अतएव र होकर जाने लगा। जिस भलेमानसके नामकी चिट्ठी थी के मकानका पता बहुत जल्द लग गया। उसको चिट्ठी दी। ो पढ़ कर उसने मेरा आगत स्वागत किया। उसका नाम ोडी था मेरे रहनेके लिये उसने एक कमरा अलग खाली कर ा और मेरी बड़ी खातिरदारी की।

दूसरे दिन सवेरे सुनोडी रथ पर विठा कर शहरकी सैर कराने लेचला। यह शहर लण्डनका आधा था। मकान सब विचित्र र बेमरम्मत थे। तमाम उदासी छाई थी। सड़कों पर आदमी तेज़ीसे चलते थे जो देखनेमें अहशी मालूम पड़ते थे। नेत्र र थे, मुख विवर्ण थे। और कपड़े फटे चिटे थे। हम लोग रका फाटक पार करके गांवमें घुसे। लग भग तीन मीलके गये। वहां देखा कि बहुतसे मजदूर रङ्ग विरङ्ग हथियार लिये ेन पर कुछ कार रहे हैं पर क्या कर रहे हैं सो समझमें न ा। खेतोंमें नाज या घासके चिन्ह भी दिखाई न पड़े लेकिन ी बहुत बढ़िया नजर आई। नगर और गांव दोनों जगहों इस अनोखी अवस्थाको देख मुझसे न रहा गया। मैं सुनोडी पूछही बैठा "महाशय। कृपा कर बताइये यह लोग क्या कर हैं? गलियोंमें खेतोंमें तमाम यह लोग जीजानसे काम कर हैं पर नतीजा कुछ दिखाई नहीं पड़ता है। ऐसी बुरी तरह जुती हुई जमीन, ऐसे उजाड़ और कुढ़ङ्गे मकान और ऐसे मनुष्य मके चेहरेहीसे दीनता और दरिद्रता टपकती है मैंने कहीं हीं देखे।"

यह भाई सुनोडी उच्च श्रेणीका मनुष्य था। कुछ दिन पहले

यह नगाड़ोंका गवर्नर था। लेकिन मन्त्रियोंके षड़यन्त्रसे समझा जाकर यह पदच्युत हुआ। जो हो महाराज अब भी मुझ पर कृपा रखते हैं और इसे अपना शुभचिन्तक अवश्य ही समझते हैं।

लार्ड मुनोडीने मेरे प्रश्नोंका कुछ उत्तर न देकर केवल कहा "अभी तो आपको आये थोड़ेही दिन हुए हैं कुछ दिन रहिये तब सब आपही मालूम होजायगा। यह आप जान लें कि जाति जातिकी जुदी जुदी चालहै।" मैं भी सुन कर चुप रहा। जब डेरे पर लौट कर आए तो उसने पूछा—"कहिये यहां के मकान सब कैसे हैं? इनमें क्या बेहूदापन है? मेरे आदमियोंकी पोशाकें या सूरत शकलें कैसी हैं?" मैंने जवाब दिया कि मूर्खता और मूर्खताके कारण यहांवालोंमें जो दोष हैं उनसे आप अपनी दूरदर्शिता, गुणशीलता तथा लक्ष्मीके प्रभावसे बचे हैं। इसके मकान वगैरः सभी चीजें सुन्दर, ठीक और सुढङ्ग थीं। पर वह बोला—"यहांसे बीस मील दूर मेरी जमीदारी है। आप वहां चलें तो इस विषयकी बातें अच्छी तरह हो सकती हैं।" मैंने वहां जाना मञ्जूर किया। बस दूसरेही दिन हम लोग वहां को रवाने हुए।

किसान सब अपनी अपनी भूमिको किस प्रकार जोतते हैं सो सब रास्ते भर वह दिखलाता जाता था पर दो एक जगह छोड़ कहीं भी नाजकी बालें या घासकी पत्तियां नजर नहीं आतीं। तीन घण्टे चलनेके बाद बिलकुल परदाही बदल गया। हम लोग एक परमसुहावने रमणीय स्थानमें जा पहुंचे। पास पास किसानोंके सुन्दर सुन्दर घर बने हुए थे। कहीं अंगूरकी, कहीं नाजकी क्यारियां और कहीं पशुओंके चरनेकी हरे भरे घासकी अनोखी छटा दृष्टिगोचर होती थी। इससे बढ़ कर मैंने कभी देखा होगा सो स्मरण नहीं। मुनोडीने कहा—"बस यहींसे मेरा इलाका शुरू है और बराबर मेरे महल तक चला गया है।

इस प्रबन्धको देख यहांवाले हंसते और ठट्ठा मारते हैं और मिहायत दुर्ब्बल चित्त तथा विलासी समझते हैं।"

आखिर हम लोग मुनोडीके महलमें पहुंचे। सचमुच यह महल अत्यन्त सुन्दर और प्राचीन कालकी शिल्पविद्याके अनुसार बना हुआ था। फौआरे, बगीचे, सड़कें, रविशें और कुञ्जें आदि सब सुन्दर बनी हुई थीं। मैं यह सब देख कर अत्यन्त प्रसन्न हुआ। व्यालूके बाद जब हम दोनोंके सिवा और कोई न रहा तब मुनोडी बोला—"अफसोस है! अब यह सब मकान तोड़ कर मुझे नये ढङ्गसे बनाना पड़ेगा। बाग बगीचोंको फिरसे लगाना पड़ेगा। अपनी प्रजाओंको भी यही आज्ञा देनी पड़ेगी क्योंकि मेरे लड़की, अनोखेपनको, मूर्खताको और ओछेपनको तमाम हो रहा है। और इसके अलावे महाराज भी कुछ असन्तुष्ट हैं। अगर सबको फिरसे न बनाऊंगा तो महाराज मुझसे अधिक रुष्ट हो जायेंगे।"

मुनोडीने और भी बहुतसी बातें कही थीं जिनका सारांश यह है। आगे जिस उड़नेवाले टापूका जिकर आचुका है उसका नाम लपूटा है। लग भग चालीस साल हुए होंगे कि कुछ लोग काम से या योंही सैरके लिये ऊपर लपूटा गये थे। पांच महीनेके बाद जब वह हवाई मुल्कसे वापिस आये तो उनके रङ्ग ढङ्ग बिलकुल बदले हुए थे। गणितशास्त्रका ज्ञान तो कुछ ऐसाही वैसा था परन्तु चित्तमें चञ्चलता बहुत आगई थी। यह लोग नीचे आकर यहांकी हर बातको बुरी और घृणित समझने लगे। शिल्प, ज्ञान, भाषा और कल कांटोंको नये सांचेमें ढालनेके लिये भी जोरसे लग पड़े। फिर लगाडोमें सुधारकोंकी पाठशाला स्थापित करनेके वास्ते महाराजने परवाना भी देदिये। इसकी चर्चा फिर ऐसी बढ़ी कि हर एक नगरमें पाठशाला खुल गई। अब छोटा छोटा शहर भी विद्यालयहीन नहीं। इन विद्यालयोंमें अध्यापकगण खेती तथा मकान बनानेके नये नये कायदे और तरीके

किसान सब अपनी अपनी भूमिको किस प्रकार जोतते
सो सब रास्ते भर वह दिखलाता जाता था पर दो एक
छोड़ कहीं भी नाजकी बालें या घासकी पत्तियां नजर नहीं
तीन घण्टे चलनेके बाद बिलकुल परदाही बदल गया।
लोग एक परमसुहावने रमणीय स्थानमें जा पहुँचे। पासही
किसानोंके सुन्दर सुन्दर घर बने हुए थे। कहीं अंगूरकी
कहीं नाजकी क्यारियां और कहीं पशुओंके चरनेके हरे भरे
की अनोखी छटा दृष्टिगोचर होती थी। इससे बढ़ कर
कभी देखा होगा सो स्मरण नहीं। मुनोडीने कहा—"बस
मेरा इलाका शुरू है और बराबर मेरे महल तक चला

इन प्रबन्धको देख यहांवाले हंसते और ठट्ठा मारते हैं और
नितान्त दुर्व्वल चित्त तथा विक्षिप्त समझते हैं।"
आखिर हम लोग मुनोडीके महलमें पहुंचे। सचमुच यह
ल अत्यन्त सुन्दर और प्राचीन कालकी शिल्पविद्याके अनुसार
हुआ था। फौआरे, बगीचे, सड़कें, रविशें और कुञ्जें आदि
त सुन्दर बनी हुई थीं। मैं यह सब देख कर अत्यन्त प्रसन्न
। व्यालूके बाद जब हम दोनोंके सिवा और कोई न रहा तब
ोडी बोला—"अफसोस है! अब यह सब मकान तोड़ कर मुझे
ढङ्गसे बनाना पड़ेगा। बाग बगीचोंको फिरसे लगाना पड़ेगा।
र अपनी प्रजाओंको भी यही आज्ञा देनी पड़ेगी क्योंकि मेरे
रणडको, अनोखेपनको, मूर्खताको और ओछेपनकी तमाम
न्दा है। और इसके अलावे महाराज भी कुछ असन्तुष्ट हैं।
र सबको फिरसे न बनाऊंगा तो महाराज मुझसे अधिक रुष्ट
जायेंगे।"
मुनोडीने और भी बहुतसी बातें कही थीं जिनका सारांश
ह है। आगे जिस उड़नेवाले टापूका जिकर आचुका है उसका
ाम लपूटा है। लग भग चालीस साल हुए होंगे कि कुछ लोग
ामसे या योंही सैरके लिये ऊपर लपूटा गये थे। पांच महीनेके
ाद जब वह हवाई मुल्कसे वापिस आये तो उनके रङ्ग ढङ्ग बिल-
ुल बदले हुए थे। गणितशास्त्रका ज्ञान तो कुछ ऐसाही वैसा
ाया परन्तु चित्तमें चञ्चलता बहुत आगई थी। यह लोग नीचे
ाकर यहांकी हर बातको बुरी और घृणित समझने लगे। शिल्प
विज्ञान, भाषा और कल कांटोंको नये सांचेमें ढालनेके लिये जी
ानसे लग पड़े। फिर लगाडोमें सुधारकोंकी पाठशाला स्थापित
करनेके वास्ते महाराजसे परवाना भी लेआये। इसकी चर्चा ऐसी
इतनी बढ़ी कि हर एक नगरमें पाठशाला खुल गई। अब छोटे
से छोटा शहर भी विद्यालयहीन नहीं। इन विद्यालयोंमें अध्या-
पकगण खेती तथा मकान बनानेके नये नये कायदे

निकालनेकी चेष्टा करते हैं, सौदागरोंके लिये नये नये औजार बनाते हैं जिनसे दस मनुष्यका काम एकही करले और बड़ीसे बड़ी इमारत भी एकही हफ्तेमें तय्यार होजाय और बिना मरम्मत किये सदा बनी रहे। हर मौसममें फल फला करें तथा उनकी गिनती भी सौगुनी बढ़ जाय इत्यादि इत्यादि। पर कोई भी बात आज तक पूरी नहीं हुई। नतीजा यह निकला कि खेत उजाड़ होगया, मकान खण्डहर होगये, और मनुष्य सब अन्न वस्त्रहीन होगये! इतने पर भी सुधारकगण निराश नहीं हैं। और भी पचास गुने साहस और उत्साहसे अपने उद्देश्य साधनमें लगे हैं। लेकिन मुनोडीको यह सब पसन्द नहीं है। वही अपनी पुरानी चाल पसन्द करता है। जिस घरमें उसके पुरखे लोग रहते आये हैं उसीमें वह अपना दिन काटता है। और दो चार बड़े आदमी इसके मतके हैं। यह सभी देश शत्रु और मूर्ख समझे जाते हैं। यह लोग अपनी अपनी भलाई और आराम देखते हैं देशकी उन्नति नहीं चाहते हैं यही इन पर दोष लगाया जाता है।

शेषमें लार्ड मुनोडी फिर यों कहने लगा—यहांसे तीन मील दूर एक पहाड़की बगलमें पनचक्कीका पुराना खण्डहर अब तक मौजूद है। यह नदीकी धारसे चलाई जाती थी। इससे मेरी और मेरी अनेक प्रजाका मजेमें गुजारा होता था। सात वर्ष की बात है कि इन सुधारकोंने इस पुरानी पनचक्कीको तोड़ कर एक नई बनवानेका तथा पानीके लिये एक नहर खुदवानेका प्रस्ताव किया। उस समय इन लोगोंने इस काममें मुझे बहुतसे लाभ दिखलाये। कहा नल और इञ्जिनके द्वारा नहरसे पानी ऊपर चढ़ाया जायगा। हवा ऊंची जगह पर जलको कम्पायमान कर नीचेकी अपेक्षा उसमें अधिक शक्ति उत्पादन कर सकती है। उस समय दरबारसे मेरा कुछ ऐसा मेल मिलाप भी न था और मित्रोंने भी इधर बहुत कहा सुना लाचार मैंने सुधारकोंके प्रस्तावको अ

करलिया। पुरानी पनचक्की ढहवा दीगई और नईमें काम
ा गया। कोई सौ आदमी दो बरस तक काम करते रहे पर
वही ढाकके तीनों पात। सुधारकगण मेरेही माथे दोषका
ा फोड़ कर चम्पत हुए। तबसे वह लोग बात बातमें मुझ
कटाक्ष करते हैं। अब दूसरोंकी बातें बना कर फंसाते हैं
त कार्य्य अभी तक नहीं हुए हैं।"

कुछ दिनोंके बाद हम लोग शहर वापिस आये। सुधारकों
पाठशालाएं देखनेकी अभिलाषा हुई पर पाठशालावालोंसे
डोका मेल जोल नहीं था अतएव उन्होंने अपने एक मित्रको
साथ कर दिया। मैं सहर्ष विद्यालय अवलोकनको चला क्योंकि
ाईमें मैं भी एक तरहका सुधारक था।

पञ्चम परिच्छेद।
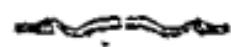
यह विद्यालय एक बड़ी भारी इमारत नहीं है। सड़कके दोनों
ओ जो घर पुराने पड़ते जाते हैं वही सब खरीद कर विद्यालय
मला लिये जाते हैं। इसीसे विद्यालयके घरोंका एक सिलसिला
ा गया है।

यहां पहुंचने पर विद्यालयके अधिकारीने मेरी बड़ी अभ्यर्थना
। एक दिनमें विद्यालयका अवलोकन समाप्त न होसका। कई
र तक लगातार मैं जाता रहा। हर एक कमरेमें एकसे अधिक
ारक थे। मैं समझता हूं पांचसौसे कम कमरोंमें मैं नहीं गया
ा।

पहले कमरेमें गया तो एक दुबले पतले मनुष्यको देखा जिसके
थ मुंह काले, सिर और दाढ़ीके बाल लम्बे, रूखे और उलझे थे।
से कपड़े वगैरह भी काले थे। वह खीरे और ककड़ियोंसे
ूर्य्यकी किरणें निकालनेके लिये आठ वर्षसे चेष्टा कर रहाथा।
रे और ककड़ियोंको रासायनिक प्रक्रियासे शीशियोंमें अच्छी
रह बन्द करना फिर सर्दीके दिनोंमें निकाल कर उनसे

हवा गर्म करनाही उसका उद्देश्य था। उसने मुझसे कहा- "आठ बरसके बाद मैं जरूर लाट साहबके बगीचेमें सूर्यके किरणें पहुँचानेके योग्य हो जाऊंगा लेकिन कसर यह है कि मेरे पास पूँजी नहीं है। आप जानते हैं कि रुपयेके बिना कोई काम नहीं होता। ककड़ीकी फसल भी अच्छी नहीं होती इससे दरभी बहुत चढ़ गई है सो आप कुछ मदद करें तो बहुत उपकार होगा।" मुनोडी पहलेहीसे जानता था कि विद्यालयवाले सबसे भीख मांगते हैं। इसी लिये उसने चलनेके समय कुछ रुपया मेरे हवाले कर दिया था। वही मैंने उसे दे दिया।

दूसरे कमरेमें घुसतेही ऐसी दुर्गन्धि आई कि मैं घबरा कर लौटने लगा। पर मेरे साथीने ऐसा करनेसे मना किया। आखिर बिना नाक मूंदेही भीतर घस पड़ा। यहांके सुधारकजी सबसे पुराने तथा बूढ़े थे। आपका मुंह तथा दाढ़ी पीली थी। हाथ और कपड़े गलीजसे भरे हुए थे। जब उनके निकट पहुंचा तो उन्होंने गले लगाया। अगर मैं जानता कि वह मुझे गले लगावेंगे तो कदापि वहां न जाता। ऐसे आदर सम्मानको दूरहीसे नमस्ते है! यह महात्मा मनुष्यकी विष्ठाका पुनः अन्न बनानेके लिये सिर मार रहे हैं। इन्हें सुधारक-समाजसे हफ्तेमें एक मटका गुह मिला करता है।

तीसरेको वर्फका बारूद बनानेमें व्यस्त देखा। अग्निको तरल बनानेके विषयमें एक पोथी भी उसने लिखी थी जिसे वह जल्द छपाना चाहता था। मैंने उस पोथीको देखा भी था।

चौथे कमरेमें एक असाधारण कारीगर था। उसने मकान बनानेकी नई प्रणाली निकाली थी कि पहले छत बना कर तब दीवार और नीव इत्यादि बनाना चाहिये। मकड़ों और मधु-मक्खियोंका उदाहरण बतला कर उसने कहा कि यह कुछ कठिन कार्य्य नहीं है।

पांचवें घरमें एक जन्मका अन्धा था। उसके कई चेले थे। यह सब भी जन्मान्ध थे। चित्रकारोंके लिये रङ्ग बनानाही

इनका काम था छूकर और सूँघ कर यह रङ्गोंको चुन लेते थे। भाग्यका दोष है कि चेलोंको तो क्या गुरु भी अपना करतब भली भांति मुझे न दिखला सके। चित्रकारोंने इन लोगोंका खूबही उत्साह बढ़ाया है।

छठे आविष्कर्त्तासे मैं बहुतही प्रसन्न हुआ। इसने हल, बैल तथा मजूरोंका खर्च बचानेके वास्ते सूअरोंसे जमीन जुतवानेका एक नया ढङ्ग निकाला है। वह यह है कि तीन बीघे जमीनमें छः छः इञ्च पर आठ इञ्च खोद कर बलूत, खिजूर, अखरोट तथा उन चीजोंको जिन्हें सूअर पसन्द करते हैं गाड़ देना फिर छः सौ या अधिक सूअर उस खेतमें छोड़ देना चाहिये। सूअर सब उन चीजों के लालचसे सारे खेतको थोड़ेही दिनोंमें खोद डालेंगे। सिर्फ यही नहीं अपने मैलेकी खाद भी उसमें डालते रहेंगे। फिर मजेमें खेती करो। यह बात सत्य है कि परीक्षा करने पर खर्च और मिहनत तो ज्यादे हुई परन्तु फसल कुछ नहीं। जो हो, इसकी उन्नति करनी चाहिये।

सातवें कमरेमें पहुँचा तो वहां कुछ औरही दृश्य नजर आया। तमाम छत और दीवारोंसे मकड़ोंके जाले लटक रहे थे कहीं तिल भर भी जगह खाली न थी। आने जानेके लिये केवल एक द्वारथा। मैं ज्योंही पहुँचा उस कमरेका अधिकारी चिल्ला उठा—"जाल मत बिगाड़ना! जाल मत बिगाड़ना।" मैं जहांका तहां खड़ा होगया तब वह बोला—"देखो! दुनिया कैसी अन्धी है कि इतने पालतू मकड़े होने पर भी लोग रेशमी कीड़ेके पीछे भाग रहे हैं। यह मकड़े बुनने और कातनेमें रेशमके कीड़ेसे कहीं घट बढ़के हैं। मकड़ोंको काममें लानेसे रेशमके रङ्गनेका खर्च एक दम बच सकता है। देखो! यह कैसी सुन्दर रङ्गीली मक्खिया हैं। यही मकड़ोंको खिलाई जाती हैं। इन मक्खियोंका रङ्ग जैसा होगा मकड़े जाल भी वैसाही बनावेंगे। मक्खियोंकी खूराक अभी ठीक नहीं हुई है अगर होगई तो मकड़ोंके सूत भी मजबूत और कामके

[illegible]मौहीमें है। इसी उन्होंने कई प्रकारसे सिद्ध भी किया पर मेरी समझमें कुछ न आया। दूसरा यह कि गोंद, धातु और जड़ी [illegible]ों मिला कर एक ऐसा मरहम बने जिसके लगानेसे मेमनोंकी [illegible]ह पर ऊन न निकले। वह कहता था कि थोड़ेही दिनोंमें राज्य [illegible]रमें ऊनहीन मेमने हो जायंगे।

अब हम लोग पाठशालाके उस भागमें आ पहुंचे जहां काल्पनिक विद्याके पढ़नेवाले रहते थे। जिस अध्यापकसे पहले भेंट हुई वह चालीस विद्यार्थियोंको लिये एक बड़ी कोठरीमें बैठा था। [illegible] प्रणामके बाद मेरी दृष्टि एक चौखट पर जापड़ी जो बड़ी लम्बी चौड़ी थी बल्कि यों कहना चाहिये कि जो कोठरीका ज्यादा हिस्सा घेरे हुए थी। मैं उसे गौरसे देखने लगा तो अध्यापकने कहा—"आपको आश्चर्य होता होगा कि काल्पनिक विद्याकी उन्नतिके लिये यन्त्रादिकी क्या दरकार है ? पर लोग बहुत [illegible] इसके लाभोंको जानेंगे। इससे सुन्दर और इससे ऊंचा विचार आज तक किसी मनुष्यके सिरमें नहीं आया था। यह सब कोई जानते हैं कि विज्ञान और शिल्प सीखनेके लिये कितना परिश्रम करना पड़ता है। लेकिन मेरे इस उपायसे बहुत थोड़े समय और थोड़े खर्चमें मूर्खसे मूर्ख भी बिना परिश्रम और बिना पढ़े दर्शन, काव्य, राजनीति, धर्मशास्त्र, गणित और वेदान्त विषयकी पोथियां लिख सकेगा।" इतना कह वह मुझे उस चौखटाकार यन्त्रके पास ले गया। उसके चारों ओर विद्यार्थीगण श्रेणीबद्ध खड़े थे। यह यन्त्र बीस फुट लम्बा और उतनाही चौड़ा था। कोठरीके मध्य भागमें यह रक्खा था। पतले तारके द्वारा लकड़ीके छोटे छोटे टुकड़े उसमें लगे थे। उन पर कागज चिपके हुए थे। उन कागजों पर उस देशकी भाषाके वाक्य सब लिखे हुए थे। चौखटेके चारों ओर किनारे किनारे चालीस कड़े जड़े थे। अध्यापककी आज्ञा पातेही सब लड़कोंने एक एक कड़ा थाम लिया। फिर एक झटका देते ही शब्दोंकी बनावट बिलकुल बदल गई। तब अध्यापकने छत्तीस

करते थे कि राजा महाराजगण पण्डित, योग्य और धार्म्मिक लोगों हीको अपना कृपापात्र बनाना पसन्द करें—मन्त्रीगण सबकी भलाईका विचार करें—योग्य, गुणी और उत्तम कार्य्य करने वालोंको पुरस्कार मिला करे—राजकुमारोंको ऐसी शिक्षादी जाय जिसमें वह अपने तथा प्रजाके स्वार्थको समझें—राज्यके लिये वही लोग चुने जायं जो इन रीतियोंको बरतें इत्यादि बहुतसी बातें थीं जो कभी किसीने सोची भी न होंगी। इन बातोंका पूरा होना मुझे असम्भवही दीखता है।

परन्तु जो हो इतना मैं अवश्य कहूँगा कि सब प्रस्तावही ऐसे न थे। एक बड़ा बुद्धिमान डाक्टरथा जो राजनीतिके तत्वको अच्छी तरह समझता था। उसने सब प्रकारके रोग और कलङ्कको अव्यर्थ महोषधि ढूँढ़नेमें जो राजाके दोष और कर्म्मचारियोंकी लम्पटता से प्रायः होते हैं, अच्छा परिश्रम किया था। यह कहा जाता है कि सभासमितिवाले बहुधा चित्तकी तीव्रता तथा उत्तेजनादिसे प्रायः दुःखित रहते हैं। उनके सिरकी विशेष वार हृदयकी बीमारियां होती हैं। तिल्ली, घुमटा मूर्च्छादि रोगोंसे वह पीड़ित होते हैं। मलगरुड तीच्ण तथा मन्दक्षुधा प्रभृति नाना प्रकारके रोग उन्हें घेरे रहते हैं जिनके नाम अनन्त हैं। इसलिये डाक्टर साहब की राय है कि अधिवेशनके पहले तीन दिन कुछ डाक्टर हाजिर रहा करें जो सभा भङ्ग होनेके समय प्रत्येक सभासदकी नाड़ी देखें। फिर चौथे दिन औषधिकी व्यवस्था करें।

भी लोकापवाद है कि राजाके प्रिय मन्त्रियोंके भूलनेकी .ारी होती है। डाक्टर साहबकी राय थी कि प्रधान मन्त्रीका चिकित्सक बहुत संक्षेप और स्पष्ट रूपसे कामकाजके विषयमें जो कहना हो सो उनसे कहे और चलनेके समय उनकी नाक . पेट पर एक घूसा जमावे या घट्टाको कुचलदे या दोनों को खेंचे या सूई चुभोदे या बांहमें जोरसे चुटकियां काटे

जोंमें है। इसे उन्होंने कई प्रकारसे सिद्ध भी किया पर मेरी समझमें कुछ न आया। दूसरा यह कि गोंद, धातु और जड़ी बूटी मिला कर एक ऐसा मरहम बने जिसके लगानेसे मेमनोंकी देह पर ऊन न निकले। वह कहता था कि थोड़े ही दिनोंमें राज्य भरमें ऊनहीन मेमने हो जायंगे।

अब हम लोग पाठशालाके उस भागमें आ पहुंचे जहां काल्पनिक विद्याके पढ़नेवाले रहते थे। जिस अध्यापकसे पहले भेंट हुई वह चालीस विद्यार्थियोंके लिये एक बड़ी कोठरीमें बैठा था। नमस्कारके बाद मेरी दृष्टि एक चौखट पर जापड़ी जो बड़ी लम्बी चौड़ी थी बल्कि यों कहना चाहिये कि जो कोठरीका अधिकांश हिस्सा घेरे हुए थी। मैं उसे गौरसे देखने लगा तो अध्यापकने कहा—"आपको आश्चर्य होता होगा कि काल्पनिक विद्याओंकी उन्नतिके लिये यन्त्रादिकोंकी क्या दरकार है? पर लोग बहुत जल्द इसके लाभोंको जानेंगे। इससे सुन्दर और ऊंचा विचार आज तक किसी मनुष्यके दिमागमें नहीं आया था। यह सब कोई जानते हैं कि विज्ञान और शिल्प सीखनेके लिये कितना परिश्रम करना पड़ता है। लेकिन मेरे इस उपायसे बहुत थोड़े खर्च और थोड़े खर्चेसे मूर्खसे मूर्ख बिना परिश्रम और बिना पढ़े दर्शन, काव्य,

बालकोंसे चौखट पर निकले हुए अक्षरोंको धीरे धीरे पढ़नेके लिये तथा जहां दो चार शब्द इकट्ठे मिले उन्हें लिखनेके लिये शेष चार विद्यार्थियोंसे कहा। दो चार बार इसी प्रकार कल घुमाई गई हर एक चक्करमें शब्दावलीका स्थान बदलता जाता था।

लड़के छः घण्टे रोज इस तरह परिश्रम करते थे। अध्यापकने कई बड़ी बड़ी पोथियां दिखलाईं जो भग्न वाक्योंका संग्रह थीं। उनको पूरा करके विज्ञान और शिल्पका एक पूरा भण्डार बनाने की उसकी इच्छा थी।अगर सब कोई चन्दा करके ऐसे ऐसे पांचसौ यन्त्र लगाडोमें स्थापित करदें तो बहुत कुछ उन्नति हो सकती है।

फिर मैं भाषा विद्यालयमें गया। वहां तीन जन बैठे स्वदेश भाषाको उन्नत करनेका परामर्श कर रहे थे। पहला प्रस्ताव यह था कि अनेकाक्षर शब्दके बदले एकाक्षर शब्दका प्रयोग तथा क्रिया को निकाल कर भाषाको संक्षेप करना। वस्तुतः संसारमें जो कुछ विचारा जा सकता है सो सब संज्ञाके सिवा और कुछ नहीं है।

दूसरा प्रस्ताव था शब्द मात्रको दूर करनेका। इससे स्वास्थ्य भी ठीक रहेगा और भाषा भी अत्यन्त संक्षेप हो जायगी। यह साफ प्रगट है कि जितने शब्द हम बोलते हैं उनसे हमारे फेफड़े को आघात पहुँचता है। बस इसीसे आयु भी क्षीण होती जातीहै। जब सब वस्तुओंकी संज्ञाही शब्द है तो सब कोई उन वस्तुओंही को अपने अपने साथ क्यों न लिये फिरें जिनके बारेमें बात चीत करना हो। अगर स्त्रियां गंवार और मूर्खोंके साथ मिल कर विद्रोह का भय न दिखातीं तो अब तक यह रीति चल गई होती और प्रजाको भी लाभ पहुँचता। जो हो, बहुतसे पण्डित और ज्ञानी इस नई रीतिसे चलते हैं अर्थात् बोलनेके बदले चीजोंहीसे काम निकालते हैं। लेकिन इसमें एक बड़ी भारी कठिनाई है। वह यह कि किसीको बहुत तरहकी बातें करनी हुई तो उसे अपनी पीठ पर सब चीजोंका गट्ठर लादना पड़ेगा या दो मजदूर करने पड़ेंगे। मैंने इनमेंसे दो अध्यापकोंको फेरीवालोंकी तरह बोझ

नदे हुए अकसर देखा था। अगर कहीं रास्तेमें दोनोंकी आपसमें भेंट होगई तो गठरिया खोल कर घण्टों बात चीत करते पर मुंह दोनोंहीके बन्द रहते थे। बातें पूरी होजाने पर अपने अपने सामनको बोरोंमें रख कर चलते बनते थे। दोनों दोनोंकी मदद गठरियां उठानेमें करते थे।

मामूली बातचीतके लिये हरएक आदमी जेबमें और बगलमें रोजें मजेमें लेजा सकता है। और घरमें तो कोई वस्तु कम होना ही न चाहिये। बैठकमें भी इस कृत्रिम सम्भाषणके निमित्त समस्त वस्तुएं प्रस्तुत रखना अवश्यक है।

इस तरहके सम्भाषणमें सबसे बड़ा लाभ तो यह होगा कि सब देशवाले जो एकही तरहकी वस्तु व्यवहार करते हैं इस भाषाको समझेंगे और फिर यह जगत्‌भाषा हो जायगी। बस राजदूतगण सहजमें विदेशी राजा या मन्त्रियोंकी बोलियां समझने लग जायेंगे।

गणित पढ़ानेकी परिपाटी ऐसी विलक्षण देखी कि युरोपवाले इसका अनुभव भी नहीं कर सकते हैं। गणित सम्बन्धी प्रतिज्ञा और प्रमाणादि पतली रोटी पर लिख कर बालकोंको भूखे पेटमें खिलाये जाते हैं और फिर तीन दिन तक रोटी और पानीके सिवा और कुछ खानेको नहीं दिया जाता है। रोटीके परिपाक होजाने पर उसका प्रभाव मस्तिष्क पर पहुंच जाता है। यही उन लोगोंकी धारणा है। परन्तु अभी तक यह अच्छे मौंडे नहीं उतरा है इसके भी कारण हैं। एक तो स्याही गड़बड़ बनती है दूसरे लड़के परहेजसे रहते नहीं।

षष्ठ परिच्छेद।

विद्यालयका राजनीति-विभाग देख कर मैं सन्तुष्ट नहीं हुआ। यहांके प्रस्तावित विषय प्रायः दुराशा सूचक तथा नितान्त असम्भव थे। मेरी समझमें यहांके पढ़ानेवाले बिलकुल पागल थे। यहांकी दशा याद कर अब भी अफसोस होताहै। यह अभागे यही प्रस्ताव

करते थे कि राजा महाराजगण पण्डित, योग्य और धार्म्मिक लोगों होको अपना कृपापात्र बनाना पसन्द करें—मन्त्रीगण सबकी भलाईका विचार करें—योग्य, गुणी और उत्तम कार्य्य करने वालोंको पुरस्कार मिला करे—राजकुमारोंको ऐसी शिक्षादी जाय जिसमें वह अपने तथा प्रजाके स्वार्थको समझें—राज्यके लिये वही लोग चुने जायं जो इन रीतियोंको वरतें इत्यादि बहुतसी बातें थीं जो कभी किसीने सोची भी न होंगी। इन बातोंका पूरा होना मुझे असम्भवही दीखता है।

परन्तु जो हो इतना मैं अवश्य कहूंगा कि सब प्रस्तावही ऐसे न थे। एक बड़ा बुद्धिमान डाक्टरथा जो राजनीतिके तत्वको अच्छी तरह समझता था। उसने सब प्रकारके रोग और कलङ्की अव्यर्थ महौषधि ढूंढ़नेमें जो राजाके दोष और कर्म्मचारियोंकी लम्पटता से प्राय: होते हैं, अच्छा परिश्रम किया था। यह कहा जाता है कि सभासमितिवाले बहुधा चित्तकी तीव्रता तथा उत्तेजनादिसे प्राय: दु:खित रहते हैं। उनके सिरकी विशेष कर हृदयकी बीमारियां होती हैं। तिल्ली, धुमटा मूर्च्छादि रोगोंसे वह पीड़ित होते हैं। गलगण्ड तीक्ष्ण तथा मन्दक्षुधा प्रभृति नाना प्रकारके रोग उन्हें घेरे रहते हैं जिनके नाम अनन्त हैं। इसलिये डाक्टर साहब की राय है कि अधिवेशनके पहले तीन दिन कुछ डाक्टर हाजिर रहा करें जो सभा भङ्ग होनेके समय प्रत्येक सभासदकी नाड़ी देखें। फिर चौथे दिन औषधिकी व्यवस्था करें।

यह भी लोकापवाद है कि राजाके प्रिय मन्त्रियोंके भूलनेकी बीमारी होती है। डाक्टर साहबकी राय थी कि प्रधान मन्त्रीका चिकित्सक बहुत संक्षेप और स्पष्ट रूपसे कामकाजके विषयमें जो कुछ कहना हो सो उनसे कहे और चलनेके समय उनकी नाक मलदे या पेट पर एक घूसा जमावे या घट्टाकी कुचलदे या दोनों कानोंको खेंचे या सूई चुभोदे या बांहमें जोरसे चुटकियां काटे

जिसमें फिर यह भूल न जायं। दरबारके दिनोंमें जब तक काम पूरा न होजाय रोज मन्त्रीको इसी तरह चिताना चाहिये।

अगर सभाईमें लोग लड़ पड़ें तो उनके मेल मिलाप करा-देने का बहुत अच्छा यत्न डाक्टर बतलाता था। वह कहता था कि दोनों दलोंमेंसे सौ सौ मुखियोंको चुन कर दो दोका ऐसा जोड़ा लगावे कि जिनके सिर आकारमें प्रायः समान हों। इन जोड़ोंको एक पांतमें बिठादे। दो अच्छे जर्राह ठीक एकही साथ एक जोड़े के सिरका पिछला हिस्सा ऐसे ढङ्गसे काटलें कि दोनोंके मस्तिष्क आधे आधे होजायं। फिर एकका मस्तिष्क दूसरेके सिरमें लगादें। बस आपसमें मेल हो जायगा। मगर यह काम जरा कठिन है। पर वह कहता था कि तनक होशियारी करनेहीसे रोगी चंगे हो जायंगे क्योंकि जब दो तरहके मस्तिष्क एकही माथेमें आजायंगे तो बहुत जल्दी विवाद मिट जायगा।

प्रजागणसे बिना कष्ट दिये रुपया पैसे वसूल करना चाहिये स विषय पर दो अध्यापकोंको परस्पर खूब विवाद करते मैंने सुना । पहला कहता था कि पापियोंको मूर्खोंसे करलेना उत्तम है। प और मूर्खताका अन्दाज उनके पड़ोसीके द्वारा मिला करेगा। सरा इसके उलटा कहता था। जो जिस गुण करके विख्यात हो सके उसी गुण पर टैक्स लगना चाहिये। गुणके अनुसारही टैक्स यूनाधिक होगा। किसको कितना टैक्स लगना चाहिये सो वह ोग आपही इसका निबटेरा करलेंगे। सबसे अधिक टैक्स तो न पर लगना चाहिये जिन पर स्त्रियोंकी विशेष कृपा रहती है र्थात् जो उनके प्रेमिक हैं। जिसका जैसा प्रेम होगा वह टैक्स ी वैसाही देगा। रसिकता, साहस और सभ्यता परभी इसी नियम े ऊंचा कर लगाना चाहिये। लेकिन आदर, मान, न्याय, विद्वता था बुद्धिमानी पर एक बारही कर न लगना चाहिये क्योंकि यह से गुण हैं जिनका अन्दाजा न पड़ोसी कर सकते हैं और न कोई आपही कर सकता है।

स्त्रियां सुन्दरता और रूपके पहननेकी सुघड़ाई पर टेक्स दें। पुरुषोंकी तरह यह सब भी अपने अपने सौन्दर्य और वेशविन्यास का विचार करेंगी। परन्तु दृढ़ता, सतीत्व, सुबोध और सुन्दर स्वभाव पर टेक्स नहीं लगना चाहिये क्योंकि इससे ज्यादे खर्चा बैठेगा।

और एक सज्जनने एक कागज दिखाया जिसमें राजा महाराज के विरुद्ध जो कुछ षड़यन्त्र या विद्रोह होते हों उनको प्रगट करने के उपदेश सब लिखे थे। वह कहता था कि जितने बड़े बड़े राज नीतिज्ञ लोग हैं वह जिन पर सन्देह हो उनको भोजनको, भोजनके समयको, किस करवट सोते हैं, किस हाथसे आबदस्त लेते हैं इत्यादि बातोंको परीक्षा किया करें। उनको विष्टाको भली भांति जांच करें तथा उसकी रङ्गत, गन्ध, स्वाद गाढ़ेपन आदिकी देख भाल रक्खें। तजरबेसे देखा गयाहै कि मनुष्य पखानेमें जैसा गम्भीर अभिनिविष्ट और तत्पर होता है वैसा और कभी नहीं होता। ऐसी अवस्थामें उसने स्वयं परीक्षा करके देखाया कि राजाको मार लेका विचार करनेसे विष्टाका रङ्ग हरा होजाता है। लेकिन जब विद्रोहको अथवा राजधानीको भसाकर देनेकी इच्छा मनमें होती है तो उसका कुछ औरही रङ्ग हो जाता है।

बिलकुल बातें विशदरूपसे लिखी हुई थीं। कई बातें राज नीतिज्ञोंके लिये अद्भुत तथा लाभकी भी थीं। लेकिन मेरी समझ से विषय अपूर्ण था। मैंने साहस करके कह दिया कि अगर आप चाहें तो मैं भी कुछ नये उपाय बता सकता हूं। उसने सादर मेरे प्रस्तावको स्वीकार किया और जो कुछ मैंने बताया सो ग्रहण किया। बहुत कम ग्रन्थकार दूसरेकी बताई बातें मानते हैं।

मैंने कहा—"त्रिबनियाके राज्यमें जिसे वहांवाले 'लगडन' कहते हैं मैं कुछ दिन रह आया हूं। वहांके अधिकांश निवासी षड्यन्त्रको प्रकाश करनेवाले, शपथ खानेवाले, अभियोग चलाने वाले, जासूसी करनेवाले तथा गवाही देनेवाले, इत्यादि हैं। यह लोग अपने साथ नाना प्रकारके यन्त्रादि रखते हैं और राज्यसे वेतन

ते हैं षड्यन्त्रादि सब उन्हींकी करतूत है जो अपने राजनीति नका डङ्का बजाया चाहते—दुर्बल राजप्रणालीको पुनः शक्ति न किया चाहते—साधारण असन्तोषको मेटना चाहते—इनाम मानते अपना खटुआ भरा चाहते और अपने स्वार्थके लिये सर्व-धारणके मतका खण्डन मण्डन करना चाहते हैं। जो लोग सुन हैं सो पहलेही निश्चय कर लेते हैं कि किन किन मनुष्योंको द्रोहादिको शङ्कामें पकड़ना चाहिये। जिन पर शङ्का होती है की चिट्ठी पत्रियां रोक कर वह सब कैद कर लिये जाते हैं। र वह चिट्ठी पत्रियां उन चित्रकारोंके पास जो गूढ़ार्थ वाक्य द और अक्षरोंके रहस्य भेदमें बड़े निपुण होते हैं भेज दी ती हैं। इनके वाक्य और अर्थ दोनोंही विचित्र होते हैं। नमूना है—एक झुण्ड राजहंसोंके माने है मन्त्री सभा। लङ्गड़ा कुत्ता = ाई करनेवाला। सैना = महामारी, बाज पक्षी = प्रधान मन्त्री। त व्याधि = प्रधान पुरोहित। दार (फांसीकी लकड़ी) = टेट टरी। झाड़ू = विप्लव। चलनी = बेगम। चूहा पकड़नेकी कल = करी। इगरा खड्डा = खजाना। नर्दमा = कचहरी। टोपी, सीग ल्टयां = राजाके सुंघनी। टूटा नल = अदालत। खाली पीपा = ापति। बहता घाव = शासन इत्यादि इत्यादि।" इस उपायमें र काम नहीं चलता तो वह और और दूसरे उपाय अवलम्बन रते थे जिनके लिखनेकी यहां कुछ आवश्यकता नहीं है।

आपने मेरी बातें सुन कर प्रसन्नता प्रगटकी और अपनी पोथीमें न्यवाद सहित मेरा नाम उल्लेख करनेका वचन दिया।

अब और कोई वस्तु यहां देखनेके वास्ते शेष न रही। इस ये मैं भी इङ्गलैण्ड लौटनेका बांधनू बांधने लगा।

सप्तम परिच्छेद।

यह महादेश जिसका यह राज्य एक भाग है मैं समझता हूं, मेरिकाके उस अप्रवोट प्रान्तके पूर्व, कालीफोर्नियाके पश्चिम और

प्रशान्त महासागरके उत्तर स्थित है जो लगाडोसे डेढ़सौ मीलसे अधिक दूर नहीं है। वहां मलडोनाडो नामका एक सुन्दर बन्दर है। लगनग द्वीपके रहनेवाले यहां आकर निवास करते हैं। यह जापानसे पूरब तीनसौ कोस पर बसा हुआ है। जापानके महाराज और लगनगके राजामें खूब मेल मिलापके कारण दोनों टापुओंसे जहाजों की आया जाई बराबर बनी रहती है। मैंने इसी राहसे युरोप पहुंचनेका बन्दोबस्त किया। मैंने दो खच्चर भाड़े लिये तथा एक बेगार राह बताने और माल टाल ढोनेके लिये। कुनोडोसे मैं बिदा हुआ। चलनेके समय उसने खूब दिया लिया था।

रास्तेमें कोई घटना लिखनेके योग्य नहीं हुई। खुशी राजी मलडोनाडो पहुंचा। यहां लगनग जानेके लिये कोई जहाज तैयार न था और न जल्दी जानेकी सम्भावना थी। लाचार यहां टिकना पड़ा। बाजार छोटा मोटा अच्छा था। एक आदमी से जान पहचान होगई। उसने बड़ी खातिर की। वह बड़ा भला मानस था। उसने कहा कि लगनगके लिये जहाज एक महीनेसे पहले नहीं छूटेगा। तब तक चलिये पासहीके गलबडब ड्रिब नामक छोटेसे टापूकी सैर कर आवें। मैं भी राजी होगया। एक छोटीसी स्टीमर किराये होगई। उस पर सवार होकर हम लोग चलते हुए।

गलबडब ड्रिब शब्दका अर्थ है जादूगरोंका द्वीप। यह छोटासा मजेका टापू है। यहांकी जमीन उपजाऊ है। यहां एक तरह की जाति निवास करती है जो सबके सब जादूगर हैं। राजा भी इसी जातिका है। यह आपसहीमें व्याह करते हैं। जो सबमें बड़ा होता है वही राजगद्दी पर बैठता है। राजाका मकान सुन्दर बगीचा मनोहर था। चारों ओर पत्थरकी बीस फुट ऊंची थी। भीतर गोशाला, गोदाम आदि अलग अलग बनी थीं।

राजाके नौकर चाकर जो थे सो सब विचित्रही थे। राजा

जादूके बलसे चाहे जिस मुर्देको बुलाता और पूरे चौबीस घण्टे उससे काम लेता। इससे ज्यादे नहीं ले सकता और न फिर उसी मुर्देको बिना भारी जरूरतके तीन महीनेके अन्दर बुला सकता था।

जब हम लोग वहां पहुंचे तो दिनके ग्यारह बजे थे। मेरे साथियोंमें से एकने जाकर मेरे आनेकी खबर राजाको दी। आज्ञा पाकर मैं भी भीतर गया। दोनों ओर सिपाही खड़े थे जिनकी पोशाक और सजावट अनोखी थी। उनके चेहरे देख कर मैं इतना डर गया था कि लिख नहीं सकता। यह सभी भूत थे। दालान वगैरहको लांघ कर दीवानखासमें जापहुंचा। मेरे साथ दो आदमी और थे—एक तो मित्र और एक मित्रका सहचर। राजा सिंहासन पर बैठा था। तीन तीन बार हम लोगोंने सलाम किया। कई प्रश्नके बाद राजाने बैठनेकी आज्ञा दी। सिंहासनकी निचली सीढ़ीके पास तीन तिपाइयां रखी थीं उन्हीं पर हम तीनों बैठ गये। यद्यपि बल्नी बरबीकी भाषा वहांकी भाषासे बिलकुल जुदी थी। तथापि राजा उसे समझता था। उसने उसी भाषामें मेरे सफरका हाल पूछा और उंगलीके इशारेसे अपने आदमियोंको हट जानेको कहा। वह सब इशारा पातेही ऐसे अम्पत होगये जैसे आंखें खुलने पर सपना होजाता है। इस औघडेवाजीको देख कर मेरे आश्चर्यका ठिकाना न रहा। मैं हक्का बक्का सा हो इधर उधर देखने लगा। तब राजाने धीरज बंधाया और कहा कि डरो मत तुमको कोई कुछ न कहेगा। साथी मेरे ज्योंके त्यों बैठे थे। उन्हें डरते बरते कुछ न देखा। यह सदैवही भूतोंका दर्शन करते होंगे!

आखिर मैंने भी ढाढ़स बांधा और हिम्मत करके टूटे फूटे शब्दोंमें सफरका मुख्तसर हाल कह सुनाया। कहते समय मैं इधर उधर देखता भी जाता था कि फिर कहीं कोई भूत तो न आगया। फिर भोजनकी ठहरी। राजा साहबने हम लोगोंके सङ्ग खायाया। यहां भी सब कामोंमें भूत प्रेतही हाजिर थे। पहलेकी अपेक्षा अब मेरा भय भी कुछ दूर होगयाथा। सूर्यास्त तक वहीं रहे। रात

कर चित्तमें भक्तिका सञ्चार होआया। उसके चेहरेसे वीरता, धर्मप्रियता, दृढ़ प्रतिज्ञता, निर्भीकता, सच्ची देशहितैषिता, रता टपकी पड़ती थीं। सीजर और ब्रूटसमें खूब मेल मिलाप कर मुझे अत्यन्त प्रसन्नता हुई। सीजरने मेरे सामने स्वयं कण्ठसे स्वीकार किया था—"मेरे जीवनके बड़े बड़े कार्य्य भी धिक अंशमें मेरे मारे जानेके तुल्य गौरव युक्त नहीं हैं।" ब्रूटससे बहुत बात चीत हुई। वह कहता था—"मेरे पुरखे जूनियस, रात, एपामिराउस, कनिष्टकेटो, सरटोमस मोर और मैं सदा सङ्ग रहते हैं इनके जोड़का सातवां न कोई हुआ न होगा।" और कितने महात्माओंका दर्शन मैंने किया सो सविस्तर लिख पाठकोंको कष्ट देना नहीं चाहता। सारांश यह कि सब युगों सब बातें आखोंके सामने आगई थीं। मैं विशेष कर उन्हीं मोंको देख कर सन्तुष्ट हुआ जो दुष्टों और पराये राज्यके छीनने लोंका दमन कर पीड़ित दुःखित जातियोंको स्वाधीनता प्रदान गये हैं। इन सब व्यापारोंको अवलोकन कर मैं कितना प्रसन्न ा सो लिख कर बतलाना असम्भव ही है।

अष्टम परिच्छेद।

प्राचीनकालके प्रसिद्ध प्रसिद्ध कवि और विद्वानोंके दर्शनकी कट अभिलाषा हुई। एक दिन विशेष कर इन्हीं लोगोंके निमित्त यत हुआ। होमर और अरिष्टोटल अपने टीकाकारों सहित ारे। टीकाकारोंकी इतनी भीड़ हुई कि सारी जगह भर गई। ा मेलासा लग गया था। मैंने देखतेही दोनोंको पहचान लिया । होमर अरिष्टोटलसे लम्बा और सुन्दर था। इतना बुड्ढा होने मी खूब अकड़कर सीधा चलता था। उसके नेत्र खूब तीक्ष्ण थे। रिष्टोटल बहुत झुका गया था और हाथमें लाठी लिये था। उसका दुबला, बाल पतले और छोटे तथा आवाज धीमी थी। बहुत ल्द मुझे मालूम होगया कि उन्हें किसीने पहचाना नहीं। पय-

धानना तो दूर रहा कोई उनके नाम भी न जानता था। एक भूत ने जिनका नाम मालूम नहीं चुपकेसे मेरे कानमें कहा कि यह टीकाकार लोग प्रेतलोकमें कवियोंके पास लाये लज्जाके मारे फट-कते भी नहीं क्योंकि इन सबने अशुद्ध टीका लिख लिखकर सबको भरमाया है। मैंने डिडीमस और युष्टाथियस दो टीकाकारोंको होमरके सामने पेश किया तो आपने उनकी योग्यतासे बढ़कर आदर किया और कहा कि कवियोंके कथनको समझनेके लिये ऐसोंकी आवश्यकता है। स्कोटस और रेमसके आने पर जब मैंने उनका वृत्तान्त कह सुनाया तो अरिष्टोटलका धीरज जाता रहा। उसने छूटतेही उनसे पूछा—क्या बाकी लोग भी तुम्हारे ऐसे मूर्ख हैं।

पांच दिन तक मैं प्राचीन विद्वानोंसे सम्भाषण करता रहा। मैंने पहले बादशाहोंमेंसे बहुतोंको देखा। एक विलायती रसो-इयेको बुलाया जो सब सामग्री प्रस्तुत न रहनेके कारण अपनी पाक चातुरी न दिखा सका।

इसी कुलमें लम्बी ठुड्डियां, कहीं दो पीढ़ियों तक दुष्ट, दो तक बेवकूफ और ठग आदि होने लगे, सो मुझे अच्छी तरह मालूम होगया। कैसे कोई कोई खानदान निठुरता, असत्यता और भीरुता के लिये विख्यात होगया और किसने पहले दुष्ट रोगका बीजारोपण अपने कुलमें किया इत्यादि बातोंका भी पता मुझे लगगया। सारांश यह कि एक भी विशुद्ध वंश दृष्टिगोचर न हुआ।

आधुनिक इतिहासोंसे मैं बहुत घबरा गया। क्योंकि सौवर्ष पहलेके राजघरानेके नामवर पुरुषोंकी अच्छी तरह खोज करनेसे भली भांति प्रगट होगया कि बेईमान लेखकोंने दुनियाको कैसा धोखा दे रखा है। अब लोग नितान्त डरपोक भीरुको युद्धविद्यामें पटु मूर्खोंको चतुर, खुशामदियोंको सच्चा, नास्तिकोंको धर्मात्मा, व्यभिचारियोंको सदाचारी और जासूसोंको सत्यवादी समझने लगे हैं। जजोंके घूसखोर होने और आपसके ईर्षाद्वेषसे कितनेही बिचारे निरपराध और सज्जनोंको देशनिकाला तथा फांसी हुई कितनेही दुष्ट अत्याचारियोंको ऊंचे ऊंचे पद मिले और कितनेही पैटार्घी, कुटने, भाड़ और रण्डियोंकी खूब चली बनी। और भी बहुतसी बातोंका गुप्त भेद सुन कर मनुष्य जाति की विद्या बुद्धि पर घृणा होने लगी थी।

जो लोग गुप्त इतिहास लिखनेका दावा करते हैं उनकी भी कलई खुल गई। न जाने इन लोगोंने कितने राजोंकी विष दे कर कब्रमें भेजा है—एकान्तमें राजा मन्त्रियोंकी जो सलाहें हुई हैं उसे भी आपने प्रकट किया है। बड़े बड़े राजदूत और प्रधान सचिवोंके चित्तमें कब कौन भाव उठते थे उन्हें भी आप अपनी दैवी शक्तिसे जान गये हैं। पर वास्तवमें आप जानते कुछ भी नहीं सब मनकी कल्पना मात्र है। जितनी आश्चर्यमयी बड़ी बड़ी घटनाएं हुई हैं सबके कारण मुझे मालूम होगये। सर्वत्र कुटने कुटनियों हीकी मूर्तियां बोलतीथीं। एक सेनापतिने मेरे सामने स्वीकार किया कि उसने केवल भीरुता और दुराचरणसे जय पाई थी।

जल सेनापतिने कहा—"एक तो मैं युद्ध करना नहीं जानता दूसरे शत्रुसे भी मिल गया था तो भी मेरीही जीत हुई।" तीन राजोंने भी कहा—"हम लोगोंने भी कभी किसी गुणीको ऊंचे पद पर नियत नहीं किया। भूलसे या मन्त्रियोंके विश्वासघातसे जिनका हम सदैव विश्वास करते थे भलेही कोई होगया हो तो हम कह नहीं सकते। अगर हम लोग फिर जी उठें तो ऐसा कभी न करें।" इसके सिवा अच्छी अच्छी युक्तियां दिखलाकर वह यह भी बोले कि अत्याचारके बिना राजसिंहासन ठहर भी नहीं सकता है क्योंकि स्थिरता दृढ़ता, एकाग्रतादि गुण सर्वसाधारणके कार्य्यके बाधक हैं।

किस प्रकारसे बहुतेरे मनुष्य बड़ी बड़ी उपाधियां तथा ऐश्वर्य्य पाजाते हैं सो जाननेके लिये मुझे अत्यन्त लालसा हुई। राजासे कहने पर उपाधि तथा ऐश्वर्य्य पाये हुये आधुनिक समयके अनेक भूत बुलाये गये। इन लोगोंने अपने अपने धन वा मान पानेके जो कुछ कारण बताये सो सुन कर बड़ी ग्लानि हुई। झूठ बोलना झूठी गङ्गाजली उठाना, जुआचोरी तथा कुटनापन करना आदि पापकर्म्महीसे प्राय: लोग बड़े हुए थे। सबने स्वीकार किया कि कोई स्त्री और कन्याके व्यभिचारसे—कोई स्वदेश वा राजाकी बुराई करनेसे—कोई विष प्रयोगसे और बहुतेरे अन्यायसे निरपराधोंको विनष्ट करके धनवान हुए थे। हम गरीबोंको सदा बड़े आदमियोंका अदब करना चाहिये परन्तु इन विचित्र बातोंके मारे चुप न रह सका। पाठक क्षमा करेंगे।

मैं इतिहासोंमें अकसर पढ़ता था कि बहुतोंने राजा और राज्य दोनोंहीकी बड़ी बड़ी सेवाएंकी हैं। इन सेवा करनेवालोंको मैंने देखना चाहा। पीछे खोज करनेसे मालूम हुआ कि उनके नाम [illegible] में नहीं हैं और जो दो चार हैं भी सो नराधम, दुष्ट और [illegible] बनाये गये हैं। और शेषकी कहीं चर्चा भी सुननेमें न [illegible]। सब नीची नजर किये बुरी दशामें मेरे पास आये थे। यह प्रगट हुआ कि किसीने अन्न कष्टसे और किसीने आत्मग्लानिसे [illegible] दिये थे और शेष सूली पर चढ़ाये गये।

यह मेताकाकी कहानी सुन कर बड़ा आश्चर्य हुआ। उसके अठारह वर्षका एक बालक भी था। वह रोमनगरके एक जहाजका कप्तान था। उसने एक जल युद्धमें जय प्राप्त कर के तीन जहाजोंको समुद्रमें डुबो दिया और एक छीन लिया। ...गि भागनेका यही सबब था। कप्तानको जीत हुई सही पर ...का एकलौता पुत्र युद्धहीमें काम आया। वही पुत्र उसके साथ ...। रोम आकर उसने एक दूसरे बड़े जहाजकी कप्तानीके लिये ...का कप्तान लड़ाईमें मारा गयाथा, सम्राट अगष्टससे प्रार्थना की। ...तु अगष्टसने वह पद एक छोकरेको देदिया जिसने समुद्र कभी ...ा ने था। और वह उसकी बेगमकी एक दाईका लड़का था। ...रा कप्तान निराश होकर अपने जहाज पर लौट आया पर ...जिको गये गले पड़े रोजाकी बात हुई। कप्तान असावधानीके ...में पदच्युत हुआ और कप्तानके सहकारीका एक दामन बरदार ...पोहदे पर बहाल किया गया। कप्तान विचारा रोमनगर ...ड़ कर बहुत दूर एक गांवमें किसानोंके साथ रहने लगा। वहीं ...की मृत्यु हुई। मुझे इस कहानीका विश्वास नहीं हुआ तो ...पाको जो उस जहाजका सेनापति था बुलाया। उसने आकर ...इत्तान्तको सत्य बताया। केवल यही नहीं कप्तानने आत्म प्रशंसा ...भयसे जो सब बातें छिपा रखी थीं, उन्हें भी उसने प्रकाश कर ...या।

विलासिताके प्रभावसे इतनी लम्पटी इतना अत्याचार उस साम्राज्य ...में बढ़ गया तो जहां सब तरहके पाप बहुत दिनसे चले आते हैं ...और जहां प्रधान सेनापतिही जिसे किसी वस्तु पर बहुत कष्ट सहन ...के सारी बड़ाई और लूटके धनका अधिकारी बन बैठता है वहां ...को ऐसी घटनाएं देख कर ताज्जुब नहीं करना चाहिये।

जितने भूत आये थे सबने अपनी अपनी कहनी कह सुनाई। ...मी एकसौ वर्षके बीचमें लोग इतने अधम होगये सो देख कर ...मुझे बड़ा दुःख हुआ। दुष्ट उपदंशने, अंग्रेजोंके चेहरोंको कैसा

बिगाड़ दिया, आकार कैसा छोटा कर दिया और कहां तक कहें सब तरहसे कमजोर करके कैसा कुरूप कर दिया है।

इन सबके बाद मैंने इङ्गलेण्डके पुराने ढङ्गके किसानोंका दर्शन किया जो एक समय सादा भोजन, सादी पोशाक और सादी चाल चलनके लिये, अपने व्यवहारमें सचाईके लिये, सच्ची स्वतन्त्रता साहस और देशानुरागके लिये विख्यात थे। तबके और अबके लोगों को देख कर कलेजा कांप गया। इन महात्माओंकी सन्तान रुपये के लोभमें पड़कर कैसी अधःपतित होगई है! पारलियामेण्टके चुनावके समय वोट (Vote) बेच बेच कर इन सबने राज दरबार के पापोंको खूब बटोरा है। हा हन्त!

नवम परिच्छेद।

ग्लबडबड्रिबके राजासे विदा होकर हम लोग मालडोनाड पहुंचे। वहां पन्द्रह दिन ठहरनेके बाद एक जहाज मिला जो लग नग जाता था। मैं उसी पर सवार हुआ। दोनों सज्जनोंने मेरा बड़ा आदर सत्कार किया यहां तक कि रास्तेके लिये कलेवा भी मेरे साथ बांध दिया था। बिचारे जहाज तक मुझे पहुंचा भी गयेथे। इस सफरमें एक महीना लगा। रास्तेमें एक बार तूफान भी आया था। खैर जहाज क्लमेगनिगके बन्दरमें पहुंचा। यह लगनगसे दक्खिन पूरब बसा हुआ है।

जब मैं उतरा तो किसी खलासीने दुष्टतासे अथवा भूलसे मेरी खबर कष्टम हाउसवालोंको करदी। फिर क्या था मेरी लम्बाभारी होगई। मैंने अपनेको हालेण्डवासी बताया क्योंकि मुझे जापान तक जाना था और वहां डचके सिवा दूसरे युरोपियन घुसने नहीं पाते थे। मैंने कष्टम हाउसके अफसरसे कहा कि मेरा जहाज बरबोके किनारे तबाह होगया। मैं किसी तरह लपूटा टापू आपहुंचा। अब मैं जापान जाया चाहता हूं। वहांसे देशको चला जाऊंगा। इस पर उसने जवाब दिया—"किन्

सारी पूछ दाछे मैं तुम्हें छोड़ नहीं सकता। अभी तुम्हारे
देशी खबर सरकारमें भेजता हूं। पन्द्रह दिनमें यहांसे जवाब
आयगा तब तुम्हारी छुट्टी होजायगी।" सोजिये मैं बिना अप-
। कैदी होगया। मैं एक सुन्दर मकानमें पहुंचाया गया। मेरे
ने पीनेका भी सब प्रबन्ध सरकारकी तरफसे कर दिया गया।
। पर पहरेके लिये एक सन्तरी भी बैठाया गया। मेरे आनेकी
ी तमाम फैल गई। दूर देशका आदमी समझ कर सभी लोग
े देखने के वास्ते आते थे।

एक छोकरा मेरे साथही जहाज पर आया था। वह लगभग
र मामकी नाड़ा दोनों भाषाओंकी बोलियां जानता था। मैंने
। अपना दुभाषी नियत किया। उससे यहांको भाषा भी
खता था।

जिस दिन आनेकी आया थी उसी दिन दूत उत्तर लेकर राज-
ीमें वापिस आया। यह सम्वाद लाया कि राजाने मुझे और
साथियोंको बुलाया है। लाचार मुझे भी वहां तक जाना
ा। साथियोंमें केवल वही दुभाषी छोकरा था। मागने
सवारीके लिये दो खच्चर मिले थे। साथमें दस सवार भी थे।
' आधे दिनकी राह बाकी रही तब एक दूत खबर करनेको
ी दौड़ा। पीछे हम लोग भी जापहुंचे। राजधानीका नाम
ड्डागड्डभ या ट्रिलड्रीगड्डिब है। जहां तक मुझे याद है इसका
ारण दोनों प्रकारसे होता है। दो दिन विश्राम करनेके बाद
राजदरबारमें दाखिल हुआ। यहांके सलामका अजब ढङ्ग है।
। कोई राजासे मिलने जाता है उसे थोड़ी दूर तक जमीन
टना तथा पेटके बल चलना पड़ता है। मुझे भी यह करना
ा था। मैं विदेशी था इसलिये सब खूब साफ कर दीगई थी
ससे गर्दसे कुछ हानि न हो। जो हो यह इज्जत सबके नसीबमें
ीं होती है। जो बड़े बड़े दरजेके लोग हैं उन्हींको रेंगना तथा
मीन चाटना पड़ता है। अगर कोई जबरदस्त दुश्मन मिलनेको

आता है तो जान बूझ कर सारी मच धूलसे अरदी जाती है। मैंने एक सज्जनको जमीन चाटते चाटते बेदम हो जाते देखा है। यहां तक कि जब वह रेंग कर खड़ा हुआ तो मुंहसे आवाज नहीं निकल सकती थी। इसकी कोई दवा भी नहीं क्योंकि जो लोग राजासे मुलाकात करने जाते हैं उनके लिये राजाके सामने थूकना या मुंह पोछना बड़ा भारी कसूर है। इसकी सजा केवल फांसी है। एक रीति और है जो मुझे बिलकुल पसन्द नहीं। जब राजा की इच्छा किसी दरबारीकी जान साधारण तौरसे लेनेकी होती है तो सारे सहन पर एक तरहकी विषैली बुकनी फैलादी जाती है। बस चाटनेवाला चौबीस घण्टेके अन्दरही यमपुर पहुंच जाता है। लेकिन यह बातहै कि राजाको अपनी प्रजाकी जान बहुत प्यारी है और इस विषयमें वह बहुत सावधान भी रहते हैं। हमारे युरोप के राजे महाराजे भी ऐसेही हों यही मेरी वाञ्छा है! इसी लिये जब किसीकी जान बुकनीके द्वारा लीजाती है तो श्रीमान् नचवो खूब साफ करके धो डालनेकी कड़ी आज्ञा देते हैं। अगर नौकर चाकर इसमें असावधानी करते तो राजा साहब बहुत नाराज होते हैं। मेरे सामनेकी बात है कि एक छोकरेकी गलतीसे एक हों हार नवयुवककी जान चली गई। उस छोकरेने जान बूझ क डाहसे विषकी बुकनीको साफ नहीं किया था। इस अपराध लिये उसे कोड़े लगनेवाले थे पर राजाने हापा करके उसे छो दिया और कहा—"मेरी आज्ञाके बिना फिर ऐसा मत करना।"

अच्छा अब आगे सुनिये। रेंगते रेंगते सिंहासनसे चार गज फासले पर पहुंचा तो धीरेसे घुटना टेक मैं खड़ा हुआ। फि सात बार जमीनसे माथा टकरा कर उस भाषाका एक वाक्य मु कहना पड़ा। यह पहलेहीसे मुझे रटाया गया था। इसका अ लब यह है—"श्रीमान् सूर्य और साढ़े ग्यारह चन्द्रमाओंसे भी अधि जीवें।" इसका आपने क्या जवाब दिया सो मेरी समझमें न आया तौभी मुझे जो कुछ रटाया गया था सो मैंने कह दिया। व

यह है—"मेरी जिह्वा मेरे मित्रके मुंहमें है।" अर्थात् मैं अपने दुभाषियेको बुलानेकी आज्ञा चाहता हूं। फिर दुभाषिया आया। एक घण्टेसे ज्यादे बात चीत होती रही। राजाने जो कुछ पूछा उसका जवाब दुभाषियेके द्वारा बराबर मैं देता जाता था। मैं तो बलनीबरबी भाषामें बोलता था और वह लगनगकी भाषामें उसका तर्जुमा करता जाता था।

राजा मेरी मुलाकातसे बहुत प्रसन्न हुए। आपने अपने कर्मचारीको मेरे ठहरने तथा भोजन आदिके प्रबन्धके लिये आज्ञा दी उसने सब ठीक ठाक कर दिया।

राजाके अनुरोधसे मैं वहां तीन महीने रह गया। आप मुझ पर बहुत कृपा रखते थे। आप मुझे एक अच्छा पद भी राजसभामें देते थे पर मैंने अङ्गीकार नहीं किया क्योंकि बुढ़ापेमें बालबच्चोंके साथही रहना उचित जान पड़ा।

दशम परिच्छेद।

लगनगके रहनेवाले सुशील और उदार हैं। पूर्व देशके लोगोंको जैसा सरहका अभिमान होता है उसका यद्यपि एक छींटा लोगों पर भी पड़ा है तथापि यह विदेशियोंके साथ शिष्टाचार करते हैं विशेषतः जिनका राजसभामें आदर होता है उनका अधिक मान करते हैं। यहां कई बड़े बड़े आदमियोंसे मेरी जान पहचान होगई। मेरा दुभाषिया हरदम साथ रहता था इससे बात चीत कोई अन्तर नहीं पड़ता था।

एक दिन मजेदार जमघट था। एक मित्रने मुझसे पूछा—"हमारे यहांके अमरको आपने देखा है?" मैं बोला—नहीं। लेकिन यह तो कहिये कि मतलब क्या है। यह सारी सृष्टि मरनहार है फिर आपके यहां अमरका क्या अर्थ है?" वह बोला अच्छा सुनिये। यहां लोगोंमें कभी कभी किसीके यहां एकाध बालक ऐसा उत्पन्न हो जाता है जिसके माथेमें बाईं भौंहके ठीक ऊपर एक गोल लाल

दाग रहता है। लोग कहते हैं कि जिसके यह चिन्ह होता है वह कभी मरता नहीं।" उसके कहनेसे यह भी मालूम हुआ कि यह दाग पहले चवन्नीसे कुछ छोटा रहता है लेकिन पीछे बढ़ जाता है और रङ्ग भी बदल जाता है। बारह वर्षके बाद यह हरा हो जाता है और पचीस तक वैसाही रहता है। बाद घोर नीला फिर पैंतालिसवें सालमें खूब काला होता है और आकार भी बढ़ कर अठन्नीसे कुछ छोटा बन जाता है। फिर कोई परिवर्त्तन नहीं होता। ऐसे लड़के बहुत कम पैदा होते हैं। सारे राज्यके अमर लड़के लड़की मिलाकर अधिकसे अधिक ग्यारह सौ होंगे। राजधानीमें कुल पचासही हैं। और शेषमें एक बालिका तीन सालकी है। अमर किसी एकही खानदानमें पैदा नहीं होता। संयोग से सबेलही होता है। इन अमरोंकी सन्तान भी अमर नहीं होती। सब लोगोंकी तरह वह भी मरती है।

यह वृत्तान्त सुन कर मुझे बड़ा आनन्द हुआ। जिसने यह बात कही थी वह बलनीबरबी भाषा समझताथा और मैं वह भाषा खूब सपाटेमे बोल सकता था सो मारे आनन्दके मेरे जीमें जो कुछ आया सो बक गया। मैं झोंकमें बोल उठा—अहा! वह जाति धन्य है जिसमें लड़कोंको अमरत्व प्राप्त करनेका भी सौभाग्य है! वह मनुष्य धन्य हैं जो प्राचीन कालके गुणोंकी जीवन्त मूर्ति दर्शन करते हैं और जिन्हें प्राचीनकालकी विद्या पढ़ानेको गुरु तय्यार हैं! परन्तु सबसे बढ़ कर धन्य वह अमरगण हैं जो मानव जातिको विश्वव्यापक विपदसे बचे हुए हैं और जिनके चित्तमें मृत्युका कुछ भी भय नहीं है। परन्तु आश्चर्य है कि राजसभामें एक भी अमर दृष्टि गोचर नहीं हुआ! काला दाग ऐसा चिन्ह है जो कभी छिप नहीं सकता। महाराजके न्यायी राजा अपने दरबारमें ऐसे अमर व्यक्ति मन्त्रियोंको न रक्खें यह भी विचित्रही है! कदाचित् इस अमरत्वको राजसभामें दूर मानते हों क्योंकि यह सब पापोंकी जड़ है। [illegible] बुद्धिके [illegible]

की सुन्दर सम्मतियोंको तुच्छ समझते हैं। प्राय: देखा भी है कि यह लोग अपनी बातके बड़े पक्षी होते हैं इसीसे अमरों अपने समाजमें घुमने नहीं देते। अस्तु, जब महाराज तक मेरी पैठ है तो अवश्य उन्हें उचित परामर्श दूंगा। दुभाषियेके द्वारा समझाऊंगा कि अमरगणको अपना मन्त्री बनाइये। यह सम्मति मानें चाहे न मानें मैं अब यहां अवश्य रहूंगा।' महा-राज यहां रखनेके लिये आग्रह करतेही हैं और अच्छा पद देने कहही चुकेहैं तो अब जरूर रहूंगा और यदि अमरगण स्वीकार तो उन्हींके सङ्ग अपना जीवन शेष करूंगा।"

यह मनुष्य जिससे मैंने यह सब कहा था बलनीबरबी भाषा ता था यह मैं पहलेही लिख चुका हूं। यह मेरी बातें सुन हंसा। फिर अपनी मण्डलीवालोंको मेरे व्याख्यानका सारांश या। इस पर उनमें खूब गहरी बात चीत हुई जिसका एक भी मैं समझ न सका और न भाव भङ्गीहीसे कुछ समझमें कि मेरी बातोंका कैसा प्रभाव उन पर पड़ा। थोड़ी देर रुककर उसी व्यक्तिने जो बात करता था कहा—"आपकी बातें और हम लोग बहुत प्रसन्न हुए। अच्छा यह तो बताइये कि आपही अमर होते तो किस प्रकार जीवन व्यतीत करते।"

मैंने जवाब दिया—"ऐसे सुन्दर विषयपर व्याख्यान देना विशेष मेरे लिये सहज है। मैं सदैव सोचा करता हूं कि अगर राजा तो यह करता, सेनापति होता तो यह करता और लाट ता तो यह करता। और इस अमर होनेके बारेमें तो सब सोचे हूं कि कैसे रहूंगा और क्या क्या करूंगा।

"अगर परमात्माकी दयासे मैं अमर होता और ज्योंही जीवन का अन्तर मुझे मालूम होजाता त्योंही सबसे पहले चाहे जैसे धन बटोरनेकी चेष्टा करता। कम खर्च और सुन्दर प्रबन्ध-में बहुत जल्द धनवान होजाता। बस कोई दो सौ वर्षमें कुबेर भण्डार मेरे पास आजाता। लड़कईसे शिल्प और विज्ञान

इहोते, सभ्य देशोंमें असभ्यता फैलते और असभ्योंको सभ्य बनते अपनी आंखोंसे देखता और देख कर प्रसन्न होता। न जाने और कितनी नई चीजें देखता।

"धूमकेतुके उदय अस्तको तथा सूर्य्य, चन्द्र और तारोंकी गतिओंके परिवर्त्तनको अवलोकन कर ज्योतिष विद्यामें बड़ी बड़ी अद्भुत बातोंका आविष्कार करता।"

और भी बहुतसी बातें मैंने कहीं थीं। जब मैं अपनी वक्तृता पूरी कर चुका तब उसी सज्जनने पुनः मेरे कथनका सार भाग सब को कह सुनाया। उन लोगोंने अपनी भाषामें बहुत देर तक न जाने क्या क्या बातें कीं जो मेरी समझमें न आईं। लोग मेरी ओर देख देख कर हंसते जाते थे। उसने फिर यों कहना शुरू किया—आप भूलते हैं। आपने इस विषयको भली भांति समझा नहीं। अमर केवल यहीं पैदा होते हैं और कहीं नहीं होते। जापान या बलनीबरबी राज्यके रहनेवालोंको अमरका विश्वास नहीं है। वह लोग इन बातोंको झूठ समझते हैं मैं दोनों राज्योंमें कुछ कुछ दिन रह कर वहांके पण्डितोंसे बात चीत कर चुका हूं। सब कोई अधिक दिन जीना चाहता है। मरना कोई पसन्द नहीं करता। जिनका एक पैर कब्रमें लटक चुका है वह भी दूसरेको बाहर खींचनेके लिये पूरी कोशिश करते हैं। अत्यन्त बूढ़ा भी एक दिन और जीनेकी इच्छा करता है। मरना सब कोई बुरा समझता है। मृत्युसे भागना सबका स्वाभाविक है। केवल हम लोग लगनगके रहनेवाले जीनेकी कुछ परवा नहीं करते क्योंकि हम लोग बराबर अमरोंको देखा करते हैं। इससे हम लोगोंको अधिक दिन जीनेकी इच्छा नहीं होती है।

"आपने जो कुछ कहा सो ठीक नहींहै और न युक्ति सङ्गतही है। सदा हट्टा कट्टा और जवान बना रहना कौन पसन्द नहीं करता? यह प्रश्न न था कि सब सुखोंके साथ कोई सदा जवान बना रहना चाहता है या नहीं। बल्कि यह था कि बुढ़ापेके सब दुःखोंको झेलते हुए कोई सब दिन कैसे जी सकेगा। इन दुःखोंके साथ अमर

पढ़नेमें मन लगाता तब विद्यामें भी साक्षात् वृहस्पति बन जाता। फिर जो कुछ बड़े बड़े कार्य्य या घटनाएं होतीं सो सावधानीसे लिखता और निष्पक्ष भावसे प्रत्येक राजा और सन्तोंके कार्य्योंकी आलोचना करता तथा अपनी टिप्पणियां उसके साथ जोड़ देता। रीति, व्यवहार, भाषा, वेष, भोजन और खेलोंके अदल बदलको भी लिख कर दिखलाता। इस प्रकार मैं विद्या बुद्धिका जीवित खजाना होता और अपनी जातिका तो एक पूज्य देवता होजाता।

"साठ वर्षके बाद मैं कदापि व्याह न करता। खर्च कमती करता तो भी अतिथि सेवासे मुँह न मोड़ता। होनहार युवकोंको धर्मके लाभ तथा तत्व बताता। लेकिन मैं नये पुराने अमरोंमें से बारह चुन कर उन्हींके साथ रहता। जिनको रुपयेकी दरकार होती उन्हें रुपये और जिनको स्थान न होता उन्हें अपने गृहमें स्थान देता। किसी किसीको अपने साथ भी खिलाता। और तुममें से बहुत कमको सो भी दोचार पण्डितोंहीको अपने साथ बिठाता और जब वह मर जाते तो बिना दुःख किये उनके पुत्रोंको ग्रहण करता। जिस तरह वाटिकामें सालके साल फूल फूलते हैं और गिरते हैं पर उसका किसीको कुछ ख्याल भी नहीं होता उसी प्रकार मैं भी अपने नश्वर साथियोंके लिये कुछ दुःख न करता।

"यह अमरगण और मैं अपने अपने विचारोंको आपसमें पूरी करते—किस तरह भ्रष्टाचार जगतमें घुस आया इसको भी इच्छा करते और सब किसीको डरा धमका समझा बुझाकर इस पापको सब को बन्द करनेकी चेष्टा करते। हमारे आदर्शका अनुकरण करनेसे मनुष्य जातिके स्वभावकी वह नीचता जिसकी निन्दा सब युगोंसे होती आई है दूर होजाती।

"राज्यों और सल्तनतोंके न्यारे न्यारे उलट फेर तथा इस लोक और परलोकके परिवर्त्तनको देखता। पुराने नगरोंको उजड़ते, छोटे छोटे देहातोंको राजधानी बनते, बड़ी बड़ी समुद्र नदियोंको सूख कर सोते बनते, समुद्रको एक किनारा सुखाते और दूसरे

होते, सभ्य देशोंमें असभ्यता फैलते और असभ्योंको सभ्य बनते
अपनी आंखोंसे देखता और देख कर प्रसन्न होता। न जाने और
कितनी नई चीजें देखता।

"धूमकेतुके उदय अस्तको तथा सूर्य्य, चन्द्र और तारोंकी गति-
के परिवर्त्तनको अवलोकन कर ज्योतिष विद्यामें बड़ी बड़ी अद्भुत
बातोंका आविष्कार करता।"

और भी बहुतसी बातें मैंने कही थीं। जब मैं अपनी वक्तृता
कर चुका तब उसी सज्जनने पुनः मेरे कथनका सार भाग सब
को सुनाया। उन लोगोंने अपनी भाषामें बहुत देर तक न
जाने क्या बातें कीं जो मेरी समझमें न आईं। लोग मेरी
ओर देख देख कर हंसते जरूर थे। उसने फिर यों कहना शुरू
—आप भूलते हैं। आपने इस विषयको भली भांति समझा
। अमर केवल यहीं पैदा होतेहैं और कहीं नहीं होते। जापान
और बलनीबरबी राज्यके रहनेवालोंको अमरका विश्वास नहीं है।
वे इन बातोंको झूठ समझते हैं मैं दोनों राज्योंमें कुछ कुछ
रह कर वहांके पण्डितोंसे बात चीत कर चुका हूं। सब कोई
दिन जीना चाहता है। मरना कोई पसन्द नहीं करता।
एक पैर कब्रमें लटक चुका है वह भी दूसरेको बाहर
पूरी कोशिश करते हैं। अत्यन्त बूढ़ा भी एक दिन
की इच्छा करता है। मरना सब कोई बुरा समझता है।
सबका स्वाभाविक है। केवल हम लोग लगनगके
जीनेकी कुछ परवा नहीं करते क्योंकि हम लोग बरा-
तोंको देखा करते हैं। इससे हम लोगोंको अधिक दिन
इच्छा नहीं होती है।

आपने जो कुछ कहा सो ठीक नहींहै और न युक्ति सङ्गतही है।
कहा और जवान बना रहना कौन पसन्द नहीं करता?
था कि सब सुखोंके साथ कोई सदा जवान बना रहना
या नहीं। बल्कि यह था कि बुढ़ापेके सब दुःखोंको
सब दिन कैसे जी सकेगा। इन दुःखोंके साथ अमर

होना शायद कोईही पसन्द करे। लेकिन जापान और वलनीवरवी वाले अधिक दिन जीना चाहते हैं। बिना दुःख और क्लेश पाये कोई मरना नहीं चाहता है। आपही कहिये आप तो बहुत जगह घूम आये हैं। यह बात क्या झूठ है?"

इस भूमिकाके बाद वह अमरोंके बारेमें यों कहने लगा—"अम लोग तीस बरस तक हमारी तरह सब काम करते हैं पीछे मन पड़ने लगते हैं। अस्सी वर्ष तक यही हालत रहती है। यहां साधारण लोगोंकी परमायु अस्सी वर्षकी है। अमरगण जब अस्सी वर्षके होते हैं तो वह साधारण बुढ़ोंकी अपेक्षा अधिक सुस्त औ बलहीन होजाते हैं। सदा जीना पड़ेगा इसी भयसे उनकी सु बुध चली जाती है। हठ, चिड़चिड़ाहट, लालच, गुस्सा, पाखण्ड और बहुत बोलना बढ़ जाता है। प्रीति निबाहना, मोह ममत सब छूट जाती है। पोते पोतियोंके सिवा दूसरोंका प्यार करन भूल जाता है। ईर्षा, द्वेष और बुरी वासना बढ़ जाती है युवकों को विलास करते तथा वृद्धोंको मरते देख कर उन्हें ईर्षा होती है जवानीकी बातें याद कर बहुत मलाल उनके जीमें होता है। किसी को मरते देख कर वह बहुत रोते और कहते हैं हाय यह पुण्यधाम को विश्राम करने चले और हम यहां दुःख भोगनेको पड़े हैं कब हमरा उद्धार होगा! हाय हम काहेको कभी उस लोकमें जायंगे, इत्यादि। उनकी स्मरण शक्ति कम हो जाती है। जो कुछ लड़कपनमें पढ़ते हैं सो सब भूल जाते हैं। उनके आगे जो जो घटनाएं हो चुकी हैं वह सब भी उन्हें याद नहीं रहतीं इसलिये उनसे किसी घटना या विषयका पक्का भेद नहीं मिल सकताहै। कहां तक कहें अमरोंको दुसह दुःख सहना पड़ता है। उनके कष्टका ठिकाना नहीं। लेकिन जो अमर बुढ़ापेमें निरे बच्चेकी तरह हो जातेहैं और जिनकी स्मरणशक्ति एकदम लुप्त होजातीहै उनको कुछ कम कष्ट होता है। उन पर सब कोई दया भी करता है। क्योंकि औरोंमें जो दोष होते हैं सो इनमें नहीं होते।

"अगर किसी अमर पुरुषका ब्याह अमर स्त्रीसे होगया तो राज्यके नियमसे दो में से किसीकी उमर अस्सी सालकी होने पर वह सम्बन्ध तोड़ दिया जाता है। क्योंकि नियम बनानेवालोंने विचारा है कि जो लोग बिना अपराधके यहां मर्त्यलोकमें सदा रहनेका दण्ड पाचुके हैं उनके ऊपर बुढ़ापेमें स्त्रियोंके भरण पोषणका भार डालना उनके दण्डको दूना करना है।

"अस्सी वर्षके उपरान्त अमर लोग नियमानुसार मृतवत् समझे जाते हैं और उनके पुत्र सब सम्पत्तियोंके अधिकारी होजाते हैं। इनके खाने पीनेके लिये कुछ अंश अलग निकाल दिया जाता है। और गरीबोंको अनाथालयसे खानेको मिलता है। फिर अमरोंको किसी प्रकारका भारी काम नहीं मिलता और न उनका कोई विश्वास करता है। वह जमीन जायदाद न खरीद सकते और न बेच सकते हैं। दिवानी या फौजदारीके मुकद्दमेमें गवाही भी नहीं दे सकते हैं।

"नब्बे वर्षमें उनके दांत गिर पड़ते, और बाल उड़ जाते हैं। फिर उनको किसी प्रकारका स्वाद नहीं मिलता। भूख प्यास बन्द होजाती है। जो कुछ मिलता है उसे खा लेते हैं लेकिन किसी वस्तु पर रुचि नहीं होती। जो सब रोग पहले हो चुकते हैं वह न घटते हैं न बढ़ते हैं ज्योंके त्यों बने रहते हैं। स्मरण शक्ति एक दम चौपट होजाती है। चीज वस्तुकी कौन पूछे अपने बाल बच्चोंके नाम तक भूल जाते हैं। इसी हेतु वह पोथियां भी नहीं पढ़ सकते हैं।

"यहांकी भाषा भी सदा बदला करती है। एक शताब्दीका अमर दूसरी शताब्दीकी भाषा नहीं समझता है। दोसौ वर्षके बाद अमर लोग अपने पड़ोसीसे भी बात चीत नहीं कर सकते। स्वदेश में रह कर भी वह सब विदेशीकी तरह होजाते हैं।"

जहां तक मुझे याद है अमरोंकी यही एक कहानी मैंने सुनी थी। मैंने नये पुराने पांच छः अमरोंके दर्शन भी किये थे। सबसे नया अमर दोसौ वर्षसे अधिकका न था। कई मित्रोंके कहने पर

भी कि मैं बड़ा भारी भ्रमणकारी हूं, सारे जगत्की छान आया हूं, अमरोंने मुझसे कुछ न पूछा और न कान फट फटाए। इतना जरूर कहा—"कुछ निशानी देते जाइये।" अर्थात् कुछ भिक्षा दीजिये। वहां भीख मांगना आईनके विरुद्ध है। इन सबको अनाथालयसे भोजन मिलता है पर उससे पेट नहीं भरता इसीलिये बेचारे अमर लोग आईनके भयसे इस घुमावसे भीख मांगते हैं।

सब आदमी अमरोंसे घृणा करते हैं। अमरका उत्पन्न होना लोग असङ्गल समझते हैं। जब कोई अमर पैदा होता है तो उसका सब विवरण रजिष्टरमें लिख लिया जाता है। उसी रजिष्टरसे अमरोंकी उमरका पता लगता है। हजार वर्षसे अधिकका रजिष्टर रक्खा नहीं जाता पुराना होनेसे सड़ गल जाता है। या विद्रोहादि होनेसे नष्ट भ्रष्ट कर दिया जाता है। अमरोंकी उमरका पता लगानेका मामूली कायदा यह है। उनसे पूछा जाता है कि किस राजा या बड़े आदमीका नाम तुम्हें याद है। नाम बताने पर इतिहास देखनेसे उमर मालूम हो जाती है। अस्सी वर्षके हो चुकने पर जिस राजाका राज्य आरम्भ होता है उसका नाम अमर लोग नहीं बता सकते हैं।

अमरोंके चेहरे बड़े भयङ्कर होते हैं। मैंने ऐसे भयानक चेहरे कभी नहीं देखे। औरतोंकी तो कुछ मत पूछो उनकी सूरतें और भी डरावनी होजाती हैं। अवस्थाके सङ्ग सङ्ग आकृति भी बदलती जाती है। जिसकी जितनी अवस्था अधिक होगी उसकी आकृति भी उतनीही भयङ्कर होगी। छः अमरोंको देखतेही मैंने पहचान [illegible] कि इनमें सबसे बड़ा कौन है। यद्यपि एक या दो सौ [illegible] था। उनमें कोई न था।

[illegible] अब निश्चय जानलें कि जो कुछ मैंने देखा सुना [illegible] होनेकी इच्छा एम दक जाती रही। अपने कहे पर [illegible] और लज्जित हुआ। इस जीनेसे मरनाही मैंने [illegible]। राजा भी मेरी इन सब बातोंको पीछे सुन कर

वह हंसा और बोला—"अपने देशवालोंको मृत्युसे ढोठ करनेके लिये एक जोड़ा अमर लेजाइये न।" यह आईनके विरुद्ध था नहीं तो चाहे जो खर्च होता मैं जरुर एक जोड़ा अमर विलायत भेज देता पर क्या करता लाचारी थी।

जो हो अमर लोगोंके वारेमें जो सब नियम थे सो खूब सोच समझके बनाये गये थे। मैं उन्हें पसन्द करता हूं। दूसरे देशवाले भी ऐसे ऐसे मौके पर ऐसाही करते हैं। यदि यह नियम न होते तो अमर लोग बुढ़ापेमें तृष्णाके मारे सारी जातिके कर्त्ता धर्त्ता तथा राज पाटके भी अधिकारी बन बैठते क्योंकि बुढ़ापेमें तृष्णा अधिक बढ़ जाती है। पर पोछे अयोग्यताके कारण सारे देशको वण्टा धार कर देते।

एकादश परिच्छेद।

मैं समझता हूं अमरोंके वृत्तान्तसे पाठकोंका मनोरञ्जन हुआ होगा क्योंकि यह मामूली ढङ्गसे कुछ निरालाहै। अबतक यात्राकी जितनी पोथियां हाथ लगीं किसीमें ऐसी बात पढ़ी है सो याद नहीं पड़ती। अगर मैं भूलता हूं तो कहना यह है कि अगर एकही देशका वर्णन कई यात्री करते हैं तो वह प्रायः एकसा मालूम होता है। इससे यह नहीं समझना चाहिये कि पिछले यात्रीने पहले की चोरीकी है।

लगनग और जापानवालोंमें खूब तिजारत होती है। सम्भव है जापानी लेखकोंने अपनी पोथियोंमें अमरोंका कुछ वृत्तान्त लिखा हो। एक तो मैं जापानी भाषा नहीं जानता दूसरे मैं वहां बहुत कम ठहरा इससे इस बातकी कुछ छानबीन न कर सका। लेकिन आशा है कि डच लोग जरूर इसको टोह लगावेंगे।

लगनग नरेशने वहां रहनेके लिये बहुत आग्रह किया पर मैं राजी नहीं हुआ क्योंकि मन बालबच्चों पर लगा हुआ था। पीछे राजाने भी अपनी अनुमति दी और जापानेश्वरके नामकी चिट्ठी मुहर करके मेरे हवालेकी। चारसौ चवालीस बड़ी बड़ी अशर्फियां

[illegible]मारी जान नहीं बच सकती। अगर हॉलैण्डर लोग सुन पावेंगे तो वहर तुम्हें मार डालेंगे। इसलिये तुम चुपचाप चले जाओ। रे आदमी तुमसे कुछ न कहेंगे मानो वह भूल गये हैं।" मैंने इस पाके लिये महाराजको अनेक धन्यवाद दिया। उस समय कुछ [illegible] नट्टासकको जानेवाली थी महाराजने सेनापतिको समझा [illegible]भाई प्रतिमा कुचलनेकी बात गुप्त रखनेको कह दिया। मैं सेना [illegible] साथ जापानसे रवाना हुआ।

ता० ८ वीं जून १७०८ ईस्वीको मैं नट्टासक पहुंचा। रास्तेमें [illegible]ड़ी तकलीफ हुई। यहां तुरत अम्बीयना नामक एक जहाज मिल गया। वह हालैण्डकी राजधानी असटरडामको जाता था। [illegible] पर मल्लाह सब हालैण्डरही थे। मैं हालैण्ड-लैनिडन शहरमें [illegible]हके बहुत दिन रह चुका हूं। वहां मैं पढ़ता था इससे वहांकी [illegible]ली मैं अच्छी तरह बोल सकता था। कहांसे मैं आता हूं सो [illegible] जहाजियोंको मालूम होगया। अब वह सब मेरा हाल अह-[illegible] पूछने लगे। मैंने बहुतही मुख्तसरमें अपना हाल कह सुनाया [illegible]र बहुतसी बातें छिपा रखी थीं। अपनेको मैंने हालैण्डवाशीही [illegible]ताया था। हालैण्डके बहुतसे आदमियोंके नाम मैं जानता था। [illegible]समें मा बापके नाम भी गढ़ लिये। कहा वह ग्वेलडरलैण्डके [illegible]ाकेमें रहते थे उन्हें कोई नहीं जानता है। कप्तान जो भाड़ा मांगता सोई मैं देता पर वह जान गया कि मैं डाक्टर हूं इससे उसने मुझसे आधाही भाड़ा लिया पर शर्त यह हुई कि रास्तेमें मैं डाक्टरी करता चलूं। जहाज पर चढ़नेके पहले कई जहाजी मुझसे आकर लगे पूछने कि आपने ईसामसीहकी प्रतिमाको कुचला या नहीं। हां सब तरहसे महाराजका मन भर दिया, कह कर मैं उनकी बातोंको उडाने लगा पर तिजारती जहाजके एक दुष्ट मल्लाहने मेरी तरफ इशारा करके एक अफसरसे कह दिया कि इसने प्रतिमाको नहीं कुचला है। इस पर उस सेनापतिने जो मुझे जहाज पर चढ़ाने आया था उस दुष्टको खूबही पीटा। फिर मुझसे किसीने कुछ नहीं पूछा।

रास्तेमें लिखनेके लायक कोई बात नहीं हुई। उत्तमाशा अन्तरीप तक जहाज मजेमें चला आया। वायु बराबर अनुकूल मिलती गई। वहां केवल स्वच्छ जल लेनेके वास्ते जहाज ठहर गया था। १० वीं अप्रैल १७१० ईस्वीको हम लोग कुशल पूर्वक अमस्टरडाम पहुंच गये। सिर्फ तीन आदमी बीमार होकर मरगये और एक समुद्रमें गिर पड़ा था। अमस्टरडामसे बहुत जल्द एक छोटे जहाज पर मैं इङ्गलैण्डको रवाना हुआ।

१६ वीं अप्रैलको डाउन्स पहुंचा। दूसरे दिन जहाजसे उतर पूरे पांच वर्ष छः महीनेके बाद पुनः जन्मभूमिका दर्शन प्राप्त हुए मैं सीधे रेडरिफकी तरफ चल पड़ा। उसी दिन दो बजे घर पहुंचा। घरमें सबको राजी खुशी पाया। बड़ा आनन्द हुआ।

इति तृतीय भाग समाप्त।

विचित्र-विचरण।

चतुर्थ भाग।

हिनहिन देशकी यात्रा।

प्रथम परिच्छेद।

मैं लड़के वालोंके साथ लग भग पांच महीने घरमें रहा। अगर
मैं सुखका ज्ञान होता तो मैं जरूर कहता कि यह मेरे पांच
महीने अत्यन्त सुखसे कटे। इतनेमें—"एडवेनचर" नामक एक
बड़े तिजारती जहाजकी कप्तानी मुझे मिल गई। फिर किससे
घरमें रहा जाता ? प्यारीका पांव भारी था पर मैंने इनकी भी
कुछ परवा न की। घर बार छोड़ मैं चटपट निकल खड़ा हुआ।
डाकरीसे जी ऊब गया था इसीसे अबके कप्तानी स्वीकारकी हम।
इसको मैं अच्छी तरह जानता था और यह नौकरी भी अच्छी
थी। डाकरीके काम पर एक नवयुवक रक्खा गया। ता: ७ वीं
सितम्बर १७१० ईस्वीको पोर्टस्माउथसे हम लोगोंने कूच किया।
१४ वीं को ब्रिष्टल जहाजके कप्तान पोकोंपसे टेनेरिफमें भेंट हुई
वह कम काटनेके लिये कम्पीचीकी खाड़ीको जारहा था। १६ वीं
को एक तूफानने हम दोनोंको अलग कर दिया। लौटने पर मुझे
मालूम हुआ कि उसका जहाज डूब गया और एक छोकड़ेके सिवा
और कोई न बचा। वह विचारा कप्तान बड़ा सच्चा और अपने
कामका पूरा उस्ताद मगर जरा जिद्दी था। इसी जिदने उसे
चौपट किया। मेरा कहना मान लेता तो वह भी मेरी तरह लौट
कर अपने लड़के वालोंसे मिलता।

रास्तेमें लिखनेके लायक कोई बात नहीं हुई। उत्तमाशा अन्तरीप तक जहाज बड़ेही मजेमें चला आया। वायु बराबर अनुकूल मिलती गई। यहां केवल थोड़ा जल लेनेके वास्ते जहाज ठहर गया था। १० वीं अप्रैल १७१० ईस्वीको हमलोग कुशल पूर्वक डाउन्स पहुंच गये। सिर्फ तीन आदमी बीमार होकर मरगये और एक समुद्रमें गिर गया था। डाउन्ससे बहुत जल्द एक छोटे जहाज पर मैं ग्रेवसेन्डको रवाना हुआ।

११ वीं अप्रैलको लण्डन पहुंचा। दूसरे दिन जहाजसे उतरा हुए पांच वर्ष छः महीनेके बाद पुनः जन्मभूमिका दर्शन प्राप्त हुआ। मैं सीधे रेडरिफकी तरफ चल पड़ा। उसी दिन दो बजे घर जा पहुंचा। घरमें सबको राजी खुशी पाया। बड़ा आनन्द हुआ।

इति तृतीय भाग समाप्त।

विचित्र-विचरण।

चतुर्थ भाग।

हिनहिन देशकी यात्रा।

प्रथम परिच्छेद।

मैं लड़के वालोंके साथ लग भग पांच महीने घरमें रहा। अगर
मुझको ध्यान होता तो मैं जरूर कहता कि यह मेरे पांच
ने अत्यन्त सुखसे कटे। इतनेमें—"एडवेनचर" नामक एक
तिजारती जहाजकी कप्तानी मुझे मिल गई। फिर किसमें
रहा जाता? प्यारीका पांव भारी था पर मैंने इनकी भी
परवा न की। घर बार छोड़ मैं चटपट निकल खड़ा हुआ।
डरीमें जी ऊब गया था इसीसे अबके कप्तानी स्वीकार की। इस।
रको मैं अच्छी तरह जानता था और यह नौकरी भी अच्छी
। डाक्टरीके काम पर एक नवयुवक रक्खा गया। ता: ७ वीं
म्बर १७१० ईस्वीको पोर्टस्माउथसे हम लोगोंने कूच किया।
वीं को ब्रिस्टल जहाजके कप्तान पोकोकसे टेनेरिफमें भेंट हुई
यह लकड़ी काटनेके लिये कम्पीचीकी खाड़ीको जारहा था। १६ वीं
एक तूफानने हम दोनोंको अलग कर दिया। लौटने पर मुझे
लूम हुआ कि उसका जहाज डूब गया और एक छोकड़ेके सिवा
र कोई न बचा। वह बिचारा कप्तान बड़ा सच्चा और अपने
नका पूरा उस्ताद मगर जरा जिद्दी था। इसी जिदने उ
पट किया। मेरा कहना मान लेता तो वह भी मेरी ...
र अपने लड़के वालोंमें मिलता।

मेरे सामने कई आदमी ज्वरके रोगोंसे मृत्युको प्राप्त हुए। आदमियोंके बिना काम चलना कठिन था इसलिए उन व्यापारियोंकी आज्ञासे जिन्होंने मुझे बहाल किया था बारबेडोस और लीवार्ड टापुओंसे जहाज रोककर कुछ नये आदमी भर्ती किये। पर पीछे इसके लिये मुझे पछताना पड़ा क्योंकि उनमें प्रायः डाकू थे। हम लोग जहाज पर पचास आदमी थे। मैंने प्रशान्त महासागर में अमेरिकावालोंसे वाणिज्य करने तथा जो कुछ बन जाय सो आविष्कार करनेका मनसूबा बांधा था। इन दुष्टोंने जो नये भर्ती हुए थे मेरे साथियोंको मिला लिया और मुझे गिरफ्तार करके जहाजको दखल करनेका विचार किया। षड़यन्त्र करके एक दिन सबेरे ये लोग मेरे कमरेमें घुस आये और मेरी मुश्कें बांध कर बोले—"अगर जरा भी हिलेगा तो समुद्रमें फेंक देंगे। खबरदार जो मुंह खोला।" मैंने शपथ करके कहा—"मैं कुछ न करूंगा जो तुम कहोगे वही करूंगा। मैं तुम्हारा कैदी हूं।" इतना सुन कर उन्होंने मुश्कें खोलदीं। केवल एक पैर जञ्जीरसे बांध दिया। पहरे पर एक सन्तरी बैठा। अगर मैं बन्धन खोलनेकी जरा भी कोशिश करता तो वह जरूर गोली मार देता क्योंकि उसे यही हुक्म था। मेरे खाने पीनेके लिये यहीं पहुँच जाता था। वह लोग जहाजके कर्त्ता धर्त्ता बन बैठे। उन लोगोंका इरादा स्पेनके जहाजों को लूटनेका था पर यह काम बहुत आदमियोंके बिना हो नहीं सकता था। इसलिये उन्होंने जहाजके मालको पहले बेचनेका फिर मेडेगास्कर जाकर कुछ डाकू बटोरनेका पक्का विचार किया। मेरे कैद होजानेके बाद भी जहाजके कई आदमी मरे थे। कई हफ्ते तक जहाज चलता रहा। अमेरिकावालोंसे उन लोगोंने व्यापार भी किया। मैं अपने कमरेमें बन्द था। जहाज किधरसे कहां जाता था सो मुझे कुछ खबर न थी। मैं बराबर मृत्युके ध्यान में निमग्न था।

९ वीं मई १७११ ई० को जेम्सवेल्श मेरे पास आया और

बोला—"कप्तानने तुमको किनारे पर छोड़ देनेके लिये हुक्म दिया है।" मैंने उससे बहुत कहा सुना पर सब व्यर्थ हुआ। जहाजका कप्तान कौन था सो भी उसने नहीं बताया। जबरदस्ती सबने मुझे एक किश्ती पर बिठा दिया। अच्छीसे अच्छी पोशाक मुझे पहर लेने दी जो बिलकुल नई थी। कटारके सिवा और कोई हथियार मेरे साथ न छोड़ा। इतनी कृपा और कीथी कि मेरी तलाशी नहीं ली। इसीसे पाकिटमें कुछ रुपये और कुछ जरूरी चीजें रह गई थीं। करीब तीन मील दूर लेजाकर मुझे किनारे पर छोड़ दिया। मैंने पूछा कि इस देशका क्या नाम है पर किसीने कुछ न बताया। कहा—"कप्तानके हुक्मसे हम लोग यहां छोड़ देते हैं और कुछ नहीं जानते। जल्दी भागो नहीं तो ज्वार आती है।" इतना कह वह सबके सब चलते बने।

मैं कातर होकर आगे बढने लगा। जाते जाते तीर पर जा पहुंचा। वहां सुस्तानेके लिये बैठ गया और अब क्या करना चाहिये सो सोचने लगा। थोड़ी देरके बाद फिर उठ कर चला। जहाजी लोग जब सफर करते हैं तो कड़े, कांचकी अंगूठियां खिलौने वगैरा साथमें ले लेते हैं। मैंने भी कुछ लेलिये थे। जो कोई जङ्गली असभ्य मिलेगा उसे यह सब देकर अपने जीवनकी रक्षा करूंगा। यही सब सोचता विचारता मैं आगे बढ़ा जाता था। वृक्षोंकी लम्बी पत्तियोंसे सारी भूमि बंटी हुई थी। यह किसीके लगाये न थे स्वभावतः उत्पन्न थे। घासकी बहुतायत थी। जईके भी कई खेत दिखाई पड़े। मैं चौकन्ना हो इधर उधर देखता चला जाता था। मनमें यह डर था कि कहीं पीछे या अगल बगलसे कोई हमला न करे या अचानक कोई तीर ही न चला बैठे। इतनेमें एक सड़क दिखाई पड़ी जिस पर मनुष्यके, पशुओंके विशेष कर घोड़ोंके पद चिन्ह थे। आखिर मैदानमें कई जानवर देखे—दो चार पेड़ पर बैठे हुए थे। उनकी सूरतें अजीब और भद्दी थीं। देख कर जी घबरा उठा। उन्हें भली भांति देखनेके इरादेसे मैं एक

झुरमटमें लेट रहा। उनमेंसे कुछ जानवर जरा नजदीक आपहुंचे। अब मैंने उन्हें अच्छी तरह देख लिया। उनके सिरोंमें तथा छातियों में घने घूंघरवाले बाल थे। दाढ़ियां बकरेकी सी थीं। पीठके नीचे तथा पैरोंमें आगेकी तरफ लम्बे लम्बे बाल लटकते थे मगर बाकी शरीर साफ था। रङ्ग हलका पीला था। दुम नहीं थी पर पीछे बाल जरूर थे। वह अकसर पिछले पैरोंसे खड़े होते थे। पञ्जों के नख लंबे, तेज और टेढ़े थे इसीसे वह गिलहरियोंकी तरह ऊंचे पेड़ों पर चढ़ सकते थे। वह बड़ी फुर्तीसे उछलते, कूदते और फांदते थे। स्त्रियां पुरुषोंकी तरह बड़ी न थीं। सिर पर लंबे पतले बाल थे पर मुंह सफाचट थे। आगे पीछे तथा तमाम देहमें छोटे छोटे बाल थे। स्तन पैर तक लटकते थे और चलनेमें भूमिको चूमते थे। इनके बाल भूरे, लाल, काले और पीले थे। सारांश यह कि ऐसे कुरूप जानवर मैंने और कभी नहीं देखे। न जाने क्यों उन्हें देख कर बड़ी घृणा होती थी। जितना देखा उतनेही से जी घबरा गया। उठ कर फिर सड़कसे जाने लगा। बहुत दूर नहीं गया था कि इन्हीं जानवरोंमेंसे एकको देखा जो बीच रास्तेमें खड़ा था। वह मेरी ओर बढ़ने लगा। वह मुझे ऐसे ढङ्ग से देखता था मानो पहले कभी देखा नहीं। उसका मुंह बनाना भी विचित्रही था। जरा और पास आकर उसने पञ्जोंको उठाया। क्यों उठाया सो राम जाने। लेकिन मैंने कटार निकाल कर उलटी तरफसे एक भरपूर हाथ जमाया। सीधी तरफसे मारने की हिम्मत न पड़ी। कहीं कुछ होजाय तो गांववाले गुस्से होंगे यही समझ कर मैंने उलटी ओरसे मारा था। चोट लगतेही वह पीछे हटा और बड़े जोरसे चिल्लाया। उसकी चिल्लाहट सुनकर बीसियों जानवर गुर्राते और मुंह बनाते दौड़ आए। मैं दौड़ कर एक पेड़से पीठ लगा कर खड़ा होगया और कटार घुमा कर उन सबको भगाता रहा। कुछ दुष्ट पीछेकी तरफसे डालियोंके सहारे पेड़ पर चढ़ गये और वहांसे मेरे सिर पर मल मूत्र त्यागने

ते। पेड़के नीचे आश्रय लेकर मैं बहुत बचा लेकिन तो भी कपड़े
व खराब होगये।

इतनेमें अचानक सबके सब भाग गये। मुझे बड़ा अचरज हुआ
कि वह सब इतनी जल्दी क्यों भागे। मैं फिर सड़क पर आया।
हां और एक घोड़ेको धीरे धीरे घूमते देखा। अब मैं समझ गया
कि वह सब इसी घोड़ेको देख कर भागे थे। घोड़ा जब पास आया
तो मुझे देख कर जरा ठठक गया। फिर सम्हल कर ताज्जुबमें
मेरी तरफ निहारने लगा। उसने चारों ओर घूम घूम कर मेरे
हाथ पैरोंको देखा। मैं आगे बढ़ जाता लेकिन वह रास्ता रोके
बीचमें खड़ा था कुछ देर तक हम दोनों परस्पर देखा देखी करते
रहे। आखिर मैंने साहस करके सवारोंकी तरह टोंकने और पुच-
कारनेके लिये उसकी गर्दनकी तरफ हाथ बढ़ाया। किन्तु घोड़े
को मेरा पुचकारना नहीं भाया। उसने गर्दन हिला भौंह चढ़ा
और दाहिना पैर धीरे धीरे उठा कर मेरा हाथ हटा दिया। फिर
वो बार बार हिनहिनाया। उसका हिनहिनाना भी अजब था।
मालूम हुआ जैसे वह अपनी भाषामें आपही आप कुछ बोल रहाहै।

जब मैं और वह इस प्रकार खड़े थे एक घोड़ा और आपहुंचा।
दोनों घोड़ोंने कायदेसे खुर मिलाए। बारीबारीसे हिन हिनाये।
स्वर ऊंचा नीचा तथा उच्चारण स्पष्ट था। कुछ दूर हट कर दोनों
घोड़े आपसमें कुछ सलाहसी करने लगे। कोई भारी विषय विचा-
रनेके समय जैसे लोग टहलते हैं उसी प्रकार वह दोनों भी टहलते
थे कि कहीं मैं भाग न जाऊं। अज्ञान पशुओंमें ऐसी ऐसी बातें
देख कर मेरे आश्चर्यका ठिकाना न रहा। मैंने विचारा कि जब
इन पशुओंमें इतनी बुद्धि है तो यहांके मनुष्यमें न जाने कितनी
बुद्धि होगी? वह विश्व भरके मनुष्योंसे अवश्य बुद्धिमान होंगे। यह
विचार कर मुझे बड़ा आनन्द हुआ। मैंने दोनों घोड़ोंको सलाह
करते हुए छोड़ कर वहांके निवासियोंसे झटपट मिलनेका मंसूबा
मनमें किया। ज्योंही मैं चला पहले घोड़ेने जो अबलकथा देखलिया।

वह इतने ज़ोर और इस ढङ्गसे हिनहिना उठा कि मैं जहांका तहां रुक गया और उसके पास चला गया। लेकिन अपने डरको जहां तक बना छिपाया। इस आफतसे अब कैसे पिण्ड छूटेगा इसीका मुझे भय तथा चिन्ता हुई थी। पाठक सहजमें समझ सकते हैं कि इस हालतमें रहना मुझे बहुत पसन्द न था।

दोनों घोड़े मेरे निकट आए और बड़े भावसे मेरे हाथ और मुँहको देखने लगे। अबलक घोड़ेने अपने दायें अगले सुमसे मेरी टोपीको खूब रगड़ा। इतना रगड़ा कि वह अपनी जगहसे हिल गई। मैंने उसको उतार कर फिर सिर पर दे लिया। इस पर उसने और उसके साथीने जो समन्द रङ्गका था बड़ा आश्चर्य माना। पिछले सुमसे मेरे कोटके दामनको छुआ उसे देहसे अलग लटकता देख उनके आश्चर्यकी मात्रा और भी बढ़ गई। दायें हाथ को सुमसे ठोंका मानो उसके रङ्ग और कोमलताकी वह प्रशंसा करता था। लेकिन उसने मेरे हाथको ऐसे जोरसे दबाया कि मैं चिल्ला उठा। फिर तो दोनों आहिस्ते आहिस्ते मुझे छूने लगे। जूते और मोजे देख कर शायद उन्हें बहुत ताज्जुब हुआ था, वह दोनों उन्हें प्रायः छूते और आपसमें हिनहिनाते थे। उस समय उनकी भाव भङ्गी ठीक वैसीही होती थी जैसी विज्ञानवाजों को किसी नई बातके हल करनेमें होती है।

घोड़ोंकी बुद्धिमानी तथा मनुष्यके सदृश आचार व्यवहार देख कर मैंने विचारा कि यह जरूर कोई जादूगर हैं। किसी कार्य्य विशेषके कारण रूप बदल कर यहां विचरण करते हैं और विदेशी समझ कर मुझसे खेल करते हैं अथवा यहांके आदमियोंसे मेरी रूप रङ्ग पोशाक नहीं मिलती है इससे यह विस्मित हैं। पहलीही बातको युक्ति युक्त समझ कर घोड़ोंसे मैं यों कहने लगा—"सज्जनो! अगर आप जादूगर हैं जैसा कि मैं समझता हूं तो आप अवश्य सब भाषायें समझते होंगे। इस लिये मैं साहस करके निवेदन करता हूं कि मैं एक दरिद्र दुःखी अंग्रेज हूं। भाग्यके फेरसे यहां

आपड़ा हूं। कृपा कर आप दोनों में से कोई एक सज्जन अपनी पीठ पर बिठा कर मुझे किसी गांवमें पहुंचा दें। मैं आपका बडा उपकार मानूंगा और यह कड़ा और छुरी (पाकेटसे निकाल कर) आपको भेंट करूंगा।" मैं जब बोलता था तो दोनों जानवर बड़े ध्यानसे खड़े खड़े सुनते थे। मेरी बात पूरी होजाने पर वह दोनों पुनः हिनहिनाने लगे। उनकी भाषा मनका भाव अच्छी तरह प्रगट करती थी। चीनी भाषाकी अपेक्षा इन घोड़ोंके शब्दोंकी वर्णमाला सहजमें बन सकती है।

उनके मुंहसे "याहू" निकलता था। इसका अर्थ मैं क्या मेरे पुरखे भी न जानते होंगे। परन्तु इस शब्दको सीखनेके वास्ते मैं चेष्टा करने लगा। ज्योंही घोड़े चुप हुए मैं जोरसे—"याहू याहू" कहके चिल्ला उठा। जहां तक बना उनके हिनहिनानेकी भी नकल मैंने की। इस पर तो वह दोनों और भी चकराए। अबलकने दो बार—"याहू याहू" कहा मानो वह उसका ठीक उच्चारण बतलाता था। मैं भी उसके साथ साथ बोलता गया। हर बार कुछ न कुछ उन्नति करता जाताथा। परन्तु शुद्ध उच्चारण भला तुरतही कैसे होता? समन्दने तब दूसरा शब्द सिखानेकी चेष्टा की। लेकिन इसका उच्चारण करना जरा टेढ़ी खीर था —"हौयूहनूहन्म।" पाठकों के सुभीतेके लिये इसी शब्दको—"हिन हिन" बना डाला है। "याहू" की तरह अनायास इसमें सफलता प्राप्त न कर सका। पीछे मेरी योग्यता देख उन्हें बड़ा अचरज हुआ।

कुछ देर तक और दोनोंमें बात चीत होती रही जो मैं समझता हूं मेरेही बारेमें थी। फिर दोनों घोड़े सुम मिलाकर बिदा हुए। अबलकने आगे आगे चलनेके लिये मुझे इशारा किया। जब तक और कोई राह बतानेवाला न मिल जाय तब तक उसीका कहना मानना मैंने उचित समझा। जब मैं धीरे धीरे चलता तो वह—"हुन हुन" करता। मैंने उसका अभिप्राय समझ कर उस

को संकेतसे यथा शक्ति समझानेकी चेष्टाकी कि मैं थक गया हूं तेजीसे नहीं चल सकता। इस पर वह ठहर जाता और मैं उतनी देर विश्राम कर लेता था।

द्वितीय परिच्छेद।

करीब तीन मील चलनेके बाद हम एक बड़े मकानके पास पहुंचे जो लकड़ीके खम्भों पर बना हुआ था और जिसका छप्पर नीचा तथा फूसका था। अब मेरा चित्त जरा ठिकाने हुआ। जेब से कुछ खिलौने निकाले। सोचा घरवालेको देकर मित्रता करूंगा यात्री लोग अक्सर इसी प्रकार खिलौने देकर अमेरिका आदिके असभ्य जङ्गलियोंसे मेल मिलाप बढ़ाते हैं। घोड़ेने मुझको पहले भीतर घुसनेके लिये संकेतसे कहा। मैं भीतर घुसा। यह एक बड़ा कमरा था। जमीन कच्ची और चिकनी थी। एक ओर दूर तक नादें गड़ी हुई थीं। तीन बछेरे और दो घोड़ियां वहां दिखाई पड़ीं जो खाती नहीं थी। किसी किसीको पीछे बल बैठे देख कर आश्चर्य हुआ। सबसे अधिक आश्चर्य तो हुआ उनको गृहस्थीका काम काज करते देख कर। यह मामूली दरजेके मवेशी थे। यह चरित्र देख कर मेरा पहला भाव दृढ़ होगया कि जो मनुष्य अज्ञान पशुओं को इतना सभ्य बना सकते हैं वह न जाने कैसे बुद्धिमान होंगे। वह अवश्य बुद्धिमें सबसे आगे होंगे। पीछे अबलक भी तुरत आ पहुंचा। शायद कोई कुछ छेड़ छाड़ करता परन्तु उसके आजाने से किसीने कुछ नहीं कहा। घरका मालिक जैसे हुकूमत करता है वैसेही वह कई बार हिनहिनाया। उन सबने भी अदबके साथ हिनहिना कर जवाब दिया।

इस कमरेके बाद तीन बड़े बड़े कमरे और थे जिनमें आमने सामने तीन दरवाजे थे। हम दूसरेमें होकर तीसरेकी तरफ चले। अबकी घोड़ारामही पहले भीतर घुसे और मुझे ठहरनेके लिये संकेत कर गये। मैं दूसरे कमरेमें खड़ा रहा। इतनी देरमें मैंने

रके मालिक मलकिनोंके वास्ते सौगात ठीक करली। दो
रियां, झूठे मोतियोंके तीन कड़े, एक छोटासा आईना और एक
ाला जेबसे बाहर निकाली। घोड़ेने दो चार बार हिनहिनाके
ड कहा। मैं बदलेमें किसी मनुष्यके शब्दकी अपेक्षा करने लगा।
किन सिवाय हिनहिनाहटके और कोई शब्द सुनाई न पडा
किन पहलीसे यह कुछ तीव्र अवश्य थी। मैं सोचने लगा कि
ह किसी बड़े रईसका मकान है इसीसे भीतर जाने देनेके लिये
तना बन्दोबस्त और इतनी तैयारियां हैं। पर इस बड़े आदमीके
व काम घोड़ोंहीसे चलतेहैं सो मेरे ध्यानमें न आया। मैंने समझा
ाफत और दुःख झेलते झेलते मैं पागल होगया हूं। मैं अपने
ो सम्हाल कर चारों और देखने लगा, यह भी पहलेकी भांति
गर सुन्दरताके साथ सुसज्जित था। मैंने बार बार आंखें मलो
वही सब चीजें देखनेमें आईं। देहमें चुटकियां काटी तो भी
पनेको जागताही पाया। तब मैंने निश्चय करलिया कि यह सब
दू या इन्द्रजालके खेलके सिवा और कुछ नहीं है। अधिक
चारनेका अवसर भी न मिला क्योंकि अश्व प्रभु द्वार पर खड़ेथे
र तीसरे घरमें जानेके लिये बुला रहे थे। मैं आपके साथ भीतर
ा। वहां एक साफ सुथरी चटाई पर एक परम कमनीय घोड़ी
दो बच्चोंके साथ जिनमें एक बछेरा और एक बछेरी थी पीछे
महारे बैठे देखा।

मेरे पहुंचतेही घोड़ी उठी और मेरे पास आई। मेरेहाथ
इको भली भांति देखा कर नाका भौंह चढ़ाली और दो चार
र—"याहू" शब्दका उच्चारण किया। यद्यपि मैंने पहले पहल
ी शब्दको सीखा था तथापि उसका कुछ अर्थ नहीं जानता था।
े जान गया मगर जान कर जन्म भर दुःख हुआ। घोड़ेने फिर
र हिलाया और—"हुन हुन" शब्द किया। मैं समझ गया कि
ार कहीं चलनेको कहता है क्योंकि सडक पर भी एक बार
ने ऐसाही किया था। अबके मुझको यह एक दूसरे घरमें ले

गया जो यहांसे कुछ दूर था। वहां पहुंच कर मैंने उन्हीं तीन घृणित जीवोंको जो समुद्र तटसे चलनेके बादही रास्तेमें मिले थे कुत्तों और गदहोंका मांस खाते हुए देखा। रस्सियोंके द्वारा यह शहतीरसे बंधे हुए थे। अगले दोनों पञ्जोंसे पकड़ते और दांतोंसे काट कर खाते थे।

अब प्रभुने एक बछेरेसे जिसका रङ्ग लाल था तीनों जानवरोंमेंसे बड़ेको खोल कर आंगनमें लेचलनेको कहा। मैं और वह जानवर पास पास खड़े किये गये। मालिक नौकर दोनोंने मिल कर हमारे चेहरोंको खूब मिला कर देखा। उनके मुंहसे बराबर—"याहू याहू" ही निकलता था। इस जघन्य जानवरकी सूरत ठीक आदमीसी देख कर मेरे आश्चर्य और भयकी कुछ सीमा न रही। चेहरा सचमुच चिपटा और चौड़ा था, नाक बैठी हुई ओठ बड़े मुंह लम्बा था। सब जङ्गली जातियोंसे तो इतना भेद होता ही है क्योंकि यह लोग अपने अपने बच्चोंको जमीनमें पट सोने देते हैं या पीठ पर लादे फिरते हैं। बच्चे भी अपने मुंहको मांकी पीठसे रगड़ा करते हैं इसीसे इनकी सूरत शकल बिगड़ जाती है। मेरे हाथों और उसके अगले दोनों पैरोंमें केवल इतनाही भेद था कि उसके नख बड़े बड़े थे, हथेली खुरदरी और पिङ्गल वर्ण थी तथा पीछे बाल थे। पैरोंमें भी बस इतनाही भेद था। मैं तो समझ गया परन्तु मेरे जूते और मोजेके कारण घोड़े इस भेदको न समझ सके। देहमें भी रङ्ग और बालहीका अन्तर था जैसा कि मैं लिख चुका हूं।

याहूके शेष अङ्गोंसे मेरे अङ्गोंमें इतना अन्तर देख कर दोनों घोड़े बड़े कठिनाईमें पड़े। इस अन्तरका कारण मेरे कपड़े थे जिनका घोड़ोंको कुछ भी ज्ञान न था। लाल घोड़ेने सुमोंसे उठा कर एक सड़ा टुकड़ा मेरे हाथमें दिया। मैंने लेलिया और सूंघ कर नम्रताके साथ लौटा दिया। उसने याहूओंके घरमेंसे गदहे का मांस लाकर दिया लेकिन उसमें ऐसी सड़ी गन्ध आती थी कि

ने नाक सिकोड़ कर मुंह फेर लिया। उसने उस मांसके टुकड़े
याहूके आगे फेंक दिया। याहूराम सब भकोस गये। फिर
उसने एक पूला घास तथा जई दिखाई। लेकिन मैंने तब भी सिर
हिला दिया और बता दिया कि यह सब मेरा आहार नहीं है।
मैंने विचारा कि अगर किसी मनुष्यका दर्शन न होगा तो मैं भूखों
मर जाऊंगा। यद्यपि मानव जातिके प्रेमी मुझसे अधिक बहुत
कम होंगे तथापि मैं सत्य कहता हूं कि इन याहूओंकी तरह
इस प्रकारसे जघन्य नीच घृणित जीव मैंने नहीं देखे। जितना मैं
उनसे सटता उतनेही वह और भी घृणित मालूम होते थे मेरी यह
दशा देख कर अश्व प्रभुने याहूको थान पर लेजानेका हुक्म दिया
और अगले सुमको अपने मुंह पर आसानीसे रख कर कुछ इशारा
किया जिसका मतलब यही था कि मेरा आहार क्या है। घोड़ेकी
इस कार्रवाईसे मुझको बड़ा अचरज हुआ। पर मैं ऐसा जवाब न
दे सका कि वह मेरा भाव समझ जाता। अगर समझ भी गया हो
तो क्या वह मेरे खाने पीनेका बन्दोबस्त कर सकता था?
जब हम लोग इस प्रकार इशारेबाजीमें लगे हुए थे मैंने एक
गायको बगलसे जाते हुए देखा। मैंने चट पट उसकी तरफ बता
कर उसको दूहनेका इशारा किया। अबके काम बन गया। वह
मुझे घर लौटा लाया। दाई घोड़ीको एक कोठरी खोलनेका
हुक्म दिया। किवाड़ खुलतेही देखा कि मट्टी और लकड़ीके
कुछ सुथरे बर्त्तनोंमें दूधका ढेर लगा हुआ है। उसने एक कटोरा
लबालब भरके दिया। मैं सब पीगया तब जी ठिकाने हुआ।

दोपहरको घरकी तरफ एक गाड़ी जिसमें चार याहू जुते हुए
आती हुई दिखाई दी। इस गाड़ीमें एक भी पहिया न था और
उसकी बनावट विमानसी थी। इस पर एक वृद्ध घोड़ा चढ़ा हुआ
था जो ऊंचे पदका मालूम होता था। गाड़ी घरके पास आकर
खड़ी हुई। वह पिछले पावोंको बढ़ा कर उतरा क्योंकि अचा-
नक कहीं उसके अगले बायें पैरमें चोट लग गई थी। वह हमारे

घोड़ेके यहां न्योता खाने आया था। गृहस्वामीने खूब आर सत्कार किया। सबसे अच्छे कमरेमें पांति बैठी। घासके सिवा ज की खीर भी परसी गई। और सबने तो ठंडी परन्तु बूढ़ेने ग गर्म खीर उड़ाई। बीच कमरेमें नादें मण्डलाकार सजाई गई थ जिनके चारों ओर घोड़े सब फूसके मोटे आसनों पर पुट्ठे टेक क बैठे थे। नादें कई हिस्सोंमें बंटी हुई थीं। बीचमें सूखी घास भरा पहलदार एक कठौता था जो नादोंसे मिला हुआ था। प्रत्येक घोड़ा और घोड़ी मजेसें खूबसूरतीके साथ अपनी अपनी घास औ खीर खाती थीं। बछेरे बछेरियां बहुत शान्त थीं। घरके मालिक तथा मलकिनी बहुत प्रसन्न तथा पाहुनेको आराम पहुंचानेके लिये सब तरहसे मुस्तैद थी। अबलकने अपने पास खड़े रहनेको मुझे हुक्म दिया। दोनोंमें बहुत देर तक बात चीत होती रही। बूढ़ा घोड़ा अक्सर मेरी तरफ देखता तथा—याहू याहू” कहता था इस से मैं अनुभव करता हूं कि मेरेही विषयमें वह दोनों बोलते थे।

मैं उस समय दस्ताने चढ़ाये हुए था। अबलक मेरे हाथकी दशा देख कर घबड़ा गया। उसने दो चार बार अपना सुम मेरे हाथसे छुलाया मानो हाथोंको फिर पहली अवस्थामें लानेके लिये कहता था। मैंने तुरत दस्ताने उतार जेबमें रख लिये। यह देख वह सब प्रसन्न हुए और इसका सुन्दर फल भी मुझको जल्दी मिल गया। जो दस पांच शब्द मैंने सीखे थे सो बोलनेकी आज्ञा हुई। जब तक यह सब उधर खाते थे तब तक इधर अश्व प्रभुने जई, दूध, आग, पानी वगैरहके नाम सिखा दिये थे। मैं उनका उच्चारण अच्छी तरह कर सकता था क्योंकि लड़कपनहीसे बोलियां सीखनेकी मुझको अच्छी योग्यता थी।

पांति उठ जाने पर अश्व प्रभुने एक ओर लेजाकर मेरे भोजन के लिये संकेत द्वारा चिन्ता प्रगट की। उनकी भाषामें जईका नाम—“ह्लन्ह” है। मैंने इस शब्दका उच्चारण दो चार बार किया। पहले तो मैंने जईसे इनकार किया था पर पीछे सोचा कि जब तक

निकाम न हो तब तक जईकी रोटियां और दूध प्राण बचाने ये बहुत हैं। इसीसे मैंने जई मांगीथी। उसने इतना सुनतेही रङ्गकी घोड़ीसे जो घरकी दाई थी जई लानेके वास्ते आज्ञा ह कठौतेमें ढेरसी जई लेआई। मैंने उसे आगसे गर्म किया हाथोंसे मसल कर उसकी भूसी निकाल दी। दो पत्थरोंसे ाट कर उसका आटा बनाया। पानी लाकर आटा गून्धा रोटियां पकाईं। गर्म गर्म रोटियां दूधके साथ खाईं। युरोपके प्राय: बहुतेरे आदमियोंकी यह खूराक है तथापि ो पहले बिलकुल फीकी मालूम पड़ी पर पीछे अभ्यास या। रुखा सूखा अकसर खाना पड़ा है अतएव इस पेट भर लेना मेरे लिये कोई नई बात न थी। जब तक ां रहा एक घड़ीके लिये भी मेरे सिरमें कभी दर्द न हुआ। ो कभी याहुओंके बालके फन्दोंसे खरगोश और चिड़ियोंका र शिकार करता था। पुष्ट जड़ी बूटियां इकट्ठी करता और बना कर रोटियोंके साथ अकसर खाता और जायका ेके लिये कभी कभी मक्खन निकालता और छाछ पीता था। तो नोन बिना कष्ट हुआ पर जब अलोना खाते खाते स पड़ गया तो उसकी याद भी नहीं आतीथी। मुझे विश्वास हम लोगोंमें लवणका इतना प्रचार होना बस भोग बिलास ा फल है। बड़ी बड़ी लम्बी समुद्र यात्राओंमें अथवा बड़े बड़े रोंसे दूर जगहोंमें मांस लेजानेके लिये उसमें नोन डालनेकी त पड़ती है क्योंकि नोन पड़नेसे मांस सड़ता नहीं। इसके केवल सुरापानकी रुचि बढ़ानेहीके लिये पहले पहल हम में लवणका व्यवहार हुआ था। क्योंकि देखा जाता है कि नोके सिवा और किसी जीवको नोन नहीं भाता। और मैं ो कहता हूँ कि हिनहिनदेशसे लौट आने पर बहुत दिनों किसी वस्तुमें भी मुझसे नोन नहीं खाया जाता था।

मैं अपने खाने पीनेके विषयमें बस इतनाही लिखना अलम्

समझता हूं पर और भ्रमणकारी लोग तो इसी विषयसे अपनी किताबें भर देते हैं मानो उनके खाने पीनेसे पाठकोंको बड़ा भारी सरोकार है। जो कुछ हो, इतना लिखना भी मैंने इसलिये जरूरी समझा कि शायद कोई पीछे यह न कह बैठे कि तीन वर्ष तक ऐसे देशमें और ऐसे निवासियोंके बीचमें आहार मिलना असम्भवहीथा।

जब सांझ हुई तो अश्व प्रभुने मेरे रहनेके लिये अलग बन्दोबस्त कर दिया। मेरा डेरा अश्वालयसे कुल छः गजके फासले पर था और याहुओंके तबेलेसे एक दम जुदा था। फूसका बिस्तर और फूसहीका सिरहाना बनाया। अपने कपड़ोंसे देह ढांक कर खूब सोया। थोड़ेही दिनके बाद सुखकी सब सामग्रियां इकट्ठी होगई और मैं सुखसे रहने लगा जिसका हाल आगे चल कर विस्तार पूर्वक सुनाऊंगा।

तृतीय परिच्छेद।

मैं घोड़ोंकी भाषा सीखनेके लिये पूर्ण चेष्टा करने लगा। अब मैं अश्व प्रभुको केवल प्रभु लिखा करूंगा। प्रभु, प्रभुके लड़के तथा नौकर चाकर सबही मेरे गुरु बनना चाहते थे। वह मुझसे अज्ञान जानवरको ऐसा बर्त्ताव करते देख कर बड़ा अचम्भा मानते थे। जो कुछ मैं देखता सबका नाम इशारेसे पूछता और जब एकान्त होता तो डायरीमें लिख लेता था। जब भूलता तो उच्चारण पूछ लेता। लाल बछेरेसे जो घरका नौकर था बहुत मदद मिलती थी।

घोड़े कण्ठ और नाकसे बोलते थे। उनकी बोली हौलेण्ड या जरमनी भाषासे बहुत मिलती थी परन्तु अश्व भाषा उनसे अधिक ललित और सार्थक थी। सम्राट पञ्चम चार्ल्सकी भी यही राय थी। वह कहते थे—"अगर मैं घोड़ोंसे बोलता तो हौलेण्डही की भाषामें बोलता।"

प्रभुको इतना अचम्भा हुआ कि वह धीरज न धर सके। नौ

ानने मुझे अपनी बोली सिखानेमें लग पड़े। अपनी छुट्टीका प्राय:
व समय मेरे साथही व्यतीत करते थे। उन्हें विश्वास होगया था
के मैं सदर याहू हूं। लेकिन मेरे सीखनेकी योग्यता, सभ्यता
ौर सफाईसे उन्हें बड़ा आश्चर्य होता था क्योंकि यह सब लक्षण
ाहूओंमें नहीं होते। प्रभुने यह सब पीछे बतलाया था कि मेरे
पड़ोंको देख कर उनकी अकल कुछ काम नहीं करती थी। कभी
भी वह यही समझ लेते कि यह भी मेरे शरीरका एक अङ्गही
 क्योंकि जब वह सब रातको सोजाते तब मैं कपड़े उतारता और
रे उनके उठनेके प्रथमही पहन लेता था। कहांसे मैं आपड़ा
ौर क्योंकर सब कामोंमें बुद्धिमानी प्रगट करता हूं इत्यादि बातें
ानेके लिये प्रभु नितान्त उत्सुक थे। वह मेरेही मुंहसे मेरी
हानी सुनना चाहते थे। जिस फुर्तीसे उनकी भाषामें मैं व्युत्पन्न
ता जाताथा उससे उन्हें पूरी आशा थी कि मैं बहुत जल्द उनकी
भिलाषा पूरी करूंगा। जो कुछ मैं सीखता सब अर्थ सहित
रेजीमें लिख लेता था। पहले तो मैं छिपा कर लिखता था पर
ुछ दिनके बाद उनके सामनेही लिखने और तर्जमा करने लगा।
्या करता हूं सो समझानेमें मुझे बड़ी कठिनता हुई। क्योंकि
ियां या साहित्य किस पक्षीका नाम है सो वहांवाले बिलकुल
ीं जानते।

मैं उनके बहुतसे प्रश्न करीब दस सप्ताहमें समझने लगा और
न महीनेमें कुछ कुछ जवाब देनेके लायक भी होगया। अब
से न रहा गया। वह झटपट मेरे सफरका हाल पूछ बैठे। और
 मेरे अङ्ग तो कपड़ेके भीतर थे केवल हाथ, मुंह और सिर
पाई पड़ते थे। इन अङ्गोंकी याहूओं जैसे देख कर प्रभुने मुझे
याहूही समझा। याहू बड़ेही धूर्त और दुष्ट होते तथा कभी
प नहीं मानते थे। मगर मेरा बर्ताव कुछ निरालाही था। यह
र प्रभु और भी हैरान थे। इसीसे उन्होंने पूछा था—"तुम कहां
पाये और समझदारोंकी तरह काम करना तुमने कहां सीखा?"

मैंने जवाब दिया—"मैं सात समुद्र तेरह नदी पारसे लकड़ीके एक पोले बड़े पात्र पर चढ़के यहां तक आया हूं। मेरी जातिके और कई लोग मेरे साथ थे। मेरे साथियोंने जबरदस्ती मुझको तीर पर उतार दिया और आप चलते बने।" कुछ बोल कर कुछ बतला कर बड़ी मुश्किलसे इतनी बातें प्रभुको समझाईथीं। प्रभुने कहा—"तुम भूलते हो। तुमने जो कहा सो नहीं है।" अर्थात् झूठ है। झूठका प्रति शब्द उनकी भाषामें नहीं है। समुद्रके बाद कोई देश होना या जानवरोंका जहाजके द्वारा समुद्रमें जहां चाहे तहां चला जाना प्रभुकी समझसे असम्भवही था। उन्हें निश्चय था कि कोई हौय्ह्न्ह्न्म जहाज नहीं बना सकता है और न कोई इसके चलानेका काम याहुओंके सपुर्द कर सकता है।

हौय्ह्न्ह्न्म अर्थात् हिनहिन उनकी भाषामें घोड़ेको कहते हैं। इसकी व्युत्पत्ति है—"प्रकृतिकी पूर्णता।" मैंने प्रभुसे कहा कि अभी मैं आपकी बोली अच्छी तरह बोल नहीं सकता। लेकिन जहां तक बनेगा जल्दी इसके बोलनेकी कोशिश करूंगा। आशा है कि थोड़ेही दिनोंमें मैं आपको आश्चर्यमें डालनेवाली बातें सुनानेके योग्य हो जाऊंगा। इतना सुनतेही उसने अपनी घोड़ी, बछेरे, बछेरी तथा नौकरोंको मेरे पढ़ानेके लिये हुक्म दे दिया जिसको मौका लगता था वही मुझको पढ़ाता था। इसके सिवा प्रभु स्वयं प्रतिदिन दो चार घण्टे मेरे साथ माथा खाली करते थे आस पासके सब गावोंमें बात फैल गई कि एक विचित्र याहू आया है जो हिनहिनकी तरह बोलता तथा अपने चाल चलनमें चतुर मालूम होता है। फिर क्या था लगी अच्छे अच्छे घरकी घोड़ियां सब मेरे यहां आने। वह सब आकर मुझसे बात चीत करतीं और प्रसन्न होती थीं। जो कुछ पूछतीं उसका जवाब उन्हीं की बोलीमें यथाशक्ति दे देताथा। इससे फल यह हुआ कि पांचवें महीनेमें मैं वहांकी भाषा अच्छी तरह समझने लगा तथा एक प्रकारसे बोलने भी लगा।

वह हिनहिन जी देखने तथा मुझसे बोलने आया था मुझको ठीक याहू नहीं कहता था क्योंकि मेरे शरीर पर एक जुदा ढङ्गकी खाल थी। इसके सिवा याहुओंकीसे मेरे बाल नहीं थे। लेकिन यह भेद पन्द्रह दिनके बाद प्रभुको अकस्मात् मालूम होगया।

पाठकोंसे मैं पहलेही निवेदन कर चुका हूं कि रातको जब सब सो जाते थे तब मैं कपड़े उतारता और सवेरे सबके उठनेके पहलेही पहन लेता था। एक दिन बड़े तड़के प्रभुने मेरे बुलाने के लिये अपने नौकर लाल बछेरेको भेजा था। जब वह आया मैं खर्राटे लेरहा था, कपड़े अलग एक तरफ रखे थे और कमीज कमरके ऊपर पड़ी थी। उसकी आवाज सुन कर मैं चौंक उठा तो देखा कि वह घबड़ानासा कुछ कह रहा है। सन्देसा सुना कर वह तुरत नौ दो ग्यारह हुआ। जो कुछ उसने देखा था उस का न जाने क्या गड़बड़ सड़बड़ हाल प्रभुसे आकर कह दिया। कोट पटलून डाट कर जब मैं वहां पहुंचा तो प्रभुने देखतेही पूछा— "क्या सोने पर तुम कुछ औरही तरहके मालूम होते हो ? बछेरा कहता था कि तुम्हारा कोई अङ्ग उजला, कोई पीला और कोई भूरा है।"

याहू बनाये जानेके डरसे अबतक मैंने लिबासके भेदको छिपाया था पर सब हवा हुआ। अब और छिपाना उचित नहीं समझा। अगर छिपाता भी तो अब छिप नहीं सकता क्योंकि मेरे कपड़े जूते सब पुराने होगये थे। थोड़ेही दिनके बाद बेकाम होजाते। फिर याहुओंकी अथवा और किसी जानवरोंकी खालसे देह ढांकनेका कुछ न कुछ उपाय करनाही पड़ता जिससे सब बातें पीछे आपही खुल जातीं। इस लिये प्रभुवरसे मैंने स्पष्ट कह दिया कि उस देशमें जहांसे मैं आया हूं मेरी जातिवाले सब सर्दी गर्मीसे बचने तथा लज्जा निवारणके लिये अपने अङ्गोंको किसी किसी जीवके बालोंसे बने हुए कपड़ोंके द्वारा सदा ढांके रहते हैं। अगर आप आज्ञा दें तो मैं सबूतके लिये अपना बदन खोल कर दिखला सकता हूं परन्तु

एक प्रार्थना है कि प्रकृतिने जिन अङ्गोंको छिपानेके लिये बताया है उन्हें न खोलूंगा।" इतना सुन कर प्रभु बोले—"तुम्हारी बिलकुल बातेंही अनूठी हैं विशेष कर पिछली तो अत्यन्त है। मेरी समझ में यह नहीं आया कि प्रकृतिने जो कुछ दिया है उसके छिपानेके लिये वही क्यों बताने लगी। मैं और मेरे घरवाले तो किसी अङ्ग की लाज नहीं करते हैं। खैर, जो तुम्हें भावे सो करो।" इस पर मैंने पहले बटन खोले फिर कोट उतार डाला। पीछे फतुही, पटलून, मोजे और जूते भी उतार दिये। परदेके लिये कमीजको सरका कर कमरसे लपेट लिया।

प्रभुने बड़े आश्चर्य और कौतूहलसे मेरे इस कामको अवलोकन किया। मुझमेंसे लेकर हर एक कपड़ेको गौरसे देखा, मेरी देह को धीरे धीरे सहलाया और घूम घूम कर खूब देखा भाला। बहुत सोच विचार कर आप बोले—यह तो निश्चयही है कि तुम याहू हो मगर इन याहुओंसे और तुमसे बड़ा फर्क है। तुम्हारा चमड़ा साफ, चिकना और मुलायम है। तुम्हारे शरीरके बहुतेरे हिस्सोंमें बाल नहीं हैं पञ्जे भी तुम्हारे छोटे और दूसरे ढङ्गके हैं। तुम सदा पिछले पैरोंसे चलते हो इत्यादि।" इसके बाद आपने कपड़े पहनने का हुक्म दिया। मैं भी सर्दीसे कांप रहा था इससे चटपट आप का हुक्म तामील किया।

मैंने कहा—"आप बार बार याहू कहते हैं तो मेरी आत्माको बड़ी व्यथा पहुँचती है क्योंकि यह कुत्सित जीव मुझको फूटी आंख भी नहीं सुहाते। इन्हें देख कर न जाने क्यों मुझको घृणा होती है। इसलिये हाथ जोड़ता हूं मुझको याहू न कहा कीजिये और अपने घरवालों तथा इष्ट मित्रोंसे भी कह दीजिये कि कोई मुझको याहू न कहा करे। एक प्रार्थना और है कि मेरे कपड़ेका हाल आपके सिवा और कोई जानने न पावे। अन्ततः जब तक यह कपड़े फट न जायं तब तक किसीसे कुछ मत कहिये और लाल बछेरेसे भी कह दीजिये कि किसीसे कुछ न कहे।"

प्रभुने मानुषद प्रार्थनाको स्वीकार किया। जब तक वह फटे ीं किसीने इस रहस्यको नहीं जाना। फिर मैंने क्या प्रबन्ध ‍िया सो आगे चल कर लिखूंगा। प्रभुकी आज्ञासे मैं फिर जी ान लगा कर उनकी बोली सीखने लगा। मेरे यहांकी बातें ानेके लिये वह बहुत व्यग्र थे। मेरी योग्यता देख वह बहुत ‍ंकित होते थे।

अब वह और भी दूनी मिहनतसे मुझको वहांकी भाषा सिखाने ‍े। सब अपने सङ्ग मुझको लेजाते थे। कोई मुझसे छेड़ छाड ‍ीं करता था। छेड़छाड़के लिये उन्होंने सबको मना कर ‍िया था। मेरी अनूठी बातें सुननेहीके लिये यह सब सुप्रबन्ध ‍िया गया था।

पढ़ानेमें वह कड़ा घूर परिश्रम करतेही थे। इसके सिवा जब उनसे मिलता तो रोज वह मेरा अहवाल पूछते थे। मैं भी ‍यथासाध्य उनके प्रश्नोंका उत्तर देता था। इससे सब बातों ‍ा साधारण मगर अधूरा ज्ञान उनको होगया था। अब कैसे ‍ैन बात हुई सो लिख कर पाठकोंको कष्ट पहुंचाना मैं नहीं ‍ाहता लेकिन मैंने अपने बारेमें यों कहा था:—

"मेरा देश यहांसे बहुत दूर है जैसा कि मैं कह चुका हूं। ‍ामें हम लोग पचास आदमी जहाजमें जो आपके घरसे बड़ा था ‍ैठ कर चले। वह लकड़ीका बना हुआ था और, जल पर तैरता ‍ा। आपसमें लड़ाई होजानेके कारण साथियोंने मुझको जहाज ‍े निकाल दिया। मैं बिना समझे बूझे एक ओर चल पडा। ‍लते चलते यहां तक आपहुंचा। रास्तेमें याहुओंने रोका तो ‍आपहीने जाकर छुड़ाया था।" जहां तक बना मैंने अच्छी तरह ‍हाजका खाका खींचा। पालसे वह कैसे चलता है सो रुमालसे ‍तलाया। मतलब यह कि जहाज क्या वस्तु है सो मैंने उन्हें भली ‍ांति समझा दिया था। यह सुन कर प्रभुने पूछा—"अच्छा यह

तो कहो जहाज बनाता कौन है? भला यह कब सम्भव है कि तुम्हारे यहांके ह्निनह्निन इसका प्रबन्ध पशुओंके हाथ सौंपेंगे?"

मैं—अब कुछ कहनेकी हिम्मत नहीं पड़ती। अगर बुरा न मानें तो मैं जवाब देसकता हूं और अपने यहांकी अनूठी बातें भी सुना सकता हूं।

प्रभु—नहीं मानूंगा। मैं कसम खाके कहता हूं कि बुरा न मानूंगा। तुम्हें जो कुछ कहना है सो निडर होके कहो। मैं तुम्हारी बातें सुननेको बहुत बेचैन हूं।

मैं—जहाज तो मेरे जैसे जीवही बनाते हैं। केवल यही जीव मेरे यहां और उन देशोंमें जहांसे मैं हो आया हूं राज्य करते तथा बुद्धिमान गिने जाते हैं। यहां ह्निनह्निनोंको आदमियोंकी तरह काम करते देख कर मुझे उतनाही विस्मय हुआ जितना आप लोगोंको मुझे देख कर हुआ। इन याहुओंकी सूरत शकलें मुझसे मिलती हैं पर मैं नहीं कह सकता यह इतने जङ्गली तथा नीच क्यों होगये। अगर मैं भाग्यके जोर से अपने देशमें पहुंच कर यहांकी बातें कहूंगा तो लोग यही कहेंगे कि "तुमने कहा सो नहीं है।"। कोई भी इसको सम्भव न मानेगा कि ह्निनह्निनका आधिपत्य याहुओंके ऊपर है। घोड़े आदमियों पर हुकूमत करते हैं यह कौन विश्वास करेगा?

चतुर्थ परिच्छेद।

मेरी बातें सुनकर प्रभुकी सुधबुध काफूर होगई। चेहरेसे बेचैनी टपकने लगी। सन्देह और अविश्वास करनेकी चाल वहां इतनी कम थी कि ऐसे ऐसे मौकों पर क्या करना चाहिये सो वहां वाले नहीं जानते। ऐसे तो प्रभुकी समझ बहुत चोखी थी परन्तु मुझे याद है कि जब कभी मनुष्यके स्वभावकी चर्चा चलती और मैं प्रसङ्ग वश मिथ्या भाषण तथा असत्य वर्णनके बारेमें कुछ कहता तो वह बड़ी कठिनतासे मेरे भावोंको समझते थे। वह कहा करते थे—

एक दूसरेके मनके भावोंको समझाना और सच्ची बातें सुनानाही बोलनेके उद्देश्य हैं। अगर किसीने वह बात कही जो नहीं है अर्थात् झूठ तो बोलनेके उद्देश्य सिद्ध नहीं हुए। क्योंकि असल बातोंका जानना तो दूर रहा मैं कहनेवालेके तात्पर्यको समझता हूं यह भी नहीं कहा जासकता। फल यह होगा कि मैं ज्योंका त्यों रहूंगा या उससे भी खराब होजाऊंगा क्योंकि तब उजलेको काला और बड़े को छोटा समझने लगूंगा।" उस झूठके बारेमें जिसे मनुष्य लोग पूरे तौरसे समझते और बोलते हैं घोड़ोंका बस यही ख्याल है।

अच्छा अब मैं अपने किस्सेकी तरफ झुकता हूं। जब मैंने कहा कि हमारे यहां याहूही राज्य करते हैं तो यह उनके ध्यानहीमें न आया। प्रभुने पूछा—"क्या तुम्हारे देशमें हिनहिन हैं? अगर हैं तो वह क्या करते हैं?" मैंने कहा—"हां हैं। गर्मीमें तो वह घास मैदानमें चरते, जाड़ेमें तबेलेमें रहते और सूखी घास तथा जई खाते हैं। याहू लोग हिनहिनोंको मलने, खरहरा करने, सुम साफ करने, दाना खिलाने आदिके लिये रक्खे जाते हैं।"

प्रभु—बस बस मैं समझ गया। याहू चाहे कितनेही बुद्धिमान हों लेकिन तुम्हारे राजा हिनहिनही हैं। मैं जीसे चाहता हूं कि हमारे याहू भी ऐसेही अकलमन्द होजायं।

मैं—माफ कीजिये अब आगे और कुछ मैं न कहूंगा क्योंकि मुझको विश्वास है कि अगर कुछ कहूंगा तो आप जरूर रुष्ट हो जायंगे।

प्रभु—नहीं नहीं मैं कभी रुष्ट न हूंगा। तुम अच्छा बुरा जो जानते हो सो निर्भय होकर कह जाओ। मैं वादा करता हूं मैं कभी रुष्ट न हूंगा।

मैं—अच्छा तो सुनिये। हमारे यहां हिनहिनको घोड़ा कहते हैं। घोड़े सब जानवरोंसे सुन्दर और भले होते हैं। इनसे बल और तेजीमें कोई पशु बढ़कर नहीं है। बड़े आदमियोंके घोड़े सवारी या घुड़दौड़के काममें आते अथवा गाड़ियोंमें जोते जाते हैं। जब

तो कहो जहाज बनाता कौन है? भला यह कब सम्भव है कि तुम्हारे यहांके ह्विनह्विन इसका प्रबन्ध पशुओंके हाथ सौंपेंगे?"

मैं—अब कुछ कहनेकी हिम्मत नहीं पड़ती। अगर बुरा न मानें तो मैं जवाब देसकता हूं और अपने यहांकी अनूठी बातें भी सुना सकता हूं।

प्रभु—नहीं मानूंगा। मैं कसम खाके कहता हूं कि बुरा न मानूंगा। तुम्हें जो कुछ कहना है सो निडर होके कहो। मैं तुम्हारी बातें सुननेको बहुत बेचैन हूं।

मैं—जहाज तो मेरे जैसे जीवही बनाते हैं। केवल यही जीव मेरे यहां और उन देशोंमें जहांसे मैं हो आया हूं राज्य करते तथा बुद्धिमान गिने जाते हैं। यहां ह्विनह्विनोंको आदमियोंकी तरह काम करते देख कर मुझे उतनाही विस्मय हुआ जितना आप लोगोंको मुझे देख कर हुआ। इन याहुओंकी सूरत शकलें मुझसे मिलती हैं पर मैं नहीं कह सकता यह इतने जङ्गली तथा नीच क्यों होगये। अगर मैं भाग्यके जोर से अपने देशमें पहुंच कर यहांकी बातें कहूंगा तो लोग यही कहेंगे कि "तुमने कहा सो नहीं है।"। कोई भी इसको सम्भव न मानेगा कि ह्विनह्विनका आधिपत्य याहुओंके ऊपर है। घोड़े आदमियों पर हुकूमत करते हैं यह कौन विश्वास करेगा?

चतुर्थ परिच्छेद।

मेरी बातें सुनकर प्रभुकी सुधबुध काफूर होगई। चेहरेसे बेचैनी टपकने लगी। सन्देह और अविश्वास करनेकी चाल वहां इतनी कम थी कि ऐसे ऐसे मौकों पर क्या करना चाहिये सो वहां वाले नहीं जानते। ऐसे तो प्रभुकी समझ बहुत चोखी थी परन्तु मुझे याद है कि जब कभी मनुष्यके स्वभावकी चर्चा चलती और मैं प्रसङ्ग वश मिथ्या भाषण तथा असत्य वर्णनके बारेमें कुछ कहता तो वह बड़ी कठिनतासे मेरे भावोंको समझते थे। वह कहा करते

"एक दूसरेके मनके भावोंको समझाना और सच्ची बातें सुनाना ही बोलनेके उद्देश्य हैं। अगर किसीने वह बात कही जो नहीं है अर्थात् झूठ तो बोलनेके उद्देश्य सिद्ध नहीं हुए। क्योंकि असल बातोंका जानना तो दूर रहा मैं कहनेवालेके तात्पर्य्यको समझता हूं यह भी नहीं कहा जासकता। फल यह होगा कि मैं ज्योंका त्यों रहूंगा या उससे भी खराब होजाऊंगा क्योंकि सब उजलेको काला और बड़े को छोटा समझने लगूंगा।" इस झूठके बारेमें किसी मनुष्य लोगपूरे तौरसे समझते और बोलते हैं घोड़ोंका बस यही ख्याल है।

अच्छा अब मैं अपने किस्सेकी तरफ झुकता हूं। जब मैंने कहा कि हमारे यहां याहूही राज्य करते हैं तो यह उनके ध्यानहीमें न आया। प्रभुने पूछा—"क्या तुम्हारे देशमें हिनहिन हैं? अगर हैं तो वह क्या करते हैं?" मैंने कहा—"हां हैं। गर्मीमें तो वह सब मैदानमें चरते, जाड़ेमें तबेलेमें रहते और सूखी घास तथा जई खाते हैं। याहू लोग हिनहिनोंकी मलने, खरहरा करने, सुम साफ करने, दाना खिलाने आदिके लिये रक्खे जाते हैं।"

प्रभु—बस अब मैं समझ गया। याहू चाहे कितनेही बुद्धिमान हों लेकिन तुम्हारे राजा हिनहिनही हैं। मैं जीसे चाहता हूं कि ये याहू भी ऐसेही अकलमन्द होजायें।

मैं—माफ कीजिये अब आगे और कुछ मैं न कहूंगा क्योंकि मुझको विश्वास है कि अगर कुछ कहूंगा तो आप जरूर रुष्ट हो जायेंगे।

प्रभु—नहीं नहीं मैं कभी रुष्ट न हूंगा। तुम अच्छा बुरा जो जानते हो सो निर्भय होकर कह जाओ। मैं वादा करता हूं मैं कभी रुष्ट न हूंगा।

मैं—अच्छा तो सुनिये। हमारे यहां हिनहिनको घोड़ा कहते हैं। घोड़े सब जानवरोंमें सुन्दर और भले होते हैं। इनसे बल वेगमें कोई पशु बढ़ कर नहीं है। बड़े आदमियोंके घोड़े सवारी या घुड़दौड़के काममें आते अथवा गाड़ियोंमें जोते जाते हैं

तक वह चङ्गे रहते हैं उनकी खूब खातिर और हिफाजत होती है लेकिन बीमार या लंगड़े होजानेसे बेच दिये जाते हैं। फिर विचारोंको अन्त समय तक सब तरहके कठिन परिश्रम करने पड़ते हैं। मरने पर खालें खेंच कर बेच दी जाती हैं और लाशोंको कुत्ते और गिद्ध खाजाते हैं। लेकिन मामूली दर्जेके घोड़ोंका ऐसा सौभाग्य कहां! इन्हें किसान और कुली वगैरह नीच लोग रखते हैं जो मेहनत तो खूब लेते पर खानेको कम देते हैं।

इसके सिवा मैंने घोड़ों पर चढ़नेका ढङ्ग वर्णन किया। लगाम जीन, कांटे, चाबुक साज वगैरह की सूरत शकल बताई। मैं यह भी कह दिया कि पथरीली राहसे चलनेमें घोड़ोंके सुम अवसर टूट जाते हैं। इसके बचावके लिये घोड़ोंके पैरोंमें एक कां पदार्थका पत्तर जड़ दिया जाता है।

यह सुन कर प्रभु बहुत खिन्न हुए। फिर आप बोले—"तुम लोगोंको हिनहिनकी पीठ पर चढ़नेकी हिम्मत कैसे पड़ती है: यहांका कमजोरसे कमजोर हिनहिन याहूको सजेमें दबोच सकता है और पीठपर चढ़नेसे तो उसका कामही तमाम कर सकताहै।"

मैं—आपका कहना ठीक है मगर हमारे देशमें घोड़े बचपनही से सिखाये जाते हैं लेकिन जो जरा बदमाश होते वह गाड़ियोंमें जोते जाते हैं। शैतानी करनेसे खूब पीटे भी जाते हैं। जो घोड़े सवारी या गाड़ीके काममें आते हैं वह दो वर्षके होने पर आखता कर दिये जाते हैं। इससे वह सीधे और शान्त हो जाते हैं। वह सजा और इनामको खूब समझते हैं। पर आप यह निश्चय जान लें कि उनको जरा भी ज्ञान नहीं होता। उन्हें निरे याहूही समझिये।

ऊपर कही हुई बातें प्रभुको समझानेमें मुझे बड़ा कष्ट उठाना पड़ा। क्योंकि उनकी भाषामें शब्दोंका बहुत तोड़ा था। हम लोगों उनकी आवश्यकता और विषयवासना भी थोड़ी है फिर शब्द वे कहांसे? इसी लिये बोलनेके समय हाथोंसे, आंखोंसे और

ोंसे मदद लेनी पड़ी थी। घूम कर नाके छूनी पड़ी थी। हिन
न जातिके साथ हम लोगोंका यह जङ्गली व्यवहार सुन कर
होंने किस उत्तम रीतिसे अपना कोप प्रकाश कियाथा सो बताना
सम्भव है। उन्हें आख्ता करनेकी चाल विशेष कर बहुत बुरी
ी क्योंकि इससे घोड़ोंकी स्वाधीनता तथा वंश नास होजाता है।
होंने कहा कि अगर कोई देश ऐसा हो जहां केवल याहूकी
ईमान हों तो वह जरूर राज्य कर सकते हैं क्योंकि अन्तमें सदा
द्धिकी जय और पशुबलकी पराजय होती है। संसारके कामों
लिये तुम्हारे जैसा कुढङ्ग और कोई सप्राण जीव नहीं है। इसके
द आप बोले—"अच्छा यह तो कहो कि तुम जिन लोगोंके
थ रहते हो वह रूप रङ्गमें तुमसे हैं या हमारे याहुओंसे ?"
मैं—मेरी उमरवाले तो मेरेहीसे हैं पर बच्चे और औरतें बहुत
न्दर और कोमल होती हैं। उनकी देह तो दूधसी उजली
ती है।

प्रभु—हां ठीक है। तुमसे और याहुओंसे बड़ा भेद है। तुम
हुत साफ सुथरे तथा एक दम बदसूरत नहीं हो। पर असल
यदेके ख्यालसे तुम याहुओंसे भी गये बीते हो। तुम्हारे अगले
ा पिछले पैरोंके नख किसी कामके नहीं। तुम्हारे अगले पैरोंको
पैर नहीं कह सकता क्योंकि मैंने कभी तुम्हें इनसे चलते देखा
हीं और वह मुलायम भी इतने हैं कि जमीनमें टेके नहीं जा
कते। तुम उन्हें बराबर खुला रखते हो और कभी कभी जो
उन चढ़ा लेते हो सो पिछले पांवोंके वेठन जैसे मजबूत नहीं हैं।
म्हारी चाल भी ठीक नहीं क्योंकि हरवक्त गिरनेका डर बना
 है। अगर पीछेवाले पैरोंमेंसे एक भी फिसला तो धड़ामसे
 पड़ोगे। तुम्हारा मुंह चपटा है, नाक निकली हुई है, आंखें
 ठीक सामने हैं इससे अगल बगलकी चीजें बिना सिर घुमाए
 नहीं ... ना उठाए या
... पिछले पैर

टुकड़े टुकड़े क्यों हैं? यह इतने कोमल हैं कि चमड़ेके वेठन चढ़ाए बिना तुम तेज पत्थरोंपर चल नहीं सकते। सर्दी गर्मीसे बचनेके लिये तुम्हें अपनी देह पर खोल चढ़ानी और उतारनी पड़ती है। यह भी रोजका एक झंझटही ठहरा। यहांके जितने जानवर हैं सब याहुओंसे घृणा करते हैं। कमजोर तो उनसे किनारा खींचते और जबरजस्त उन्हें अपने पास फटकने नहीं देते हैं। माना कि तुम बुद्धिमान हो मगर तुमसे सब जानवरोंका जो स्वाभाविक विरोध है सो दूर होना कब सम्भव है और याहुओंका सुधार भी फिर कैसे हो सकता है? इन्हें घरमें रख कर कामके लायक बनाना हमारे बूते हो नहीं सकता। जोहो इस विषयको अब मैं तूल नहीं दिया चाहता। क्योंकि मुझको तुम्हारी कहानी सुननेकी अत्यन्त लालसा लग रही है। तुम्हारा जन्म किस देशमें हुआ और यहां आनेके पहले तुम पर क्या क्या बीती सो कह सुनाओ।

मैं—मैंभी आपको सब तरहसे सन्तुष्ट किया चाहता हूं पर एक बातका बहुत सन्देह है कि जिन विषयोंको आप बिलकुल जानते नहीं उनको भली भांति समझाना सम्भव है या नहीं क्योंकि उपमा देनेके लिये भी यहां वैसी कोई वस्तु नजर नहीं आती है। खैर, मैं कोई बात उठा न रखूंगा। लेकिन आपसे एक प्रार्थना है कि जब आवश्यकता हो तो उचित शब्दोंसे मेरी सहायता करते जाइयेगा।

प्रभुके प्रार्थना स्वीकार करने पर मैंने यों कहना शुरू किया—"मेरा जन्म अच्छे कुलमें हुआ है। मेरी जन्मभूमि इङ्गलेण्ड नामका एक टापू है जो यहांसे उतनीही दिनकी राह है कि जितने दिनमें आपका सबसे जबरदस्त नौकर (घोड़ा) सूर्य्यके वार्षिक मार्गको तै कर सके। मैंने लड़काईसे जर्राही सीखी शरीरके फोड़े फुनसियां घाव वगैरहको आराम करनाही जर्राहोंका रोजगार है। मेरे देशका राज्य पाट एक औरत चलाती है। जिसको हम लोग रानी कहते हैं। रुपयेके

लिये मैंने घरबार छोड़ा है। रुपये लेकर बालबच्चोंका पालन करूंगा। इस पिछले सफरमें मैं एक जहाजका कप्तान था और मेरे नीचे पचास याहू काम करते थे। उनमेंसे बहुतेरे मर गये तो और और देशोंकि कुछ लोग उनकी जगहों पर रखने पड़े। दो बार हमारा जहाज डूबते डूबते बच गया। एक बार तो एक बड़े तूफान की चपेटमें आगया और दूसरी बार एक पहाड़से टकरा गया था।

प्रभु—जब तुम्हारे साथी मर गये और तुम पर विपद आई तो औरोंको तुम्हारे साथ आनेकी कैसे हिम्मत पड़ी अथवा तुमनेही उनको कैसे बहकाया?

मैं—जो लोग मेरे साथ आये थे उनका कहीं ठिकाना न था। दाने दानेको वह मुहताज थे। दरिद्रता या भारी अपराधके कारण उन सबने अपनी अपनी जन्मभूमि त्यागदी थी। कोई मुकद्दमेके मारे तबाह होगया था, कोई शराब, रण्डी और जुएमें अपना सब स्वाहा कर चुका था। कोई राजविद्रोह या विश्वासघात करके देशसे भागा था—कोई हत्या, चोरी, विष प्रयोग, डकैती, जालसाजी, नकली सिक्के बना और झूठी गङ्गाजली उठा कर चम्पत हुआ था। किसीने घृणित व्यभिचार करके काला मुंह किया और कोई अपना सङ्ग छोड़ कर शत्रुसे जा मिला था। बहुतों ने जेलकी बेड़ियां काटी थीं। फांसी पड़ने या जेलमें भूखों मरनेके डरसे किसीको भी स्वदेश लौटनेकी हिम्मत नहीं पड़तीथी। इसीसे बेचारे पेट भरनेकी फिकरमें इधरसे उधर डोलते थे।"

अब मैं बोलता था तो प्रभु बराबर टोकते जाते थे। जो बात उनकी समझमें नहीं आती थी उसको वह खोद खोदकर पूछतेथे। मैंने भी उन पापोंका रङ्ग ढङ्ग जिनके सबब हमारी समाजके बहुत से लोग देश छोड़ छोड़के भागे हैं प्रभुको बड़े शब्दाडम्बरसे समझाया। कई दिनके परिश्रमके बाद उनकी समझमें यह सब बातें आईं पर तो भी वह पूछते थे कि लोग पाप क्यों करते हैं। इसके करनेकी जरूरतही क्या है। मैंने तब शक्ति और धनकी

चाहना तथा डाह, द्रोह, मदिरापान और कामेच्छाके भयानक फलकी तरफ उनका ध्यान दिलाया! इन सबका वर्णन करनेके समय मुझको अनुमान और घटना दोनोंकी सहायता लेनी पड़ी थी। जो बात पहले कभी देखी सुनी नहीं उसका ख्याल अचानक आजानेसे जो दशा होजाती है मेरी बातें सुन कर वही दशा घोड़ेराजकी हुई। वह आश्चर्यके साथ भौंहे तानके ताकने लगे शक्ति, शासन, युद्ध, कानून दण्ड आदि हजारों शब्दोंका टोटा अश्व भाषामें था अतएव इनका यथार्थ अभिप्राय समझानेमें बड़ी कठिनाई हुई। पर उनकी समझ अच्छी थी और इधर वार्तालाप होते होते विचारनेकी शक्ति भी बढ़ गई थी इससे शेषमें उन्हें पूरे तौरसे मालूम होगया कि हमारे देशके मनुष्य क्या क्या करनेके योग्य हैं। इसके उपरान्त उन्होंने युरोपकी खास कर इङ्गलैण्डकी मुख्य मुख्य बातें कहनेके लिये अनुरोध किया।

पञ्चम परिच्छेद।

दो ढाई सालमें मेरे और प्रभुके जो वार्तालाप हुआ था उसका सार खैंच कर पाठकोंको मैं सुनाता हूं। मैं ज्यों ज्यों उनकी भाषा में व्युत्पन्न होता जाता था त्यों त्यों सविस्तर वृत्तान्त सुननेके लिये उनकी भी तृष्णा बढ़ती जाती थी। मैंने भी कोई बात उठा नहीं रक्खी। युरोपका अच्छी तरहसे पेट फाड़ कर उनके सामने धर दिया। वाणिज्य व्यापार शिल्प विज्ञानको भी मैंने नहीं छोड़ा। विविध विषयों पर जो प्रश्नोत्तर चलते सो कभी घटतेही न थे। पर मैं तो यहां उन्हीं बातोंका सारांश लिखूँगा जो अपने देशके विषयमें हुई थीं। मैंने बातोंका सिलसिला यथा शक्ति दुरुस्त कर दिया है। समयादिकी कुछ परवाह न कर सत्यताकी तरफ ध्यान दिया है। मगर अफसोस सिर्फ यही है कि प्रभुकी दलीलें और [illegible]विरे ठीक ठीक प्रकाश न कर सकूंगा क्योंकि एक तो मुझमें [illegible]नी योग्यता नहीं और दूसरे हमारी अंगरेजी भाषा भी गंवारी है। प्रभु[illegible] आज्ञानुसार मैंने कहा—"तीसरे विलियमके समय राज्य

में बहुत उलट पलट हुआ था। उसीने फरांसके साथ महायुद्ध ठाना जिसको उसके उत्तराधिकारीने भी चलाया था। इसमें सब बड़े बड़े ईसाई राजा शामिल हुए थे। इस युद्धमें कोई दस लाख याह्नि (मनुष्य) खेत रहे, शायद एकसौसे अधिक नगर लिये गये और सैकड़ों जहाज डबोये या जला दिये गये होंगे।"

प्रभु—अच्छा राजा आपसमें एक दूसरेसे लड़ते हैं इसका मामूली सबब क्या है?

मैं—सबब तो बहुत हैं पर दो चार भारी भारी सुनाता हूं। एक तो राजोंकी राज तृष्णा कभी अघाती नहीं है। दूसरे मन्त्रियों की बदमाशी जो राजोंको युद्धमें लगा कर आप हाथ मारते हैं और प्रजाकी पुकार राजा तक पहुंचने नहीं देते। सच पूछिये तो मंत्री लोग अपना ऐब ढांकनेहीके लिये राजोंको युद्धादिमें फंसा देते हैं। मतभेदमें भी लाखोंकी जान गई हैं। मांस रोटी है या रोटी मांस है—किसी फलका रस लहू है या शराब——बांसुरी बजाना पुण्य है या पाप—डण्डेको अर्थात् क्रूसको चूमना अच्छा है या आगमें डालना—कोटके लिये बढ़िया रङ्ग कौनहै काला, उजला, लाल या भूरा—कोट लम्बा हो या छोटा, चौड़ा हो या सकड़ा साफ हो या मैला—इत्यादि इत्यादि बातोंही पर युद्ध चलता है। सो युद्ध भी ऐसा कि जो बरसों चले और जिसमें लाखोंकी जान जाय।

कभी कभी दो राजा तीसरेका राज्य हड़प करनेके लिये आपस में लड़ मरते हैं जहां उनका कुछ भी हक नहीं है। कभी कभी कोई राजा एकके भयसे दूसरेके साथ लड़ जाता है। कभी शत्रुके बहुत जबरदस्त होनेसे और कभी बहुत कमजोर होनेसे भी संग्राम होता है। जो चीज पड़ोसीके पास है उसको हम लेना चाहते हैं या हमारे पास है उसे पड़ोसी लिया चाहते हैं, तभी इसी बात के लिये लड़ाई होती है। जब तक उससे उस चीजको ले न लें या दे न दें लड़ाई बन्द नहीं होती। अकाल और महामारीने जिस देशको तबाह कर दिया है और जहां आपसमें फूट फैल गई है उस

देश पर चढ़ाई करना तो युद्धका एक उचित कारणहै। उस निकट वर्ती जिनसे भी जिसका राज्य लेलेनेसे हमारा राज्य दृढ़ और रक्षित हो लड़ाई करना उचित समझा जाता है। जहां मनुष्य दरिद्र और मूर्ख हैं वहां सेना भेजकर आधोंको मरवा डालना और बाकी को सुसभ्य बनानेके लिये गुलाम बनाना भी न्याय सङ्गत है। किसी राजाने शत्रुके आक्रमणसे बचनेके लिये दूसरे किसी राजाकी सहायता मांगी। उसने आकर सहायताकी पर पीछे शत्रुको भगा कर आपही उसका शत्रु बन बैठा। जिसकी रक्षाके लिये आना उसी को मार डालने, कैद करने, या निकाल बाहर करनेमें बड़ा नाम और इज्जत होती है। राजाओंमें रक्त वा विवाहसे सम्बन्ध होना भी युद्धका एक कारणहै। नाता जितना निकट होगा लड़ाई भी उतनीही ज्यादे होगी। गरीब बेचारे भूखों मरते हैं और अमीर घमण्ड करते हैं। घमण्ड और दरिद्रतासे सदा बैर है। इन कारणोंसे फ़ौजके सिपाहीका काम सबसे इज्जतदार समझा जाता है क्योंकि यह सिपाही अपने निर्दोष जाति भाइयोंके मारनेके लिये रक्खे जाते हैं। उनके जाति भाइयोंने चाहे उनका कुछ न बिगाड़ा हो पर वह मनमाने तौरसे उनकी हत्या करेंगे।

युरोपमें ऐसे भी बहुतसे गरीब राजा हैं जो आप तो किसीसे लड़ नहीं सकते परन्तु अपनी फौज दूसरे धनवान् राजाओंको भाड़े पर देते हैं। जो रुपये मिलते हैं उनमेंसे चार आने तो सिपाहियों को देते और बारह आने आप लेलेते हैं। इसीसे उनका गुज़ारा मजेमें होता है युरोपके उत्तर भागमें ऐसे राजा अनेक हैं।

प्रभु—तुमने जो कुछ कहा उससे तुम्हारी बुद्धिमानीका बिलक्षण पता लगता है। खैर, आनन्दकी बात है कि लज्जा भयसे बड़ी है और परमेश्वरने भी तुमको ज्यादे दुष्टता करनेके योग्य नहीं बनाया है। तुम्हारा मुंह ऐसा चपटा है कि तुम जबरदस्ती किसी को काट नहीं सकते। तुम्हारे पञ्जे ऐसे छोटे और मुलायम हैं कि हमारा एक याहू तुम्हारे जैसे दर्जन भरके दांत खट्टे कर सकता है।

इस बातसे तुमने युद्धमें मारे जानेवालोंकी जो गिनती बताई है वो मुझे—"वह चीज जो नहीं है" (झूठ) मालूम पड़ती है।

प्रभुकी अज्ञानता देख मैं मुस्कराहट रोक न सका। मैं युद्ध विद्यासे अनभिज्ञ न था। मैंने तोप, बन्दूक, कराबीन, पिस्तौल, गोली, छर्रा, बारूद, तलवार, संगीन, युद्ध, किला घेरना हटाना, चढ़ाई करना, सुरङ्ग खोदना, तोपसे उड़ाना, जल संग्राम हजार मनुष्य समेत जहाज डुबोना, हरएक तरफ बीस बीस हजार आदमियोंका मारा जाना, मरनेके समयका कराहना, अङ्गोंका हवामें उड़ना, धूआं धक्कड़, गुलगपाड़ा, गोलमाल, घोड़ोंकी टापोंके नीचे कुचल जाना, रणक्षेत्रमें कुत्तों भेड़ियों और गिद्धोंका मांस खाना, लूटना, छीनना, मूसना, जलाना, उजाड़ना आदि बातोंका पूरा हाल प्रभुको कह सुनाया। अपने प्यारे देशवासियोंके साहसकी प्रशंसा करनेके लिये कहा था कि मैंने आंखोंसे सैकड़ों दुश्मनोंको तोपोंके द्वारा उड़ते तथा उनके अङ्गोंको टुकड़े टुकड़े होकर आकाशमें गिरते देखा है।

मैं और कुछ कहनेको था पर प्रभुने मना किया और कहा—"जो कोई याहुओंका स्वभाव जानता है सो सहजमें विश्वास कर सकता है कि ऐसे निकृष्ट जीवको कहीं ईर्षाके समान धूर्तता और शक्ति होती तो उसके लिये सब काम जो तुमने कहा सम्भव थे। लेकिन तुम्हारी बातोंसे सारी जाति पर मेरी घृणा और भी बढ़ गई है। ऐसी बातें मैंने पहले कभी नहीं सुनी थीं। पीछे चाहे सुनते सुनते अभ्यास पड़ जाय लेकिन आज तो सुन कर सिर घूम गया। मैं याहुओंसे घिन करता हूं पर उनके दोषोंको शिकारी पक्षीकी क्रूरतासे और मेरे सुम तोड़नेवाले पत्थरोंकी तीक्ष्णतासे अधिक नहीं समझता हूं। लेकिन जो जीव बुद्धिमान बननेका दावा करता है सो अगर ऐसे ऐसे महापापोंको कर सकता हो तो वह अज्ञान पशुओंसे भी गया बीता है।" इससे मुझको विश्वास होता है कि तुम लोगोंको अकल फकल कुछ नहीं है—केवल एक

ध्यान किया है फिर सभी बातमें उनकी अकल क्यों काम करने
गी? यह तो उनके लिये अस्वाभाविक कार्य्य है। इच्छा चाहे
नकी बुरी न हो पर वह काम जरूर बुरा कर डालेंगे। दूसरे
रे वकीलको बहुत सावधानीसे चलना होगा नहीं तो कानूनकी
ाल घटानेवालोंकी तरह जजोंकी झिड़कियां तथा और और
कीलोंकी फटकार सुननी पड़ेगी। इसलिये गाय बचानेके दम
ही उपाय हैं। एक तो विपक्षीके वकीलको डबल फीस देकर
रना लेना। फिर वह अपने मवक्किलको यह कह कर धोखा
गा कि दावा तुम्हाराही पक्का है। दूसरा यह कि मेरा वकील
रे दावेको झूठा और शत्रुके दावेको सच्चा यथाशक्ति सिद्ध करे।
गर यह काम तनिक चतुराईसे किया जाय तो मेरे पौ बारह हैं।
ाप यह भी जानलें कि यह जज लोग दीवानी और फौजदारी
ोनों प्रकारके मुकद्दमे करते हैं। अच्छे अच्छे वकीलोंमें जो बूढ़े
ौर आलसी होते हैं वही जज बनाये जाते हैं। जन्मभर सत्य और
ायके विरुद्ध रहनेके कारण जज लोग छल कपट, मिथ्या शपथ
ौर अत्याचारके पक्के पक्षी होजाते हैं। यहां तक कि सच्चे मुक-
मोंमें घूस लेना भी पसन्द नहीं करते। सच्चेकी तरफदारी करना
ह अपमान समझते हैं। मैं ऐसे कई जजोंको जानता हूं जिन्होंने
च्चे आदमियोंसे भारी घूस न लेकर झूठोंसे हलकी घूस ली है।

वकीलोंमें एक दस्तूर यह है कि जो बात पहले होचुकी है
स कानूनसे फिर कर सकते हैं। इसलिये यह लोग उन फैसलों
ो बड़ी सावधानीसे लिख रखते हैं जो एक बार साधारण न्याय
और युक्तिके विरुद्ध होचुके हैं। बुरेसे बुरे मुकद्दमोंके सबूतमें यह
ोग इन्हीं फैसलोंको नजीरके बतौर पेश करते हैं। फिर जजोंकी
्या मजाल जो इनके विरुद्ध कुछ करें।

वकील लोग बहसके समय मुकद्दमेकी असल बातोंको छोड़कर
फालतू बातें बड़े जोर शोर और नोंक झोंकसे बकते हैं। इसी
मामलेमें वह कभी नहीं पूछेंगे कि मेरी गाय पर शत्रुका किस

शक्ति है जिससे तुम्हारे स्वाभाविक पाप बढ़ा करते हैं। नदियोंके हिलते हुए जलमें कुढङ्ग वस्तुओंकी परछांही केवल बड़ीही नहीं वरन् और भी कुरूप मालूम पड़ती है।"

युद्धका विषय समाप्त हुआ। अब दूसरा प्रसङ्ग छिड़ा। मैंने कहा था कि कानूनसे तबाह होजानेके डरसे बहुतसे आदमी देश छोड़ कर चले गये हैं। इस पर वह बोले थे—"तुमने तो पहले कहा था कि कानून प्रजाकी भलाईके लिये बनता है फिर उससे तबाह होनेका डर क्यों? यह बात मेरी समझमें नहीं आई। कानून या कानूनके चलानेवालोंसे तुम्हारा क्या अभिप्राय है सो खुलासा कह जाओ। मैं समझता हूँ प्रकृति और ज्ञानही सज्ञान जीवोंको कुपथसे बचा कर सुपथ पर चलानेवाले हैं। तुम भी तो सज्ञान बनते हो कहो आजकल तुम्हारे यहां आईन कानूनका क्या रङ्ग ढङ्ग है?"

मैं बोला—"साहब! आईन कानून भी एक विद्या है जिसमें मेरा पूरा दखल नहीं है पर हां एक बार मुझ पर कुछ अन्याय हुआ तब मैंने एक वकील मुकर्रर किया था पर कुछ लाभ नहीं हुआ। खैर, जहां तक बनेगा मैं आपको सब कह सुनाऊंगा।

"मेरे यहां बहुतसे लोग बने हुए लम्बे चौड़े शब्दोंके द्वारा उजलेको काला और कालेको उजला सिद्ध करनेकी विद्या बचपनसे सीखतेहैं। जो जैसा दाम देताहै उसका काम भी यह लोग वैसाही करते हैं। इन लोगोंकी एक मण्डलीही अलग है। और जितने लोग हैं सो इस मण्डलीके गुलामहैं। इसका एक उदाहरण सुनिये। मान लीजिये किसी पड़ोसीकी आंख मेरी गाय पर लगी। वह लेनेके लिये एक वकील भाड़े करेगा। मुझे भी तब अपना हक दिखलानेके वास्ते एक दूसरा वकील करना पड़ेगा क्योंकि किसीका अपने लिये आप बोलना आईनके विरुद्ध है। इस मामलेमें सच्चा अधिकारी होने पर भी मैं दुहरे नुकसानमें रहूंगा। एक तो मेरे वकील साहबने जन्महीसे झूठकी तरफदारी करनेका

अभ्यास किया है फिर सच्ची बातमें उनकी अकल क्यों काम करने लगी? यह तो उनके लिये अस्वाभाविक कार्य्य है। इच्छा चाहे उनकी बुरी न हो पर वह काम जरूर बुरा कर डालेंगे। दूसरे मेरे वकीलको बहुत सावधानीसे चलना होगा नहीं तो कानूनको चाल घटानेवालोंकी तरह जजोंकी झिड़कियां तथा और और वकीलोंकी फटकार सुननी पड़ेगी। इसलिये गाय बचानेके यह दोही उपाय हैं। एक तो विपक्षीके वकीलको डबल फीस देकर मिला लेना। फिर वह अपने मवक्किलको यह कह कर धोखा देगा कि दावा तुम्हाराही पक्का है। दूसरा यह कि मेरा वकील मेरे दावेको झूठा और गलुके दावेको सच्चा यथाशक्ति सिद्ध करे। अगर यह काम तनिक चतुराईसे किया जाय तो मेरे पौ बारह है। आप यह भी जानलें कि यह जज लोग दीवानी और फौजदारी दोनों प्रकारके मुकद्दमे करते हैं। अच्छे अच्छे वकीलोंमेंसे जो बूढ़े और आलसी होते हैं वही जज बनाये जाते हैं। जन्मभर सत्य और न्यायके विरुद्ध रहनेके कारण जज लोग छल कपट, मिथ्या शपथ और अत्याचारके पक्के पक्षी होजाते हैं। यहां तक कि सच्चे मुकद्दमोंमें घूंस लेना भी पसन्द नहीं करते। सच्चेकी तरफदारी करना वह अपमान समझते हैं। मैं ऐसे कई जजोंको जानता हूं जिन्होंने सच्चे आदमियोंसे भारी घूस न लेकर झूठोंसे हलकी घूस ली है।

वकीलोंमें एक दस्तूर यह है कि जो बात पहले होचुकी है उस कानूनसे फिर कर सकते हैं। इसलिये यह लोग उन फैसलों को बड़ी सावधानीसे लिख रखते हैं जो एक बार साधारण न्याय और युक्तिके विरुद्ध होचुके हैं। बुरेसे बुरे मुकद्दमोंके सबूतमें यह लोग इन्हीं फैसलोंको नजीरके तौर पेश करते हैं। फिर जजोंकी क्या मजाल जो इनके विरुद्ध कुछ करें।

वकील लोग बहसके समय मुकद्दमेकी असल बातोंको छोड़कर फालतू बातें बड़े जोर शोर और नोक झोंकसे बकते हैं। इसी मामलेमें यह कभी नहीं पूछेंगे कि मेरी गाय पर गलुका किस

तरह अधिकार पहुँचता है। लेकिन यह जरूर पूछेंगे कि मेरी गऊ लाल है या काली—उसके सींग छोटे हैं या बड़े—मैं जिस खेत में उसे चराता हूं वह गोल है या चौकोर—वह घरमें दूही जाती है या बाहर—उसको कोई रोग है या नहीं इत्यादि। इसके बाद नजीरें निकलेंगी। फिर मुलतवीको बारी आवेगी सो बरसों चलेगी। दस बीस तीस सालके बाद नतीजा निकलेगा।

इन वकीलोंकी एक खास गलबल भाषा है जो किसीकी समझमें नहीं आती। इसी भाषामें आईन कानून लिखे जाते हैं यह लोग सबका ऐसा गड़बड़ झाला कर देते हैं कि झूठ सच और न्याय अन्याय कुछ मालूमही नहीं पड़ता है। इसीसे मामलोंमें इतनी देर होती है। जो जमीन छः पीढ़ियोंसे मेरे दखलमें चली आती है वह मेरी है या तीनसौ मील दूर रहनेवाले एक विदेशी की, ऐसे फैसलेके लिये भी तीस साल दरकार हैं।

उन मुकद्दमोंकी कार्रवाई बहुतही मुख्तसिर और तारीफके लायक है जिनमें सरकार मुद्दई होती है। जज लोग बड़े बड़े शक्तिशाली राजकर्मचारियोंका रङ्ग ढङ्ग देखकर अपराधीको फांसी दे देते या छोड़ देते हैं पर दिखानेके लिये कानूनकी शरण अवश्य ले लेते हैं।"

प्रभु बीचहीमें बोल उठे—"तुम्हारे कहनेसे मालूम होता है कि तुम्हारे वकील सब बड़े योग्य और गुणवान होते हैं मगर अफसोस यही है कि दूसरोंको शिक्षा देनेके लिये उन्हें कोई उत्साहित नहीं करता है।" मैंने कहा—"आपका कहना ठीक है लेकिन यह वकील सब अपने पेशेको छोड़ कर दूसरे कामोंमें निरे उत और लण्ठ होते हैं। इनसे बोलनेमें जी घिनाता है। यह महानीच और सब विद्याओंके परम बैरी होते हैं। अपने पेशेमें लोगोंको जैसे बहकाते हैं वैसेही हर वक्त हर बातमें सबको बहकानेके लिये तैयार रहते हैं।

षष्ट परिच्छेद।

यह प्रभुकी ध्यानमें विलकुल नहीं आया कि वकील लोग अपने जाति भाइयोंको हानि पहुंचानेके लिये क्यों इतने परेशान रहते हैं। मैंने कहा था कि वह भाड़ा लेकर ऐसा करते हैं पर यह भी उनकी समझमें नहीं आया कि भाड़ा क्या वस्तु है। इसके समझानेमें मुझको अपार कष्ट उठाना पड़ा था। रुपया क्या है, रुपयेसे क्या होता, रुपया किन धातुओंसे बनता है और रुपयेकी कीमत क्या है यह सब समझा कर मैंने कहा—"जब याहुओं (मनुष्य) के पास कुछ रुपये पैसे होते हैं तब वह बढ़ियासे बढ़िया पोशाक, अच्छे से अच्छा घर उत्तमसे उत्तम खान पान, सुन्दरसे सुन्दर स्त्रियां, अधिकसे अधिक भूमि-सम्पत्ति आदि जो चाहें खरीद सकते हैं। मतलब यह कि रुपयेहीसे सब कुछ होता है। पर रुपयेसे कभी किसीका पेट भरता नहीं। जो लोभी हैं सो धन बटोरनेके लिये और जो खर्चीले हैं सो उड़ानेके लिये हाय हाय करते रहते हैं। गरीब बेचारे मेहनत करते हैं और अमीर मजा उड़ाते हैं। हजार पीछे एकही बड़ा आदमी निकलता है नहीं तो सब दुःखी। जो रोज मजूरी करते और रूखा सूखा खाकर किसी तरह पेट भर लेते हैं कुछ बड़े आदमियोंको आराम पहुंचानेहीके लिये यह बेचारे परिश्रम करते हैं।

इस विषयमें मैंने और भी बहुत कुछ कहा पर उनकी समझमें कुछ न आया। वह बोले—"जो कुछ जमीनसे उपजता है उस पर सबका दावा है और विशेष कर उनका है जो सबके सिरताज होते हैं। अच्छा यह बताओ कि उत्तमसे उत्तम खान पान क्या है? सबको इसका टोटा क्यों होता है?" यह सुन कर मैंने सब खानों के नाम तथा उनके बनानेकी तरकीबें जो याद थीं कह सुनाईं। यह भी मैंने कहा कि दुनियांके हर एक हिस्सेमें जहाज भेजे बिना खाने पीनेकी सामग्रियां जुट नहीं सकती हैं। स्त्रियां जब तक

सारी दुनियाके तीन चक्कर न लगा आवें तब तक उनकी मनकी चीजही नहीं मिलती है। प्रभु बोल उठे—"वह देश बड़ा सत्यानाशी है जहां खानेके लिये कुछ नहीं मिलता है। खाना तो एक ओर रहा जहां पानीका भी ठिकाना नहीं है।"

मैं—नहीं साहब यह बात नहीं है इङ्गलेण्डवाले जितना खा सकते हैं उससे तिगुनी उपज वहां होती है। इसके सिवा अन्नकी और फलकी सुन्दर शरावें बहुतायतसे बनती हैं। और भी जरूरतकी सब चीजें वहां मिलतीहैं। पर मर्दोंके ऐशो अशरत तथा औरतोंकी नाज बरदारीके लिये अपने यहांकी जरूरतकी बहुतेरी चीजें दूसरे देशको भेजनी पड़तीहैं और वहांसे बदलेमें रोग, मूर्खता और पापकी जड़ लेनी पड़ती है। इसीसे हमारे बहुतेरे भाई लाचार होकर पेटके लिये भीख मांगते, डकैती करते, चोरी करते, ठगते, कुटनापन करते, खुशामद करते, झूठी कसम खाते, जाल करते, जूआ खेलते, झूठ बोलते, चापलूसी करते, गुण्डई करते, वोट बेचते, कलम घसीटते, नक्षत्रोंकी तरफ निहारते, विष देते, निन्दा करते, दम्भ करते, व्यभिचार करते और न जाने क्या क्या करते हैं।

कुछ पानीके बदले हम लोग शराब नहीं पीते हैं जीको खुश करनेके लिये पीते हैं। यह पानीकी तरह एक पतली चीज है। इसके पीनेसे आदमी मस्त होजाता है, चिन्ता फिकर दूर होजाती है, अच्छी अच्छी तरङ्गे मनमें उठतीं हैं, भय भाग जाता है, बड़ी बड़ी आशायें होती हैं, शरीर निश्चल होजाता है, ज्ञान लुप्त हो जाता है और गाढ़ निद्रा आती है। यह सब कुछ होता है पर पीछे रोग धर दबाते हैं और शक्ति चली जाती है। फिर जीवन भार होजाता है।

बहुत लोग बड़े आदमियोंको और आपसमें एक दूसरेको नित्य के सुभको सामग्री या जरूरी चीजें देकर अपना गुजारा करते हैं। मैं अपनी कहता हूं सुनिये जब मैं अपने देशमें कपड़ोंसे लैस होकर चलता हूं तो मेरी देह पर सैकड़ों सौदागरोंकी चीजें रहती हैं।

मारत और घरके असबाबोंमें हजारों रुपयेकी और प्राणप्यारोंके प्राणमें तो न जाने कितनोंकी रहती है।

मैं आपसे निवेदन कर चुका हूं कि मेरे देशमें बहुतसे लोग बीमारियोंसे मरते हैं। कुछ लोग इन्हीं बीमारियोंको चङ्गा करके इनकी औषधिका बनाते हैं।

प्रभु यह बात मेरे ध्यानमें नहीं आई। हमारे छिनछिन सब लोग मरनेसे सिर्फ दो चार दिन पहले कमजोर और सुस्त होजाते हैं। संयोगसे कभी कोई यह भङ्ग भी होजाता है। यह बात तो बिलकुल असम्भवसी मालूम होती है कि प्रकृति देवी तुम्हारी देहमें रोग पैदा होने देगी क्योंकि उसके सब कार्य पूर्ण होते हैं अपूर्ण नहीं। तुम लोग इतने रोगी क्यों होते हो ? इसका कारण क्या है?

मैं—हम लोग हजारों तरहकी चीजें खाते हैं जो पेटमें आकर अपना जुदा जुदा असर डालती हैं। इसके सिवा जब भूख नहीं तब हम लोग खा लेते हैं। जब प्यास नहीं तब पानी पी लेते हैं। बिना कुछ खाये खाली पेटमें रात रातभर तेज शराब पीते रहते हैं। इससे शरीर शिथिल होजाता है, भूख मर जाती है और देह गर्म हो जाती है। वेश्याओंसे एक प्रकारका रोग होता है जिससे हम लोगोंकी हड्डियां तक गल जाती हैं।

यह और बहुतसी दूसरी बीमारियां बापसे बेटेको मिलती हैं। इसलिये बहुतेरे आदमी रोगकी गठरी लादे जन्म लेते हैं। कहां तक कोई नाम बतलावेगा रोग अनन्त हैं। मनुष्यका शरीरही अगर सच पूछिये तो रोगका घर है। बीमारोंको चङ्गा करनेके लिये एक प्रकारके लोग हैं जो लड़कपनहीसे यह काम सीखते हैं।

सच्चे रोगोंके सिवा बहुतसे मन गढ़न्त भी हैं। वैद्यगण इनकी मनगढन्त दवा भी तैयार करते हैं। इन रोगों और औषधोंके अलग अलग नाम हैं। इन रोगोंसे प्रायः औरतेंही बीमार होती हैं।

वैद्यगण भविष्य कहनेमें बड़े पटु हैं। इनके वचन शायदही झूठ निकलते हैं अगर वैद्यराजके मनमें कुछ कौना हुआ तो

सच्ची बीमारियोंमें आप मृत्युहीकी बात पहले कहते हैं क्योंकि यह उनके इख्तियारकी बात है। आगम कहनेके बाद कहीं रोगीके अच्छे लक्षण दैव संयोगसे दिखाई पड़े तो आप झूठे बननेके डरसे एकाध पुड़िया ऐसी छोड़ देते हैं कि काम पूरा हो जाता है।

जिन स्त्री पुरुषोंमें अनबन होजाती है उनके लिये वैद्य विशेष कर लाभकारी हैं। ज्येष्ठ पुत्र, प्रधान मन्त्री और राजकुमारोंको भी इनसे लाभ पहुँचता है।

मैंने पहले किसी मौके पर अपने देशकी शासन प्रणालीके विषयमें जिसकी धाक सारे संसारमें है कुछ कहा था। उस समय प्रधना मन्त्रीका भी जिकर आया था। आज फिर प्रधान मन्त्री का नाम सुन कर प्रभु पूछ बैठे कि यह लोग किस तरहके याहू (आदमी) होते हैं।

मैं पुनः यों कहने लगा—"राज्यके प्रधान मन्त्री भी एक प्रकारके जीवही हैं जिनके न हर्ष है न शोक, न दया न मया, न काम न क्रोध, न प्रेम न घृणा और न कोई विषय वासनाही है। है केवल धन, प्रभुता और उपाधि पानेकी उत्कट अभिलाषा। वह बोलते सब कुछ हैं पर उससे उनके मनका भाव प्रगट नहीं होता है। वह इस इरादेसे कभी सत्य नहीं बोलते कि कोई उसे सत्य समझले और न इस इरादेसे झूठही बोलते हैं, कि कोई उसे झूठ जानले। पीठ पीछे जिनकी वह शिकायत करते हैं समझलो उनके पौ बारह हैं और जिनकी मुँह पर तारीफ करें बस जानलो कि उनके दिन खोटे आये हैं। जब मन्त्रीगण वादा करें—विशेष कर जब कसम खाकर वादा करें तो समझ लेना चाहिये कि लक्षण बुरे हैं। फिर बुद्धिमान लोग ठहरते नहीं आशा छोड़ कर चल देते हैं।

प्रधान मन्त्रीके पद पर पहुँचनेके बस तीनही उपाय है। पहला ...डू, बेटी या बहनको चालाकीके साथ दूसरेके हवाले करना; ...रा अगिके मन्त्रियोंका दोष निकालना और तीसरा सभा समाज

राज दरबारके कलङ्को पर उत्साह पूर्वक लेकचर फटकारना। किन चतुर राजा उन्हींको अधिक पसन्द करते हैं जो पिछले उपाय अभ्यास करते हैं। क्योंकि ऐसेही परमोत्साही लोग उनको हांमें मिला कर सदासे ठकुरसुहाती कहते आये हैं। मन्त्रीही सब मोंके कर्त्ता धर्त्ता और विधाता होते हैं। यह सोसैटियोंको बत देकर अपनी शक्ति बनाये रखते हैं। वह सब लोगोंसे रुपये खूब लूटते हैं। पर अन्तमें—"* एक आफ इण्डेमनिटी" की हाई देकर वह लोग निकल जाते हैं। हिसाब किताब पूछना तो रहा कोई उनके सामने चूं तक नहीं करता है।

प्रधान मन्त्रीका महल भी एक कारखानाही समझिये जहां नये मन्त्री गढ़े जाते हैं। नौकर, चाकर और दरवान लोग अपने मालिककी नकल करके जुदा जुदा महकमोंके मन्त्री हो ते हैं। सिर्फ यही नहीं घमण्ड झूठ और घूसमें उनसे भी आगे जाना सीखते हैं। इससे फल यह होता है कि वह ऊंचे दर्जे लोगोंको चेला बना कर अपना मतलब गांठते और कभी कभी लाकों और वेगमोंसे धीरे धीरे अपने स्वामीहीके उत्तराधिकारी जाते हैं।

प्रधान मन्त्रीके यहां हर वेश्या या मुंहलगी चपरासीकी गृह नती बनती है। इन्हीं लोगोंके द्वारा आपकी कृपा सर्वत्र वेगर्स रती है। राजकाजके चलानेवाले अगर यही लोग कहे जायें कुछ अत्युक्ति नहीं है।

एक दिन मैंने अपने यहांके बड़े आदमियोंकी कुछ चर्चा की । प्रभु प्रसन्न होकर बोले—"तुम भी जरूर किसी बड़े आदमी बेटे हो क्योंकि तुम हमारे याहुओंसे रङ्ग, रूप और सफाईमें हुत चढ़े बढ़े हो। उतनी फुर्ती और बल तो तुममें नहीं है क्योंकि

* Act of indemnity (क्षति पूर्णकी धारा)। द्वितीय चार्ल्स समलमें यह कानून प्रथम चार्लसके विरोधियोंको क्षमा प्रदान रनेके लिये बनाया।

तुम्हारी रहन सहन दूसरे ढङ्गकी है। लेकिन तुम बोलना जान ते हो। सिर्फ यही नहीं तुम्हें अक्लसे भी कुछ सरोकार है। इसी लिये हिनहिन लोग तुम्हें अद्भुत याहू कहते हैं।"

इस पर मैंने कहा—"आपने कृपा कर अपने श्रीमुखसे मेरी प्रशंसाकी इसके लिये आपको धन्यवाद है परन्तु मैं यह कह देना उचित समझता हूं कि मैं बड़े आदमीका लड़का नहीं हूं। मेरे मां बाप सीधे सादे सच्चे भलेमानस थे। अवस्था भी उनकी कुछ ऐसी अच्छी न थी। इनके बिना मेरी शिक्षा भी पूरे तौरसे न होसकी। यों ही टुटरूं टूं कुछ थोड़ासा पढ़ लिया है। हमारे यहांके बड़े आदमी कैसे होते हैं सो आप अभी नहीं जानते हैं। उनका ढङ्गही निराला है। बड़े आदमियोंके लड़के बचपनहीसे सुस्ती और ऐयाशीकी तालीम पाते हैं और बड़े होने पर पुरुषार्थको नष्ट कर कुल टाओंसे विकट रोग मोल लेते हैं। अपना घर फूंक तमाशा देख कर वह लोग केवल रुपयेके लोभसे नीच, कुरूप, रोगी स्त्रियोंके साथ व्याह करते हैं पर उनसे सन्तुष्ट कदापि नहीं होते। इसीसे उनकी सन्तान भी रोगी, दुर्बल और अपौगण्ड प्रायः उत्पन्न होती है। अगर स्त्रियोंने अड़ोस पड़ोस या नौकर चाकरोंमेंसे किसी हट्टे कट्टे तन्दुरुस्तको चुनलिया तो खैर है नहीं तो तीसरीही पीढ़ीमें बसबोल जाती है। कमजोरी, बीमारी, दुबलापन और पीलापनही बड़े आदमियोंकी सच्ची पहचान है। हट्टा कट्टा और मजबूत होना उनके लिये बेइज्जती है क्योंकि सब कोई उन्हें साईस या गाड़ीवानसे पैदा हुआ बताने लगेंगे। वह लोग तिल्ली, ढिलाई, मूर्खता, सनक, कामशक्ति और घमण्डके मारे जैसे शरीरसे हीन होते हैं वैसेही बुद्धिसे भी।

इन्हीं लोगोंकी सलाहके बिना आईन कानून न बनता है, न बदलता है और न उठता है। यही लोग हमारी भूमि सम्पत्तिके विषयमें जो कुछ निर्णय कर देतेहैं सो अचल होजाता है। उसका खण्डन फिर कोई नहीं कर सकता है।

सप्तम परिच्छेद।

पाठकगण! आप आश्चर्य करेंगे कि जो मुझे याहू समझ कर
त मानव जातिके प्रति घृणा प्रकाश करें उनके सामने मैंने
वहाकी सब बातें खोलकर कैसे कह दीं। पर इसका कारण
मैं स्पष्ट कहता हूं कि उन भले आरपायोंके मद्गुणोंने मेरी
खोल दीं। उनकी सङ्गतसे मेरी समझ ऐसी होगई कि मैं
के कार्य्य और वासना मात्रको दूसरीही दृष्टिसे देखने लगा।
मनुष्य मर्य्यादाकी रक्षा करनेके योग्य नहीं समझा। और
उन्होंके भला क्या करता? प्रभु तो ऐसे ढङ्गसे सब बातें पूछते थे
उनका छिपाना मेरे लिये असम्भवही था। इसके अतिरिक्त
हमारे दोष मुझमें नित्य निकाला करते थे जिनकी खबर
मुझको कुछ भी न थी। हम लोगोंमेंसे कोई भी उन दोषों
दोष करके नहीं मानेगा। प्रभुका अनुकरण कर मैं भी असत्य
और कपटाचारसे बहुत भागने लगा। सत्य ऐसा प्रिय
हुआ कि मैं उस पर सब कुछ वार बैठा।
एक वर्षके भीतरही वहांवालों पर मेरी इतनी श्रद्धाभक्ति होगई
मैंने जीमें ठान लिया कि अब कभी स्वदेशको न लौटूंगा। यहीं
छिनोंके साथ जहां पापका नाम तक नहीं है जीवनका शेष भाग
करूंगा। पर मेरे भोंड़े भाग्यमें उस पुण्यभूमिका निवास लिखा
। हाय मनकी मनहीमें रही! जो हो, प्रभु जैसे खोद खोद
पूछनेवालेके आगे भी मैंने अपने देशवासियोंके दोषोंको जहां
तक न्यून करके तथा संभालके कथन किया था। ऐसा कौन
जो अपनी जन्मभूमिका पक्षपात नहीं करता है?
जब मैंने सब प्रश्नोंका उत्तर दिया तो प्रभु कुछ सन्तुष्टसे मालूम
। एक दिन बड़े तड़के आपने बुला भेजा। जब मैं पहुंचा तो
दूर बैठनेकी आज्ञा मिली। मैं वहीं बैठ गया। इतना आदर
और कभी नहीं हुआ था। आप बोले—"तुम्हारी और तुम्हारे

देशकी बात मैं सोच रहा हूँ। बहुत सोचने विचारनेसे मालूम होता है कि तुम भी एक प्रकारके जानवरही हो लेकिन न जाने कैसे तुम पर अक्लका जरासा छींटा पड़ गया है। पर तुम लोग उस अक्लसे और कुछ काम न लेकर केवल अपने स्वभाविक दोषोंको बढ़ातेहो और सृष्टिके विरुद्ध नये नये पाप मनसे गढ़ते हो। परमात्माने जो कुछ शक्ति तुम्हें प्रदानकी थी सो तुम जान बूझ कर खो बैठे हो। पहले तुमको इतना अभाव न था पर तुमने अपने अभावोंको बहुत बढ़ा लिया है। अब उन्हींके पूर्ण करनेमें तुम अपना सारा जीवन नष्ट कर देते हो। अभाव पूर्ण करनेके लिये नित्य नई बात गढ़ते हो। साधारण याहूके समान भी बल या फुर्ती तुममें नहीं है। तुम पिछले पैरोंसे डगमगाते हुए चलते हो अपने पञ्जोंको तुमने न जाने कैसे निकम्मा कर दिया है अब उनसे तुम अपनी रक्षा भी नहीं कर सकते हो। धूपसे बचनेके लिये टुड्डी पर बाल थे सो भी सफाचट हैं। याहुओंकी तरह तुम तेजीसे न दौड़ सकते और न पेड़ों पर चढ़ सकते हो।

आईन कानून भी तुम्हारी बुद्धि तथा धर्मकी अपूर्णताहीके फल हैं। क्योंकि सज्ञान जीवोंका शासन करनेके लिये केवल बुद्धिहीकी आवश्यकता है। तुमने अपने देशके लोगोंके विषयमें जितना कहा है उससे भी तुम अपनी बुद्धिमानीका दावा नहीं कर सकते। साई उन्हींके मुलाहिजेसे तुमने बहुतसी बातें छिपा

शरीरको ढांके रहते हो सो बुरा नहीं है। इससे तुम्हारे बहु-
त ऐब छिपे रहते हैं। कोई किसीके ऐबोंको नहीं देख सकता है।
अगर तुम लोग अपने अङ्गोंको नहीं छिपाते तो बड़ी मुश्किल
होती। जिन कारणोंसे तुम लोग आपसमें लड़ते हो उन्हीं कारणों
से याहू भी लड़ते हैं। अगर पचास याहुओंको खुराक पांचके
आगे फेंक दी जाय तो यह शान्त होकर खानेके बदले आपसमें
लड़ मरेंगे। हर एक चाहेगा कि मैंही सब हड़प जाऊं। इसी
लिये इन सबको मैदानमें चरानेके लिये एक चरवाहा रक्खा जाता
और जो घरमें रहते हैं सो अलग अलग फासले पर बांध दिये
जाते हैं। जब कोई मवेशी उमर पाकर या किसी घटनासे मर
जाता है तो कोई हिनहिन अपने याहुओंके मारे उसे उठाने भी
नहीं पाता है। आस पासके गांवोंके याहू उस लाशको लेनेके
लिये दल बांध कर चढ़ दौड़ते हैं। इन दलोंमें वैसाही युद्ध
होता है जैसा तुमने अपने यहां कहा है। पञ्जोंसे आपसमें
ये सब खूब नोच खसोट करते हैं पर मुश्किलसे कोई किसीको
मार सकता है क्योंकि तुम लोगोंकी तरह उनके पास कोई हथि-
यार नहीं है। कभी कभी आस पासके याहुओंमें खूब घनघोर
संग्राम होता है पर उसका कुछ कारण दिखाई नहीं पड़ता। एक
जगहवाले दूसरे दलवालों पर चढ़ाई करनेका मौका ढूंढ़ा करते हैं।
मौका पातेही अचानक उन पर टूट पड़ते हैं। पर जब मामला
बेढब देखते हैं तो लौट आते हैं। जब लड़नेके लिये कोई शत्रु
नहीं मिलता है तो यह आपसहीमें घमसान मचा देते हैं। इसीको
तुम्हारी भाषामें—'सिविलवार' (अन्तर्युद्ध) कहते हैं।

यहां कई स्थानोंमें एक प्रकारके चमकीले पत्थर होते हैं जो
कई रङ्गके हैं। याहू इन पत्थरोंको बहुतही पसन्द करते हैं यहां
तक कि अगर कोई पत्थर भूमिमें भी गड़ा हो तो उसे नहीं छोड़ते
। दिन भर पञ्जोंसे मट्टी खोद कर पत्थर निकालही लेते हैं।
फिर छिपा कर मान्दमें जमा करते हैं। तो भी उनको चैन नहीं

होता। उन्हें यही खटका लगा रहता है कि कोई उन पत्थरों को चुरा न ले। इसीसे वह अपने खजानेकी रखवाली जी जानसे करते हैं। मैं नहीं कह सकता कि क्यों याहू लोग इन पत्थरोंके लिये जान देतेहैं और उनका क्या काम इनसे निकलता है। शायद तुम लोगोंकी तरह याहूभी लालची होतेहैं। एक बार मैंने परीक्षाके लिये एक याहूके पत्थरोंको चुपचाप उसकी मान्दसे उठवा मंगाया जब उसने अपने खजानेको खाली पाया तो लगा बड़े जोरसे डाढ़े मार कर रोने। उसके रोनेकी आवाज सुन कर सब याहू इकट्ठे होगये। वह झुँझला कर सबको नोचने खसोटने लगा। खाना पीना सोना सब छोड़कर चुप चाप मन मलीन तनछीन होकर बैठा रहता था। जब मैंने फिर चुपकेसे उसके पत्थर जहांके तहां रखवा दिये तब वह तुरत अच्छा होगया। अब वह मजेमें सब काम काज करता है लेकिन पत्थरोंको कहीं दूसरी जगह छिपा आया है।

"जहां यह चमकीले पत्थर बहुतायतसे होते हैं वहां अड़ोस पड़ोसके याहू अकसर जबरदस्ती घुस कर लूट पाट मचाते हैं बस भयङ्कर युद्ध ठन जाता है और खूब मार काट होती है।

और यह तो साधारण बात है कि जब दो याहूओंको खेतमें एक पत्थर मिल जाता है तब वह परस्पर लड़ने लगते हैं। इतनेमें एक तीसरा उसे लेकर रफू चक्कर होता है। तुम्हारे यहांके मुकद्दमोंकी भी बस यही गति है।" अपने लोगोंकी मान रक्षाके लिये यहां पर प्रभुकी हांमें हां मिलानाही मैंने उचित समझा पर वास्तवमें यह बात नहीं है। क्योंकि वहां तो मुद्दई मुद्दालेह उस पत्थरके सिवा और कुछ नहीं खोते परन्तु यहां जब तक मुद्दई या मुद्दालेहके पास एक कौड़ी भी बचती है अदालत मुकद्दमेको फैसल नहीं करती। जब दोनों कङ्गाल होजाते हैं तब डिग्री या डिस-मिस करती है।

प्रभु पुनः कहने लगे—"याहू बड़ेही पेटू होते हैं न जाने इनको कैसी भूख है। घास पात, फल मूल, सड़ा गला मांस जो

कुछ इनके सामने आता है सबको अफीम जाते हैं। पेटहीके कारण याहू ऐसे घृणित होगये हैं। इन लोगोंकी प्रकृति भी विलक्षण है। यह घरकी बढ़ियासे बढ़िया चीजको पसन्द नहीं करते पर बाहरसे जो कुछ चुरा कर या लूट कर लाते हैं उसे बड़े प्रेमके साथ खाते हैं। अगर कहीं बड़ा शिकार हाथ लगा तो फिर क्या पूछना है? इतना खायेंगे कि पेट फटने लगेगा। पर यह लोग एक जड़ी भी ऐसी जानते हैं कि जिसके खातेही सब चीजें आपही निकल जाती हैं।

एक तरहकी जड़ी और है जो बहुत मुश्किलसे मिलती है। इस जड़ीमें खूब रस होता है। याहू बड़े चावसे इसको पीते हैं। शराबसे जो दशा तुम लोगोंकी होतीहै वही इन सबकी उस रससे। रस पान कर याहू गण आपसमें लिपटते हैं, बकोटते हैं, भूंकते हैं, दांत निकालते हैं, किलकारी मारते हैं, झूमते हैं, चलते हैं, गिरते हैं, पड़ते हैं और फिर टांग फैलाकर कीचड़में सो जाते हैं।"

सचमुच वहां याहुओंके सिवा और कोई बीमार नहीं पड़ता है सो वह भी अपने यहांके घोड़ोंसे बहुत कम। यह बड़े मैले और पेटू होते हैं बस इसीसे इनके बीमारियां भी होती हैं। इन बीमारियोंका कोई खास नाम नहीं है। साधारणतः यह 'याहूके रोग' के नामसे प्रसिद्ध हैं। इनकी दवा यही है कि इनके मलमूत्रको मिला कर जबरदस्ती इनके मुंहमें डाल दिया। इससे फायदा भी खूब होता है। सर्वसाधारणके उपकारके निमित्त मैं चाहता हूं कि इस दवाका प्रचार मेरे देशमें भी होजाय।

प्रभुने पुनः कहना आरम्भ किया—"लिखने पढ़ने, राजकाज चलाने, कारीगरी और दस्तकारीमें तो हमारे और तुम्हारे यहांके याहू बराबर नहीं मालूम होते। जिन विषयोंमें तुम्हारा उनका स्वभाव मिलता है आज उन्हींकी कुछ बातें कहता हूं। मैंने सुना है कि याहुओंके गरोहोंमें एक एक सरदार होता है। सबसे बदसूरत और शैतान याहूही सरदार बनाया जाता है। हर एक

सरदारके पास एक एक मुसाहिब रहता है जो सब बातोंमें सरदार हीके समान होता है। सरदारके तलवे चाटना और याहू स्त्रियां उसको मान्दमें पहुँचानाही मुसाहिबका काम है। सरदार प्रसन्न होकर इनाममें गदहेके मांसका एकाध टुकड़ा कभी कभी दे देता है। शेष याहूगण मुसाहिबसे अत्यन्त घृणा करतेहैं। इसीसे बिचारा डरके मारे सदा सरदारकी देहसे चिपटा रहताहै। जब तक अधिक दुष्ट याहू नहीं मिलता तब तक पुराना मुसाहिब बना रहता है। उसके मिलतेही पुरानेको धता बताई जाती है। फिर बेचारे पर बड़ी कड़ी पड़ती है। उस गरीबके सब छोटे बड़े, और मर्द, बूढ़े जवान याहू दल बांध कर नये मुसाहिबके साथ आते हैं और पुराने मुसाहिबको सिरसे पैर तक मलमूत्रसे भर देते हैं। अब तुम्हीं बता सकते हो कि तुम्हारे यहांके मुसाहिबों और प्रधान मन्त्रियोंसे यह बात कहां तक मिलती जुलती है।"

इस विद्वेष पूर्ण आक्षेपके उत्तर देनेका साहस मुझे नहीं हुआ। एक साधारण कुत्तेकी बुद्धिसे भी जो अपने झुण्डके सरदार कुत्तेकी आवाज पहचान कर धावा करता है और कभी चूकता नहीं आद-मियोंकी बुद्धिको प्रभुने हेय समझ लिया! हा हन्त!!

प्रभु फिर बोले—"याहुओंकी कुछ बातें बड़ी विचित्र हैं पर तुमने तो अपने देशका हाल कहते समय उस विषयमें कुछ कहाही नहीं। अच्छा सुनो! और जानवरोंकी तरह याहू नारियों पर सब याहू नरोंका समान अधिकार है। पर अन्तर यही है कि याहू स्त्रियां पैर भारी होने पर भी नरोंको बुलाती हैं और पुरुष लोग आपसमें जिस प्रकार लड़ते झगड़ते हैं उसी प्रकार स्त्रियोंसे भी। यह दोनों चालें ऐसी गन्दी हैं कि कोई इन्हें पसन्द नहीं करता है। सब जीव जन्तु साफ सुथरा रहना चाहते हैं पर हमारे याहुओंको गन्दगीही पसन्द है। दुष्ट भी आप परले सिरेके होते हैं।"

इन दोनों बातोंका अगर कोई मुंहतोड़ जवाब होता तो मैं जरूर देता पर क्या करूं कुछ जवाब मिला नहीं इससे चुप होरहा।

मगर एक सूअर भी वहां मिल जाता तो मैं शहर आदमियोंकी हिमायत करता पर भाग्यके दोषसे वह भी वहां न मिला। वाराह वाहुओंसे चाहे सुन्दर हो पर स्वच्छतामें तट्टूपही है। प्रभु उसका मैला खाना और कीचमें लोटना पोटना देख लेते तो वह भी इस बातको अवश्य स्वीकार करते।

प्रभुने अपने नौकरोंसे यह भी सुनाया कि कभी कभी कोई याहू एक कोनेमें लेट कर भूंकता है, कराहता है और जब कोई पास जाता है तब गुर्राता है वह देखनेमें खूब मोटा ताजा मालूम होता है पर कुछ खाता पीता नहीं। नौकरोंको भी मालूम न हुआ कि वह क्यों ऐसा करता है। इसके आराम करनेकी बस एकही दवा है वह यह कि उससे खूब कड़ी मिहनत लेना। मेहनतके बाद वह आपही होशमें आजाता है। मैं प्रभु की यह बात सुन कर चुपका होरहा। बोलनेसे शायद अपने लोगोंकी कुछ बुराई हो बस इसी खयालसे मैं कुछ न बोला। आलसी, विलासी और धनिकोंके रोगका कारण अब मुझे मालूम होगया। इन लोगोंसे भी खूब परिश्रम कराना चाहिये, परिश्रमके द्वारा इनको आराम करनेका भार मैं लेता हूं।

प्रभुने यह भी कहाया कि याहू स्त्रियां अकसर नदीके तीर या झाड़ियोंके पीछे खड़ी होकर पासे जानेवाले जवान याहुओंसे आंखें लड़ाती हैं। चोंचलेके साथ कभी प्रगट होती हैं और कभी छिप जाती है। उस समय उनको देहसे बड़ी गन्दी बू निकलती है। और जब कोई मर्द पीछा करता है तो धीरे धीरे आगे बढ़ जाती हैं मगर पीछे फिर फिर ताकती भी जाती हैं। नखरेसे अपने डर जानेका भी स्वांग लाती हैं। इन ढकोसलोंके बाद वह सब सुबीते की उन जगहोंमें पहुंच जाती हैं जहां वह जानती हैं कि वह पीछा करनेवाला भी आपहुंचेगा।

इन सबके बीचमें अगर कोई ऊपरी औरत आ पड़ती है तो चार पांच जनी उसे घेर कर खूब टिक करती हैं। कोई घूरती है

कोई किचकिचाती है, कोई मुँह बनाती है और कोई उसकी सारी देहको सूँघती है। फिर नाक भौंह सिकोड़ कर सब चल देती हैं।

प्रभुने देखी या सुनी हुई जो बातें कहीं उनमें शायद कुछ नोन मिर्च उन्होंने जरूर लगाया होगा। जो हो मुझे यह जानकर बड़ाही आश्चर्य और दुःख हुआ कि कामेच्छा, कुलटापन, निन्दा और चबाव करना स्त्रियोंका स्वाभाविक धर्म्म है।

जिन दिनों बात चीत होती थी मेरे मनमें बराबर यही खटका लगा रहता था कि प्रभु उन अस्वाभाविक दोषोंका कलङ्क कहीं याहुओं पर न लगा बैठें जिनमें हमारे स्त्री पुरुष साधारणतः लिप्त रहते हैं। पर प्रभुने इस विषयमें कुछ नहीं कहा इससे मालूम होता है कि प्रकृतिदेवीने यह सब नहीं सिखाया है यह सब हमारे शिल्प और ज्ञान विज्ञानहीका फल है।

अष्टम परिच्छेद।

पाठकगण! मेरे प्रभुजी आखिर घोड़ेही तो ठहरे उन्हें इस मनुष्यों के चाल व्यवहारसे क्या मतलब? पर याहुओंकी बाबत उन्होंने जो कुछ कथन किया सो मुझ पर या मेरे देशवालों पर मजेमे घटता था। मैंने सोचा चलो मैं भी याहुओंसे मिल कर कुछ नई नई बातें निकालूँ। इसलिये मैं प्रभुसे पूछ कर अकसर आस पासके याहुओंकी जमातमें जाता था। इन जघन्य जीवों पर मेरी अपार घृणा देख करके प्रभुको विश्वास था कि इनकी सङ्गत मेरा कुछ बिगाड़ नहीं सकती है। इसीसे जब मैं पूछता तब वह आज्ञा दे देते थे। सिर्फ यही नहीं हिफाजतके लिये एक नौकर घोड़ेको भी साथ कर देते थे जो बड़ा सच्चा और स्वभावका अच्छा था। अगर यह न होता तो मैं ऐसी जोखिमकी जगहमें जानेकी हिम्मत भी नहीं करता। क्योंकि इन दुष्टोंने वहां पहुंचने पर पहले कैसा कुछ सताया था सो मैं पाठकोंसे आगे निवेदन कर चुका हूं। इसमें

बाद भी दो चार बार मैं इनके चङ्गुलमें फंसते फंसते बच गया हूं। उस समय मेरे पास कटार भी न था पर परमात्माने कुशल की। पीछे इन सबने यह समझ लिया कि मैं भी उन्हींकी जातिका हूं। मैं अपने रक्षकके सामने अकसर बाहें तथा छाती खोल कर उन्हें दिखलाता था। वह सबके सब हिम्मत करके मेरे कुछ पास आते और बन्दरोंकी भांति मेरी नकल करते थे। बनके कव्वे किसी पालतू कव्वेको टोपी और मोजे डाटे देख कर जैसे कां कां करते हैं वैसेही मुझे देख कर वह करते थे।

याहू लड़कपनहीसे बड़े तेज होते हैं। एक बार मैंने याहूका एक बच्चा जो तीन वर्षकाथा पकड़ लिया। मैंने पुचकार कर उसको बहुतेरा चुप करना चाहा पर वह क्यों चुप होने लगा ? वह लगा बड़े जोरसे चीख मारकर रोने और छुटकने। आखिर मैंने आजिज होकर उसे छोड़ दिया। इतनेमें उसकी रुलाई सुन कर बहुतसे बूढ़े याहू जमा होगये। बच्चा भागही गया था और रक्षक घोड़ा वहीं खड़ा था इससे मेरे पास आनेका साहस किसीको नहीं हुआ। उस बच्चेके बदनसे नेवले और लोमड़ीसे भी बदतर गन्ध निकलती थी। उस दुर्गन्धको नाक सह नहीं सकती थी। हां एक बात कहना मैं भूलही गया, वह यह कि जब मैं उस दुष्ट बच्चे को हाथमें लिये था उसने मेरी सारी पोशाक मूतसे खराब करदी। उसके पेशाबका रङ्ग पीला था। भाग्यसे निकटही एक सोता बह रहा था। उसमें जाकर मैंने कपड़ोंको खूब अच्छी तरहसे धो डाला जब तक कपड़े सब सूखे नहीं प्रभुके सामने जानेकी मेरी हिम्मत नहीं पड़ी थी।

जो कुछ मैंने देखा भाला, उससे मालूम होता है कि याहूगण शिक्षा ग्रहण करनेमें सब जानवरोंसे गये बीते हैं। बोझ ढोने या गाड़ी खेंचनेके सिवा यह और कुछ नहीं कर सकते हैं। इसका कारण इनका दुराग्रहही है। यह अत्यन्त धूर्त, दुष्ट, विश्वासघातक तथा प्रतिहिंसक होनेके अतिरिक्त बड़ेही बली, परिश्रमी मगर

डरपोक होते हैं। उद्धत भी परले सिरेके हैं। नीचता और निठु-रता तो इनमें कूट कूट कर भरी हुई है। लाल बालवाले औरों की अपेक्षा अधिक कामी और दुष्ट होतेहैं पर बल और फुर्तीमें भी सबसे चढ़े बढ़े होते हैं।

हिनहिन लोग उपस्थित कामोंके लिये कुछ याहुओंको घरके पासही झोंपड़ीमें रखते हैं। बाकी चरनेके वास्ते मैदानमें भेज दिये जाते हैं। वहां वह सब जड़ें खोद कर खाते तथा घास चरते हैं। कभी कभी मुर्दों और चूहोंको भी ढूंढ़ कर बड़े चावसे खाते हैं। नखसे बड़े बड़े बिल खोद कर सोते हैं। औरतें अपने बच्चों को लेकर सोतीहैं इससे उनके बिल मर्दोंको अपेक्षा बड़े होते हैं।

मेढकोंकी तरह वह लोग बचपनहीसे तैरना जानते हैं और जलमें बहुत देर तक डुबकियां मार कर रह सकते हैं। मर्द मछ-लियां पकड़ते और औरतें बच्चोंके लिये घर लेजाती हैं इस कमबख्ती एक अनोखी कहानी सुनाता हूं आशा है पाठक क्षमा करेंगे।

एक दिन मैं टहलनेके लिये घरसे निकला। साथमें रक्षक भी था। उस दिन गर्मी भी बहुत जोरकी पड़ी थी। मैं रक्षकको ले कर निकटहीकी एक नदीमें नहाने गया। मैं एक दम नग्न हो

देहगी होगई और मैं लाजके मारे मरा जाता था। अब मैं याह ोनेसे इनकार नहीं कर सकता था। जब याहुनो याह समझ र मुझसे चिमट गई तो मैं याह नहीं तो क्या हूं? उसके बाल ो लाल नहीं थे कि मुझे कुछ कहनेकी जगह मिलती क्योंकि ाल बाल कामुकताका चिन्ह है यह मैं पहलेही कह आया हूं। सके बाल तो जूतेकी तरह काले थे और सूरत भी ऐसी कुछ ही न थी जैसी और याहुनियोंकी होतीहै। जहां तक मैं समझता ूं उसकी उमर ग्यारह सालसे ऊंची नहीं थी।

मैं छिनछिनके देशमें तीन साल रहा। पाठक चाहते होंगे कि ं भी अन्यान्य यात्रियोंके सदृश वहांवालोंके रहन सहन तथा चाल लनका कुछ वर्णन करूं। सो मैं अवश्य करूंगा क्योंकि जब मैं हां था तब इन विषयोंके जाननेके लिये विशेष ध्यान दिया था।

छिनछिन लोग स्वभावहीसे धर्मपरायण होते हैं। सज्ञान जीवों ें पापाचार क्या है इतना तक वह नहीं जानते। बुद्धिको उन्नत रना तथा उसके अनुसार चलनाही उनका मुख्य उद्देश्य है। वह ब हम लोगोंकी तरह बुद्धिके द्वारा किसी विषयके दोनों पक्षों र विवाद करनेमें चतुराई नहीं दिखाते और न बुद्धिको तर्क वितर्क करनेकी वस्तुही समझते हैं। बुद्धि यदि स्वार्थादिसे मिश्रित दूषित और कलुषित हुई तो तुरतही सबका निर्णय होजाता है। "अपनी अपनी सम्मति" का क्या अर्थ है या कोई विषय विवादके योग्य कैसे हो सकता है सो समझनेमें प्रभुको कितनी कठिनाई पड़ी वह मुझे याद है। जिन बातोंको हम निश्चय जानते हैं केवल उन्हींको हम बुद्धिके द्वारा ग्रहण या परित्याग कर सकते हैं। बुद्धि के बाहर हम कुछ नहीं कर सकते। इस कारण सन्दिग्ध विषयों में वितण्डावाद, वाग्युद्ध विवाद और हठ करना छिनछिन नहीं जानते हैं। जब मैं अपने प्रकृति विज्ञानकी भिन्न भिन्न प्रथाओंको समझाता तो वह हंस कर कहतेथे कि जो प्राणी ज्ञानी बनता है वह दूसरोंके कल्पित ज्ञानके भरोसेही कूदता है और वह ज्ञान

[२०]

यथार्थ होने पर भी इन विषयोंमें कुछ काम नहीं कर सकता है। वह सुकरातके उन विचारोंको जो अफलातूं लिख गया है अच्छी तरह मानते थे। यह सुकरातके लिये गौरवकी बात है। तबसे मुझे यही चिन्ता लग रही है कि ऐसे सिद्धान्तसे युरोपके पुस्तकालयोंको न जाने कितनी हानि पहुंची और न जाने कितने पण्डितोंके लिये यशका मार्ग बन्द हो जायगा।

मित्रता और कृपालुताही हिनहिनोंके प्रधान गुण हैं। इनके यह दोनों गुण सङ्कीर्ण नहीं विश्वव्यापक हैं। यह दूर देशके पाहुनेसे भी वही वर्ताव करते हैं जो पड़ोसीसे। यह जहां जाते हैं तमाम अपना घरही समझते हैं। शिष्टाचार और सभ्यताके तो यह घर हैं। आडम्बर जानतेही नहीं। बछेरे बछेरियोंको प्यार नहीं करते पर उनकी शिक्षाकी तरफ विशेष ध्यान देते हैं यह भी उनकी बुद्धिका फल है। मैंने देखा है कि प्रभु पड़ोसके बालकोंको जितना प्यार करते थे अपनोंका भी उतनाही उनका जाति प्रेम स्वाभाविक है। यह केवल बुद्धिहीका प्रभाव है कि वह लोग उच्च कोटिके धर्म्मात्माओंको श्रेष्ठ मानते हैं।

हिनहिनियां एक बछेरा और एक बछेरी जन कर हिनहिनोंसे मिलना छोड़ देती हैं। अगर कहीं संयोगसे किसीका एक बच्चा मरगया तो वह फिर मिल लेतीहैं। यह आफत कहीं उस हिनहिन पर आपड़ी जिसकी हिनहिनी ठूंठ होचुकी है तो कोई दूसरा हिनहिन अपना एक बच्चा उसे दे देता है और अपने लिये एक और पैदा कर लेता है। देशमें अश्व संख्या अधिक बढ़ने न पावे इस बातका वह सब खूब ख्याल रखतेहैं। नीचे दरजेके हिनहिन जो नौकर चाकर बनाये जाते हैं इन नियमोंके उतने अधीन नहीं हैं। यह सब छः छः बच्चे तक पैदा कर सकते हैं।

हिनहिन लोग व्याहके कामको बड़ी सावधानीसे करते हैं। बेमेल व्याह करके सारी जातिको वर्णसङ्कर बनाना नहीं चाहते हैं। व्याहके समय हिनहिनोंमें बल तथा हिनहिनियोंमें सुन्दरता

मुख्य करके देखी जाती है। प्रेमके लिये नहीं वरन रक्षाके लिये काह होता है। अगर हिनहिनी बलमें अधिक हुई तो हिनहिनही सुन्दर ढूंढ़ा जाता है।

कोर्टशिप, प्रेम, प्रेमका उपहार, चौधन आदि वह कुछ नहीं जानते यहां तक कि उनकी भाषामें इनके लिये कोई शब्द नहीं। युवक हिनहिन और हिनहिनी भेंट होतेही आपसमें मिल जाते है। इसमें किसी प्रकारकी रोक टोक नहीं है। सन्तान होनेके लिये इस तरह मिलना वह आवश्यकीय समझते हैं। विवाह तथा व्यभिचार वहां कभी सुननेमें नहीं आया। हिनहिन और हिनहिनी ईर्षाद्वेष, अनुराग, कलह और असन्तोष रहित होकर जीवन व्यतीत करते हैं। जो मित्रता और कृपालुता जाति अन्यान्य लोगों पर प्रकाशित करतेहैं वही आपसमें भी करते हैं।

बच्चोंको शिक्षा देनेकी परिपाटी बहुत सुन्दर है। हम लोगोंको इसका अनुकरण करना चाहिये। अठारह वर्ष तक बच्चे जई और दाना खाने नहीं पाते हैं। ऐसेही कभी कभी खा लेते हैं। गर्मीके दिनोंमें दो घण्टे सबेरे तथा दो घण्टे सांझको मैदानमें चरते हैं। उनके मा बाप भी इसी तरह चरते हैं। नौकर सब दोनों वेला एक एक घण्टा चरने पाते हैं। वह लोग अपनी अपनी घास घरही ला लाते हैं। जब कामसे छुट्टी पाते तब सुबीतेसे खाते हैं।

बछेरे बछेरियोंको संयम, परिश्रम, व्यायाम और पवित्रताकी समान शिक्षा दी जाती है घरके कामोंके सिवा हमारे बालक बालिकाओंको भिन्न भिन्न प्रकारकी शिक्षा दी जाती प्रभु बुरा समझते थे। वह कहते कि इसीसे तुम्हारे देशके आधे निवासी सन्तान उत्पादन करनेके अतिरिक्त और किसी कामके नहीं हैं। ऐसे निकम्मे लोगोंके भरोसे बच्चोंको छोड़ना बहुतही बड़ी पशुता है।

लेकिन हिनहिन अपने बच्चोंको ऊंचे खड़े पहाड़ों पर तथा पथरीली भूमिमें दौड़ा कर, जोरमन्दी, मजबूती और तेज चलना सिखाते हैं। और जब वह पसीने पसीने होजाते हैं तब झाला

खिला कर तालाव या नदीमें कुदाये जातेहैं। उछलने कूदने दौड़ने आदिकी योग्यता उन्हें सालमें चार दफे दिखलानी पड़ती है। जो सबमें आगे होता है उसे पारितोषिकमें एक गीत मिलता है। उस गीतमें उसीकी प्रशंसा रहती है। उस उत्सवके समय खान्-सामा याहुओंकी पीठ पर दाना घास दूध लाद कर परीक्षास्थलमें लेजाते हैं। ह्निनह्निन आनन्दसे सबको खाते हैं। पीछे किसीकी तबीयत न घबराय इसलिये याहु विचारे वहांसे भगा दिये जातेहैं।

चार चार वर्षमें वसन्त ऋतुके समय ह्निनह्निनोंकी एक जातीय महासभा होती है। इसका अधिवेशन चार पांच दिन तक एक लम्बे चौड़े मैदानमें होता है जो प्रभुके घरसे बीस.मीलकी दूरी पर है। प्रत्येक प्रदेशकी क्या दशा है—जई या घास कहां कैसी उपजीहै याहु या गायें भरपूर हैं या नहीं इत्यादि बातोंका वहां विचार और छानबीन होती है। जहां किसी बातका टोटा हुआ वह सर्व सम्मतिसे चन्दा करके तुरत दूर कर दिया जाता है पर ऐसी नौबत बहुत कम पहुँचती है। बालक बदलब्बलकी व्यवस्था भी यहीं होती है अर्थात् जिस ह्निनह्निनके दो बछेरेही होते हैं वह दूसरेको जिसके दो बछेरियां हैं अपना एक बछेरा देकर बदलेमें उससे एक बछेरी ले लेता है। किसीका एक बच्चा किसी कारण से मर गया और ह्निनह्निनी भी ठण्ढ हो चुकी है तो यहां यह भी निश्चय होजाता है कि कौन ह्निनह्निन एक बच्चा और पैदा करके हानिको पूरी कर देगा।

नवम परिच्छेद।

उस देशसे बिदा होनेके लग भग तीन मास पहले घोड़ोंकी जातीय महासभाका एक अधिवेशन मेरे सामनेही हुआ था जिसमें भी अपने प्रान्तसे प्रतिनिधि बन कर पधारे थे। आपहीने कर वहांका सब पूरा हाल मुझे बताया था। उसी पुराने :थको लेकर खूब वादानुवाद चला था। कहते थे कि ऐसा तर्क और कभी नहीं हुआ था।

प्रश्न यही था कि याहुर्योंको पृथ्वीसे निर्मूल करना चाहिये या हीं। एक महाशयने तो बड़ी जोश भौंकसे उठ कर कहा—मित्रो ! ाह बड़ेही मैले गन्दे और भद्दे जीव हैं। हठता, शठता, दुष्टतादि ी तो यह धाम हैं। सिखानेसे भी कुछ सीखते नहीं पर शैतानी हर करते हैं। चुप चाप हमारी गौओंका दूध पी लेते हैं— ड़ियोंको मार कर खा जाते हैं—जई तथा घासोंको रौंद डालते और अगर पूरे तौरसे रखवाली न कीजाय तो बड़ा ऊधम मचाते । हम लोग बाप दादाओंसे सुनते आतेहैं कि याहू यहांके निवासी हीं हैं। बहुत दिन हुए जब इनका एक जोड़ा पहाड़ पर दिख- ाई पड़ा था। सूर्य्यकी गर्मी कीचमें पड़नेसे यह जोड़ा उत्पन्न था या समुद्रके फेनसे सो कुछ मालूम नहीं हुआ। पीछे इन ोंकी सन्तान हुई। थोड़ेही दिनोंमें इनकी इतनी वंश वृद्धि हुई क सारा देश याहुओंसे भर गया और हिनहिनोंको कष्ट होने ा तब सबने याहुओंको निकाल बाहर करनेका मनसूबा बान्धा। ाखिर एक दिन याहुओंका कतलआम करके उनको चारों तरफसे र लिया। बड़े बड़े तो काम आये और बच्चोंको हिनहिन घर ठा लाये। हर एकके दो दो बचे हाथ लगे थे। याहू बड़े उद्दण्ड ौर जङ्गली थे पर हिनहिनोंने उन बच्चोंको ठोंक पीट कर इस ोग्य कर दिया है कि अब यह बोझ ढोने और गाड़ी खिंचने लगे ैं। यह बात भी बहुत ठीक मालूम होती है कि याहू इस देशके ादिम निवासी नहीं हैं। अगर होते तो हिनहिन तथा अन्यान्य ीव क्यों इनसे घृणा करते ? इसलिये मैं चाहता हूं कि याहुओंका *मूलोच्छेद होना चाहिये। सज्जनो ! एक बात मुझे और* हना है। आप लोग याहुओंको पाकर गदहोंको एक दम भूल ये यह आप लोगोंने अच्छा नहीं किया। गदहे याहुओंसे सुन्दर धे और शान्त हैं। इनकी देहसे दुर्गन्धि नहीं निकलती। यह वैसे र्तीले तो नहीं मगर मिहनती और मजबूत उनसे कहीं बढ़के होते हैं। गदहोंका रेंकना चाहे खराब हो परन्तु याहुओंके भया-

नक भूंकनेसे वह लाख दरजे अच्छा है। अतएव मैं प्रस्ताव कर
हूं कि याहुओंका अवश्य विध्वंस करना चाहिये।

बहुतोंने तो इस प्रस्तावका समर्थन किया परन्तु प्रभुने उन बा
को याद कर जो मैंने कही थीं एक दूसराही उपाय निकाल
आप बोले—सज्जनो! हमारे माननीय पूर्ववक्ता महोदयने जो कु
कहा है सो बहुत ठीक है। वह दोनों याहू जो पहले पहल पहा
पर देखे गयेथे मैं समझता हूं समुद्रके उस पारसे आयेथे। उन्हें उन
भाइयोंने निकाल दिया होगा। जाति भाइयोंसे अलग पर्वत प
रहनेके कारण उनका चाल व्यवहार बिगड़ने लगा। बिगड़ते बि
ड़ते एक दम बिगड़ गया। यहां तक कि वह वर्त्तमान दशाक
पहुंच गये। पर उनके देशवाले ऐसे नहीं हैं। इसके सबूतके लि
मेरे पास एक "अद्भुत याहू" मौजूद है जिसे आप लोगोंमेंसे बहुत
ने देखा नहीं तो सुना जरूर होगा। वह भी अपने सङ्गियों
निकाला जाकर यहां तक आपहुँचा है। उसके शरीर पर दूस
जानवरोंके बाल तथा खालकी बेठन चढ़ी हुई है। वह अपन
बोली बोलता है और हम लोगोंकी भी बोली अच्छी तरहसे सीख
गया है। उसने यहां तक आनेका अपना पूरा वृत्तान्त मुझे क
सुनाया है। जब वह बेठन उतार देता है तो ठीक याहू मालू
पड़ता है। अन्तर केवल इतनाही है कि उसका रङ्ग गोरा, प
छोटे तथा देहमें बाल कमती हैं। उसके कहनेसे मालूम हुआ कि
उसके देशमें याहू राजा और हिनहिन गुलाम हैं। उसमें स
लक्षण तो याहूके हैं किन्तु बुद्धिका तनिक लेश होनेके कारण व
कुछ सभ्य मालूम होता है। जो हो, हम सबसे वह बुद्धिमें उतन
ही कम है जितना उसके हमारे याहू हैं। उसी देशके लोग हिन
हिनोंको वशमें लानेके लिये उन्हें आख्ता करते हैं। आख्ता
करनेकी तरकीब बड़ी सहज और बेजोखों है। श्रम करन
चिवटियोंसे और घर बनाना अबाबीलोंसे हम लोग सीखते हैं
इसलिये पशुओंसे ज्ञान सीखनेमें कुछ लज्जा नहीं है। मैं चाहता

हूं कि सब सवाल यादू भावता कर दिये जायं। बस इससे वह अच्छी तरह काम भी करेंगे और थोड़े दिनोंमें अनायासही उनका वंश नाश होजायगा। इधर तब तक हम लोगोंको गदहोंका वंश बढ़ानेमें दत्तचित्त होना चाहिये क्योंकि यह बड़े कामकी चीजहैं। और अश्वतो बारह बरसके होने पर कामके लायक होते हैं पर गदहा बिचारा पांचही सालसे काम करने लगता है।

प्रभुने जातीय महासभाका बस इतनाही हाल उस समय मुझसे कहना उचित समझा। मेरे विषयमें जो कुछ बात चीत वहां हुई थी उसे आपने छिपा रक्खा पर इसका फल मुझे बहुत जल्दी मिल गया। पाठकोंको आगे चल कर सब मालूम होजायगा। मेरे दुर्भाग्यका उदय उसी दिनसे समझना चाहिये।

हिनहिनोंकी कोई वर्णमाला नहीं है। जो कुछ अपने बाप दादाओंसे वह सुनते आते हैं वही लड़कोंको बता देते हैं। इसीसे उनकी विद्या पुरानी ढङ्गकी है। जिन लोगोंमें इतना मेल मिलाप है—जो स्वभावहीसे धर्मानुरागी हैं—जो बुद्धिके भरोसेही सब काम करते हैं और जो दूसरी जातियोंसे कुछ सम्बन्धही नहीं रखते हैं उनके यहां कोई घटना क्यों होने लगी ? फिर इतिहासके लिये माथाही क्यों खपाना पड़ेगा ? यह मैं पहलेही लिख चुका हूं कि हिनहिन कभी बीमार नहीं पड़ते इस वास्ते उन्हें वैद्यकी भी जरुरत नहीं होती। तो भी वह अच्छी अच्छी जड़ी बूटियां जानते हैं। पैरोंमें या कहीं किसी तरह कुछ चोट लग जाती है तो वह उन्हीं जड़ी बूटियोंसे तुरत आराम कर लेते हैं।

चन्द्र सूर्यकी गतियोंके द्वारा वह वर्षकी गणना कर लेते हैं किन्तु महाहादिको काममें नहीं लाते हैं। इन दोनोंकी चालोंको वह भली भांति जानते हैं तथा ग्रहणके भेदको समझते हैं। ज्योतिष में उनके ज्ञानकी बस यही पराकाष्टा है।

काव्यमें हिनहिन सबसे बढ़े हुए हैं। उनके काव्योंमें पूर्णोपमा तथा यथार्थ वर्णनका आधिक्य रहता है। यह दोनों बातें हम लोगों

के अनुकरणके योग्य हैं। मित्रता और कृपालुता अथवा जो ह्निन-ह्निन घुड़दौड़ या कसरतमें बाजी मार लेता है उसकी प्रशंसा अश्व-काव्यका साधारण विषय है। उनके घर यद्यपि अनगढ़ हैं तथापि गर्मी सर्दीके बचावके लिये वह चोखे हैं। वहां एक तरहके पेड़ होते हैं जिनकी जड़ें चालीस बरसके बाद ढीली पड़ जाती हैं। बस तूफान आतेही वह सब गिर जाते हैं। इन पेड़ोंकी लकड़ियां बहुत सीधी तथा नोकीली होतीं हैं। ह्निनह्निन इन्हीं लकड़ियोंके खेमे तेज पत्थरसे जमीनमें दस दस इञ्चकी दूरी पर गाड़ कर उनके बीचमें जईकी डांटें और पत्ते लगा देते हैं बस यही उनकी दीवारें हुईं। छतें भी इसी रीतिसे पाटी जाती हैं तथा किवाड़ भी ऐसेही बनते हैं। ह्निनह्निन लोहेका व्यवहार नहीं जानते।

हाथका काम ह्निनह्निन अपने अगले सुजम्मोंसे निकालते हैं और बड़ी सफाईसे सब काम करते हैं। मैंने एक उजली घोड़ीको सूई डोरा दिया तो उसने चटपट पिरो दिया। वह सब गाय दुहते हैं, जई काटते हैं—मतलब यह कि हाथोंसे जो काम होते हैं सो सब वह करते हैं। एक प्रकारके चकमक पत्थरको रगड़ कुल्हाड़ी आदि हथियार बनाते हैं। उन्हींसे घास तथा जई काटते हैं और याहू लोग ढोकर लाते हैं। घरमें नौकर खाली कुचल कर अन्न निकालते हैं और भण्डारमें बन्द करके रख देते हैं। यह अन्न और घास वहां आपही पैदा होती है। वह काठ और मट्टीके बर्त्तन भी एक तरहके बनाते हैं। मट्टीके बर्त्तनोंको धूपहीमें सुखा कर पका डालते हैं।

यदि कोई दैव दुर्घटना न हुई तो ह्निनह्निन बूढ़े होकर मरते हैं। जो स्थान सबसे अप्रसिद्ध होता है वहीं वह गाड़े जाते हैं। जब कोई मर जाता है तो इष्ट मित्र और बन्धु बान्धव न शोक करते हैं और न हर्ष। मरनेवाला भी जरा दुःख नहीं करता। वह मरने को अपने घर जाना समझता है। किसी मित्रके यहांसे घर आने में जो दशा होती है मृत्युके समय ह्निनह्निनकी भी वही दशा होती

है। मुझे याद है प्रभुने एक बार एक अश्वको सपरिवार किसी जरूरी काममें बुलाया। जिस समय आनेकी बात थी उससे बहुत पीछे घोड़ी अपने दो बच्चोंको लिये पहुंची। विलम्बका कारण पूछने पर उसने कहा—"आज सवेरे मेरे स्वामी अपनी पहली माता के पास गये" अर्थात् मर गये हैं। उसके चेहरे पर कुछ भी शोक या उदासी नहीं मालूम होती थी। जैसे सब प्रसन्न बदन थे वैसे वह भी थी। तीन महीनेके बाद वह बिचारी भी अपनी पहली माके पास चली गई।

ह्विनह्विनकी आयु सत्तर पछत्तर वर्षकी होती है। कोई कोई अस्सी तक भी पहुंच जाते हैं पर बहुत कम। मरनेसे कुछ हफ्ते पहलेसे वह क्षीण होने लगते हैं परन्तु उन्हें किसी प्रकारका कष्ट नहीं होता है। इस समय वह असानीसे कहीं जा आ नहीं सकते इससे बन्धु बान्धवगण मिलनेके लिये घरही पर बहुत आते हैं। मरनेके दस दिन पहले वह याम्रगाड़ी पर सबसे बदलेकी भेंट कर आते हैं। केवल इसी कामके लिये यह गाड़ी नहीं है। इस पर लंगड़े, बूढ़े तथा दूरके सफर करनेवाले चढ़ते हैं। जब वह मिलने के लिये जाते हैं तो इष्ट मित्र और बन्धु बान्धवोंसे बड़ी गम्भीरतासे विदा होते हैं मानो जीवनका शेष भाग बितानेके लिये किसी दूर देशान्तरको जाते है। हां एक बात कहनेको छूटही गई थी कि ह्विनह्विन अपनी मृत्युका समय हिसाब करके निकाल लेते हैं। इसमें बहुत कम भूल होती है।

मैं घोड़ोंकी रीति व्यवहार तथा धर्म कर्मके बारेमें और भी कुछ कहता परन्तु इन विषयोंकी एक स्वतन्त्र पोथी अलग लिखा चाहता हूं अतएव इस प्रसङ्गको यहीं समाप्त कर अब कुछ अपनी दुर्घटना सुनाता हूं।

दशम परिच्छेद।

मैंने अपने मनके मुआफिक रहने सहनेका एक सुन्दरसा बन्दोबस्त करलिया था। प्रभुने अपने घरसे करीब छः गजके फासले पर मेरे लिये एक छोटीसी कोठरी बनवादीथी जिसकी बनावट उन्हीं

देवनी सीयो। मैंने उसे लीप पोत कर दुरुस्त करलियाथा।सन तथ
पक्षियोंके परोंका एक गद्दा बनाया जिस पर मैं पैर फैला कर सोत
था। याहुओंके बालके जालसे अकसर चिड़ियोंका शिकार करता
इनका मांस बड़ा स्वादिष्ट होता था। अपनी छुरीसे दो कुर्सिय
बना ली थीं। इनके बनानेमें लाल घोड़ेसे भी कुछ मदद मिली थी
कपड़े सब फट गये तो खरहोंकी खालहीसे काम चलाया। खर
के आकारके वहां एक प्रकारके सुन्दर जानवर होते हैं। जिनवे
रोएं बड़े बारीक होते हैं। इन्हींकी खालके काम चलाऊ मोज
भी बनाये थे। जूतोंके तले घिस गये तो काठके लगाये। जब ऊपर
के हिस्से भी बेकाम होगये तो याहूके चमड़ेहीको धूपमें सुखा क
काममें लाया। वृक्षोंमेंसे अकसर मधु निकाल लाता और उसे
रोटियोंके साथ खाता या शरबत बना कर पीता था। "मनको
मनाना कुछ बड़ी बात नहीं है" तथा—"आवश्यकता पड़ने पर
उपाय सूझता है" इन दोनों सिद्धान्तोंकी सत्यता मुझसे बढ़ कर
कोई नहीं जान सकता है। वहां मेरा शरीर निरोग तथा चित्त
शान्त रहता था। वहां न मेरे कपटी और विश्वासघाती मित्रही
थे और न गुप्त वा प्रकट शत्रु। बड़े आदमियोंको या उनके मुसा-
हिबोंको प्रसन्न करनेके लिये घूस देने, खुशामद करने अथवा कुटना
पन करनेकी कभी वहां नौबतही नहीं आती थी। छल वा उप-
द्रवकी वहां कुछ आशङ्का न थी। मेरे शरीरका सत्यानाश करनेके
लिये वकील वहां न थे। मेरे चाल चलनकी देख भालके वास्ते
वहां कोई जासूस न था और न रुपयेके हेतु कोई झूठे झूठे मुक-
द्दमे गढ़ता था। वहां निन्दा, उपहास, चवाव, बलात्कार, मूर्खता,
काम, क्रोध, लोभ, मोह, दम्भ, पाखण्ड, अभिमानादि कुछ न था।
चोर, जुआचोर, उचक्के, उठाईगीरे, जेबकाट, डाकू, लुटेरे इत्यादि
वहां न थे और न सिफले, धूर्त्त, कुटने, भडुए, भांड़, शराबी,
जुआरी तथा बकवादीही थे। न दल था न पार्टी थी और न कोई
... था। वहां न कारागार, न शूली न फांसी और न कोड़े

की मारकी थी। पाप करनेकी यहां कोई सामग्री न थी। बेईमान दूकानदार भी वहां न थे। कर्कशा खर्चीली और कुलटा स्त्रियां नहीं थीं। लण्ठ मगर अभिमानी पण्डित न थे विवादी, छली, स्वार्थी, शपथ खानेवाले, नीच साथी भी वहां न थे। नीच अपनी नीचताईके कारण न सिंहासन पर बिठाये जाते और न सज्जन सज्जनता हेतु सिंहासनसे उतारेही जाते थे। वहां न लाट थे न जज थे न सारङ्गी बजानेवाले थे। और न नृत्याचार्य्यही थे—मतलब यह कि रोग शोक, पाप ताप वहां कुछ भी न था। बड़े आनन्दसे दिन कटते थे।

प्रभुके यहां भोजन करने या मिलनेके लिये अनेक हिनहिन आते थे। वह लोगजिस कोठरीमें बैठ कर बात चीत करते थे वहां मैं भी जाने पाता था। प्रभु तथा प्रभुके साथी लोग अकसर मुझसे भी वार्तालाप करनेकी कृपा दिखाते थे। जो कुछ वह पूछते उस का जवाब मैं देता या खड़ा खड़ा उनकी बातेंही सुनता था। जब प्रभु किसीके यहां जाते तो मुझे भी कभी कभी अपने साथ ले लेते थे। प्रश्नका उत्तर देनेके अतिरिक्त और कुछ बोलनेका साहस मुझे कभी नहीं हुआ। हाय! बोलनेके लिये मैंने इतना परिश्रम किया सो वृथाही गया! परन्तु मैं उन विषयोंको जो संक्षिप्त अथच उपयोगी थे—जो आडम्बर रहित शिष्टता पूर्णथे—जो शुष्क और नीरस न थे और जो बाधा, कठिनाई, उत्तेजना वा मत भेदसे शून्य थे, श्रवण करनेहीमें परमानन्द प्राप्त करता था। उन लोगोंका ख्याल है कि भेंट होने पर थोड़ी देर चुप रहनेसे बात चीतमें बहुत उत्तमता आजाती है। और यह सच भी है क्योंकि जरा चुप रहनेसे नये नये विचार मनमें उठते हैं बस वह और भी मनोहर होजाती है। मित्रता, परोपकारिता, मितव्यय तथा सुरीतिही उनके सम्भाषणके साधारण विषय हैं। प्रकृतिकी छटा, पुरानी दन्त कथा, धर्मकी मर्य्यादा, ज्ञानके अभ्रान्त नियम या जातीय महासभामें उठानेके योग्य किसी प्रस्ताव पर तो कभी कभी किन्तु काव्यके उच्च भावों पर

ांग लिया क्योंकि वह मुझ पर बहुत दया करता था। उसके मेल जानेसे फिर और किसीकी सहायता दरकार न रही।

लाल घोड़ेको लेकर मैं समुद्र तटके उस स्थानमें पहले गया जहां मेरे साथियोंने मुझे छोड़ दिया था। मैं एक टीले पर चढ़ गया और चारों ओर देखने लगा। ईशान कोणमें एक छोटासा टापू दिखाई पड़ा। जेबसे दूरबीन निकाल कर देखा तो साफ मालूम हुआ कि वह लग भग पन्द्रह मीलके फासले पर है। लेकिन घोड़ारामको केवल नील आकाशही दिखाई दिया क्योंकि वह यही जानता था कि हमारे देशके सिवा और कोई देशही नहीं है। इसीसे समुद्र स्थित दूरवर्त्ती वस्तुओंके देखनेमें उसकी दृष्टि काम नहीं कर सकती थी। खैर, उस टापूको देख कर मैंने विचारा कि पहला मुकाम तो यहीं होगा आगे भगवानका भरोसा।

हम लोग घर लौट आये। पासहीके एक जङ्गलसे देवदारकी डालियां काट लाये जो कुछ मोटी और कुछ छड़ीकी भांति पतली थीं। मैंने तो अपने चाकूसे और लाल घोड़ेने पत्थरके औजारसे लकड़ियां काटीं थीं। अब बहुत विस्तार न कर मैं खुलासा कहता हूं कि छः हफ्तेमें लाल घोड़ेकी मददसे डोंगी बन कर तैयार होगई। उसके ऊपर याहुओंके चमड़ेकी खोल सीकर चढ़ाई। पाल भी उन्हीं की खालको बनाई। जहांतक बना जवान याहुओंकी खालसे काम लिया क्योंकि बुड्ढोंकी खाल बहुत मोटी और चिमड़ी होती है। चार डांड़ भी मैंने बना लिये थे। खानेके लिये मांस पकाकर धर लिया था तथा पीनेके लिये एक मटकी जल और एक मटकी दूध।

कूच करनेके पहले डोंगीकी परीक्षा एक बड़े तालाबमें हुई। जहां जो कसर दिखाई पड़ी सो सब दुरुस्त करली। जब सब तरहसे वह ठीक होगई तो याहुओंने उसे गाड़ी पर लाद कर समुद्र के किनारे पहुंचा दिया। हिफाजतके लिये साथ लाल घोड़ा भी गया था।

जब सब सामानसे लैस होगया तब प्रभुको धो तथा और सब लोगोंसे विदा होकर मैंने सिद्दगणेश किया। उस समय मेरी

वादाविवाद होताथा। मैं कुछ अभिमान नहीं करता सत्य कह
कि मेरे उपस्थित रहनेसे खूब तर्क वितर्क चलता था। क्योंकि
जब मेरा तथा मेरे देशका इतिहास अपने मित्रोंको सुनाते तब
सब लोग बड़ी प्रसन्नतासे कथोपकथन करतेथे। वह सब क्या क
थे सो मैं न लिखूंगा क्योंकि इससे कुछ विशेष उपकार न हो
केवल इतनाही मैं कहा चाहता हूं कि मेरी अपेक्षा प्रभु याहु
स्वभावको अच्छी तरह समझते थे। वह अपने यहांके याहुओं
योग्यता तथा कामोंको देख कर हमारे यहांके पापाचारका
भली भांति खेंचते थे। वह याहुओंको अत्यन्त नीच और
समझते थे।

मैं मुक्तकण्ठसे स्वीकार करता हूँ कि जो कुछ थोथासा ज्ञान
लेश मुझमें है सो प्रभुके उपदेश तथा उनके मित्रोंके सत्सङ्गही
फल है। मैं ह्निनह्निनोंकी दृढ़ता, सुन्दरता और द्रुतगतिकी प्रश
करता हूं। उनके सद्गुणोंको देख कर उन पर मेरी अपार अ
भक्ति होगई है। पहले तो उनका कुछ प्रभाव मुझ पर पड़ा न
पर पीछे मेरा हृदय भक्ति भावसे क्रमशः बहुत शीघ्र पूर्ण होगया

जब मैं अपने बाल बच्चोंको, इष्ट मित्रोंको, देशवासियों
अथवा मनुष्य मात्रको याद करता तो वह भी सूरत शक
और स्वभावसे निरे याहूही मालूम होते थे अन्तर इतना
था कि वह इन याहुओंसे शायद कुछ सभ्य मालूम पड़ते
उनमें बोलनेकी शक्ति कुछ विशेष थी और वह नित्य नये पा
गढ़नेके सिवा और कुछ काम बुद्धिसे नहीं लेते थे। जब कभी
अपना मुँह किसी गढ़हे या झरनेमें देख लेता तो चीख मार क
पीछे हट जाता था। अपने चेहरे पर आपही मुझे घृणा हो
लगती थी। मैं अपना मुँह आप नहीं देख सकता था। ह्निनह्नि
को देख कर आत्मा ठण्ढी होती थी। उनसे बोल कर चित्त प्रसन्न
होताथा। रात दिन उनके सङ्ग रहते रहते मैं भी उनकी चाल ढा
। नकल करने लगा। नकल करते करते अब उसी तरह चलनेक

दइका अभ्यास पड़ गयाहै। मित्रगण अकसर ठट्ठा मारकर कहते हैं इ। अब तो तुम घोड़ेकी तरह खूब दुलकी चलने लगी। पर अपनी ड़ाई इसीमें समझता हूँ। चाहे कोई हंसे या दूसे पर मैं यह कहनेसे भी इनकार न करूंगा कि मैं घोड़ोंकी तरह बोलने को तैयार हूँ।

बड़े सुख चैनसे समय बीतने लगा। किसी प्रकारका कष्ट या रमाद यहां नहीं था। मैंने सोचा चलो अब जीवनके शेष भागको यहीं व्यतीत करूं पर—"निज सोची होती नहीं।" एक दिन बड़े वेरे प्रभुने बुला भेजा। मैं भी चट पट उठ दौड़ा। वहां पहुंच कर प्रभुको घोर चिन्तामें मग्न पाया। उनके चेहरेसे उदासी पक रही थी। वह कुछ कहा चाहते थे पर कह नहीं सकते थे, किस तरह बात उठनी चाहिये शायद इसी सोच विचारमें ड़े थे। थोड़ी देर चुप रहनेके बाद प्रभुने कहा—"मैं नहीं जानता रि कहनेका तुम क्या अर्थ लगाओगे पर मुझे विवश होकर कहना ड़ता है कि पिछली महासभामें जब याहुओंकी चर्चा चली तो ई प्रतिनिधि मुझ पर बहुत बिगड़े और बोले कि तुम याहू ो अपने घरमें हिनहिनकी तरह रखते हो यह बड़ी खराब बात है। सुना है तुम बराबर उसके साथ रहते सहते तथा बात चीत करके प्रसन्न होते हो। यह काम प्रकृति और ज्ञानके विरुद्ध है। ऐसा कभी किसीने नहीं किया है और न ऐसी घटना पहले कभी सुननेमें आई है। इस लिये उस याहूको चाहे अन्यान्य याहुओंके साथ रक्खो या उससे कह दो कि वह अपने देशको चला जाय। इस पर बहुतोंने कहा नहीं, उसका यहांसे चला जानाही ठीक है। यह रहेगा तो बड़ा उत्पात मचावेगा। उसमें कुछ बुद्धिका लेश भी है। इससे वह सब याहुओंको बहकाकर जङ्गल पहाड़ोंमें लेजायगा और रातको दल बांधकर हमारे मवेशियों पर चोट करेगा क्योंकि यह सब बड़ेही पेटार्थी होते हैं और मेहनतसे जी चुराते हैं। इस वास्ते उसको यहांसे धता बतानाही अच्छा है।"

प्रभुकी बातें सुन कर मेरा माथा ठनका पर मैं कुछ न बोला।

वह फिर कहने लगे—"अब मैं क्या करूं? महासभाके परामर्शको पालन करनेके लिये ह्निनह्निन लोग मुझे नित्य दबातेहैं अब अधिक टाल मटोल नहीं कर सकता। मैं जानता हूं समुद्रको तैरकर पार करना असम्भव है इसलिये मेरी राय है कि एक छोटीसी नाव बना लो उसी पर अपने देशको चले जाओ। इसमें मेरे नौकर तथा पड़ोसी लोग भी तुम्हारी मदद करेंगे। मैं तुमसे बड़ा प्रसन्न हूं तुमने जहां तक बना खोटी लतोंको छोड़कर ह्निनह्निनकी नकल की है। मेरी इच्छा तो यहीथी कि जन्मभर तुमको अपने साथ रक्खूं पर क्या करूं लाचारीहै। यहां समझानेके सिवा किसीको लाचार करनेका दस्तूर नहीं है पर जो ज्ञानी हैं सो ज्ञानके विरुद्ध कोई काम क्यों करेंगे?"

इतना सुन कर मेरे सिर पर मानो वज्र गिर पड़ा। नेत्रों के आगे-अन्धकार छा गया। मैं मूर्छित होकर प्रभुके चरणों पर गिर पड़ा। जब मूर्छा गई तो प्रभु बोले—"तुम जी उठे! मैंने तो जाना तुम मर गये।" ह्निनह्निन मूर्छित होना नहीं जानते क्योंकि उनके चित्तमें इतनी दुर्बलता नहीं है। मैंने धीमे स्वरसे कहा— "मरना तो इससे लाख दर्जे अच्छा था। मैं आपकी सभाका या मित्रोंको कुछ दोष नहीं दे सकता पर अपनी तुच्छ बुद्धिके अनुसार कहता हूँ कि इस जीनेसे मरनेहीमें सुख है। मैं एक मील भी तैर नहीं सकता और समुद्रका पहला किनारा भी यहांसे सैकड़ों मील दूर होगा। नाव बनानेके लिये जिन जिन चीजोंकी दरकार है सो यहां मिलती नहीं पर तो भी आपकी आज्ञा पालनेकी चेष्टा करूंगा। यह काम सहज नहीं है इसके वास्ते मुझे उचित समय मिलना चाहिये। यदि मैं अपने देश पहुंच जाऊंगा तो आप लोगोंके सद्गुणों का कीर्त्तन कर अपनी जातिका बहुत कुछ उपकार करूंगा।"

वहांका रङ्ग ढङ्ग देख कर मेरा जी उदास होगया। पीछे न जाने और क्या आफत आवे यह विचार कर मैंने वहांसे शीघ्र ही ग्यारह होनाही उचित समझा। प्रभुने कृपा कर नाव बनानेके लिये दो महीनेका समय दिया। मददके लिये मैंने लाल घोड़ेको

ांग लिया क्योंकि वह मुझ पर बहुत दया करता था। उसके
मन जानेसे फिर और किसीकी सहायता दरकार न रही।

लाल घोड़ेको लेकर मैं समुद्र तटके उस स्थानमें पहले गया
जहां मेरे साथियोंने मुझे छोड़ दिया था। मैं एक टीले पर चढ़
गया और चारों ओर देखने लगा। ईशान कोणमें एक छोटासा
टापू दिखाई पड़ा। जेबसे दूरबीन निकाल कर देखा तो साफ
मालूम हुआ कि वह लग भग पन्द्रह मीलके फासले पर है।
लेकिन घोड़ारामको केवल नील आकाशही दिखाई दिया क्योंकि
वह यही जानता था कि हमारे देशके सिवा और कोई देशही नहीं
है। इसीसे समुद्र स्थित दूरवर्त्ती वस्तुओंके देखनेमें उसकी दृष्टि
काम नहीं कर सकती थी। खैर, उस टापूको देख कर मैंने विचारा
कि पहला मुकाम तो यहीं होगा आगे भगवानका भरोसा।

हम लोग घर लौट आये। पासहीके एक जङ्गलसे देवदारकी
डालियां काट लाये जो कुछ मोटी और कुछ छड़ीकी भांति पतली
थीं। मैंने तो अपने चाकूसे और लाल घोड़ेने पत्थरके औजारसे
लकड़ियां काटीथीं। अब बहुत विस्तार न कर मैं खुलासा कहता हूं
कि छः हफ्तेमें लाल घोड़ेकी मददसे डोंगी बन कर तैयार होगई।
उसके ऊपर याहुओंके चमड़ेकी खोल सीकर चढ़ाई। पाल भी उन्ही
की खालको बनाई। जहांतक बना जवान याहुओंकी खालसे काम
लिया क्योंकि बुड्ढोंकी खाल बहुत मोटी और चिमड़ी होतीहै। चार
डांड़ भी मैंने बना लिये थे। खानेके लिये मांस पकाकर धर लिया
था तथा पीनेके लिये एक मटकी जल और एक मटकी दूध।

कूच करनेके पहले डोंगीकी परीक्षा एक बड़े तालाबमें हुई। जहां
जो कसर दिखाई पड़ी सो सब दुरुस्त करली। जब सब तरहसे वह
ठीक होगई तो याहुओंने उसे गाड़ी पर लाद कर समुद्र के किनारे
पहुंचा दिया। हिफाजतके लिये साथ लाल घोड़ा भी गया था।

जब सब सामानसे लैस होगया तब प्रभुको घी तथा और
सब लोगोंसे विदा होकर मैंने सिहगणेश किया। उस समय मेरी

आंखें डबडबाई हुईं तथा गला भरा हुआ था। तमाशा देखनेके लिये या शायद मुझ पर कुछ कृपा करके प्रभु भी समुद्र तट पर्यन्त पधारे थे। आपके साथ और भी कई ह्निनह्निन थे। ज्वारके लिये मुझे एक घण्टेसे ज्यादे बैठना पड़ा। जब ज्वार आगई तब फिर मैंने प्रभुको प्रणाम किया। मैं उनके खुरारविन्द चुम्बन करनेके लिये जब झुकने लगा तो प्रभुने स्वयं उसे उठा कर मेरे मुंहके सामने कर दिया। इस बातके लिख देनेसे मैं जानता हूं मेरी बड़ी छीछा लेदर होगी। लोग इसको असम्भव मानेंगे। वह यही कहेंगे कि इतना बड़ा आदमी गलीवर जैसे तुच्छ जीवकी इतनी खातिर नहीं कर सकता है। लेकिन जो ह्निनह्निनोंकी सज्जनता और सभ्यता भली भांति जानता होगा, वह ऐसा कभी न कहेगा। कुछ यात्री विशेष सम्मान पाते हैं तो उसकी शेखी बघारनेके लिये कैसे तैयार रहते हैं सो भी मैं जानता हूं।

शेषमें ह्निनह्निनोंको नमस्कार प्रणाम करके मैं डोंगी पर जा बैठा। वायु भी अनुकूल थी। मैंने भगवानका ध्यान कर डोंगी को भाग्यके भरोसे छोड़ दिया।

एकादश परिच्छेद।

सन् १७१४-१५ ईस्वीकी १५ वीं फरवरीके सवेरे नौबजे मैं वहां से रवाना हुआ था। वायु बहुतही अनुकूल थी। पहले तो मैंने केवल डण्डोंसे काम लिया पर पीछे पालको भी तान दिया। ज्वार का जोर थाही डोंगी घण्टेमें साढ़े चार मीलके हिसाबसे जाने लगी। जब तक मैं एकदम ओझल न होगया प्रभु अपने सङ्गियों समेत तीर पर बराबर खड़े रहे। लाल घोड़ा जो मुझे बहुत चाहता था, बारम्बार पुकारकर कहता था—"ह्नु इल्ला नीहा मजाह याहु" अर्थात् होशियारीसे जाना सुन्दर याहू!

पाठको! क्या सोचते २ क्या होगया! मैंने तो सोचाथा कि अब फिर इङ्गलेण्डका मुंह न देखूंगा और न किसीसे कुछ सम्पर्क रक्खूँगा ... पवित्रात्मा ह्निनह्निनोंके पवित्र धाममें जीवन शेष करूंगा पर

नकी मनमें रही। प्रभुके आगे मैं बहुत रोया, गाया पर सब
था हुआ अन्तमें हताश होकर वह पुण्य भूमि त्यागनी ही पड़ी। अब
ा करूं ? स्वदेश जाकर याहुओंके समाज तथा राज्यमें रहनेकी
तनिक भी इच्छा नहीं होती थी। यदि इङ्गलेण्डके प्रधान मन्त्री
ा पद मलता तो भी वहां जाना मुझे स्वीकार न था। मैं
सी छोटे मोटे उजाड़ टापूमें जहां याहुओंकी गन्ध भी न हो
स करना चाहता था। यदि ऐसा निर्जन स्थान मिल जाता तो
से प्रधान मन्त्रीके पदसे बहुत बड़ा समझता क्योंकि वहां सांसा-
क पाप तापोंसे मुक्त होकर एकान्तमें पुण्यात्मा हिनहिनोंके
गुणोंका सानन्द ध्यान करता तथा स्वच्छन्दता पूर्वक अपने विचारों
निमग्न रहता।

जब मेरे साथियोंने गुट बांध कर मुझे कैद कर लिया था तो मैं
ई हफ्ते तक अपने कमरेमें बन्द रहा था यह मैं लिख आया हूं
ठकोंको शायद याद होगा। उस समय जहाज किस राहसे कहां
ता था मुझे कुछ भी मालूम न था। जिस समय मैं जहाज़से
काला गया उस समय भी किसीने कुछ नहीं बताया। परन्तु
न सबकी आपसकी बातें सुन कर मैंने अनुमान किया था कि
हाज उत्तमाशा अन्तरीपके दक्षिण या अग्निकोणकी ओर है।
या मैडेगास्कर द्वीपको जाता है। मेरा यह अनुमान चाहे ठीक
हो तो भी न्यूहालैण्ड या उसके आस पासके किसी टापूमें पहुं-
नेके इरादेसे मैं सीधा पूर्व दिशाको जाने लगा। सन्ध्याको एक
ोटीसी पहाड़ीके निकट जा पहुंचा। इसमें तूफानके जोरसे एक
ोनसा बन गया था। उसीमें डोंगी रख कर मैं पहाड़ी पर चढ़ा
ो पूर्व दिशामें भूमि दिखाई पड़ी जो उत्तरसे दक्खिनको फैली
ई थी। रातको वहीं डोंगीमें सोरहा सबेरे उठ कर फिर उसी
भूमिकी तरफ चल पड़ा। कोई सात घण्टेमें निउहालैण्ड * के
ो दक्षिण प्रान्तमें जा पहुंचा।

---

* आष्ट्रेलिया तथा उसके आस पासके द्वीप।

जहां मैं उतरा वहां कोई मनुष्य दिखाई न पड़ा। मेरे पास कोई हथियार नहीं था इससे आगे बढ़नेकी हिम्मत न पड़ी। वहीं किनारे पर जो घोंघे सीप मिल गई वह कच्चीही चबा गया। शायद कोई देखले इस डरसे मैंने आग भी नहीं जलाई। वहां मैं तीन दिन रहा। साथमें खाने पीनेका जो सामान था सो आगेके लिये बचा रक्खा। केवल घोंघों और सीपोंसे काम चलाया था। भाग्यसे मीठे पानीका एक सोता भी मिल गयाथा जिसका जल पीकर जी हरा होजाता था।

चौथे दिन प्रातःकाल साहस करके मैं पैदलही कुछ दूर निकल गया तो क्या देखता हूं कि कोई पांचसौ गज दूर एक टीले पर आग जल रही है और उसके चारों ओर औरत मर्द तथा लड़के बैठे हैं जो गिनतीमें दसबीस होंगे। वह सब बिलकुल नङ्गे थे। उनमेंसे एककी दृष्टि मुझ पर पड़ गई। उसने अपने साथियोंको भी दिखा दिया। बस पांच जने लड़के वालोंको वहीं आगके पास छोड़ कर मेरी ओर बढ़े। मैं प्राण लेकर किनारेकी तरफ आया और डोंगी पर चढ़के लम्बा हुआ। मुझको भागते देख कर वह सब भी मेरे पीछे दौड़े। मैं बहुत दूर न गया हूंगा कि एक तीर दनसे मेरे घुटनेको छेद कर पार होगया। मैं और भी तेजीसे आगे बढ़ गया। तीरमें कदाचित विष हो यह विचार कर मैंने चट घावको चूस लिया फिर धो धा कर पट्टी चढ़ा दी।

अब क्या करूं ? उस जगह जहां आश्रय लिया था लौट जाने की हिम्मत नहीं पड़ती थी। मैं खड़ा होकर देखने लगा कि अब किधर जाऊं इतनेमें ईशान कोणकी तरफसे एक जहाज आता हुआ दिखाई दिया। अब मैं यह सोचने लगा कि ठहरूं या चल दूं। अन्तमें यह निश्चय किया कि युरोपीय याइओंका मुंह देखनेसे असभ्य जङ्गलियोंके साथ रहनाही अच्छा है। बस मैंने डोंगीको [illegible] पट दक्षिणकी ओर घुमाया। पाल तान कर डांड़ चलाने [illegible]गा। फिर वहीं जा पहुंचा जहांसे सबेरे चला था। डोंगीको

किनारे बांध कर मैं उस सोतेके पास जिसका पानी मीठा था एक टीलेके पीछे छिप रहा।

इतनेमें जहाज भी मील डेढ मील पर आकर खड़ा होगया। मीठे पानीके लिये कुछ लोग किश्ती पर सवार होकर सोतेकी तरफ चले। मालूम होता है इस सोतेको लोग पहलेसे जानते थे। जब किश्ती एक दम पास आपहुंची तब मैंने उसको देखा। अगर पहलेसे देखता तो कहीं दूसरी जगह लुक जाता पर अब इतना समय कहां? वह सब सिर पर आ पहुंचे अब भागूं कैसे? खैर सांस रोक कर मैं वहीं दबक गया। इतनेमें वह सब किश्तीसे उतर पड़े। सामने मेरी डोंगीको देख कर चौंके। उसको अच्छी तरह देख भाल कर उन्होंने निश्चय कर लिया कि इसका मालिक कहीं पासही है। उनमेंसे चार जने जो हथियार बन्द थे लगे वहांकी खोह कन्दराओंको रत्ती रत्ती ढूंढ़ने। ढूंढ़ते ढूंढ़ते वह चारों वहां पहुंचे जहां मैं पट पड़ा हुआ था। चमड़ेका कोट पटलून, काठके तलेके जूते, बालदार मोजे आदि मेरी अनोखी भद्दी पोशाक देख कर आश्चर्यके मारे उनकी टकटकी लग गई। उस देशवाले सदा नङ्गे रहते हैं इससे उन्होंने मुझे वहांका निवासी नहीं समझा। उनमेंसे एकने पुर्त्तगाली भाषामें कहा—"उठ! तू कौन है?" मैं इस भाषाको खूब जानता। मैंने उठ कर जवाब दिया—"मैं एक दीन याहू हूं ह्विनह्विनोंने मुझे निकाल दिया है। कृपा कर मुझे छोड़ दीजिये।" मुझे पुर्त्तगाली भाषा बोलते देख कर वह और भी दङ्ग होगये। मेरा रङ्ग देख कर उन्होंने मुझको युरोपियन समझा पर 'याहू' और 'ह्विनह्विन' उनकी समझमें न आये। शायद इसके मेरे बोलनेमें घोड़े कोसी ह्विनह्विनाहट सुन कर वह लोग हंस पड़े। मैं भय और घृणासे कांप रहा था। मैंने फिर विनय पूर्वक कहा मुझे छोड़ दीजिये लेकिन किसीने कुछ ध्यान नहीं दिया। ज्योंही मैं डोंगीकी तरफ बढ़ने लगा उन लोगोंने पकड़के पूछा—"तू किस देशका है और कहांसे आता है?" मैंने

की गन्धसे मेरी नाक फटी जाती थी। मैंने अपने सायकी चीजों को खाना चाहा पर उसने खाने न दिया अपने पाससे कुछ मांस तथा कुछ बढ़िया शराब दी। इच्छा न रहने पर भी मैंने उसीको खाया। सोनेके लिये साफ सुथरा कमरा बता दिया। मैं बिना कपड़े उतारेही वहां जाकर सोरहा। आधे घण्टेके बाद जब सब खाने पीनेमें लगे तो मैं सन्नाटा देख कर चुप चाप बाहर निकल आया। याहुओंके साथ रहनेसे समुद्रमें कूद कर निकल जानाही अच्छा समझ कर ज्योंही मैं कूदने लगा एक जहाजीने आकर पकड़ लिया। कप्तानने यह सुनकर मेरे पैरोंमें फिर बेड़ियां डलवा दीं।

खापीकर वह मेरे पास आया और कहने लगा क्यों आप जान देते हैं? जो कहिये मैं करनेको तैयार हूं। और भी बहुतसी बातें उसने ऐसे ढङ्गसे कहीं कि जिससे मुझे मालूम होगया कि उसको भी अक्लसे कुछ सरोकार है। फिर मैं भी उसके साथ वैसाही बर्त्ताव करने लगा। अपना संक्षिप्त वृत्तान्त उसे कह सुनाया। वह उसको झूठ मानने लगा। तब मुझे बहुत गुस्सा आया क्योंकि मेरी झूठ बोलनेकी लत एक दम छूट गई थी। सब देशोंमें जहां याहुओं की चलती बनती है सब झूठ बोलनेमें एकही होतेहैं इसीसे दूसरों के सच्चे भी उन्हें असत्यही दिखाई पड़ता है। मैंने कप्तानसे पूछा "क्या जो बात नहीं है सो कहनेकी चाल तुम्हारे देशमें है? असत्य क्या है यह मैं एक दम भूल गया हूं। अगर मैं हजार साल भी छिनछिन देशमें रहता तो वहां किसी नौकरके भी मुंहसे असत्य न सुनता। आप मेरा विश्वास करें चाहे न करें, मैं इसकी कुछ परवाह नहीं करता। पर आपने मेरी बहुत खातिर की है इससे कहता हूं कि आपको जहां शङ्का हो पूछिये मैं उत्तर दूंगा फिर सहजहीमें सब झूठका पता लग जायगा।"

कप्तान बड़ा चालाक था। वह बात बातमें मुझे झूठा बनाने के लिये कोशिश करने लगा पर सचाईकी कुछ पेश न गई। अन्त में उसको मेरी बातोंका विश्वास होने लगा। वह बोला—"अच्छा!

जब आप इतना सच बोलते हैं तो इक़रार कीजिये कि अब मैं न भागूँगा और न जान देनेकी कोशिश करूंगा। अगर आप इक़रार न करेंगे तो इसी तरह कैदमें रहना पड़ेगा।" मैंने उसके कथनानुसार प्रतिज्ञा करली पर साफ़ कह दिया था कि सब कष्ट सह लूंगा याहुओंके साथ कभी न रहूँगा। आख़िर मेरी बेड़ियां काटदी गईं।

जहाज वहांसे फिर चला। रास्तेमें कोई भारी घटना नहीं हुई। कप्तान जब बहुत कहता तो उसके उपकारोंको याद कर मैं कभी कभी उसके पास जा बैठता था। मनुष्य जाति पर जो मेरी आन्तरिक घृणा थी सो प्रगट नहीं होने देता था। अगर हो भी जाती तो बेचारा कप्तान उसका कुछ ख्याल नहीं करता था। मैं किसीका मुंह देखना नहीं चाहता था दिन रात अपने कमरेमें रहता था। वह कपड़े बदलनेके लिये रोज कहता पर मुझे याहूका उतरा हुआ कपड़ा पहनना मञ्ज़ूर न था। बहुत कहने सुनने पर मैंने धोई हुई दो कमीज उससे लीं जिन्हें दूसरे तीसरे दिन अपनेही हाथोंसे धो लेता था।

ता० ५ नवम्बर सन् १७१५ ईस्वीको हम लोग पुर्त्तगालकी राजधानी लिसबनमें पहुंचे। मेरा विचित्र वेष देख कर कहीं भीड़ इकट्ठी न होजाय इसलिये जहाजसे उतरनेके समय कप्तानने अपना लबादा मुझे जबरदस्ती पहना दिया था। वह मुझे अपने घर ले गया। मेरे कहनेसे उसने मुझे अपने घरके पिछवाड़ेके सबके ऊपर वाले कमरेमें उतारा था। मैंने हाथ जोड़ कर उसको मना कर दिया था कि हिनहिनेके बारेमें किसीसे कुछ मत कहना। अगर जरा भी इसकी भनक किसीके कानमें पड़ जायगी तो मेरे प्राण नहीं बचेंगे। मैं तुरत नास्तिकोंकी तरह बड़े घर भेजा जाऊंगा या आगमें फूंक दिया जाऊंगा। कप्तानने बहुत हठ करके एक जोड़ा नया कपड़ा बनवा दिया था परन्तु दर्जीको देह अपनी छूने नहीं दी थी। उसका डील डौल प्रायः मेरेही सा था [illegible]

उसके कपड़े मेरे बहुत ठीक होते थे। और भी बहुतसी जरूरत की चीजें उसने बनवादी थीं जिन्हें चौबीस घण्टे हवामें सुखा कर मैं काममें लाता था।

कप्तानके स्त्री नहीं थी और न तीनसे अधिक नौकर। भोजन के समय यह लोग मेरे पास नहीं आने पाते थे। उसका आचरण तथा विचार ऐसा सुन्दर था कि धीरे धीरे उस पर मेरी श्रद्धा होने लगी। उसके साथ रहनेमें मुझे कोई कष्ट नहीं होता था। अब मैं पीछेकी खिड़कियोंमें भी झांकने लगा। और दूसरे कमरे में आया। गलीमें झांकता पर डरके मारे तुरत मुंह फेर लेता। एक सप्ताहमें वह मुझे द्वार तक ले आया। मेरा भय क्रमशः भागने किन्तु घृणा बढ़ने लगी। अंतमें उसके साथ मैं बाजार हाटमें भी घूमने लगा। पर नाकमें पाला दाना और तम्बाकू ठूंस लेता था क्योंकि याहुओंकी गन्ध मुझसे सही नहीं जाती थी।

कप्तान पिडरूको मैंने अपने घरका कुछ हाल कह दिया था। इससे उसने बहुत समझा बुझा कर मुझको घर जानेकी सलाह दी और कहा—"एक जहाज इङ्गलैण्ड जानेको तैयार है तुमको जरूर जाना चाहिये। खर्च वर्चका बन्दोबस्त मैं कर दूंगा। जैसा एक[illegible] तुम ढूंढते हो वैसा स्थान मिलना तो असम्भव है। घरहीमें तुम इच्छानुसार एकान्त वास कर सकते हो। घरसे बढ़ कर निराली जगह और कोई नहीं है।"

अब और कुछ करते धरते न बना तो कप्तानकी बात मानली। ता० २४ नवम्बरको एक अङ्गरेजी तिजारती जहाज पर मैं लिसबनसे विदा हुआ। बिचारा कप्तान जहाज तक मुझे पहुँचा गया था। चलनेके समय हम दोनों खूब गले गले मिले थे। उसने मुझे दोसौ रुपये उधार दिये थे। मैं बीमारीका बहाना कर अपने कमरे में बैठा रहता था। जहाजके आदमियोंसे कभी कुछ न बोलता था। यहां तक कि जहाजके मालिकका क्या नाम था सो भी मैंने नहीं पूछा। ता० ५ दिसम्बर १७१५ ई० के सवेरे नौबजे जहाज

डाउन्सके बन्दरमें जा पहुंचा। तीन बजे शामको मैं कुशल पूर्वक अपने घर पहुँच गया।

घरवालोंको मेरे पहुँचनेसे बड़ी खुशी और ताज्जुब हुआ क्योंकि वह सब मुझसे निराश होचुके थे। लेकिन मैं सत्य कहता हूं कि उन सबको देख कर मुझे बड़ी घृणा हुई थी। उनकी ओर देखने की भी इच्छा नहीं होती थी। यद्यपि कप्तान पिडरूके साथ रहते रहते याहुओंसे बोलनेका अभ्यास पड़ गयाथा तथापि मैं उन महात्मा ह्निनह्निनोंके सद्गुणोंको नहीं भूला था। याहुनोंसे समागम करके मैंने भी दो चार याहुओंको उत्पादन किया है यह सोच कर मैं बहुतही लज्जित, सन्तापित और भयभीत होजाता था।

गृहमें प्रवेश करतेही मेरी भार्याने दौड़ कर मेरा आलिङ्गन तथा चुम्बन किया। मैं उसी समय चक्कर खाकर गिर पड़ा क्योंकि याहुओंको स्पर्श करनेका अभ्यास बिलकुल छूट गया था। प्रायः एक घण्टेके बाद मैं होशमें आया था। इङ्गलेण्ड पहुँचनेके पांच वर्षके पश्चात् मैंने इस पोथीके लिखनेमें हाथ लगाया। पहले वर्ष में तो मैं अपने बालबच्चोंको नहीं देख सकता था। उनके साथ बैठ कर एक जगह खाना तो दूर रहा उनकी गन्ध भी सही नहीं होती थी। मैं अब तक भी अपनी थाली या प्याली किसीको धोने नहीं देता हूं। मैंने दो जवान घोड़े खरीद लिये हैं जो अखता नहीं हैं। इनको एक अच्छे तवेलेमें रक्खा है। इनकी पीठ पर न जीन धरता हूँ और न मुंहमें लगाम लगाता हूं। यह मेरे बड़े प्यारे हैं। कमसे कम चार घण्टे रोज मैं इनसे बात चीत करता हूँ। यह मेरी बोली मजेमें समझ लेते हैं। दोनों घोड़े आपसमें खूब मेल जोल रखते हैं और मुझको अपना मित्र समझते हैं। अश्वसेवकको भी मैं प्रेमकी दृष्टिसे देखता हूँ क्योंकि अश्वशालाकी सुगन्धसे सुवासित होकर जब वह मेरे निकट आता है तो मैं फूले अङ्ग नहीं समाता हूं।

द्वादश परिच्छेद।

प्रिय पाठकगण! मैं अपने सोलह वर्ष सात महीने कई दिनके विचित्रविचरणका पूरा वृत्तान्त आप लोगोंसे निवेदन कर चुका। मैंने इसमें अपनी तरफसे कुछ नोन मिर्च न लगा कर ज्योंकी त्यों सब बातें लिखनेकी चेष्टाकी है। यदि चाहता तो मैं भी अन्यान्य ग्रन्थकारोंके सदृश अद्भुत असम्भव बातें लिखकर आप लोगोंको चमत्कृत कर सकता परन्तु मैंने सत्य घटनाओंको सरल सीधी भाषामें लिखनाही उचित समझा क्योंकि नये नये विषय बतानाही मेरा मुख्य उद्देश्य है, मनोरञ्जन करना नहीं।

पृथ्वीके जिन दूर देशोंमें इङ्गलेण्ड वा युरोपका कोई विरलाही मनुष्य पहुँचता है वहांके जल और स्थलके अद्भुत जीवोंका वर्णन करना हम विचरणकारियोंके लिये कुछ बड़ी बात नहीं है। मेरी समझसे भिन्न भिन्न देशोंको भली बुरी रीति व्यवहारका दृष्टान्त दिखा कर लोगोंको श्रेष्ठ कुशल और विज्ञ बनाना यात्रियोंका प्रधान मख्य होना चाहिये।

मेरी हार्दिक इच्छा थी कि एक ऐसा नियम बन जाता जिससे ... यात्रीको अपने अपने भ्रमणका वृत्तान्त प्रकाशित रनेसे पहले लार्ड चान्सलर (प्रधान राजकर्मचारी जिसके ास राजाकी मुहर रहती है) के समक्ष शपथ पूर्वक कहना पड़े क मेरी पुस्तक मेरे जानते नितान्त सत्यता पूर्ण है। ऐसा नियम ो जानेसे पाठकोंको आजकलकी तरह प्रतारित होना न पड़ेगा। इतने ग्रन्थकार ऐसे हैं जो वाहवाही लूटनेके लिये अपनी पोथि- ोंमें झूठका पहाड़ खड़ा करते हैं और भोले भाले पाठक भी न्हींको पढ़ कर प्रसन्न होतेहैं। मैं भी भ्रमणविषयक अनेक पुस्तकें ढ़कर बाल्यावस्थामें आनन्दित होता था परन्तु जबसे मैं स्वयं पृथ्वी े बहुतेरे भागोंमें विचरण करने लगा हूं उनकी पोल खुल गई है। ब उन पोथियोंके पढ़नेकी तनक भी रुचि नहीं होती है। रुख

जायगी। छिन्नभिन्नकर गाड़ियोंको उलट देंगे और सारे दुर्गों
के योद्धाओंके मुंडका स्तम्भ बना डालेंगे। मेरे कहनेका ता
ऐसी उदार जातिको जीतनेके बदले उनसे शिक्षा प्राप्त क
चाहिये। अगर कुछ छिन्नभिन्न यहां आजाते तो वह आदर स
न्याय सत्य, संयम, देशहितैषिता, सहिष्णुता, जितेन्द्रियता, नि
परोपकारिता, कर्त्तव्य परायणता आदि जिन सद्गुणोंके नाम
यहां केवल पुस्तकोंहीमें पाये जातेहैं उनकी शिक्षा देकर इस
को सुसभ्य बना देते।

मैंने अपने देशोंकी सूचना सिक्रेटरी आफ ष्टेट (राज
को न दी इसका एक और कारण है। सच पूछो तो मह
न्यायकी विचित्रता देख करही मुझे कुछ खटकासा होगया
से महाराजके राज्यको बढ़ानेसे जी हिचकिचाता है।
विचित्र न्यायका उदाहरण सुनिये। डाकुओंका एक जहा
के मारे भटक कर एक ओर जापड़ा है। कहां जापड़ा स
को मालूम नहीं है। आखिर मस्तूल परसे एक छोकरे
भूमि दिखाई पड़तीहै। लूट पाट करनेके लिये डाकू लोग
पहुंचते हैं। किसी भलेमानससे भेंट होगई तो वह आद
करताहै। वह लोग उस देशका एक नया नाम रखकर
की तरफसे उसे चट दखल कर लेते हैं। स्मारक चिन्हके व
पत्थर या सड़ा तखता गाड़ देते हैं। वहांके दो चार
मियोंको मारकर दो चारको नमूनेके बतौर जबरदस्
घसीट लातेहैं। बस राजा भी प्रसन्न होकर उनके पिछले अप
क्षमाकर देता और ऐश्वरिक स्वत्व (Divine right) की
उस देश पर अपना अधिकार जमा लेता है। फिर मौका f
वहां जहाज भेजे जातेहैं। वहांके निवासी मारे या निक
हैं। खजानेका पता लगानेके लिये वहांके राजाओंको बहुत
और मनमाना अत्याचार करते हैं। देशवासियोंके र